प्रस्तावना

श्रीमत्पार्श्वजिनं नत्वा, स्मृत्वा च गुरुदेवताम् ।
प्रकरणानि सगृह्य, ग्रन्थोऽयं लिख्यते मुदा ॥

स्वर्गस्थ पंडित महाराज श्री उत्तमचंद्रजी स्वामीए प्रकरण संग्रहना बीजा भागना लेखनकार्यनो प्रारंभ करतां उपर आपेला श्लोकवडे मंगलाचरण करेलुं हतुं, परन्तु एज मंगलाचरणवडे शरु थयेला ग्रन्थने प्रकाशमां लावतो तेओ श्री जोई न शक्या अने तेमना ग्रन्थने प्रकट करी तेनो लाभ लेवा इच्छनारा मुमुक्षुओनी समीपे तेने रजु करी, स्वर्गस्थ पंडित महाराजश्रीनुं स्मरण करवानुं प्रकाशकने भागे अवशिष्ट रह्युं छे कालनी गति गहन छे.

उत्तराध्ययन सूत्रना २८ मा अध्ययनमां मोक्षना चार अंग कहेलां छे (१) ज्ञान, (२) दर्शन, (३) चारित्र अने (४) तप आ चारे मोक्षमार्गना हेतुओमां दशवैकालिक सूत्रमां "पढमं नाणं तओ दया" ए सूत्रवडे ज्ञानने प्रथम पंक्तिमां मूकवामां आव्युं छे, अने ते यथार्थ ज छे ज्ञानवडे ज हेय ज्ञेय उपादेय पदार्थोनी समज मनुष्यमां आवी शके छे, अने ए रीते ते चारित्रशील बनी जीवननुं सार्थक्य करे छे ज्ञाननुं आटलुं बधुं माहात्म्य छे

द्रव्यगुणपर्यवना ज्ञानवडे करीने मनुष्य इहलोकमां तथा परलोकमां पोतानी परिस्थितिनुं भान प्राप्त करे छे. ज्यांसुधी मन वैराग्यथी रंगित थतुं नथी त्यांसुधी मोक्षनी श्रेणीपर आत्मा चढी शकतो नथी अने ज्यांसुधी द्रव्यगुणपर्यवनुं ज्ञान मनुष्यने प्राप्त थतुं नथी त्यांसुधी वैराग्यनी स्फुरणा पण थती नथी द्रव्य गुणपर्यवनो विस्तार जैन सिद्धान्तोमां योग्य प्रमाणमां आपवामां आव्यो छे, परन्तु बधा सिद्धान्तोनुं सम्यक्

तेना जूदा जूदा संग्रहो प्रसिद्ध थया छे एवी ज रीते आ एक बृहद् संग्रह पण प्रसिद्ध करवामां आ। छे

स्व पंडित महाराजश्री उत्तमचंद्रजी स्वामीए तैयार करेला अने स्व पूज्य महाराज श्री लाधाजी स्वामीए सुधारेलो आ ग्रन्थ संग्रहनो पहेलो भाग घणां वर्षो अगाउ प्रसिद्ध थयो हतो अने त्यारपछी सुधारावधारा साथे हती पांच आवृत्तिओ प्रसिद्ध थई छे आवा संग्रहोनी लोकप्रियता ए उपरथी मालूम पडी आवे छे आ संग्रह पण स्व महाराजश्रीए स्वहस्ते सुधारीने तैयार करी राखेलो हतो, परन्तु तेमना अवसानथी ते अप्रकट दशामां ज रह्यो हतो. १९७९ ना चातुर्मासमां पंडित महाराजश्री गुलाबचंद्रजी स्वामी, मुनि श्री वीरजी स्वामी, पंडित श्री रत्नचंद्रजी स्वामी इत्यादि साधुवर्योनां दर्शनार्थे अमदावाद मुकामे जवा अने आ संग्रह मुनि श्री सुखालचंद्रजी पासे जोवामां आव्यो छे प्रसिद्ध करीने मुमुक्षुओने तेनो लाभ आपवानी उत्कंठा मने थई आवी; परन्तु ए ग्रन्थनी हस्तलेख छापखानामां मोकली आपवा जेटलो शुद्ध अने समजभर्यो नहोतो, एटले तेनी नवी नकल करावी तेने सुधारी आपवा में महाराज श्री गुलाबचंद्रजी स्वामीने विनति करी महाराजश्रीए पोतानी नादुरस्त तबीयत छतां ते सुधारी आपवानी अने केटलांक प्रुफो तपासी आपवानी कृपा करी छे, ते तेमश्रीनो मारा पर परम उपकार थयो छे तेमनी एटली कृपाने परिणामे आजे आ ग्रंथ आपना सारा स्वरूपमां तैयार थई शक्यो छे.

अत्युत्तम संग्रहना प्रथम भाग करतां आ भागमां लेखनशैली वधारे सुगम्य राखी छे. जे वखते ते प्रथम प्रसिद्ध

यो ते वखत करतां मस्वारे भाषा-व्याकरणमां गुजराती भाषा आगळ वधी छे अने जूनी रचनां लखाणो आधुनिक वाचकोने केटलीक वार दुर्गम पण लागे छे. आ ग्रन्थमां पण जैन परिभाषा तो वापरी ज छे, परन्तु वापरवाना आदिमां अने अघरा स्थलोमां घणी वेळा वधारे स्पष्टता करी छे अने ए कार्यनो श्रम पं मुनिराज श्री लाभचंद्रजी स्वामीए लीधो छे

पुस्तकने सारा कागळमां अने मोटा अक्षरमां छापवानो हेतु तेना वाचनमां सरळता थाय ए प्रकारनो छे. घणां ज्ञानना उपकरणो तो वेच अने तेम विनामूल्ये मोकलाय तेमां ज लाभ रहेलो छे, परन्तु विनामूल्ये वहेंचवी कुमो केटलीक वार अनधिकारीना हाथमां पण जाय छे अने,तेथी ज्ञाननी आशातना थाय छे आ कारणथी आ ग्रन्थनुं मूल्य राख्युं छे खरुं परन्तु ते पडतर करता पण ओछु राख्यु छे अने ते द्रव्य ज्ञानप्रचारमां ज वापरवामां आवशे जिज्ञासुओ तेनो यथोचित लाभ ले तो मारा आ प्रयासने हुं सफळ थयेलो मानीश

पंडित महाराज श्री उत्तमचंद्रजी स्वामीना चरणोमां ज गुरुस्तुति करीने आ प्रस्तावना पूरी करुं छुं

शार्दूल ॥ वंदे सद्गुरुवर्यमेनमधुना लाभाजिसत्र मुदा।
सद्विद्यार्णवमार्यशीलसरसं सौजन्यरत्नाकरम् ॥
यत्पादार्चनतोऽजडाप्यलमहो जातोऽस्मि विद्यां बुधो ।
तं श्री शक्तिवरोत्तमुत्तमपुरं प्राप्तिमशाना मुनि ॥

बीकानेर
१९८

भैरोंदान जेठमल

स्व मुनि महाराज श्री उत्तमचन्द्रजी स्वामीनो जीवनपरिचय

॥ शार्दूल ॥

उत्कृष्टं विमलं त्रिकालविषयं ज्ञानं यदीयं स्फुटं ।
तस्यैवाप्ततमो विपापरहितः स्याद्वो यदीयागमः ॥
मत्वाऽनन्यमतिर्गरिष्ठमहिमा व्याप्तादि लोकत्रये ।
चन्द्रोऽस्त्वस्य वरिष्ठशासनपतिर्नस्त्वाप्त भद्रंकरः ॥

स्व. मुनि महाराज श्री उत्तमचंद्रजी स्वामीए 'प्रकरण संग्रह' ना प्रथम भागमां जे स्तुतिनो श्लोक रचीने अंतर्लापिकामां पोताना नामनी रचना करी हती, ते ज श्लोकवडे मंगलस्तुति करीने तेमनो संक्षिप्त जीवन परिचय अत्र आलेखुं छुं.

कुटुंबपरिचय.

श्री उत्तमचंद्रजीना पिता श्री जगजीवन रघुनाथ ज्ञाते भावसार सुरतमां सगरामपुरामां मुठोया कुवा पासेना घोशानमां रहेता. श्री उत्तमचंद्रजीनो जन्म विक्रम संवत् १९७० मां थयो हतो तेमनी मातानुं नाम दिवाळीबाई हतुं. बाल्यावस्थामां गुजराती सात धोरण अने अंग्रेजी पांच धोरणनो अभ्यास तेमणे कर्यो हतो. तेमना पिता रंगाराना धंधो

करता हता, परन्तु श्री उगमचंद्रजी तो विद्याभ्यासमांथी निवृत्त थईने मेहतागीरीनी नोकरीमां जोडाई गया हता हैये- वनो ऋजु स्वभाव अने हृदयनी सरलता तेमने साधुसमागममां प्रेरती अने तेथी साधुओनो परिचय तेमने हमेशां थवा लाग्यो हतो. तेमने बे बहेनो हती तेमनां नाम माणेकबाई तथा नन्दकोरबाई हतां. बेउ बहेन तेमनी उम्म थया पहेलां गुजरी गयां हतां. तेमना एक मोटा भाई कालीदास तो केवळ नानी वयमां गुजरी गया हता. तेमना पिताश्री संवत् १९२३ मां गुजरी गया, ते वखते श्री उगमचंद्रजीनी वय मात्र १३ वर्षनी हतो.

साधुत्व

साधुसमागमनी विशेषताथी श्री उगमचंद्रजीना ऋजु स्वभावमां वैराग्यनां बीज ववातां हतां, ते बीजना अंकुरो संवत् १९२८ मां फूट्या. ते वखते तेमनां मातुश्री वृद्ध हतां तथापि धर्मपरायण अने पुत्रना कल्याणनी इच्छावाळां होवाथी विघ्न न नाखतां दीक्षा लेवाने आज्ञा आपी तेथी पूज्य श्री काशाजी स्वामी पासे ए वरसना चैत्र मासनी अष्टमी ने मंगळवार श्री उगमचंद्रजीए सुरतमां पोतानी फोईना दिकरा वखीचंद, माणेकचंदने घेरथी दीक्षा ग्रहण करी. ए दीक्षामहोत्सव वखते सुरतमां सारो उत्साह व्याप्यो हतो अने मुंबई, कठोर वगेरे गामना संघो सुरतमां आव्या हता. उत्साहभेर सारा जमणवारो पण थया हता. श्री उगमचंद्रजीनी दीक्षातिथि—चैत्र सुद ८—नी पाखी पाळवानो ठराव ते वखत ज भावसारज्ञातिमां थयो हतो जे अत्यारसुधी चालु छे एम जाणवामां आव्युं छे. दीक्षा पछीनुं पहेलुं ज चातुर्मास श्री उगमचंद्रजी स्वामीए पोताना गुरुमहाराज श्री काशाजी स्वामीनी साथे सुरत पासेना कठोर गाममां कर्युं

अभ्यास

दीक्षा ग्रहण कर्या पछी श्री उत्तमचंद्रजी स्वामीए सूत्रज्ञान, तेमज संस्कृत भाषाना अभ्यासनो प्रारंभ कर्यो व्याकरण, काव्य, अलंकार न्याय आदिनो तेमनो अभ्यास सारो हतो अने तेथी तेओ पारंगत थया पछी संस्कृत भाषामां श्लोको तथा गद्य विवरणा लखवामां ते बहु उत्साह दाखवता आ प्रकारनुं तेमनुं लेखन केवळ प्रकीर्ण हतुं थोडुं अंग्रेजी तथा उर्दू भाषानुं ज्ञान पण तमणे प्राप्त कर्युं हतुं केटलाक सूत्रो तेमणे मुखपाठ कर्यां हतां. तेमनी उपर अमरयामां केटलाक नवदीक्षित साधुओ सूत्रज्ञान तेमनी पासेथी पण ग्रहण करता जैनेतर मतमतांतरोनो अभ्यास पण तेमणे सारो कर्यो हता एम तेमना केटलाक प्रकीर्ण लेखो उपरथी आवे मालूम पडे छे पूज्य श्री श्रीलालजी महाराजे ज्यारे काठीयावाडमां पहेली ज वार विहार कर्यो हतो, त्यारे श्री उत्तमचंद्रजी महाराज तेमना परिचयमां आव्या हता तेमना सूत्रज्ञानना संबंधमां पूज्यश्री श्रीलालजी महाराज जणावता के तेमनुं सूत्रज्ञान उत्तम प्रकारनुं हतुं अने केटलीक बाबतोना खुब सवळी खुलासा तेमने श्री उत्तमचंद्रजी महाराज पासेथी मेळवीने संतोष थयो हता तेमना ए ज्ञाननी पूज्यश्री श्रीलालजी महाराज अनेक प्रसंगे प्रशंसा पण करता

लेखनप्रवृत्ति

लेखनप्रवृत्ति तेमने अत्यंत रुचिकर जणाती हती ज्यारे ज्यारे समय मळे त्यारे त्यारे ते कोईक ने कोईक लखवानुं काम करता तेमना प्रसिद्ध थएला ग्रंथोमां प्रकरण संग्रहना बे विभागो सिवाय बीजुं कांई नथी परन्तु तेमनां लखाणोनो अप्रसिद्ध संग्रह मोटो छे. केटलाक नाना मोटा ग्रंथो जेवा के ज्योतिष कांईक पात्नानुं गुजराती

भाषांतर, तेरापंथी चर्चा (संस्कृत श्लोकोमां), चार छेदसूत्रोनां गुजराती भाषांतर, इत्यादि तेमणे पूरां लखेलां छे. ते उपरांत सूत्रोमांथी करवामां आवेलां केटलांक दोहन, शंकासमाधानो, प्रकीर्ण उतारा, नवा रचेला केटलाक प्रकीर्ण संस्कृत श्लोको इत्यादि सग्रह अव्यवस्थित स्थितिमां पडेलो छे. आ संग्रहने तपासीने, अने विषयवार वर्गमां करीने जो व्यवस्थित करवामां आवे तो तेमांथी केटलाक मोटा ग्रंथो बने तेवो संभव छे. लेखनमहर्षिना तीव्र उत्साहने लीधे तेमणे जे कांई लख्युं छे तेमांनुं घणुंखरुं कागळना नाना-मोटा गमे तेवा टुकडाओ उपर लखेलुं छे. लखवानो उत्साह स्फुरे ते वखते पोतानी निकटमां नानो कागळनो टुकडो होय, किंवा एक बाजुए छापेलुं अने बीजी बाजुए कांई कोरुं हेन्डबील होय अथवा पानां आकारना कोई सारी भावना कागळोना टुकडा पडेला होय तो जेवो मळ्यो तेवो कागळ लईने लखवा बेसी जवुं एवो तेमनो नियम हतो. आ ज कारणथी तेमना प्रकीर्ण लखोनो संग्रह कोई विविध प्रकारनो पत्रसमुदाय होय एवुं जणाय छे. आ संग्रहमांनो सौथी वधारे उपयोगी भाग जुदो काढीने प्रसिद्ध करवामां आवे तो घणा मुमुक्षुओने लाभ थवा पामे एवो संभव छे.

चातुर्मासो

महाराजश्री उत्तमचंद्रजी स्वामीए सं १९२८ मां दीक्षा ग्रहण करीने ते वर्षे कलोरमां पूज्य श्री लाधाजी स्वामीनी साथे ज चातुर्मास कर्युं बीजुं सं १९२९ नुं चातुर्मास तेमणे पोताना गुरुवर्यनी साथे लींबडीमां कर्युं त्यार-पछी १९३० मां मोरबी, १९३१ मां धोराजी, १९३२ मां अमदावाद, १९३३ मां भुज (कच्छ), १९३४ मां [illegible]

(कच्छ), १९३५ मां अमदावाद, १९३६ मां सुरत, १९३७ मां जेतपुर, १९३८ मां लींबडी, १९३९ मां जामनगर, १९४० मां बीकानेर, १९४१ तथा ४२ मां सुरत, १९४३ मां अमदावाद, १९४४ मां मांडवी (कच्छ), १९४५ मां भुज, १९४६ मां रापर (कच्छ-वागड), १९४७ मां सुरत, १९४८ मां जेतपुर, १९४९ मां अंजार (कच्छ), १९५० मां भुज, १९५१ मां वढवाण शहेर, १९५२ मां लींबडी, १९५३ मां मोरबी, १९५४ मां सायला, १९५५ मां अंजार (कच्छ), १९५६ मां मांडवी (कच्छ, १९५७ मां मोरबी, १९५८ मां मुंद्रा (कच्छ), १९५९ मां वढवाण केम्प, १९६० मां सुरत, १९६१ मां मुंबई, १९६२ मां लींबडी, १९६३ मां अमदावाद, १९६४ मां लींबडी, १९६५ मां वढवाण केम्प, १९६६ मां वढवाण शहेर, १९६७ मां लींबडी, १९६८ मां जेतपुर, १९६९ मां मांडवी (कच्छ), १९७० मां मुंद्रा (कच्छ), १९७१ मां रापर (कच्छ-वागड), १९७२ मां मोरबी, १९७३ मां सुरत, १९७४ मां जामनगर अने छेल्लुं १९७५ नी सालनुं चातुर्मास अमदावादमां कर्युं संवत् १९७४ नुं चातुर्मास करवा जामनगर जता हता, त्यां रस्तामां राजकोट मुकामे तमने सकवानुं दर्द शरु थयुं हतुं पण तेनी बहु असर थोडी होवाथी उपचार करवाथी आराम जणायो हतो तेथी राजकोटथी विहार करी जामनगर चोमासुं पहोंच्या चोमासुं सारी रीते पसार थयुं ओछे दर्दनी अंदरखाने असर हती तेथी अशक्ति घणी जणाती हती तोपण पोते उत्साही हिम्मतवान् अने धैर्यवंत हता तेथी शारीरिक अशक्ति जणावा न देता चोमासुं उतर्ये तुरत जामनगरथी विहार करी लींबडी पहोंच्या लींबडीना श्रावकोए शरीरनी अशक्ति जाणी लींबडी रोकावा घणो आग्रह कर्यो पण पोताना जन्मदेश-गुजरात तरफ एक वखत चोमासुं करी आववानी तेमने उमेद हती तेथी

अमदावादथी चोमासुं ठराव्युं. कोंकणीथी विहार करी अमदावाद आवतां रस्तामां फरी ते दर्दनो हुमलो थयो अने गामडाना विहारमां इलाज आवता थाडी वोपण मनोबळने परिणामे चोरवडोदरासुधी पहोंच्या त्यां थाको वसत रोकाई सारवारपूर्वक उपचार करता कंइ ठीक थयु एटले अमदावाद पहोंच्या त्यवानी असर मगज उपर थरी होवाथी जीवराममाई तथा केशवलालभाई वगेरे सारी लागणीथी उपचार करता हता पण एकंदर रीते दर्द वधता मांडयु तेमना एक शिष्य माणेकचंद्रजी मुनि अने बीजा त्रण साधुओ तेमनो सारवार करवामां सारी महेनत करता हता. तेमना एक शिष्य सुखलालचंद्रजी मुनि कठोर चोमासुं हता तेमने मांदगीना सवाना खबर मळतां महाराज श्री शिवजी स्वामीनी साथे लांबा लांबा विहार करी थोडा दिवसमां कठोरथी अमदावाद आवी पहोंच्या अने थोडा दिवस शुश्रूषानो काम कीधो केटलाएक दिवसो उपरथी प. श्री वचमचंद्रजी महाराजने जणायु के हय आ मांदगी मटवानी नथी एटले पोते आहार पाणी तजी संथारानो विचार जणाव्यो तेना खबर लींबडी वगेरे स्थळे पहोंचतां केटलाक माविक भायको कठोर सुरत लींबडी वगेरे स्थळेथी आवी पहोंच्या हता अने केटलाक तेमनी सारवार माटे खास रोकाया हता छेवट माळावी परिकमी संथारो करी तेओ आसो वद ११ ने रविवारे परोढमां बे वागते ४८ वर्ष संयम पाळी एकंदर ६६ वर्षनुं आयुष्य भोगवी कालधर्मने पाम्या

गुणमीमांसा

महाराज श्री वचमचंद्रजी अत्यन्त दयाळु, सरळ दिलना अने ज्ञानभारथी नम्र बनी गयेला हृदयना पवित्र साधुवर्य हता तेमना जीवनना परिचयोने कोई ने कोई प्रसंगे तेमना ए गुणोनो आपोआप अनुभव थयाविना रहेतो नहि

सौंमळो समदायनां घणा साधु-साध्वी तेमनाथी मोटा होय के नाना तथापि पूर्ण मानवृत्तियी जेमने जोतां तेमना समागममां रही अभ्यास करवानु घणा साधुओने गमतुं कारणके तेमनी शिक्षणपद्धतिमां पारावार भरेला प्रेम माल्म पडतो अन्य समदायना साधुओ पण तेमनी साथे रहीने ज्ञानमाप्ति करवाने हमेशां उत्सुक रहेता तेमने एकंदरे ४ शिष्यो थया हता तेमांना छेलथी बया नागचंदजी समदायनो मर्यादामां रहीने घणवामा शिथिल माल्म पडया हता महाराजश्रीए तेमने केटलीक वार शिक्षापणो आपी वार्या हता, परन्तु ए सरल दिलना गुरु वचनी परवा नहि करनार शिष्योने छेवटे गुरुवर्ये पोते ज साधुवेश उतरावीने रजा आपी दीधी हती श्रीजा शिष्य खुशालचंद्रजी हाल विद्यमान छे, चोथा शिष्य भाईचंदजीए वनविवास स्वीकार्यो छे तेओश्री एकाकीपणे पर्वतोनी कंदराओमां वसे छे अने शांतियुक्त स्था तोमां यथेच्छ पर्यन्न करी कालनिर्गमन करे छे

शास्त्रीय ज्ञान

पंडित श्री उत्तमचंद्रजी महाराजनु शास्त्रीय ज्ञान अत्युत्तम हतुं जैन आगमोनो भाव मा तेमना मगजमा सुंखला बद्ध गोठवाई रह्यो हतो, तेनुं कारण ए के एक एक आगम कटलीए वार तेमना वाचवामां आवतो ते उपरथी एम्मा घणा हता के नवरा बेसवुं गमतु न होतुं कोई वाचनार होय तो तेने वंचावता अने ते न होय तो पोते वाचणा करता टीकाओ वाचवानो तेमने बहु शोख हतो ते वांचता विचारता अने उपयोगी भाग लखी लेता स्थिरवो संमदायमा तेमना समयमां तेमनो व्याख्यानशैली शास्त्रीय ज्ञानथी भूषित थएल होवाने लीधे बहु वखणाती हती घणा साधुसाध्वीओ पण तेमनु व्याख्यान सांभळवाने उत्सुक रहेता हता शास्त्रोक्त भागा संबंधीनुं गणितज्ञान पण तेमनामां उच्च

महाराज हतु पं श्री रत्नचंद्रजी महाराज अने तेमना शिष्य सुजानचंद्रजी मुनिने गंगोपाना भांगा तेमणे अ शीलण्या हता के जे घोरा वखतमां पुस्तक रूप बहार पाडवामां आवनार छे.

चर्चाशक्ति

धार्म संबंधी चर्चा करवामां तेओश्री घणा निपुण हता तेमां पण खुबी ए हती के सामा माणस गमे तेवा भारा भरवा पोईन्ट उपर जाय तोपण पोते तपी जता नहि किन्तु मगजने शांत राखी शांतिथी समजावता तेमनी चर्चा मरचांथी भरेल्यो नही पण साकर जेवी मधुर जणाती हती घणी वार तेमनी चर्चा ज्ञानगोष्ठीरूप ज बनी हती अने भाताओने तेमांथी अपूर्व ज्ञानानंद मळ्यो हतो सवत् १९०८ नी सालमां तेमाश्री कच्छ मुंद्रामा चोमासु हता त्यारे कच्छ कोडायना रहीश प्रोफेसर रवजी देवराम साथे तेमने मूर्ति संबंधी चर्चा थइ हती दररोज घणपो वार कलाक शास्त्रीय युक्ति अने दाखला साथे सवाल जवाब थतां त्रण दिवस सुधी मधुर चर्चा तमणे चलावी हती तेथी भो रवजी देवराजभाईने घणो संतोष थयो हतो अने तेमना ज्ञाननी तारीफ करी हती

संवत् १९८१ नी सालमां तेओश्री रापर चोमासुं रह्या हता, त्यारे रापरना रहीश मोटा जेचंद करमचंद के जे एक तेरा पंथना मुख्य श्रावक हता अने जेमणे जैन सूत्रोना बहु सारो परिचय करेल हतो तेनी साथे तेरापंथीनी मान्यता संबंधी चर्चा चाली दररोज रात्रे बबे कलाक विचारणीय मुद्दा उपर चर्चा चालतां चार महिना नीकळी गया. छेवट चोमासाने आखरे चर्चाने परिणामे जेचंदभाई समज्या अने तेरापंथीनी मान्यता विपरीत छे एम

कबुल करी तेरापंथीनी श्रद्धा तजी तेमणे शुद्ध श्रद्धा धारण करी. आ प्रसंगना परिचयथी पंडितश्रीए तेरापंथीनो चर्चा संबंधी एक नानुं सरखुं पुस्तक संस्कृत श्लोक रूपे तैयार करेल छे.

स्मारक.

महाराज श्री उत्तमचंद्रजी स्वामीनी चप अवसान समये ६६ वर्षनी हती तेमनो निर्वाण महोत्सव अमदावा दना छ कोटी तथा आठ कोटी समुदायना सर्व श्रावकसमुदाये सुंदर रीते उजव्यो हतो तेमनी पाछळ रु ६००० जेटला धर्मादो व बेउ समुदायोना श्रावको तरफथी थया पाम्यो हतो अने व रकमना व्याजमांथी ' साधुशाळा ' स्थापवानो तथा तेने अभावे ' श्राविकाशाळा ' स्थापवानो ठराव थयो हतो संवत १९८० मां पं मुनि महाराज श्री गुलाबचंद्रजी स्वामी, श्री वीरजी स्वामी, प मु श्री रत्नचंद्रजी स्वामी, श्री रूपचंद्रजी तथा स्व महाराजश्री उत्तमचंद्रजी स्वामीना विनीत शिष्य श्री खुशालचंद्रजी स्वामीनुं चातुर्मास अमदावादमां थता आ श्राविकाशाळानो प्रारंभ करवामां आव्यो छे अने बन्ने समुदायोनी श्राविकाओ तेनो लाभ लइ शके छे धार्मिक शिक्षण अने ते हेतुपूरतुं लेखन वाचननुं ज्ञान आपवानो प्रबंध व श्राविकाशाळामां करवामां आव्यो छे

चुनीलाल वर्धमान शाह

अनुक्रमणिका

शुद्धिपत्र

पत्रांक	पृष्ठांक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	२	१२	उत्साह	उत्साद
१	२	११	१९७२	१९७१
१	२	८-९	जीव समुदाय मळ-वाथी लागती कि-या ते	पोतानी मात्र रूप वस्तुना व्याप थवाथी हये पाम ते
१	२	९-१०	अजीव समुदाय रचादि मळवाथी	पोताना अजीव समुदाय रचादि नो बनाव थवाथी
१	२	७	१८ लाख पंचेंद्रि यनी योनीमां पर्यंत २ १-७ लाखे	४ लाख तिर्यंच पंचेंद्रियनी यो नीमां पर्यंत २ १ अने १४ लाख मनुष्यनी
७	१	१	२२	५२
७	१	१२	१	४ १
८	१	१२	७०	५८
८	२	१	१४	२१
८	२	१	भाव ५	भाव ३-४ ५

पत्रांक	पृष्ठांक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	२	५	(अशुद्ध) नारकी देवनी ८ लाख योनीमां २५ कषाय ११ योग १२ अव्रत ५ मिथ्यात्व एम ५३ हेतु लाभे	(शुद्ध) नारकीनी ४ लाख योनीमां २३ कषाय ११ योग १२ अव्रत, ५ मिथ्यात्व ए ५१ हेतु लाभे देवतानी ४ लाख योनीमां २४ कषाय ११ योग १२ अव्रत ५ मिथ्यात्व ए ५२ हेतु लाभ
८	२	१०	५३	५३॥
१०	२	११	सोळ	बार
१०	२	११	आठ—आठ	छ—छ
१०	२	१२	बे आंगळनी	बे पगनी
११	१	१	बार आंगळनी	सात आंगळनी
१२	१	१०-११	चोर १०	चोर ८
१४	२	३	सूक्ष्म केटला? बादर केटला?	संज्ञी केटला? असंज्ञी केटला?
१५	१	१	असंख्यातगुणा	अनंतगुणा
१८	१	१०	काळ	काष्ठ
१८	२	३	मळवेना मातानी अपेक्षाए	०
२०	२	१०	ए	ए १३२ ने
२३	२	३	वायु	तेउ

पत्रांक	पृष्ठांक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२१	१	९	(अशुद्ध) २१९-बैवेय	त्रिभवीगभो
मरकट भावर्तु (शुद्ध) २२१-७ नरक १ बादर बादरा				
९ पडीतिर्यंच १८ कर्मभूमि ग्रैवेयक अनुत्तर विमान				
वर्ती ८९ देवता, ५ मरेंना पर्यातामां लाभे				
२१	२	१०	१	७
२५	२	११	४ १-	६-७
४०	२	१२	तडागी भाव	स्पर्श विषय
४१	१	१	स्पर्श भोग	रूप विषय
		"	रूपभोग	शब्दविषय
		"	शब्दभोग	•
४२	१	२	मकरमच्छानो भोग	मानसिक भोग
४३	१	८	असंख्यातानुं	असंख्यातानुं
९८	१	९	ग्रीप	ग्रीष
९९	१	१२	राम	रोम
७४	२	९	सचिठणा	संचिठणा
८८	१	१२	आर्यु	आर्यु
९९	१	४	वाल	वालाम
९९	२	९	ताम्रम्	तैजस
१०१	२	४	पर्दु	पर्व
१०२	१	१	नै	ते
१०३	२	८	प्रीपमनुधी	ग्रिमनुदी
१०९	१	४	गौतम	गाढ
११०	२	५	विपुलमतिपी	विपुलमति पथी
११७	२	९	४३	३४
११८	२	९	तणे	भेणे
१२२	२	८	२१५	२१४
१२४	१	८	पम मठी ५२ दंडक पपा	पम ५२ दंडक पपा मर्थ मठी १०२ दंडक मानना
१२५	२	३	२८-२२	२१ २१
१२६	२	४	२२-४४	२१-४२
१२७	२	११	३४	३२
१२८	१	५	१४६	१४४
१२९	१	४	२५८४	२ ९०
१३०	१	८	२ पर्केंद्रिय	५ पर्केंद्रिय
१३०	१	११	म	मे
१३१	२	२	राम	रक्षा
१३१	२	८	भाल	बोल
१३७	२	६	व्यक्तता	वक्तव्यता
१४८	१	५	तगु	तेज
१५२	२	६	चण	वर्ण
११	२	८	पंचमी	पंचमी क

विशेष शुद्धि

पत्रांक पृष्ठांक पंक्ति अशुद्ध शुद्ध

१ १ १० (अशुद्ध) १८ लाख योनिमां ११ तथा ८ कषाय लाभे (शुद्ध) ५८ लाख योनिमां ११ कषाय लाभ, ८ लाख योनिमां ११ तथा १२ कषाय लाभ ४ लाख योनिमां ११-१२-८ कषाय लाभे

१ २ १ (अशुद्ध) १८ लाख पंचेंद्रियनी योनिमां १-३-४-५ भाग लाभे (शुद्ध) ४ लाख योनिमां २ ३ भाग लाभे, १४ लाख योनिमां २-३-४-५ भाग लाभ

८ १ ११ (अशुद्ध) १ लाख विकलेंद्रियनी योनिमां १ तथा ३ क्रियावादी वध्या (शुद्ध) अज्ञान वादी १ अक्रियावादी २ ए बे समवसरण लाभे

पत्रांक	पृष्ठांक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	२	२	४१ हेतु	११ हेतु
८	२	२	२५	२३
८	२	५	४३	५१
८	२	५	९५	२३
८	२	५	५२	४०

१३ २ २ (शुद्ध) स्थावर नाडीमां १५० भेद अपर्याप्ते लाभता कह्युं छे, पण सूक्ष्म भेदनी अपेक्षा लह्य तो २२ एकेंद्रियमांथी १ तेउकायनो पर्याप्तो वर्जी २१ एकेंद्रियना भेद लाभे

१० २ ११ मायानो सायानो

पत्रांक पृष्ठांक पंक्ति अशुद्ध शुद्ध

१२ १ ११ (अशुद्ध) तिर्यंच अने मनुष्य ज्यां ज्यां जाय त्यां त्यां अ० उ० प्रथम पांचे लेश्यानी अंतर्मुहूर्तनी स्थिति जाणवी केवल ज्ञान आश्री शुक्ल लेश्यानी स्थिति (शुद्ध) तिर्यंच आश्री छ लेश्या अने मनुष्य आश्री प्रथम पांच लेश्यानी स्थिति ज० उ० अंतर्मुहूर्तनी। शुक्ल लेश्यानी स्थिति छद्मस्थ मनुष्य आश्री ज० उ० अंतर्मु०नी अने केवली आश्री

१२ ५ ७ (अशुद्ध) ज्योतिषी (शुद्ध) ज्योतिषी आश्री तेजु लेश्यानी ज स्थिति पल्यना आठमा भागनी अने उ० १ पल्य ने १ लाख वर्षनी

पत्रांक	पृष्ठांक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४१	१	११	१७०	१७
४९	१	१०	मातवल	मातबहुल
४९	१	११	पंकवल	पंकबहुल
४९	१	५	जंबूद्वीप पालखो पक वपडीमांहि २१ फरता फेर	
५२	२	१	कालोदधि	कालोदधि समुद्रनां पाणी मसि सरिखां
५१	२	३	जण	थे
५४	२	५	पांचमी	•

पत्रांक	पृष्ठांक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५४	२	७	पारला संस्थान	बारला अर्द्ध कपित्थ संस्थान
५५	१	१	२१ योजन	५७ योजन
५५	१	१	५५ ,,	३१ ,,
५५	१	२	२४ ,,	२५ ,, सातमा आठमा सुवलोकना २४ योजननां
५५	१	११	अर्धचंद्राकार	त्रिकोण सिंघोडा कार
५६	२	५	१	१॥
५६	२	६	२	२॥
५६	२	६	३	३॥
५९	२	१	(अशुद्ध) पहेले समये १ ८ मोक्ष जाय (शुद्ध) १ थी ३२ पर्यंत मोक्ष जाय तो ८ समय सुषिमा ॥१॥ ३३ थी ४८ मोक्ष जाय तो ७ समय सुषिमा ॥२॥ ४९ थी ६ मोक्ष जाय तो ६ समय सुषिमा ॥३॥ ६१ थी ७२ मोक्ष जाय तो ५ समय सुषिमा ॥४॥ ७३ थी ८४ मोक्ष जाय तो ४ समय सुषिमा ॥५॥ ८५ थी ९६ मोक्ष जाय तो ३ समय सुषिमा ॥६॥ ९७ थी १ २ मोक्ष जाय तो २ समय सुषिमा ॥७॥ १ ३ थी १ ८ मोक्ष जाय तो १ समय सुषिमा ॥ ८ ॥	
६१	२	८	असंख्येयगुणा	संख्येयगुणा
६२	१	११	पछाता	यावत पछाता
८४	२	५	स	स २
८५	१	८	एकेंद्रिय	वायुकाय एकेंद्रिय
८५	१	९	नोएकेंद्रिय	नोवाउकाय
८५	१	९	नोएकेंद्रिय	नोवाउकाय
८५	१	९	एकेंद्रिय	वाउकाय एकेंद्रिय
८५	१	१३	समज	स अंतर्मुहूर्तनुं समज॥
८७	२	५	५ | २५ ५ | १२५ ५ | ६२५ ५ | ३१२५	५×५= २५ २५×५= १२ १२५×५= ६२५ ६२५×५= ३१२५
११९	२	५	नोअसंयत	नोअसंयत नोसंयतासंयत
१२५	२	९	अचरमपणुं	चरमाचरमपणुं
१२५	२	५	आहारकवत	अनाहारकवत्
१४५	२	१	बाल	बोल

श्री प्रकरण संग्रह.

भाग बीजो

प्रारम्भ

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

पचीस क्रिया ॥

॥ अथ श्री ठाणागसूत्रादिथी पचीस क्रियाना बोल ॥

करीए ते क्रिया तेना पचीस भेद तेमा कायाना व्यापारे करी निपनी ते कायकी क्रिया ॥ १ ॥ तेना बे भेद–१ पापथी निवर्त्या नथी एवा अविरत मिथ्यादृष्टि तथा समदृष्टि जीवन हालवा चालवाथी जे क्रिया लाग ते अनुपरतकाय क्रिया २ दुष्ट रीते मन, वचन अने कायाना योग प्रवर्तावधाथी लागे ते दुःप्रयुक्तकाय क्रिया ॥ २ ॥ अधिकरण (खड्गादि) शस्त्रे करी जे क्रिया लागे ते अधिकरणिका तेना बे भेद–१ पूर्वे नीपजावेल खड्गादिने विषे मुष्टि आदिनु जोडवु ते सयोजनाधिकरणिका, २ प्रथमयोज

खड्ग, मुष्ट्यादिनु नीपजाववु ते निवर्तनाधिकरणिका ॥ ३ ॥ प्रद्वेषे (मत्सरे) करी नीपजी ते पाउसिया-प्राद्वेषिकी तेना बे भेद-१ जीवने विषे द्वेष करवाथी निपनी ते जीवप्राद्वेषिकी, २ अजीव (रस्तादि) ने विषे द्वेष करवाथी निपनी ते अजीवप्राद्वेषिकी ॥ ४ ॥ परितापना (ताडनादि) दुःख विशेषे करी निपनी ते पारितावणिया-पारितापनिका तेना बे भेद-१ पोताने हाथे करी परितापना उपजावे ते स्वहस्तपारितापनिका, २ बीजाने हाथे परितापना उपजाववे करी निपनी ते परहस्तपारितापनिका ॥ ५ ॥ प्राण (आयुष्यादि १०) नो अतिपात-नाश करवे करी निपनी ते प्राणातिपात क्रिया तेना बे भेद-१ पोताने हाथे करी कोइ प्राणीने प्राणथी वेगळो करे ते स्वहस्तप्राणातिपात क्रिया, २ बीजाने हाथे कोइने प्राणथी वेगळो करावतां लागे ते परहस्तप्राणातिपात क्रिया ॥ ६ ॥ आरम्भ (उपद्रव) करवाथी निपनी ते आरम्भिका तेना बे भेद-१ जीवने उपद्रव करवाथी लागे ते जीवआरम्भिका, २ अजीव (जीवना कलेवर अथवा वस्त्रादि) नो आरम्भ-अभिसंस्कार वगेरे करतां जे क्रिया लागे ते अजीवआरम्भिका ॥ ७ ॥ परिग्रह नव

प्रकारना ने उपर मूर्च्छा राखवाथी लागे ते परिग्गहिया क्रिया तेना बे भेद–१ जीव (मनुष्यादि) ने विषे मूर्च्छा राखवाथी लागे ते जीवपरिग्गहिया, २ अजीव (सुवर्णादि) ने विषे मूर्च्छा राखवाथी लागे ते अजीव परिग्गहिया ॥ ८ ॥ माया–कपट निमित्तथी जे क्रिया लागे ते मायावत्तिया तेना बे भेद–१ हृदयना दुष्ट आशयने वक्रतारूपे बीजी रीते बताववानी कोशीश करवी ते आयभाववंकणया, २ खोटा लेखादिके करी परने बच वाना व्यापार ते परभाववंकणया ॥ ९ ॥ अविरति निमित्तथी निपनी जे क्रिया ते अपच्चक्खाण क्रिया तेना बे भेद–१ जीवने विषे प्रत्याख्यान कर्या विना जे वधादि व्यापार ते जीव अपच्चक्खाण क्रिया, २ मद्यादि अजीवने विषे पच्चक्खाण न करवाथी कर्मबंध थाय ते अजीव अपच्चक्खाण क्रिया ॥ १० ॥ मिथ्यात्व निमित्ते कर्मबंध व्यापार थाय ते मिच्छा दंसणवत्तिया तेना बे भेद–१ हीन–अधिक आत्मादि वस्तु विषय मिथ्यात्वदर्शन निमित्त व्यापार ते ऊणातिरिक्तमिच्छादंसणवत्तिया, २ पूर्वोक्त ऊणातिरिक्त मिथ्यादर्शनथी भिन्न मिथ्यादर्शन जेमके आत्मा नथी, इत्यादिरूप मिथ्यादर्शन व्यापार ते तद्व्यति

रिकमिह्नादसणवत्तिया ॥ ११ ॥ वस्तुना देखवाथी निपनी ते दिठ्ठिया सेना बे भेद–१ जीवता हाथी घोमा प्रमुखने देखवाथी जे कर्म लागे ते जीवदिठ्ठिया, २ चित्रामण प्रमुख जोनाथी जे कर्म लागे ते अजीवदिठ्ठिया ॥ १२ ॥ वस्तुने स्पर्शवाथी निपनी ते पुठ्ठिया तेना बे भेद–१ जीवने रागद्वेष स्पर्शवाथी जे कर्म लागे ते जीवपुठ्ठिया, २ अजीवने राग द्वेष स्पर्शवाथी ज कर्म लागे ते अजीवपुठ्ठिया ॥ १३ ॥ बाह्य वस्तु माहु चिंतववाथी निपनी ते पाडुच्चिया तेना बे भेद–१ जीवने आश्रिने राग–द्वेषथी निपनी ते जीवपाडुच्चिया, २ अजीवने आश्रिने राग–द्वेषथी निपनी ते अजीवपाडुच्चिया ॥ १४ ॥ सर्व प्रकारे जनसमूहना मळवाथी निपनी ते सामतोवणिवाइया तेना बे भेद–१ जीव समुदाय मळवाथी लागती क्रिया ते जीवसामतोवणिवाइया, २ अजीव समुदाय इत्यादि मेळववाथी हर्ष पामे ते अजीवसामतोवणिवाइया ॥ १५ ॥ हाथे करी निपनी ते साहत्थिया तेना बे भेद–१ पोताने हाथे जीवने पकमी हणे ते जीवसाहत्थिया, २ पोताने हाथे (अजीव) खड्गादिक पकमी जीवने हणे ते अजीवसाहत्थिया ॥ १६ ॥

निसर्जन-फकवाथी निपनी ते नेसत्थिया तेना बे भेद-१ पत्थर आदि सजीव वस्तुनु यन्त्रादिवडे फेंकवु ते जीवनेसत्थिया, २ बाणादिनु धनुष्यादिवडे फेंकवु ते अजीवनेसत्थिया ॥ १७ ॥ स्वामीना आदेशथी निपनी ते आणवणिया-आज्ञापनिका तेना बे भेद-१ जीवने आणवानो आदेश करवाथी निपनी ते जीवआणवणिया, २ अजीवने आणवाना आदेश करवाथी निपनी ते अजीवआणवणिया ॥ १८ ॥ विदारवाथी निपनी ते विदारणिका तेना बे भेद-१ जीवने विदारवाथी निपनी ते जीवविदारणिका, २ अजीव (स्तम्भकाष्ठादि) ने विदारवाथी निपनी ते अजीवविदारणिका ॥ १९ ॥ अज्ञान निमित्तथी निपनी ते अणाभोगवत्तिया तेना बे भेद-१ उपयोग विना वस्त्रादि लेवा ते अनायुक्तआदानता, २ उपयोग विना पात्रादिनु प्रमार्जन करवु ते अनायुक्तप्रमार्जनता ॥ २० ॥ स्वशरीरादिनी अपेक्षा न राखवाथी क्रिया लागे ते अणवकखवत्तिया तेना बे भेद-१ पोताना शरीरनी क्षति करवाथी लागे ते आत्मशरीरअणवकखवत्तिया, २ परना शरीरनी क्षति करवाथी लागे ते परशरीरअणवकखवत्तिया ॥ २१ ॥

प्रेम (स्नेह) ना निमित्तथी निपनी ते पेज्जवत्तिया-प्रेमवृत्तिका तेना बे भेद-१ मायाना निमित्तथी निपनी ते मायावृत्तिका, २ लोभना निमित्तथी निपनी ते लोभवृत्तिका ॥ २२ ॥ द्वेष (क्रोध मान) ना निमित्तथी निपनी ते दोसवत्तिया द्वेषवृत्तिका तेना व भेद-१ क्रोधना निमित्तथी निपनी ते क्रोधवृत्तिका, २ मानना निमित्तथी निपनी ते मानवृत्तिका ॥ २३ ॥ प्रयोगे करी निपनी ते प्रयोगक्रिया तेना त्रण भेद-१ मनना प्रयोगे करी निपनी ते मनप्रयोगक्रिया, २ वचनना प्रयोगे करी निपनी ते वचनप्रयोग क्रिया, ३ कायाना प्रयोगे करी निपनी ते कायप्रयोगक्रिया ॥ २४ ॥ मन आदि प्रयोगे करी ग्रहण करेल कर्मवर्गणानु सम्यक् प्रकारे प्रकृतिबंधादि भेदे करी अंगीकार करवु ते समुदान क्रिया तेना त्रण भेद-१ आंतरारहित (प्रथम समयवर्त्तिनी) ते अनंतरसमुदान क्रिया-२ द्वितीयादि समयवर्त्तिनी ते परंपरसमुदान क्रिया, ३ प्रथम अप्रथम समयनी अपेक्षाए ते तदुभयसमुदान क्रिया ॥ २५ ॥ पथे चालवाथी जे क्रिया लागे ते इर्यापथिका तेना बे भेद-१ ११ मे तथा १२ मे गुणठाणे यथाख्यात चारित्रवाळाने लागे

ते ठद्मस्थइरियावहिया क्रिया, २ केवलीने लागे ते केवलीइरियावहिया क्रिया ॥ एव मूल क्रिया २५ अने उत्तर क्रिया ५२ थइ ॥

॥ इति पचीस क्रियाना बोल सपूर्ण ॥

योनिना बोल ॥

गाथा ॥ जीव १ इंद्रिय २ गुणठाण ३, जोग ४ वेय ५ कसाय ६ लेस्सा ७ ॥
नाण ८ अन्नाण ९ दसण १०, सण्णि ११ वेयणीय १२ पज्जति १३ ॥ १ ॥
पाण १४ झाण १५ उवओग १६, दिट्ठी १७ अप्पा १८ मरण १९ समुग्घाए २० ॥
सरीर २१ सठाण २२ सघयण २३, यणाइ २४ सण्णा २५ समोसरण चेव २६ ॥२॥
नाव २७ हेउ २८ कूल कोडी २९, पयवी ३० इमाइ तिसदाराइ ॥
चउरासी लख जीवाजोणी, उच्चारयव्व तस्सोवरी ॥३॥

पहेलु जीवद्वार कहे छे–८४ लाख योनिमा ५६३ भेद लाभे तेमा ५२ लाख योनिमां एकेन्द्रियना २२ भेद लाभे ६ लाख योनिमा विगलेंद्रियना ६ भेद लाभे २६ लाख योनिमां ५३५ भेद लाभे त १४ नारकीना, २० तिर्यंच पचेन्द्रियना, ३०३ भेद मनुष्यना, १९८ भेद देवताना सघ मळी ५३५ भेद थाय ॥१॥ बीजु इंद्रियद्वार–८४ लाख जोवा योनिमां इन्द्रिय ५ लाभे तेमा ५२ लाख योनिमां इन्द्रिय १ लाभे वे लाख बेइन्द्रियनी योनिमां इन्द्रिय २ लाभे २ लाख तेइन्द्रियनी योनिमा इन्द्रिय ३ लाभे २ लाख चउरिंन्द्रियनी योनिमा इन्द्रिय ४ लाभे २६ लाख पचेन्द्रियनी योनिमा इन्द्रिय ५ लाभे ॥२॥ त्रीजु गुणठाणद्वार–समुच्चय योनिमा १४ गुणठाणा लाभे तेमा ८४ लाख योनिमा प्रथम गुणठाणु लाभे ३२ लाख यानि ते एकेन्द्रियनी वर्जितमा बीजु गुणठाणु लाभे २६ लाख योनि ते विगलेंद्रियनी ६ वर्जितमा त्रीजु चोथु वे गुणठाणा लाभे १८ लाख योनि त देवता नारकीनी ८ लाख वर्जितमा पाचमु गुणठाणु लाभे १४ लाख यानि ते ४ लाख तिर्यंच पचेंद्रियनी वर्जितमा ६ ठा गुणठाणाथी १४ मा गुणठाणा सुधी ९ गुणठाणां

लाजे ॥ ३ ॥ चोथु जोगद्वार—तेमां प्रथम ३ मूल योग कहे छे ५२ लाख योनिमा १ काय योग लाजे ६ लाख योनिमां काया ने वचन ए बे योग लाजे २६ लाख योनिमां २-३ योग लाजे हवे १५ उत्तर योग कहे छे ८४ लाख योनिमा समुच्चय १५ जोग लाजे वाउकाय वर्जिने एकेन्द्रियनी ४५ लाख योनिमां ३ जोग लाजे वाउकायनी ७ लाख योनिमा ५ जोग लाजे विगलेंद्रियनी ६ लाख योनिमां ४ जोग लाजे नारकी देवतानी ८ लाख योनिमां ११ जोग लाजे ४ लाख तिर्यंच पचेन्द्रियनी योनिमा १३ जोग लाजे १४ लाख मनुष्यनी योनिमां १५ जोग लाजे ॥ ४ ॥ पाचमु वेदद्वार कहे छे ६२ लाख योनिमां नपुसक वेद लाजे ते एकेंद्रिय विकलेंद्रिय अने नारकीमां लाजे १८ लाख योनिमां १ २ ३ वेद लाजे ४ लाख योनिमा १ २ बे वेद लाजे ॥ ५ ॥ छठ्ठु कषायद्वार—८४ लाख योनिमा १६ कषाय लाजे तेमां २८ लाख योनिमां १६ तथा ८ कषाय लाजे २४ लाख योनिमां १६ १२ ८ ४ ० कषाय लाजे ॥ ६ ॥ सातमु लेश्याद्वार—८४ लाख योनिमां ६ लेश्या लाजे तेमां २४ लाख योनिमां ४ लेश्या लाजे ३८ लाख योनिमा ३ लेश्या लाजे

२२ लाख योनिमा ३ ४-६ लेश्या लाभे ॥७॥ आठमु ज्ञानद्वार–८४ लाख योनि तेमा ५२ लाख योनिमा ज्ञान लाभे नहि ६ लाख विगलेन्द्रियनी योनिमां २ ज्ञान लाभे ८ लाख नारकी देवनी योनिमा ३ ज्ञान लाभे १८ लाख पचेन्द्रियनी योनिमा २ ३ ४ ५ ज्ञान लाभे ॥८॥ नवमु अज्ञानद्वार–८४ लाख योनिमा अज्ञान ३ लाभे तेमां ५८ लाख योनिमां अज्ञान २ लाभे २६ लाख योनिमा २ तथा ३ अज्ञान लाभे ॥९॥ दसमु दर्शनद्वार–५६ लाख योनिमा १ अचक्षुदर्शन लाभे २ लाख चउरिन्द्रियमा वे दर्शन चक्षु, अचक्षु लाभे ८ लाख देवनारकीनी योनिमा ३ दर्शन लाभे १८ लाख पचेन्द्रियनी योनिमा दर्शन २ ३ ४ लाभे ॥१०॥ अगीआरमु सञ्ज्ञी असञ्ज्ञीद्वार–५८ लाख योनिमा १ असञ्ज्ञी लाभे २६ लाख योनिमां सञ्ज्ञी असञ्ज्ञी २ लाभे ॥११॥ बारमु वेदना द्वार–८४ लाख योनिमां निश्चयनये १ वेदना लाभे प्रत्येक प्रत्येकमां व्यवहारनये ४ लाख नारकीनी योनिमां १ अशाता वेदनीय लाभे ४ लाख देवतानी योनिमां १ शाता वेदनीय लाभे शेष ७६ लाख योनिमां २ वेदना लाभे ॥१२॥ तेरमु पर्याप्तिद्वार–८४ लाख जीवा

योनिमां पर्याप्ति ६ लाभे तेमां ५२ लाख एकेन्द्रियनी योनिमा पर्याप्ति ४ लाभे ६ लाख विगलेन्द्रियनी योनिमां पर्याप्ति ५ लाभे २६ लाख पचेन्द्रियनी योनिमा पर्याप्ति ५ ६ लाभे ॥ १३ ॥ चौदमु प्राणद्वार—८४ लाख योनिमा प्राण दस लाभे तेमा ५२ लाख एकेन्द्रियनी योनिमां प्राण ४ लाभे २ लाख बेइन्द्रियनी योनिमां प्राण ६ लाभे २ लाख तेइन्द्रियनी योनिमां प्राण ७ लाभे २ लाख चउरिंद्रियनी योनिमा प्राण ८ लाभे २६ लाख पचेन्द्रियनी योनिमां प्राण ९–१० लाभे ॥ १४ ॥ पदरमु ध्यानद्वार—५८ लाख योनिमां २ ध्यान लाभे ते आर्त्तध्यान १, रौद्रध्यान २ १२ लाख योनिमां २ ३ ध्यान लाभे ते धर्मध्यान वध्युं, १४ लाख योनिमां २ ३ ४ ध्यान लाभे ॥ १५ ॥ सोलमु उपयोगद्वार—८४ लाख योनि तेमां ५२ लाख योनिमां ३ उपयोग, २ अज्ञान १ अचक्षु ए ३ लाभे ४ लाख बेइन्द्रिय तेइन्द्रियनी योनिमां ५ उपयोग लाभे २ लाख चउरिन्द्रियनी योनिमां ६ उपयोग लाभे, १२ लाख देव नारकी तिर्यंचनी योनिमां ९ उपयोग लाभे १४ लाख मनुष्यनी योनिमां उपयोग ६ तथा १२ लाभे ॥ १६ ॥ सत्तरमु दृष्टिद्वार—५२ लाख

जीवायोनिमा दृष्टि १ लाभे ६ लाख योनिमां २ दृष्टि लाभे २६ लाख पंचेन्द्रियनी योनिमां १–२ तथा ३ दृष्टि लाभे ॥ १७ ॥ अढारमु आत्माद्वार–५२ लाख एकेन्द्रियनी योनिमा ६ आत्मा लाभे ज्ञान चारित्र वर्जिने १४ लाख योनिमां ७ आत्मा लाभे ते १ ज्ञान वध्यु १० लाख तिर्यंच मनुष्यनी योनिमां ८ आत्मा लाभे ते चारित्र वध्यु ॥१८॥ ओगणीसमु मरणद्वार–८४ लाख जीवायोनिमा २ मरण समोहिया, १, असमोहिया २, प्रत्येक प्रत्येकमां लाभे ॥१९॥ वीसमु समुद्घातद्वार–५१ लाख योनिमां ३ समुद्घात लाभे ११ लाख योनिमां ४ समुद्घात लाभे, वैक्रेय वधी ८ लाख योनिमां ५ समुद्घात लाभे १४ लाख योनिमां ३ ४ ५ ६ ७ समुद्घात लाभे ॥२०॥ एकवीसमु शरीरद्वार–८४ लाख जीवायोनि तेमां ५१ लाख योनिमां ३ शरीर–उदारीक, तेजस अने कार्मण ए त्रण लाभे ११ लाख योनिमा ४ शरीर लाभे ते १ वैक्रेय वध्यु ८ लाख योनिमा ३ शरीर ते वैक्रेय, तेजस अने कार्मण ए ३ लाभे १४ लाख योनिमां ३ ४ ५ शरीर लाभे ॥२१॥ बावीसमु संठाण द्वार–८४ लाख योनिमा ६ संठाण लाभे तेमां ६२ लाख योनिमां १ हुंड संठाण ४ लाख

योनिमां समचउरस सठाण १० लाख योनिमां १ सठाण तथा ६ सठाण लाभे ॥ २२ ॥ तेवीसमु सघयणद्वार-८४ लाख योनिमा ६ सघयण लाभे तेमां ५० लाख योनिमा १ छेवट्ठ सघयण ७ लाख योनि असघयणी १७ लाख योनिमां १ सघयण तथा ६ सघयण लाभे ॥ २३ ॥ चोवीसमु वर्णादिद्वार–८४ लाख जीवायोनिमां ५ वर्ण, २ गध, ५ रस, ८ स्पर्श सर्व मळी २० लाभे तेमां ४ लाख नारकीनी योनिमां अशुभ वर्ण, गध, रस, स्पर्श लाभे ने ४ लाख देवनी योनिमां शुभ वर्ण, गंध, रस, स्पर्श लाभे शेष ७६ लाख योनिमां शुभाशुभ वर्णादि २० बोल लाभे ए व्यवहारनयनी अपेक्षाये जाणवु ॥ २४ ॥ पचीसमु सज्ञाद्वार–८४ लाख योनिमां ४ सज्ञा लाभे प्रत्येक प्रत्येकमां ॥ २५ ॥ छवीसमु समवसरणद्वार–८४ लाख जीवायोनिमां ४ समवसरण लाभे तेमां ५२ लाख योनिमां २ समवसरण अक्रियावादी अज्ञान २ लाभे ६ लाख विगलेन्द्रियनी योनिमां २ तथा २ ते क्रियावादी भव्या २६ लाख पचेन्द्रियनी योनिमां १ २ ३ ४ सम० लाभे ॥ २६ ॥ सत्तावीसमु भावद्वार–७० लाख योनिमां भाव ३

लाने, उदय, क्षयोपशम, परिणामिक १४ लाख योनिमां जाव ५ लाभे ते उपशम, क्षायक ए घ यख्या ॥ २७ ॥ अट्ठावीसमु हेतुद्वार—४५ लाख एकेन्द्रियमां ४१ हेतु लाभे २५ कषाय, ३ जोग, १२ अव्रत, १ अनाजागमिथ्यात्व एम ४१ वाउकायनी ७ लाख योनिमां २ वैक्रेयना वधतां ४३ हेतु लाभे त्रण विगलेन्द्रियनी छ लाख योनिमां २५ कषाय, ४ जोग, १२ अव्रत, १ अनाजोगमिथ्यात्व एम ४२ हेतु लाभे नारकीदेवनी ८ लाख योनिमा २५ कषाय, ११ जोग, १२ अव्रत, ५ मिथ्यात्व ए ५३ हेतु लाभे तिर्यंचपचेन्द्रियनी ४ लाख योनिमां ५५ हेतु लाभे, ते ५७मायी आहारकना २ वर्ज्या १४ लाख मनुष्यनी योनिमां ५७ हेतु लाभे ॥ २८ ॥ ओगणत्रीसमु कुलकोटिद्वार—५२ लाख एकेन्द्रियनी योनिमा ५७ लाख कुलकोटि विगलेंन्द्रियनी ६ लाख योनिमां २४ लाख कुलकोटि देवनारकीनी ८ लाख योनिमां ५१ लाख कुलकोटि तिर्यंच पचेंद्रियनी ४ लाख योनिमा ५३ लाख कुलकोटी १४ लाख मनुष्यनी योनिमा १२ लाख कुलकोटि ए १९७५०००० लाख थाय कुलकोटि कहेतां कूलना समुदाय जाणवा ॥ २९ ॥ त्रीसमुं पदवीद्वार—७ लाख पृथ्वीकायनी योनिमां

७ एकेन्द्रियनी पदवी लाजे शेष ४५ लाख एकेन्द्रियनी योनिमा पदवी एके न लाजे ६ लाख विगलेन्द्रियनी योनिमा पदवी एक समकीतनी लाजे ७ लाख नारकी तथा देवनी योनिमा १ समदृष्टिनी पदवी लाजे ४ लाख तिर्यंच पचेन्द्रियनी योनिमा ४ पदवी-अश्व ने गज तथा श्रावक ने समदृष्टिनी लाजे मनुष्यनी १४ लाख योनिमां ५ पचेन्द्रिय रत्ननी ने ए मोटी पदवी एम १४ पदवी लाजे ॥ ३० ॥

॥ इति योनिना बोल संपूर्णम् ॥

गर्भावासना बोल ॥

अथ श्री तंदुलवेयालिया प्रकीरणकथी संक्षेपे गर्भावासना बोल लिख्यते ॥

स्त्रीनी नाभी नीचे बे नाडी छे, ते फुलनी नालीने आकारे छे तेनी नीचे योनि छे ते जीवने उपजवानु ठेकाणु छे ते अधोमुख कमळने आकारे छे त्यां आंबानी मंजरी

सरखु मास ठे ज्यारे स्त्रीने ऋतुकाळ आवे त्यारे मजरी करे जेम रसजर्यु शुमखु करे तेम ते ऋतुना पिंड करे त्यां वीर्यनो सजोग मिश्र थाय त्यारे बार मुहूर्त्तमां जीव आवी ठपजे, ठत्कृष्टा नव लाख जीव ठपजे स्त्रीनी योनि पचावन वर्ष ठपरांत मळी जाय—अबीज थाय पुरुष पचोतेर वर्ष पठी अबीज थाय ए नियम सो वर्षना आयुष्यना प्रमाणनो समजवा ठपरात पूर्व क्रोम सुधी आयुष्य होय तो स्त्रीना अर्द्ध आयुष्य सुधी सबीज योनि होय पुरुषना सर्व आयुष्यनो वीसमो जाग शेष रहे त्यारे अबीज होय वळी एक पुत्रने नवसें पिता हाय नवसें पुरुषनो एक पुत्र ते गर्न्न ठत्कृष्टो बार वर्ष सुधी माताना ठदरमां गेरूपणे रहे पाठो एनो ए जीव पापना ठदयथी फरी पाठा बीजा बार वर्ष रहे, एटले चोवीस वर्ष थाय, त्यांसुधी रहे जमणे पासे पुत्र रहे डाबे पासे पुत्री रहे वच्चे नपुसक रह तिर्यंचणीने आठ वर्ष सुधी गेरू रहे मातानु रुधिर, पिताना शुक्रनो प्रथम आहार ले सात दिवस सुधी चोखाना धावण सरखो होय बीजा साते पाणीना परपोटा सरखो थाय त्रीजा साते नाकना श्लेषम सरखो थाय चोथा साते

आवानी गोटली सरखो थाय–अथवा खजुरनी पेशी सरखो थाय ते जीव पहेले मासे अरूतालीस मासाजार थाय बीजे मासे पेशीथी कठण थाय त्रीजे मासे माताने दोहद (इछा) थाय सारी इछा पुण्यवतनी माताने थाय अने खराब इछा पापी जीवनी माताने थाय चोथे मासे मातानु अंग पुष्ट करे पांचमे मासे पेशी थकी पांच अकुरा नीकळे, बे हाथ, बे पग, एक माथु एम पांच छठे मासे पीत्त अने लोही उपजे सातमे मासे सातसो शीरा–नारूी उपजे पांचसें पेसी ते मांसस्थानक विशेष, नव मोटी नारूी थाय, नवाणु लाख रोम गळा हेठे, बे क्रोरू एकावन लाख रोम गळा उपर, सर्व मळी सारूी त्रणक्रोरू राम थाय आठमे मासे सपूर्ण अगनी प्राप्ति होय गर्जमाहि जीव उच्चार पासवण खेल सघाण पीत्त शुक्र शोणित पटर्ला वानां न करे ते केम जे पुरूष रसहरणी नारूीये आहारे, ते शरीरना अगोपांगपणे, पांच इद्रियपणे, हारू, मींजा, वाळ, मुछ, दाढी, रोम, नखपणे परगमावे मस्तक अवयवादि पण निपजावे गर्जमांहि जीवने कवल आहार नहि माता राजी तो गर्ज राजी माता दुःखी तो गर्ज दुःखी मातानी ने गर्जना

जीवनी नाभ रसहरणीने थळगी रही ठे जे माता आहार करे ते सर्व गर्भने नाभोनाभ प्रगमे, फळना धींटनी परे शरीरने विषे त्रण अग मातानां ठे मांस १, लोही २, माथानु भेजुं ३ त्रण अग पितानां ठे हाम १, हाडनी मींजा २, दाढी, मूठ, रोम, नख, प्रमुख ३ गर्भमांथी जीव मरीने नरकमां जाय तेम देवतामा पण जाय वळी गर्भमांहि माता सुवे तो गर्भ सुवे माता जागे तो गर्भ जाग गर्भावासमांहि अंधकार ठे महा अशुचि डुर्गंध ठे मल मूत्रनु स्थानक ठे त्यां जीव दुःखी थतो रहे ठे एम दुःख जोगवतां सवा नव मास जन्मे जीव अल्प लोही ने घणा शुक्रनो आहार करे तो पुत्र थाय १, अल्प शुक्र ने घणा लोहीनो आहार करे तो पुत्री थाय २, बे बरोबर आहार करे तो नपुसक थाय ३ मस्तकेथी जन्म पामे तो सुखेथी जन्मे कोइ पापी जीव आडो थइ आवे तो विनाश पण पामे वळी आ शरीर केवु ठे तो के महा अशुचीनो जंडार ठे आ शरीरने विषे अढार पृष्ट करंड साधा ठे सोळ पांसळी करंड ठे आठ एक पासे, आठ बीजे पासे चार आंगळनु गळु ठे बे आंगळनी आंख ठे चार आंगळनो नीलाड ठे बत्रीस दांत

छे थार आंगळनी जीभ छ साढात्रण पळनुं हैयु छे पचीस पळनुं काळजु छे बे आंत (कोठा) नानी छे, बे आंत माटी छे मोटी आंतमा वडीनीत प्रणमे छे नानी आंतमां लघुनीत प्रणमे छे बे पासा छे माबु ने जमणु पासु डाबे पासे सुखनो परिणाम छे जमणे पासे दुःखनो परिणाम छे आ शरीरने विषे एकसो साठ साधा छे एकसो सीत्तेर मर्मना स्थान छ त्यां घा लागे तो तत्काळ मरण पामे त्रणसो हाडनी मींजा छे नवसो नाडणी छे सातसो शीरा छे पांचसो पेसी मांसस्थानक छ नव नाडी मोटी छे सातसो नाडीनु विवरण--एकसो साठ नाडी नाभीथी निकळी ते ऊंची चाली मस्तके पहोंची ते रसहरणी नामथी ओळखाय छ एनी निरुपघाते आंख, कान, नाक, जीभनु बळ वधे एनी उपघाते आंख, कान, नाक, जीभनु बळ घटे एकसो साठ नाडी नाभिथी ऊपनी अधोगामिनी पगतळे जइ पहोंची तेनी निरुपघाते नेत्रनु अने जघानुं बळ वधे तेनी उपघाते मस्तके वेदना, शूळादिक उपजे आंखे आंधळो थाय, नेत्रनु बळ ओछु थाय एकसो साठ नाडि नाभिथी उपनी त्रीछी जइ हाथे जइ पहोंची

तेनी निरुपघाते घातुनु बळ वधे तेनी उपघाते पठवाके वेदना, पुंठवेदना, कुक्षवेदना, कुक्षे शूलादिक उपजे एकसो साठ नाकि नाजिथी उपनी अधोगामिनी गुह्य पहोंची एनी निरुपघाते वडीनीत लघुनीत, कूर्मवायु आदि रोड दुःख उपजे पचीस नाकि सलेखमनी धरणहारी ठे पचीस नाकि पित्तनी धरणहारी ठे दश नाकि शुक्रनी धरणहारी ठे एम पुरुषने सातसें नाकी शिराने नामे ठे एमां उसें सीत्तेर नाकि स्त्रीने ठे नपुंसकने उस एसी नाकी ठ मोटी नव नाकी तेनाथी जूदी जाणवी पुरुषना शरीरमांहे पाच कोठा ठे स्त्रीने ठ कोठा ठे गर्ज धरे ते कोठो अधिको ठे नव द्वार पुरुषने ठे बार द्वार स्त्रीने ठे पुरुषने पाचसें पेशी ठ स्त्रीने त्रीस ओठी ठे जेम सोनी जतरडाथी तार खेंची बहार काढे तेम गर्जावासमांथी गर्ज खेंचाइ कोटी कष्टे बहार आवे बाल्यावस्थामां मल मूत्र अशुचीमां रसवस रह्यो अनेक व्याधी जोगवी म्होटो थयो, वळी शरीर रस १, रुधिर २, मांस ३, मेद ४, हाड ५, मज्जा ६, शुक्र ७ ए सात धातुए करीने जर्यो ठ महा अशूची, मलमूत्रनो जंडार ठे ए द्वार तथा १२ द्वार हमेशां वहे ठे सडण पडण विध्वसण स्वजाव ठे अनेक मल मूत्र श्लेष्मादिके सहित ठ ते शरीर स्नानादिके करी शुचि केम थाय ? ए शरीरने

शूचीपणे करी माने छे, ते जीवनु मूर्खपणु छे शुचि-पवित्रता ता ज्ञान १, दर्शन २, चारित्र ३, तप ४ ए चारथी थाय, अने तेणे करी मोक्ष पामीए, एवु जाणी डुगछा टाळवी एक स्त्रीने एक जवमां नव लाख सतान उपजे नीपजे, ए जगवतीसूत्रमां छे जोगे जोगे असख्याता जीव समुर्छिम मरण पामे छे, ते केम तो के, वासनी चुगळीमांहे रु पींजीने जर्यु होय, ते चुगळीमा लोढानो खीलो अग्निमां तपावी रातोचोळ करी ते वांसनी नळीमा दाबे ने जेम रु विध्वस पामे-बळी जाय, तेम स्त्रीने सगे असख्यात जीव समुर्छिम मरण पामेछे आठ बोल उदारीक शरीरना कहे छे-त्रणसें साठ सांधा छे १, पांचसें पेशी छ २, सातसो शीरा छे ३, नवसो नारुणी छे ४, बहोंतेर कोठा छे ५, एकसो आठ नानी नाडि छे ६, नव मोटी धमण नाडि छे ७ साडीत्रण क्रोड रोम छे ८, ए आठ बोल उदारीक शरीरना जाणवा पीत्त टांक ६४ ॥ १ ॥ वीर्य टांक ३२ ॥ २ ॥ रुधिर शेर १० ॥३॥ मूत्र शेर १० ॥४॥ चरबी शेर ५ ॥५॥ विष्टा शेर ५ ॥६॥ ए मान निरोगी शरीरनु जाणवु

॥ इति गर्भावासना बोल सपूर्ण ॥

श्वासोश्वासना बोल ॥

अथ श्री श्वासोश्वासना बोल लिख्यते ॥

सो वर्षनी युग वीस ॥१॥ सो वर्षना सवत्सर सो ॥२॥ सो वर्षनां अयन बसो ॥३॥ सो वर्षनी ऋतु उसो ॥४॥ सो वर्षना मास बारसो ॥५॥ सो वर्षनां पखवाडियां चोवीस सो ॥६॥ सो वर्षनां अठवाडियां अडतालीस सो ॥७॥ सो वर्षना दिवस छत्रीस हजार ॥८॥ सो वर्षना पहोर बे लाख ने अठ्ठाशी हजार ॥९॥ सो वर्षनां मुहूर्त दस लाख ने एसी हजार ॥१०॥ सो वर्षनी घडी एकवीस लाख ने साठ हजार ॥११॥ सो वर्षना श्वास उश्वास चारसो सात क्रोड अडतालीस लाख ने चालीस हजार ते संख्याना अंक दस थाय ४०७,४८,४०,००० ॥१२॥ एक घडीना श्वास उश्वास अढारसो ने साडी त्र्याशी ॥१३॥ एक मुहूर्तना श्वास उश्वास साडत्रीस सो ने तोंतेर ॥१४॥ एक पहोरना

श्वास उश्वास चौद हजार एकसो ने पोणी ओगणपचास ॥१५॥ एक अहोरात्रिना श्वास उश्वास एक लाख तेर हजार एकसो ने नेवु ॥१६॥ पदर दिवसना श्वासोश्वास सोल लाख सत्ताणु हजार आठसो ने पचास ॥ १७॥ एक मासना श्वासोश्वास तेत्रीस लाख पचाणु हजार सातसो ॥१८॥ सवानव मासना श्वासोश्वास त्रण क्रोड चउद लाख दस हजार षसो ने पचीस ॥१९॥ एक वर्षना श्वासोश्वास चार क्रोड सात लाख अडताळीस हजार ने चारसो ॥२०॥ ब्रह्मदत्त नामे बारमो चक्री मरीने सातमी नरके उपन्यो त्या तेत्रीस सागरनु आयुष्य छे ते इहां मनुष्यपणे एकेक श्वासोश्वासने सुखे त्या नरकमा केटलो काल दुःख भोगवशे ते कहे छे अग्यार लाख पल्योपम छप्पन हजार पल्योपम नवसो ने पचीस पल्योपम ने एक पल्योपमनो त्रीजो भाग झाझेरु दुःख भोगवशे ॥१॥ काकदी नगरीना धन्ना अणगारे नव मासनु चारित्र पाळ्यु,ते नव मासना श्वासोश्वास त्रण क्रोड पांच लाख एकसठ हजार ने त्रणसो ते धन्नो अणगार चवी सर्वार्थसिद्ध विमाने उपन्या त्यां ३३ सागरनु आयुष्य छे तेणे इहां मनुष्यपणामां नव मासनु चारित्र पाळ्यु, कष्ट वेठ्यु, ते

एकेक श्वास उश्वासने कष्टे देवतानी गतिमां एकसो सात क्रोम सत्ताणु लाख ठन्नु हजार नवसो अट्ठाणु पल्योपम ने एक पल्योपमनो ठट्ठो नाग माठेरु एटलु देवतानु सुख नोग वशे हवे सवर तथा तपना फळनु प्रमाण कहे ठे सम्यक्दृष्टि जीव रागद्वेषरहित, क्षमा दयासहित, पोषध पक्रियजें ते सत्यावीससो ने सीत्तोतेर क्रोम सीत्तोतेर लाख सी चोतेर हजार सातसो ने सीत्तोतेर पल्य ने एक पल्यना नव नाग करीए ते मांहिला आठ नाग झाझेरु देवतानुं आयुष्य बांधे ॥१॥ एक पहोरवेळा सुधी सवर आदरे ते त्रणसो वेंतालीस क्रोम बावीस लाख बावीस हजार बसो बावीस पल्य ने एक पल्यना आठ नाग करीए ते मांहिला सात नाग झाझेरं देवतानुं आयुष्य बांधे ॥२॥ एक मुहूर्त्त सुधीनो संवर आदरे ते बाणुं क्रोम ओगणसाठ लाख पचीस हजार नवसो ने पचास पल्य ने एक पल्यना सात नाग करीए तेवा ठ नाग झाझेरु देवतानु आयुष्य बांधे ॥३॥ एक घमीनो मवर आदरे ते ठेंतालीस क्रोम, ओगणत्रीस लाख बासठ हजार नवसो ने सम्सठ पल्य ने एक पल्यना ठ नाग करीए ते मांहिला चार नाग झाझेरानुं देवतानु आयुष्य बांधे ॥४॥

एक श्वासाश्वास सुधीनो सवर श्रादर ते वे लाख चोपन हजार चारसो श्राठ पल्य ने एक पल्यनो चोथो जाग देवतानु श्रायुष्य बांधे ॥५॥ एक नमोक्कारसी तप करे ते श्रोगणीस लाख त्रेसठ हजार धसो सत्तसठ पल्य ने एक पल्यना चोथा जागनु देवतानुं श्रायुष्य बांधे ॥६॥ एक श्रनुपूर्वि गणे तेनां जघन्य ठासठ सागरनां नारकीना पाप नाश पामे, उत्कृष्ट पांचसो सागरना नारकीनां पाप नाश पामे ॥७॥ एक उणोदरी तप करे ते, सो वर्ष नारकी कर्म खपावे, तेथी श्रधिक खपावे ॥८॥ एक उपवास करे ते एक हजार वर्षे नारकी कर्म खपावे तेथी श्रधिक खपावे ॥९॥ एक छठ तप करे ते एक लाख वर्षे नारकी कर्म खपावे तेथी श्रधिक खपावे ॥ १० ॥ एक श्रठम तप करे ते क्रोड वर्षे नारकी कर्म खपावे तेथी श्रधिक खपावे ॥ ११ ॥ चार उपवास करे ते एक कोडाकोडी वर्षे नारकी कर्म खपावे तेथी श्रधिक खपावे ॥ १४ ॥

॥ इति श्वासोश्वासना बोल सपूर्ण ॥

जीवना चौद भेद ॥

अथ जीवना चौद भेदनी चर्चा लिख्यते ॥

जीवना १४ भेद–तेमां सूक्ष्म केटला ? ने बादर केटला ? उत्तर–असज्ञीना चार पहेला सज्ञी बे ते तेरमो ने चौदमो ए बे ॥ १ ॥ जीवना १४ भेद तेमां त्रस केटला ? ने स्थावर केटला ? उत्तर–स्थावर चार पहेला, अने त्रसना उपला दस ॥ २ ॥ जीवना १४ भेद तेमां पर्यासा केटला ? अने अपर्यासा केटला ? उत्तर–सात अपर्यासा ते १ ३ ५ ७ ९ ११ १३, अने सात पर्यासा ते २ ४ ६ ८ १० १२ १४ ॥ ३ ॥ जीवना १४ भेद तेमां नजरे केटला आवे ? अने नजरे केटला न आवे ? उत्तर–सात अपर्यासा अने एक सूक्ष्म पर्यासानो ए आठ नजर न आवे, अने बाकी ६ भेद नजरे आवे ॥ ४ ॥ जीवना १४ भेद तेमां त्रस नाडीमां केटला ? अने स्थावर नाडीमा केटला ? उत्तर–त्रस नाडीमां १४ भेद लाभे, अने

स्थावर नारीमा चार स्थावरना भेदनी नियमा पांच अपर्यांसा अने सज्ञीनो पर्यांसो एम ६ भेदनी भजना वखत होय अने वखते न पण होय ॥ ५ ॥ जीवना १४ भेद तेमां आ हारक केटला ? अने अणाहारक केटला ? उत्तर—सात अपर्यांसा ने एक सज्ञीनो पर्यांसो एम ७ अणाहारकमा लाजे, अने आहारकमा १४ भेद लाजे ॥ ६ ॥ जीवना १४ भेद तेमा मनसहित केटला ? अन मनरहित केटला ? उत्तर—मन सहित तो एक १४ मो अने मनरहित मांहे १४ भेद लाजे॥७॥ जीवना १४ भेद तेमां गर्भज केटला ? अने अणगर्भज केटला ? उत्तर—गर्भज बे तेरमा ने चौदमो, अने अणगर्भजमां तो चौद लाजे॥८॥जीवना १४ भेद तेमा साश्वता केटला ? अने असाश्वता केटला ? उत्तर—साश्वता तेर भेद लाजे, ते एक १३ मो भेद वर्जिने, अने असाश्वतो एक १३ मो ज भेद लाजे ॥ ए ॥ जीवना १४ भेद तेमा प्रत्येक केटला ? ने साधारण केटला ? उत्तर—साधारणमा चार भेद पहेला लाजे, अने प्रत्येकमा १४ भेद लाजे ॥ १० ॥ ए दस प्रश्न ॥ वाटे वेहेता जीवने शरीर केटलां लाजे ? उत्तर—तेजस १, कामण २, ए बे शरीर लाजे ॥ १ ॥ वाटे वेहेता जीवने जोग केटला लाजे ? उत्तर—एक कार्मण काय

जोग ॥ २ ॥ वाटे वहेता जीवने उपयोग केटला लाजे ? उत्तर–मन पर्यवज्ञान १, चक्षुदर्शन २, ए बे वर्जिने बाकी १० उपयोग लाजे ॥ ३ ॥ वाटे वेहेता जीवने गुणठाणां केटलां लाजे ? उत्तर–पहेलु, बीजु अने चोथु ए त्रण लाजे ॥४॥ वाटे वेहेता जीवने प्राण केटला ? उत्तर–एक आयुष्यप्राण ॥ ५ ॥ एक आगळीना टेरवामां जीवना नेद केटला? उत्तर–त्रण सूक्ष्म एकेन्द्रियना बे नेद, एक सन्नीनो पर्यासो एम ३ नी नियमा बीजा अपर्यासानी नजना जाणवी ॥ ६ ॥ हाथनी मुठीमा जीवना नेद केटला? उत्तर–पांच नेद चार स्थावरना नेद, एक सन्नीना पर्यासो एम ५ नेद लाजे ए ५ नी नियमा अने शष अपर्यासानी नजना ॥ ७ ॥ चार नाषामां सत्य १, असत्य २, ए बे पर्याप्ति (पूरी नाषा) मिश्र १, व्यवहार २, ए बे अपर्याप्ति (अधूरी नाषा) ॥ ८ ॥ सौधर्म देवलोके जीवना १४ नेद तेमां केटला नेद लाजे? उत्तर–ठ नेद चार पहेला अने सन्नीना २, ए ठ लाजे ॥ ए ॥ एमज रयणप्रनामां ठ नेद लाजे ॥ १० ॥ ए प्रश्न १०॥ एक आगळीनां टेरवामा प्रदेश केटला लाजे? उत्तर–एक पोताना जीवना असंख्याता प्रदेश लाजे एम अनंता जीवना प्रदेश लाजे ते

जीवथी प्रदेश असंख्यातगुणा अधिक लाभे ॥ १ ॥ एक आकाशप्रदेश उपर अजीवना केटला भेद लाभे? उत्तर–नव भेद धर्मास्तिकायनो देश १, प्रदेश २, अधर्मास्तिकायना २, पुद्गलना ४ अने एक अध्धासमयना एम ए भेद लाभे ॥ २ ॥ अलोकमां अजीवना भेद केटला लाभे? उत्तर–आकाशास्तिकायनो देश १, प्रदेश २, ए बे लाभे ॥३॥ एक जीवने माता केटली? अने पिता केटला? उत्तर–माता एक अने पिता घणा ॥ ४ ॥ पांचमे आरे छ नियठामादिक केटला लाभे? उत्तर–बीजो, त्रीजो अने चोथो ए त्रण लाभे ॥५॥ छ नियठामाहिथी एक पुलाकनुं साहरण न थाय, बाकी पांचनुं साहरण थाय ॥६॥ छेवट्ठ संघयणनो धणी मरीने उत्तारामां जाय तो पहेला चार देवलोक सुधी जाय पांचमे, छठ्ठे पहेला ५ संघयणनो धणी जाय सातमे आठमे पहेला ४ संघयणनो धणी जाय नवमे, दसमे, अग्यारमे अने बारमे देवलोके पहेला ३ संघयणनो धणी जाय नव ग्रैवेयके पहेला बे संघयणनो धणी जाय चार अनुत्तर विमाने तथा मोक्षमां एक पहेला संघयणनो धणी जाय ॥ ७ ॥ वधे पण ते शुं? तृष्णा ॥ १ ॥ घटे पण वधे नहि ते शुं? आयुष्य ॥२॥ घटे पण मरु ने वधे

पण स्थरु ते शु? मनना परिणाम ॥ ३॥ न वधे न घटे ते शु? तीर्थंकरे ज्ञान दीठा ते ॥४॥ वळी बीजा चार जागा—वधे पण घट नहि ते शु? सिद्ध जगवत ॥ १ ॥ घटे पण वधे नहि ते शु? जव्यजीव ॥ २ ॥ घटे ने वधे ते शु? पडिवाइ समदृष्टि ॥ ३ ॥ न वधे न घटे ते शु? अजव्य जीव ॥ ४ ॥ पाच इन्द्रियना सठाण ॥ श्रोत्रेंद्रियनु सठाण कलबु फुलनु ॥ १ ॥ चक्षु इन्द्रियनु सठाण मसुरनी दाळनु ॥ २ ॥ रसेन्द्रियनु सठाण ठरपलानु ॥ ३ ॥ घ्राणेन्द्रियनु सठाण नाविनी कोपळीनु ॥ ४ ॥ स्पर्शेन्द्रियनु सठाण नाना प्रकारनु ॥ ५ ॥ पाच ईन्द्रियना विषय कहे ठे ॥ श्रोत्रेंद्रियनो विषय १२ जोजननो ॥ १ ॥ चक्षुइन्द्रियनो विषय लाख जोजननो ॥ २ ॥ नासिका ॥ ३ ॥ जीज ॥ ४ ॥ स्पर्शेन्द्रिय ए त्रणेनो विषय नव जोजननो ॥ ५ ॥ जीवतत्त्व चौद राजलोकमाहे लाजे ॥ १ ॥ अजीवतत्त्व लोक अलोक मांहि लाजे ॥ २ ॥ पाप १, आश्रव २, बध ३, ए लोक आखामांहि लाजे ॥ ५ ॥ पुण्यतत्त्व देशे ऊणा चौद राजलोकमांहि लाजे, 'लोगदेसेय बायरा' इति वचनात् ॥ ६ ॥ सवर ७, नीर्जरा ८, ए बे त्रिग लोकमां लाजे ॥ ८ ॥ मोक्षतत्त्व अढी द्वीपमाहि लाजे

॥ ए ॥ समकितनु जाजन जीव ॥ १ ॥ जीवनु जाजन अजीव ॥ २ ॥ अजीवनु जाजन लोक ॥ ३ ॥ लोकनु जाजन अलोक ॥ ४ ॥ अलोकनु जाजन केवलज्ञान, केवलदर्शन ॥५॥
ठगी ठगीने ठग्या ते जरत महाराजा ॥ १ ॥ ठगीने आथम्या ते ब्रह्मदत्त चक्रवर्ति ॥२॥ आथमीने ठग्या ते हरकेशी अणगार ॥ ३ ॥ आथमीने आथम्या ते कालसूरीया कसाइ ॥ ४ ॥ ए चोजगी ठाणांगे ठे ॥ पापनु कुटुंब कहे ठे ॥ पापनी माता हिंसा ॥ १ ॥ पापनो बाप लोज ॥ २ ॥ पापनो जाइ जूठो ॥ ३ ॥ पापनी बेन तृष्णा ॥ ४ ॥ पापनी स्त्री माया ॥ ५ ॥ पापनो दीकरो लालच ॥ ६ ॥ पापनी दीकरी कुबुद्धि ॥ ७ ॥ पापनु मूळ क्रोध ॥८॥ हवे जुदा जुदां द्रव्योनां सठाण कहे ठे तरुकानु सठाण गाकानी ठधनु ॥ १ ॥ ठायानु सठाण पेटीनु ॥२॥ अलोकनु सठाण पोला गोळानु ॥ ३ ॥ अधोलोकनु सठाण त्रापानु ॥ ४ ॥ त्रिठा लोकनु सठाण झालरनु ॥ ५ ॥ ठर्ध्वलोकनु सठाण मृदगनु ॥ ६ ॥ दिवसनु सठाण मोतीनी लटनु ॥ ७ ॥ दिशानु सठाण गाकानी ठधनु ॥ ८ ॥ पृथ्वीनु सठाण मसुरनी दाळनु ॥ ए ॥ पाणीनु सठाण पाणीना बिंदुनु ॥ १० ॥ अग्निनु सठाण सुइना

नारानु ॥ ११ ॥ वायुनु सठाण ध्वजापताकानु ॥ १२ ॥ वनस्पतिनु सठाण नाना प्रकारनु ॥ १३ ॥ त्रसकायनु सठाण नाना प्रकारनु ॥ १४ ॥ अढिद्वीप माहिला चन्द्रमा, सूर्यनु सठाण अरू छात्रनु ॥ १५ ॥ अढि द्वीप बाहिरला चन्द्रमा सूर्यनु सठाण पाकी इटनु ॥ १६ ॥ आठ फरस काया ऊपर कहे छे ॥ खरखरो फरस ते पगनो तळो ॥ १ ॥ सुंहाळु ते ताळवु ॥ २ ॥ भारे ते हाडका ॥ ३ ॥ हळवो ते केश ॥ ४ ॥ टाढी ते काननी बुट ॥ ५ ॥ उनी ते छाती ॥ ६ ॥ चीगटो ते नाकनी मांकी ॥ ७ ॥ लूखो ते जीभनो फरस ॥ ८ ॥ नारकीनो जीव काळ करीने जघन्य उत्कृष्टो केटले आतरे जइ उपजे ? उत्तर—जघन्य हजार जोजन झाझेराने आंतर उपजे ते केम ? पहेली नरकनो जीव काल करीने—महा पाताल कलशा लाख जोजनना लांबा पहोळा छे, ने हजार जोजननी ठीकरी जाडी छे तेने भेदीने पाताल कलशामा जळचरपणे उपजे, उत्कृष्टो त्रिछो स्वयम्भूरमणसमुद्रमां अने उचो मेरुनी वावडीमां उपजे ॥ ९ ॥ भवनपतियी बीजा देवलोकना देवता काल करीने जघन्य उत्कृष्ट केटले आतरे उपजे ? उत्तर—जघन्य तो आंगुलना असख्यातमा भागे पोतानी

शय्याना श्राचूपणमांहि पृथ्वीकायपणे उपजे, उत्कृष्टो नीचो सातमी नरकना छेल्ला चरिम प्रदेशमां त्रिजो स्वयम्भूरमणसमुद्रनी वेदीकामां श्रने उचो इसीपभारामां उपजे ॥१॥ त्रीजा देवलोकथी श्राठमा देवलोकनां देवता काल करीने जघन्य उत्कृष्टा केटले श्रांतरे उपजे ? उत्तर, जघन्य श्रांगुलना असंख्यातमे भागे उपजे ज्यारे पन्नगवननी वावडीमां श्राठमा देवलोक सुधीना देवता जल श्रवगाहीने क्रीडा करतां श्रायु त्रुटे तेवारे समय पुरो थये माछलीना गर्भपणे उपजे, श्रथवा पूर्वभवनी मनुष्यपणानी स्त्रीथी घणो स्नेह करी, श्रतिरागे करीने ते स्त्रीनो स्पर्श करे, त्यारे प्रदेश प्रवेशतो काल करे ते गर्भमांहि पुरुषनु वीर्य हतु ते त्यां उपजे नीचो तो महापाताल कलशा लाख जोजनना छे, तेना त्रण भाग करीए तेना सहुथी नीचेना भागमा मच्छपणे उपजे त्रिजो स्वयम्भूरमण समुद्रमा उपजे ॥ ३ ॥ नवमा देवलोकथी सर्वार्थसिद्धना देवता काळ करीने जघन्य उत्कृष्टा केटले श्रातरे उपजे ? उत्तर–जघन्य तो विद्याधरनी श्रेणीमां नीचो हजार जोजननी विजय ऊंडी छे तेमा श्रने त्रीजो मनुष्यक्षेत्रने अंते उपजे ॥ ४ ॥ श्री

साधुजीनी अवगाहना उत्कृष्टी ५०० धनुष्यनी, आयुष्य देशे उणु पूर्व क्रोमनु देशव्रती श्रावकनी अवगाहना १००० जोजननी माछलानी अपेक्षाए, आयुष्य देशे उणु पूर्व क्रोमनु मरुदेवा मातानी अपेक्षाए ॥ ५ ॥ केवलीनी अवगाहना त्रण लोक प्रमाणे केवल समुदघातनी अपेक्षाए आयुष्य देशे उणु पूर्व क्रोमनु ॥ ६ ॥ आला लोकमांहि अजीवना भेद केटला? उत्तर—अग्यार भेद लाभे धर्मास्तिकायनो देश १, प्रदेश २, अधर्मास्तिकायनो देश १, प्रदेश २, आकाशास्तिकायनो देश १, प्रदेश २ कालनो १, पुद्गलना ४, एम ११ भेद लाभे ॥ ७ ॥ अलोकमां अजीवना वे भेद लाभे देश १ प्रदेश २, ए बे लाभ ॥ ८ ॥ अढिद्वीप बाहिर काल वर्जिने अजीवना १० भेद लाभे ॥ ९ ॥ द्रव्य १, क्षेत्र २, काल ३, भाव ४ ए चारमां सूक्ष्म घणो कोण? ने थोमो कोण? उत्तर—सर्वथी थोमो सूक्ष्म काल १, तेथी क्षेत्र सूक्ष्म २, तेथी द्रव्य सूक्ष्म ३, तेथी भाव सूक्ष्म छे ॥ १० ॥ परमाणुनु परमाणुपणे जो पुद्गल रहे तो कटलो काळ रहे? उत्तर—असख्यातो काळ रहे ॥ ११ ॥ जे आकाश प्रदेशे परमाणुओ हता ते फरीने तेज आकाश प्रदेशे पाछा

आवे तो केटले काळे आवे? उत्तर—असंख्याते काले ॥ १२ ॥ अजोगी घणा ? के अणा
हारक घणा? उत्तर—अणाहारक घणा ते वाटे वेहेता अणाहारक छे माट ॥ १३ ॥ वाटे
वेहृता जीव घणा ? के सिद्ध घणा ? उत्तर—वाटे वेहेता जीव घणा निगोद छे माटे ॥१४॥

॥ इति जीवना चौद भेदनी चर्चा संपूर्ण ॥

जीवना ५६३ भेद ॥

॥ अथ श्री ५६३ भेद जीवना छे तेनी चर्चा ॥

गाथा—भेय १ इंद्रिय २ पज्जत्ते ३, सासप ४ सन्नि ५ चवणे ६ लेस्सा ७ ॥
जोगे ८ सरीरे ९ मणसहीए १०, दिठिगोयरे ११ गब्भ १२ नाणिए वेद १३ ॥ १ ॥
आया १४ मरणे १५ समुग्घाए १६, पज्जा १७ विभंग अणाणे १८ उदिनाणेय १९॥

उच्छिदसण २० परित्त २१ सावग २२, गुणठाणे २३ लोया २४ ऽलोप २५ चेत्र ॥ २ ॥

जीवना ५६३ भेद माहि १४ भेद नारकीना, ४८ भेद तिर्यंचना, ३०३ भेद मनुष्यना, १९८ भेद देवताना ए सर्व मळी ५६३ भेद थाय स्त्रीवेदमां ३४० भेद लाभे, ते ५ सन्नी तिर्यंचना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १०, तथा मनुष्यना १०१ गर्भज मनुष्यना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए २०२ मनुष्यना अने देवताना ६४ भेद प्रथम जातिना बीजा देवलोक सुधीना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १२८ देवताना सर्व मळी ३४० भेद लाभे ॥ १ ॥ पुरुष वेदमां ४१० भेद लाभे, ते सन्नी तिर्यंचना १० भेद, गर्भज मनुष्यना २०२ भेद, देवताना १९८ भेद सर्व मळी ४१० भेद लाभे ॥ २ ॥ नपुंसक वेदमा १९३ भेद लाभे ते १४ भेद नारकीना, ४८ भेद तिर्यंचना, मनुष्यना जुगलीया वर्जिने १३१ भेद, सर्व मळी १९३ भेद लाभे ॥ ३ ॥ त्रणे वेदमां ४० भेद लाभे ते सन्नी तिर्यंचना १० भेद, १५ कर्मभूमि मनुष्यना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ३०, सर्व मळी ४० भेद लाभे ॥ ४ ॥ समकित पक्षामा पाच अनुत्तर विमानना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १० भेद लाभे ॥ ५ ॥ समुच्चय समकितीमां तो २८३ भेद लाभे

ते १४ नेद नारकीनामाथी सातमी नरकनो अप्रजासो वर्ज्यो, शेष १३ नेद नारकीना, ५ सङ्गी तिर्यंच पचेंड्रियना अप्रजासा ने प्रजासा ए १० नेद, ५ असंज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता, ३ विगलेन्द्रियना अप्रजासा ए १८ नेद तिर्यंचना, १५ कर्मनूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजासा ३० ने त्रीस अकर्मनूमिना अप्रजासा ने प्रजासा ए ९० मनुष्यना ने देवतामाहि १५ परमाधामी ने त्रण किलविषी ए १८ वर्जिने शेष ८१ जाति दवताना अप्रजासा ने प्रजासा ए १६२ नेद दवताना सर्व मळी २८३ नेद लाने ॥ ६ ॥ मिथ्यादृष्टिमां २८० नेद लाने ते ७ मी नरकनो अप्रजासो ने तिर्यंचना ३० नेद ते २२ एकेन्द्रियना अने ५ असङ्गी तिर्यंच पचेन्द्रियना, ३ विगलेन्द्रियना ए ८ ना प्रजासा ने मनुष्यना २१३ नेद ते १०१ समुर्छिम मनुष्यना अप्रजासा ने ५६ अतरद्वीपाना अप्रजासा न प्रजासा ११२, ए सर्व मळी २१३ नेद मनुष्यना, ने देवताना ३६ नेद ते १५ परमाधामी, ३ किलविषी ए १८ ना अप्रजासा ने प्रजासा ए ३६. एम सर्व मळो २८० नेद लाने ॥ ७ ॥ समामिथ्यात्वदृष्टि मां ९४ नेद ते ७ नरकना प्रजासा, ५ सङ्गी तिर्यंच, १५ कर्मनूमिना मनुष्य, देवतामाहि

१५ परमाधामी, ३ किल्बिषी, ए ग्रैवेयक, ५ अनुत्तरविमानना ए ३२ वर्जिने शेष ६७ जातिना देवता ए सर्व मळी ए४ जेद प्रजाप्ताना लाजे ॥ ७ ॥ बे दृष्टि ते समकित दृष्टि ने मिथ्यात्वदृष्टि, ए २ दृष्टिमां १७ए जेद लाजे ते पहेली ६ नरकना अप्रजाप्ता ने ५ सञ्ज्ञी तिर्यंच, ५ असञ्ज्ञी तिर्यंच, ३ विगलेन्द्रिय ए १३ ना अप्रजाप्ता, १५ कर्मभूमि मनुष्यना अप्रजाप्ता ३० अकर्मजूमिना प्रजाप्ता अप्रजाप्ता मळी ६० अकर्मजूमि ए ७५ जेद मनुष्यना, देवतामां १० जवनपति, १६ वाणव्यंतर, १० जंजका, १० ज्योतिषि, १२ देवलोक, ए लोकांतिक ए ६७ जेदना अप्रजाप्ता ने ए ग्रैवेयकना प्रजाप्ता अप्रजाप्ता ए ७५ जेद देवताना सर्व मळी १७ए जेद लाजे ॥ ए ॥ त्रणे दृष्टिमां ए४ जेद लाजे ते समामिथ्यात्वीनो माफक जाणवु ॥ १० ॥ प्रजाप्तामां २३१ जेद लाजे ते ७ नरकना, २४ तिर्यंचना, १०१ सञ्ज्ञी मनुष्यना ए एए जेद देवताना सर्व मळी २३१ भेद प्रजाप्ताना लाजे ॥ ११ ॥ अप्रजाप्तामां ३३२ जेद लाजे ते २३१ तो पना अप्रजाप्ता ने १०१ समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता ए ३३२ लाजे ॥ १२ ॥ सास्वतामां २५० जेद लाजे ते ७ नारकीना प्रजाप्ता, तिर्यं

चना ४० नेदमांथी ५ सञ्ज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता वर्जिने शेष ४३ नेद तिर्यंचना ने मनुष्य सञ्ज्ञी तेना १०१ नेदना प्रजाप्ता, ९९ जातिना देवताना प्रजाप्ता ए सर्व मळी २५० नेद लाने ॥ १३ ॥ अशाश्वतामांहि ३१३ नेद लाने ते ७ नरकना अप्रजाप्ता, ५ सञ्ज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता, १०१ समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता, १०१ सञ्ज्ञी मनुष्यना अप्रजाप्ता ए २०२ मनुष्यना, ९९ जातिना देवताना अप्रजाप्ता, सर्व मळी ३१३ नेद लाने ॥ १४ ॥ सञ्ज्ञीमां ४२४ नेद लाने ते १४ नेद नारकीना, ५ सञ्ज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १० तिर्यंचना सञ्ज्ञी मनुष्य १०१ ना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए २०२ मनुष्यना ने १९८ नेद देवताना सर्व मळी ४२४ नेद लाने ॥ १५ ॥ असञ्ज्ञीमांहि १३९ नेद लाने ते १०१ समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता, ३८ नेद तिर्यंचना, ते ४८ मांथी १० नेद सञ्ज्ञीना वर्ज्या, शेष ३८ नेद तिर्यंचना, सर्व मळी १३९ नेद लाने ॥ १६ ॥ पांचसे त्रेसठमांहि चवे तो ३७१ नेद चवे ७ नरकना प्रजाप्ता, ९९ देवताना प्रजाप्ता, ४८ नेद तिर्यंचना, ८६ जातिना जुगलियाना अप्रजाप्ता वर्जिने शेष २१७ नेद मनुष्यना, सर्व मळी ३७१ नेद लाने ॥१७॥

न चव तेमां १७२ नेद लाने ते ७ नरकना अप्रजाता, ९९ देवताना अप्रजाता, ८६ जुगलियाना अप्रजाता, सर्व १९२ नेद न चवे तेमां लाने ॥ १८॥ आगली ३ लेश्या तेमा प्रत्यक २ मा ४५९ नेद लाने ते नारकीना ६ नेद, ते एकेकी लेश्या त्रण त्रण नरके लाने तेथी, ४८ नेद तिर्यंचना, ३०३ नेद मनुष्यना, ५१ जाति देवताना अप्रजाता प्रजाता १०२, सर्व मळी ४५९ नेद लाने ॥ १९ ॥ तेजुलेश्यामां ३४३ नेद लाने ते बादर, पृथ्वी, पाणी, वनस्पति ए ३ ना अप्रजाता, सञ्ज्ञी तिर्यंचना १०नेद,सञ्ज्ञी मनुष्यना २०२ नेद, ६४ जातिना देवताना अप्रजाता प्रजाता १२८,सर्व मळी ३४३ नेद लाने ॥२०॥ पद्मलेश्यामांहि ६६ नेद लाने ते सञ्ज्ञी तिर्यंचना १० नेद, १५ कर्मभूमिना अप्रजाता प्रजाता ३०, देवतामां बीजो किलत्रिषी, त्रीजो, चोथो, पांचमो देवलोक ने ९ लोकांतिक ए १३ ना अप्रजाता प्रजाता २६ सव मळी ६६ नेद लाने ॥ २१ ॥ शुक्ल लेश्यामा ८४ नेद लाने ते सञ्ज्ञी तिर्यंचना १० नेद, १५ कर्मनूमिना अप्रजाता प्रजाता ३०, ने देवतामांहि त्रीजो किलत्रिषी १, छठ्ठेथी ते बारमा देवलोक सुधी ७ देवलोक, ९ ग्रैवेयक, ५ अनुत्तर विमान ए २२ ना अप्रजाता प्रजाता ४४,

सर्व मळी ७४ भेद लाभे ॥ २२ ॥ उप लेश्यामा ४० भेद ते १० भेद सन्नी तिर्यंचना ने ३० भेद मनुष्यना ते १५ कर्मभूमिना अप्रजाता ने प्रजाता ३०, सर्व मळी ४० भेद लाभे ॥ २३ ॥ आगली ४ लेश्यामा २७७ भेद लाभे ते प्रथम ५१ जातिना देवताना अप्रजाता ने प्रजाता १०२, ने जुगलीयाना ८६ भेदना अप्रजाता ने प्रजाता १७२ ने बादर, पृथ्वी, पाणी, वनस्पति ए ३ ना अप्रजाता ए सर्व मळी २७७ भेद लाभ ॥ २४ ॥ उदारिक काययोगमा ३५१ भेद लाभे ते ३०३ भेद मनुष्यना, ४८ भेद तिर्यंचना ए ३५१ भेद लाभे ॥ २५ ॥ उदारिक मिश्रयोगमा २४७ भेद लाभे ते १०१ समुर्छिम मनुष्य, १०१ सन्नी मनुष्यना अप्रजाता, १५ कर्मभूमिना प्रजाता, तिर्यंचना २४ भेद अप्रजाता बादर वायु कायना प्रजातो ५ सन्नी तिर्यंचना प्रजाता सर्वे मळी २४७ भेद लाभे ॥ २६ ॥ वैक्रेय योगमा २३३ भेद लाभे ते १९८ देवताना, १४ भेद नारकीना, ५ सन्नी तिर्यंचना प्रजाता, बादर वायुकायनो प्रजातो, १५ कर्मभूमिना प्रजाता, सर्व मळी २३३ भेद लाभे ॥ २७ ॥ वैक्रेयना मिश्रमा २१९ भेद लाभे ते पूर्वे २३३ भेद कह्या तेमांथी ९ ग्रैवेयक, ५ अनुत्तर

न चवे तेमां १ए२ नेद लाने ते ७ नरकना अप्रजाप्ता, एए देवताना अप्रजाप्ता, ए६ जुगलियाना अप्रजाप्ता, सर्व १ए२ नेद न चवे तेमां लाने ॥ १७॥ आगली ३ लेश्या तेमां प्रत्येक ३ मां ४५ए नेद लाने ते नारकीना ६ नेद, ते एकेकी लेश्या त्रण त्रण नरके लाने तेथी, ४७ नेद तिर्यंचना, ३०३ नेद मनुष्यना, ५१ जाति देवताना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता १०२, सर्व मळी ४५ए नेद लाने ॥ १ए ॥ तेजुलेश्यामां ३४३ नेद लाने ते बादर, पृथ्वी, पाणी, वनस्पति ए ३ ना अप्रजाप्ता, सन्नी तिर्यंचना १० नेद, सन्नी मनुष्यना २०२ नेद, ६४ जातिना देवताना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता १२७, सर्व मळी ३४३ नेद लाने ॥२०॥ पद्मलेश्यामांहि ६६ नेद लाने ते सन्नी तिर्यंचना १० नेद, १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता ३०, देवतामां बीजो किल्विषी, त्रीजो, चोथो, पांचमो देवलोक ने ए लोकांतिक ए १३ ना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता २६ सर्व मळी ६६ नेद लाने ॥ २१ ॥ शुक्ल लेश्यामां ७४ नेद लाने ते सन्नी तिर्यंचना १० नेद, १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता ३०, ने देवतामांहि त्रीजो किल्विषी १, छठ्ठाथी ते बारमा देवलोक सुधी ७ देवलोक, ए ग्रैवेयक, ५ अनुत्तर विमान ए २२ ना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता ४४

सर्व मळी ७४ जेद थाजे ॥ २२ ॥ ठए लेश्यामा ४० जेद ते १० जेद सञ्ज्ञी तिर्यंचना ने ३० जेद मनुष्यना ते १५ कर्मजूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ३०, सर्व मळी ४० जेद थाजे ॥ २३ ॥ आगली ४ लेश्यामा २७७ जेद थाजे ते प्रथम ५१ जातिना देवताना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता १०२, ने जुगलीयाना ७६ जेदना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता १७२ ने बादर, पृथ्वी, पाणी, वनस्पति ए ३ ना अप्रजाप्ता ए सर्व मळी २७७ जेद थाजे ॥ २४ ॥ उदारिक काययोगमा ३५१ जेद थाजे ते ३०३ जेद मनुष्यना, ४७ जेद तिर्यंचना ए ३५१ जेद थाजे ॥ २५ ॥ उदारिक मिश्रयोगमा २४७ जेद थाजे ते १०१ समुर्छिम मनुष्य, १०१ सञ्ज्ञी मनुष्यना अप्रजाप्ता, १५ कर्मजूमिना प्रजाप्ता, तिर्यंचना २४ जेद अप्रजाप्ता बादर वायुकायना प्रजाप्तो ५ सञ्ज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्ता सर्वे मळी २४७ जेद थाजे ॥ २६ ॥ वैक्रेय योगमा २३३ जेद थाजे ते १९७ देवताना, १४ जेद नारकीना, ५ सञ्ज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्ता, बादर वायुकायनो प्रजाप्तो, १५ कर्मजूमिना प्रजाप्ता, सर्व मळी २३३ जेद थाजे ॥ २७ ॥ वैक्रेयना मिश्रमा २१९ जेद थाजे ते पूर्वे २३३ जेद कह्या तेमाथी ए ग्रैवेयक, ५ अनुत्तर

विमान, प. १४ ना प्रजासा २ ते ७ नरकना अप्रजासा, ८८ देवताना अप्रजासा, ७६ मिश्रमा १५ कर्मनूमिना प्रजा ८९ नेद न ववे तेमा लाजे ॥ १०॥ आगली३ लेश्या तेमां नेद लाजे ते ३३२ अप्रजासा नो नारकीना ६ नेद, ते एकेकी लेश्या त्रण त्रण नरके लाजे सत्य मनादि ४ ने सत्य वचनादि मनुष्यना, ५१ जाति देवताना अप्रजासा प्रजासा १०२, सर्व ७ नारकी, १०१ सन्नी मनुष्य, ५ तेजुलेश्यामा ३४३ नेद लाजे ते वादर, पृथ्वी, पाणी, योगमा लाजे ॥ ३१ ॥ व्यवहार वच तिर्यचना १० नेद, सन्नी मनुष्यना २०२ नेद, ६४ जातिना फक्त तेज ने ५ असंज्ञी तिर्यंच ने मळी ३४३ नेद लाजे ॥२०॥ पद्मलेश्यामाहि ६६ नेद लाजे लाजे ॥ ३२ ॥ उदारिक शरीरमा ३८मेना अप्रजासा प्रजासा ३०, देवतामा बीजो किलविषी, १८० नेद देवताना वर्जिने शेष ३५१ लोकांतिक ए १३ ना अप्रजासा प्रजासा २६ सर्व मळी ते १९० नेद देवताना, १४ नेद नारामां ७४ नेद लाजे ते सन्नी तिर्यचना १० नेद, १५ प्रजासा, वादर वाउकायनो प्रजासो ए। देवतामाहि त्रीजो किलविषी १, उठ्ठेथी ते वारमा नूमिना प्रजासाना लाजे ॥३५॥ तेजस ५ अनुत्तर विमान प ११ ना अप्रजासा प्रजासा ४४

३४७ भेद लाभे ते कार्मण काययोगनी म र लेश्यामा ४० भेद ते १० भेद सञ्ज्ञी तिर्यचना ने
॥३०॥ मनसहितमा २१२ भेद लाभे तें अप्रजाता ने प्रजाता ३०, सर्वे मळी ४० भेद लाभे
३५१ भेद लाभे ते ७ नरकना अप्रजा भेद लाभे ते प्रथम ५१ जातिना देवताना अप्र
वर्जिन शेप ४३ भेद तिर्यचना, १०१ ा ८६ भेदना अप्रजाता ने प्रजाता १७२ ने बादर,
अप्रजाता ए २०२, ९९ जातिना दव प्रजाता ए सर्व मळी २७७ भेद लाभे ॥ २४ ॥ उदा
नजरे आवे तेमा २२५ भेद लाभे ते ते ३०३ भेद मनुष्यना, ४८ भेद तिर्यचना ए ३५१ भेद
५ सञ्ज्ञी तिर्यच, ५ असञ्ज्ञी तिर्यच, मा २४७ भेद लाभे ते १०१ समुर्छिम मनुष्य, १०१ सञ्ज्ञी
एम २२५ भेद लाभे ॥४१॥ नजरे ना प्रजाता, तिर्यचना २४ भेद अप्रजाता बादर वायु
५ सूक्ष्म एकेन्द्रिय ने साधारण व ा प्रजाता सर्वे मळी २४७ भेद लाभे ॥ २६ ॥ वैक्रेय
॥ ४२ ॥ गर्भजमां २१२ भेद लाभे, देवताना, १४ भेद नारकीना, ५ सञ्ज्ञी तिर्यचना प्रजाता,
ए सर्वे मळी २१२ भेद लाभे ॥, कर्मभूमिना प्रजाता, सर्वे मळी २३३ भेद लाभे ॥ २७ ॥
१९८ भेद देवताना, ३८ भेद लाभे ते पूर्वे २३३ भेद कह्या तेमाथी ए ग्रैवेयक, ५ अनुत्तर

र्छिम मनुष्य ए सर्वे मळी ३५१ भेद लाभे ॥ ४४ ॥ त्रस नाडीमांहि ५६३ भेद लाभे ॥४५॥ स्थावर नाडीमां १५० भेद लाभे ते १०१ समुर्छिम मनुष्य, १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता ए ११६ ने ३४ भेद तिर्यंचना ते २२ एकेन्द्रियमांथी एक बादर वायुकायनो प्रजाप्ता वर्जिने २१ एकेन्द्रियना, ३ विगलेन्द्रियना अप्रजाप्ता, ५ सञ्ज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता, ५ असञ्ज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता ए ३४ तिर्यंचना ए १५० भेद लाभे ॥ ४६ ॥ ज्ञान आत्मामां २०३ भेद लाभे ते सातमी नरकना अप्रजाप्तो वर्जिने १३ भेद नारकीना, ५ सञ्ज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता प्रजाप्ता ए १० ने ५ असञ्ज्ञी तिर्यंचना अप्रजाप्ता ने ३ विगलेन्द्रियना अप्रजाप्ता ए १८ तिर्यंचना, ने १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ३०, ने ६० अकर्मभूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए ९० मनुष्यना ने १५ परमाधामी, ३ किल्बिषी ए १८ ना प्रजाप्ता ने अप्रजाप्ता ए ३६ भेद वर्जिने शेष १६२ भेद देवताना ए सर्व मळी २०३ भेद लाभे ॥ ४७ ॥ चारित्र आत्मामां १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ता लाभे ॥ ४८ ॥ शेष ६ आत्मामांहि ५६३ भेद लाभे ॥ ४९ ॥ अप्रजाप्ता मरीने १७९ भेदमां जाय ते १०१ समुर्छिम मनुष्य,

४० नेद तिर्यचना, १५ कर्मनूमिना अप्रजाता ने प्रजाता ३०, ए १७ए नेदमांहि जाय ॥ ५० ॥ स्त्री मरीने ५६१ नेदमां जाय ते ५६३ मांथी सातमी नरकनो अप्रजाता ने प्रजातो वर्जिने शेष ५६१ मा जाय ॥ ५१ ॥ पुरुष मरीने ५६३ नेदमांहि जाय ॥ ५२ ॥ नपुसक मरीने ५६३ नेदमांहि जाय ॥ ५३ ॥ वेदनीय समुद्घातमा ५६३ नेद लाने ॥ ५४ ॥ कषाय समुद्घातमां ५६३ नेद लाने ॥ ५५ ॥ मारणांतिक समुद्घातमा ३७१ नेद लाने ते च व्यानी माफक जाणवु ॥ ५६ ॥ वैक्रेय समुद्घातमा २१ए नेद लाने, ते वैक्रेय मिश्रयोगनी माफक जाणवु ॥ ५७ ॥ तेजस समुद्घातमां १०५ नेद ते ०५ जातिना देवतानां प्रजाता ने १५ कर्मनूमिना प्रजाता, ५ सज्ञी तिर्यचना प्रजाता ए १०५ नेद लाने ॥ ५० ॥ आहारक समुद्घातमा १५ कर्मनूमिना प्रजाता लाने ॥ ५ए ॥ केवल समुद्घातमा १५ कर्मनूमिना प्रजाता लाने ॥ ६० ॥ आगली ३ पर्यायमां ५६३ नेद लाने ॥ ६१ ॥ श्वासो-श्वास पर्यायमा ५५२ नेद लाने ते एकेन्डियना ११ अप्रजाता वर्ज्या, शेष ५५२ नेद लाने ॥ ६२ ॥ नाषा पर्यायमां ३२६ नेद लाने ते ७ नरकना ने ५ सज्ञी तिर्यचना अप्र

जाप्ता ने प्रजाप्ता १०, असन्नी तिर्यचना ५ नेद ने ३ विगलेन्द्रियना ए ० ना प्रजाप्ता ने सन्नी मनुष्यना २०२ नेद ने एए जातिना देवताना प्रजाप्ता एम ३२६ नेद लाने ॥ ६३ ॥ मनः पर्यायमां ११२ नेद लाने ते ७ नारकीना, ५ सन्नी तिर्यंच ने १०१ सन्नी मनुष्य, एए जातिना देवता, ए सर्वना प्रजाप्ता २१२ मा मनःपर्याय लाने ॥ ६४ ॥ विनग ज्ञानमां २२२ नेद लाने ते ५ अनुत्तर विमानना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १० नेद वर्ज्या, बाकी १०० नेद देवताना ने १४ नेद नारकीना, १५ कर्मनूमिना मनुष्यना प्रजाप्ता ने ५ सन्नी तिर्यंचना प्रजाप्ता ए २२२ नेद लाने ॥ ६५ ॥ अवधिज्ञानमां २१० नेद लाने ते १५ परमाधामी, ३ किल्बिषी ए १० वर्जिने शेष ०१ जातिना देवताना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता १६२ ने १३ नारकीना ते १४ मांथी सातमी नरकनो अप्रजाप्तो वर्जिने १३ नेद ने १५ कर्मनूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए ३० ने ५ सन्नी तिर्यंचना प्रजाप्ता ए २१० नेद लाने ॥६६॥ अवधिदर्शनमांहि २४७ नेद लाने तेमां १एए नेद देवताना, १४ नेद नारकीना, १५ कर्मनूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ३० ने ५ सन्नी तिर्यंचना प्रजाप्ता ए सर्वे मळी २४७

नेद लाने ॥ ६७ ॥ परितमांहि ५६३ नेद जीवना लाने ॥ ६८ ॥ अपरितमां ५५३ नेद जीवना लाने ते ५६३ मांथी ५ अनुत्तर विमानना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता १० नेद वर्ज्यां, शेष ५५३ नेद लाने ॥ ६९ ॥ सजतिमां १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ता लाने, ॥ ७० ॥ सजतासजतिमां १५ कर्मभूमिना प्रजाप्ता ने ५ सञ्ज्ञी तिर्यचना प्रजाप्ता ए २० नेद लाने ॥ ७१ ॥ असजतिमा ५६३ नेद लाने ॥ ७२ ॥ पहेला गुणठाणामा ५५३ नेद लाने ते ५ अनुत्तर विमानना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता १० नेद वर्ज्यां, शेष ५५३ नेद लाने॥ ७३ ॥ सास्वादान गुणठाणामा २१३ नेद लाने ते १३ नेद नारकीना, ते १४ मांथी ७ मी नरकनो अप्रजाप्तो वर्ज्यो ने १८ नेद तिर्यचना, ३ विगलेन्द्रिय ने ५ असञ्ज्ञी तिर्यच पचेन्द्रिय ए ८ ना अप्रजाप्ता ने ५ सञ्ज्ञी तिर्यच पचेन्द्रियना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १० ने ८ पूर्वे कह्या ते ए १८ ने १५ कर्मभूमिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए ३० ने देवता ९९ जातिमाहिथी १५ परमाधामी, ३ किल्बिषी, ५ अनुत्तर विमान ए २३ वर्जिने शेष ७६ जातिना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ए १५२ नेद देवताना, ए सर्व मळीने २१३ नेद लाने ॥ ७४ ॥ मिश्र गुणठाणामां ९४ नेद लाने ते

७ नारकीना प्रजासा, ५ सञ्ज्ञी तिर्यचना प्रजासा, १५ कर्मजूमिना प्रजासा ए २७ नेहु७ नेद देवताना ते एए नेदमांथी १५ परमाधामी, ३ किल्विषी, ए ग्रैवेयक, ५ अनुत्तर वि मान ए ३२ नेद वर्जिने शेष ६७ नेदना प्रजासा ए सर्व मळी ए४ नेद लाजे ॥ ७५ ॥ चोथे गुणठाणे २४५ नेद लाजे ते पूर्वे समकितमां २५३ नेद कह्या ठे, तेमांथी ५ असञ्ज्ञी तिर्यंच पचेन्द्रिय ने ३ विगलेन्द्रिय ए ८ नेद वर्जिने शेष २४५ नेद लाजे ॥७६॥ पांचमे गुणठाणे २० नेद लाजे ते १५ कर्मजूमिना, ५ सञ्ज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय ए २० ना प्रजासा लाजे ॥ ७७ ॥ ठ्ठे गुणठाणेथी चौदमा गुणठाणा सुधी १५ कर्मजूमिना मनुष्यना प्रजासा लाजे ॥ ७८ ॥ अजीवना ५६० नेद तेमा लोकमा ५५७ लाजे ते धर्मास्तिकाय अधर्मास्ति काय ए बना देश अने आकाशास्तिकायनो स्कंध ए ३ नेद वर्ज्या, शेष ५५७ नेद लाजे ॥ ७९ ॥ अलोकमा अजीवना ५६० नेद माहिला ६ नेद लाजे, ते आकाशास्तिकायना देश १, प्रदेश २, अन ड्त्यादि ४ नेद, ए ६ नेद लाजे ॥ ८० ॥ धर्मास्तिकायना स्कंधमा अजीवना ११ नेद लाजे ते धर्मास्तिकायनो स्कंध १, प्रदेश २, अधर्मास्तिकायनो स्कंध

३, प्रदेश ४, आकाशास्तिकायनो देश ५, प्रदेश ६ ने अद्धा समयकाल ७ ने पुद्गलास्ति कायनो स्कध ८, देश ९, प्रदेश १०, परमाणु पुद्गल ११, ए ११ भेद लाभे ॥ ७१ ॥ अ ढीद्वीप बहार अजीवना १० भेद लाभे ते पूर्वे ११ भेद कह्या तेमाथी काल वर्ज्यो ॥७२॥ धर्मास्तिकायना देशमा ११ भेद, ते धर्मास्तिकायनो देश १, प्रदेश २, अधर्मास्तिकायनो देश ३, प्रदेश ४, आकाशास्तिकायनो देश ५, प्रदेश ६, काल ७, पुद्गलना ४ भेद ए ११ भेद लाभे ॥ ७३ ॥ धर्मास्तिकायना प्रदेशमां ८ भेद लाभे ते धर्मास्तिकायनो प्रदेश १, अधर्मास्तिकायनो प्रदेश २, आकाशास्तिकायनो प्रदेश ३, काल ४, पुद्गलना ४ भेद ए आठ भेद लाभे ॥ ७४ ॥ अधर्मास्तिकायना स्कधमा ११ भेद लाभे ते धर्मास्तिकायनी माफक जाणवु ॥ ७५ ॥ आकाशास्तिकायना स्कधमां ११ भेद लाभे ते धर्मास्तिकायनो स्कध १, प्रदेश २, अधर्मास्तिकायनो स्कध ३, प्रदेश ४, आकाशास्तिकायनो स्कध ५, प्रदेश ६, काल ७, पुद्गलना ४ भेद, सर्व मळी ११ भेद लाभे ॥ ७६ ॥ आकाशास्तिकायना २ भेद, लोकाकाश १, अलोकाकाश २ ते लोकाकाशना २ भेद, सपूर्ण १, अधुरो २ ते सपू-

र्एमा ११ नेद लाले ते धर्मास्तिकायनो देश १, अधर्मास्तिकायनो देश २, आकाशास्ति कायनो स्कंध ३ ए ३ जतां बाकी ११ लाजे ॥ ८७ ॥ अधूरामां ११ नेद लाजे ते धर्मा स्तिकायनो स्कंध १, अधर्मास्तिकायनो स्कंध २, आकाशास्तिकायनो स्कंध ३, ए ३ जतां बाकी ११ नेद लाजे ॥ ८८ ॥ अलोकाकाशमां २ नेद लाजे, ते आकाशास्तिकायनो देश १, प्रदेश २, ए २ लाजे ॥ ८९ ॥ आकाशास्तिकायना प्रदेशमां ८ नेद ते धर्मास्तिकायना प्रदेशनी माफक जाणवु ॥९०॥

॥ इति जीवना ५६३ नेदनी चर्चा संपूर्ण ॥

महादंडक ॥

॥ अथ श्री जीवाजीवाभिगमादिसूत्रथी महादंडकनो बोल लिख्यते ॥

गाथा—दंमग १ लेस्सा २ दिह ३, उग्गाहणा ४ विरहकालए ५ चेय ॥

जवण ६ गयागइ ७, सघयण ८ सठाण ९ वेदे १० य ॥ १ ॥
जोगु ११ वओग १२ सरीरं १३, गुणठाण १४ दिठ्ठी १५ य पज्जत्ती १६ ॥
पाणे १७ नाण अनाणे १८, सजइ १९ माइण आहारे २० ॥ २ ॥
आहार २१ इच्छाहारे २२, कायठिइ २३ समुग्घाय २४ कुलकोडी २५ ॥
आउ २६ देव २७ जराय २८, परिग्गहय २९ सतर ३० चेव ॥ ३ ॥

ए ३० द्वार ते २४ दंडक उपर उतारवा ते कहे छे ते मध्ये प्रथम दंडकद्वार कहे छे साते नरकना दंडक १ तेना नाम–घमा १, वसा २, शिला ३, अजना ४, रिठा ५, मघा ६, माघवइ ७ हवे तेनां गोत्र कहे छे रत्नप्रभा १, शर्करप्रभा २, वालुप्रभा ३, पक प्रभा ४, धूमप्रभा ५, तमप्रभा ६, तमतमाप्रभा ७ ॥ १ ॥ दस दंडक भवनपतिना कहे छे असुरकुमार १, नागकुमार २, सुवनकुमार ३, विज्जुकुमार ४, अग्निकुमार ५, द्वीपकुमार ६, उदधिकुमार ७, दिशाकुमार ८, पवनकुमार ९, स्तनितकुमार १० ॥ ११ ॥ पृथ्वी काय १२, अपकाय १३, तेउकाय १४, वायुकाय १५, वनस्पतिकाय १६ ॥ सत्तरमो दंडक बे

इड्रियनो ते कोमा, पोरा, अलसीया, करमियां, सरमिया, जलो, ठीप, शल प्रमुख ॥१७॥ तईड्रियनो १८ मो दंमक ते कीमी, कथवा, जू, कीमा, मकोमा, घीमेल, चांचम प्रमुख ॥ १८ ॥ चउरिंड्रियनो दंमक १ए मा ते नमरा नमरी, माखी, मांस, टीम, वगा प्रमुख ॥ १ए ॥ तिर्यंच पंचेन्द्रियना दंमक २० मो तेमा जलचरनां ५ नेद मच्छ कच्छ गाह मगर सुसमार प्रमुख स्थलचरना ४ नेद–एगखुरा १, दोखुरा २, गमीपया ३, सणहपया ४ ॥ खेचरना ४ नेद–चर्मपखी १, रोमपखी २, विततपखी ३, समुगपखी ४ ॥ उरपरना ४ नेद–सर्प १, अजगर २, महोरग ३, आसालीया ४ ॥ नुजपरना अनेक नेद ते घो उंदर खीसकोली प्रमुख ॥ २० ॥ मनुष्यनो दंमक २१ मो ॥ ते मनुष्यने उपजवानां ठाम पदर कर्मनूमि ते असि मसि कसि एहथी आजीविका करे, अने मोक्षमार्गने साधे ते ५ नरत, ५ एरवत, ५ महाविदेह ए १५ ॥१॥ अकर्मनूमि ते असि, मसि, कसि ए त्रण प्रकारनो व्यापार नथी अने १० प्रकारना कल्पवृक्षे करी जीवे ते ५ हेमवय, ५ एरणवय, ५ हरिवास, ५ रम्यकवास, ५ देवकुरु, ५ उत्तरकुरु ए ३० अकर्मनूमि ॥ २ ॥ उप्पन अंतरद्वीपा

ते जबुद्वीप मध्ये हेमवत पर्वत अने शिषरी पर्वत थकी पूर्व अने पश्चिमनी दिशिए स
मुद्र मध्ये व बे दाढा नीकळी छे, ते एकेकी दाढाए सात सात द्वीपा छे तेनु मान
प्रथम ३०० जोजन गया पछी पहेलो द्वीपा छे तिहांथकी ४०० जोजन गया पछी बीजो
द्वीपो छे तिहांथकी ५०० जोजन गया पछी त्रीजो द्वीपो छे तिहांथकी ६०० जोजन
गया पछी चोथो द्वीपो छ तिहांथकी ७०० जोजन गया पछी पाचमो द्वीपो छे तिहां
थकी ८०० जोजन गया पछी छठ्ठो द्वीपो छे तिहांथी ए०० जोजन गया पछी सातमो
द्वीपो छे ए रीते ८ दाढाए ५६ अतरद्वीपा छ सर्वे अढीद्वीप मध्ये जाणवा ॥ ३ ॥
हवे समुर्छिम मनुष्य उपजवाना ठाम कहे छे ॥ उच्चारेसुवा १, पासवणेसुवा २, खेलेसुवा
३, सघाणेसुवा ४, वतेसुवा ५, पितेसुवा ६, सोणिएसुवा ७, पुएसुवा ८, सुक्केसुवा ए, सुक्क
पोग्गल परिसाडीयेसुवा १०, विगयजीव कलेवरेसुवा ११, इत्थीपुरिससजोगेसुवा १२,
नगर निधम्मणेसुवा १३, सव्वेसु चेव असुइठाणेसुवा १४ ॥ ४ ॥ २१ ॥ २२ मो वाणव्यतरनो
दंडक तेना नाम—पिशाच १, भूत २, यक्ष ३, राक्षस ४, किंनर ५, किंपुरुष ६, महोरग ७, गाधर्व
८, आणपन्नी ए, पाणपन्नी १०, इसीवाइ ११, भुयवाइ १२, कदीय १३, महाकदीय १४, कोहंड

१५ पयगदेव १६ ॥ ए सोलनी काय व्यतरनी जात अने एकेकीनी काये बे बे इंद्र जाणवा ॥२२॥ २३ मो ज्योतिषीनो दरुक ते चद्र १, सूर्य २, ग्रह ३, नक्षत्र ४, तारा ५, ए ५ चर अढी द्वीप मध्ये छे, न पाच अचर अढीद्वीपनी बाहीर छे ॥ २३ ॥ २४ मो विमानीक देव ताना दरुक ॥ सुधर्म्म १, इशान २, सनत्कुमार ३, माहेंद्र ४, ब्रह्मलोक ५, लातक ६, महासुक्र ७, सहसार ८, आणत ए, प्राणत १०, आरण ११, अच्चुय १२ ॥ हवे नव ग्रैवेयक कहे छे ॥ भद्दे १, सुभद्दे २, सुजाए ३, सुमाणसे ४, पियदसणे ५, सुदसणे ६, आमोहे ७, सुपडिबद्ध ८, जसोधरे ए ॥ हवे पाच अनुत्तर विमाननां नाम कहे छे ॥ विजय १, विजयत २, जयत ३, अपराजित ४, सर्वार्थसिद्ध ५ ॥ सर्वार्थसिद्ध उपरे इसिप्पजारा पृथ्वी ते सिद्धिशिला तना बार नाम छे ते कहे छे ॥ इसीतिवा १, इसीप्पजारा तिवा २, तणु तिवा ३ तणुतणुतिवा ४, सिद्धितिवा ५, सिद्धालयतिवा ६, मुतीतिवा ७, मुत्तालयतिवा ८, लोयगेतिवा ए, लोगथुभियातिवा १०, लोगपडिबोहेतिवा ११, सव्वपाणभुयजीव सत्त सुहावहेतिवा ॥ १२ ॥ २४ ॥

हवे बीजु लेश्याद्वार कहे छे ॥

गाथा—नाम१ वण्ण२ रस३ गंध४, फास५ परिणाम६ लक्खण७ सठाण८ ॥

ठिइए गइ१० चवण११ दारा, एगारस लेस्साण णेया ॥ १ ॥

ए ११ द्वार छ लेश्या उपर उतारवा तेमा प्रथम नामद्वार कहे छे कृष्णलेश्या १, नील लेश्या २, कापोत लेश्या ३, तेजु लेश्या ४, पद्म लेश्या ५ अने शुक्ल लेश्या ६ ॥१॥ बीजु लेश्याना वर्णनु द्वार कहे छे भाव लेश्यामा एके वर्ण नथी द्रव्य लेश्यामां कृष्णादि पाचे वर्ण होय तेमां कृष्ण लेश्यानो वर्ण (रग)—जेवा पाणीसहित मेघ काळा, जेवा पाडाना शींगडां काळां, जेवा अरीठानां बीज काळां, जेवु गाडानु खजन, आंखनी कीकी ए करतां अनन्तगुणो काळो ॥ १ ॥ नील लेश्यानो वर्ण—जेवु अशोक वृक्ष नीलु, जेवी चास पक्षीनी पांख, जेवु वैडुर्य रत्न एथी अनन्तगुणो नील लेश्यानो नीलो वर्ण छे ॥ २ ॥ कापोत लेश्याना वर्ण जेवा अळशीनां फूल, जेवी कोयलनी पांख, जेवी पारेवानी डोक कांइक राती कांइक काळी ए करता अनन्तगुणो अधिक कापोत लेश्यानो

वर्ण जाणवा ॥ ३ ॥ तेजु लेश्यानो वर्ण, जेवो उगतो सूर्य रातो, जेवी सुडानी चांच, जेवी दीवानी शीखा ए करता अनन्तगुणा अधिक रातो तेजुलेश्यानो वर्ण ॥ ४ ॥ पद्म लेश्यानो वर्ण—जेवी हरताल, जेवी हळदर, जेवां शणना फुल, ए करता अनन्तगुणो अधिक पीळो पद्म लेश्याना वर्ण ॥ ५ ॥ शुक्ल लेश्यानो वर्ण—जेवो शंख, जेवु अंक रत्न, जेवु मोगरानु फुल, जेवु गायनु दूध, जेवो रूपाना हार ए करतां अनन्तगुणो अधिक श्वेत शुक्ल लेश्यानो वर्ण ॥ ६ ॥ २ ॥ त्रीजु लेश्याना रसनु द्वार कहे छे कृष्ण लेश्यानो रस—जेवु कडवु तुंबडु, जेवा कडवो लींबडानो रस, जेवो रोहीणी नामे वनस्पतिनो रस, एथी अनन्तगुणा अधिक कडवा रस कृष्ण लेश्यानो जाणवो ॥ १ ॥ नील लेश्यानो रस—जेवा सुंठनो तीखो रस, जेवो पींपर अने मरीना रस, एथी अनतगुणो अधिक तीखो रस नील लेश्यानो जाणवो ॥ २ ॥ कापोत लेश्यानो रस—जेवा कुणी काची केरीनो रस, जेवा काचा कोठनो रस, एथी अनन्तगुणो अधिक खाटो रस कापोतना जाणवो ॥ ३ ॥ तेजु लेश्यानो रस—जेवो पाका आंबानो रस, जेवो पाका कोठानो रस एथी अनन्तगुणो

कांइक खाटो ने कांइक मीठा रस तेजु लेश्यानो जाणवो ॥ ४ ॥ पद्म लेश्यानो रस—जेवा वारुणीनो रस, जेवा आसव (सरका)नो रस, जेवो मधुनो रस पथी अनन्तगुणो मधुरो रस पद्म लेश्यानो ॥ ५ ॥ शुक्ल लेश्यानो रस—जेवो खजुरनो रस जेवो द्राक्षनो रस, जेवो दूधना रस, जेवो साकरनो रस पथी अनन्तगुणा अधिक मीठो रस शुक्ल लेश्यानो जाणवो ॥ ६ ॥ ३ ॥ चोथु लेश्याना गधनु द्वार कहे छे जेवो गायना मढानो, कुतराना मढानो, सर्पना मढानो पथी अनन्तगुणो अधिक अप्रशस्त, प्रथम त्रण माठी लेश्यानो गध जाणवो ॥ १ ॥ कपुर, केवडो प्रमुख सुगधी पदार्थ वाटता (घुटता) जेवी सुगध नीकळे ते करतां अनन्तगुणो प्रशस्त त्रण सारी लेश्यानो गध जाणवा ॥ ५ ॥ ४ ॥ पाचमु लेश्याना स्पर्शनु द्वार कहे छे—जेवी करवतनी धार, जेवी गायनी जीभ, जेवु मुजनु तथा वासनु पान, ते करता अनन्तगुणो माठो अप्रसस्त लेश्यानो स्पर्श जाणवो ॥१॥ जेवी वूर नामे वनस्पति, जेवु माखण, जेवा सरसवना फूल, जेवु मखमल ए करता अनन्तगुणो अधिक प्रसस्त लेश्यानो स्पर्श सुंवाळो जाणवो ॥ २ ॥ ५ ॥ छट्ठु लेश्याना

परिणामनु द्वार कहे छे लेश्या त्रण प्रकारे परिणमे—जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट, तथा नव प्रकार परिणमे ते उपर त्रण कही तेना अकेकना त्रण त्रण भेद थाय, जेमके, जघन्यनो जघन्य, जघन्यनो मध्यम, जघन्यनो उत्कृष्ट ए रीते दरेकना त्रण त्रण भेद करतां नव भेद थाय एम नवना सत्तावीस भेद थाय एम सत्तावीसना एकाशी भेद थाय एम एकाशीना थस ने तेंतालीस भेद थाय एटले भेदे लेश्या परिणमे ॥ ६ ॥ सातमु लेश्याना लक्षणनु द्वार कहे छे तेमा प्रथम कृष्णलेश्याना लक्षण कहे छे—पांच आश्रवनो सेवनार, त्रण अगुप्तिवत, छकाय जीवनो हिंसक, आरंभनो तिव्र परिणामी तथा द्वेषी, पाप करवामा साहसीक, निठोर परिणामी, जीवहिंसा शुग रहित करनार, अजितेन्द्रिय एवा जोगे करी सहित होय तेने कृष्ण लेश्यानु लक्षण जाणवुं ॥१॥ नील लेश्याना लक्षण कहे छे इर्ष्यावत, अमर्षवत, तपरहित, मायावी पाप करता लाजे नहीं, गृधी, धूतारो, प्रमादी, रसनो लोलुपी, मायानो गवेषी, आरंभनो अत्यागी, पापने विषे साहसीक ए नील लेश्यानां लक्षण जाणवां ॥ २ ॥ कापोत लेश्यानां लक्षण कहे छे—

वांका बोलो, वांका काम करनार, माया करीने इरखाय, सरळपणाथी रहित, मोढे जूदो अने पुठे जुदो, मिथ्या–खोटां वचननो बोलनार, चोरी मत्सरनो करनार, ए कापोत लेश्यानां लक्षण जाणवा ॥ ३ ॥ तेजु लेश्यानां लक्षण कहे छे–मर्यादावंत, मायारहित, चपळपणाथी रहित, कुतूहळ रहित, विनयवंत, दमितेंद्रिय, शुभ जोगवंत, उपध्यान तप सहित, दृढधर्मि, प्रियधर्मि, पाप थकी बीहे, ए तेजुलेश्यानां लक्षण जाणवा ॥ ४ ॥ पद्म लेश्याना लक्षण कहे छे–क्रोध, मान, माया, लोभ पातळा कर्या छे, प्रशान्त चित्त, आत्मानो दमणहार, योगउपध्यान सहित होय, थोडा बोलो, उपशान्त, जितेंद्रिय, ए पद्मलेश्याना लक्षण जाणवा ॥ ५ ॥ शुक्ल लेश्याना लक्षण कहे छ–आर्त्तध्यान रौद्रध्यानथी सर्वथा रहित, धर्मध्यान शुक्लध्यानथी सहित, दश प्रकारनी चित्त समाधीए करी सहित, आत्मानो दमणहार, इत्यादिक शुक्ल लेश्यानां लक्षण जाणवा ॥ ६ ॥ हवे आठमु स्थानद्वार कहे छे–स्थान एटले उत्कर्षे के अपकर्षे करी लेश्यानु परस्पर तारतम्य असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना समय जेटला के असंख्यात लोकना आकाश प्रदेश जेटला थाय तेटला लेश्यानां

परिणामनु द्वार कहे छे लेश्या त्रण प्रकारे परिणमे—जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट, तथा नव प्रकारे परिणमे ते उपर त्रण कही तेना अकेकना त्रण त्रण भेद थाय, जेमके, जघन्यनो जघन्य, जघन्यनो मध्यम, जघन्यनो उत्कृष्ट ए रीते दरेकना त्रण त्रण भेद करतां नव भेद थाय एम नवना सत्तावीस भेद थाय एम सत्तावीसना एकाशी भेद थाय एम एकाशीना यसे ने तेंतालीस भेद थाय एटले भेदे लेश्या परिणमे ॥ ६ ॥ सातमु लेश्यानां लक्षणनु द्वार कहे छे तेमा प्रथम कृष्णलेश्याना लक्षण कहे छे—पांच आश्रवनो सेवनार, त्रण अगुप्तिवत, छकाय जीवनो हिंसक, आरंभनो तिव्र परिणामी तथा द्वेषी, पाप करवामा साहसीक, निठोर परिणामी, जीवहिंसा शुग रहित करनार, अजितेन्द्रिय एवा जोगे करी सहित होय तेने कृष्ण लेश्यानु लक्षण जाणवुं ॥१॥ नील लेश्याना लक्षण कहे छे इर्ष्यावत, अमर्षवत, तपरहित, मायासी पाप करता लाजे नहीं, गृधी, धूतारो, प्रमादी, रसनो लोलुपी, मायानो गवेषी, आरंभनो अत्यागी, पापने विषे साहसीक ए नील लेश्यानां लक्षण जाणवां ॥ २ ॥ कापोत लेश्यानां लक्षण कहे छे—

सागर पल्यन असख्यातमे जागे अधिकनी ॥ २ ॥ कापोत लेश्यानी स्थिति ज० अतर्मुहूर्त्तनी, उत्० ३ सागर पल्यने असख्यातमे जागे अधिकनी ॥ ३ ॥ तेजुलेश्यानी स्थिति ज० अतर्मुहूर्त्तनी, उत्० २ सागर पल्यने असख्यातमे जागे अधिकनी ॥४॥ पद्म लेश्यानी स्थिति ज० अतर्मुहूर्त्तनी, उ० १० सागर अतर्मुहूर्त्त अधिकनी ॥ ५ ॥ शुक्ल लेश्यानी स्थिति ज० अतर्मुहूर्त्तनी, उ० ३३ सागर अतर्मुहूर्त्त अधिकनी ॥ ६ ॥ ए स्थिति लेश्यानी समुच्चय कही हवे ४ गतिनी स्थिति कहे छे—नरकगतिनी कापोत लेश्यानी स्थिति ज० दश हजार वर्षनी, उत्० ३ सागर पल्यने असख्यातमे जागे अधिकनी ॥ १ ॥ नील लेश्यानी स्थिति ज० ३ सागर झाझेरी ने पल्यना असख्यातमा जाग अधिकनी, उ० १० सागर पल्यना असख्यातमा जाग अधिकनी ॥ २ ॥ कृष्ण लेश्यानी स्थिति ज० १० सागरनी, उत्० ३३ सागर ने अतर्मुहूर्त्ताधिकनी ॥३॥ ए नारकीनी लेश्यानी स्थिति कही हवे तिर्यंच मनुष्यनी लेश्यानी स्थिति कहे छे—तिर्यंच अने मनुष्य ज्या ज्या जाय त्या त्यां ज० उ० प्रथम पाचे लेश्यानी अतर्मुहूर्त्तनी स्थिति जाणवी केवलज्ञान आश्रि शुक्ल लेश्यानी स्थिति जघन्य अतर्मुहूर्तनी, उत्० नव

स्थानक छे भावलेश्यामां संक्लिष्ट परिणाम के विशुद्ध परिणामना तारतम्य रूप असंख्यात स्थानक छे अने द्रव्यलेश्यामां तेवा द्रव्यस्कंधो असंख्यात असंख्यात छे एक परिणामे एक वखते जेटलां द्रव्योनु ग्रहण कर्यु ते एक स्थानक द्रव्यलेश्या परत्वे कही शकाय ते स्थानकना बे प्रकार जघन्य स्थानक अने उत्कृष्ट स्थानक जघन्यनी पासेना स्थानकोनो जघन्यमा अने उत्कृष्टनी पासेनां स्थानकोनो उत्कृष्टमा अंत र्भाव करवाथी मध्यम स्थानकोनो त्रीजो भेद अांहि गएयो नथी हवे छ लेश्यानां स्थानकनु अल्पबहुत्व सर्वथी थोडा कापोत लेश्यानां स्थानक १ तेथी नील लेश्यानां स्थानक असंख्यातगुणा २ तेथी कृष्ण लेश्याना स्थानक असंख्यातगुणा ३ तेथी तेजु लेश्याना स्थानक असंख्यातगुणा ४ तेथी पद्म लेश्यानां स्थानक असंख्यातगुणा ५ तेथी शुक्ल लेश्यानां स्थानक असंख्यात गुणा ६ ॥ ८ ॥ नवमु लेश्यानी स्थितिनु द्वार कहे छे-कृष्ण लेश्यानी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्कृष्टी ३३ सागर ने १ अंतर्मुहूर्त्त अधिकनी ॥ १ ॥ नील लेश्यानी स्थिति ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्० १०

तेणे करी जीव दुर्गति पामे तेजु, पद्म, शुक्ल ए त्रण धर्म लेश्या, तेणे करीने जीव सुगतिए जाय ॥ १० ॥ अगीआरमु लेश्याना चवननु द्वार कहे छे सघळी लेश्या प्रथम परिणमती वखते काइ जीवने उपजवु के चववु नथी तथा लेश्याना छेल्ला समये कोइ जीवन उपजवु ं ह चववु नथी परजवने विषे कम चवे ते कहे छे—लेश्या परजवनी आवी यकी अतर्मुहूर्त्त गया पछी शेष अतर्मुहूर्त्त आउखा आका रहे थके जीव परलोकने विषे जाय ॥ ११ ॥ समुच्च य सलेशीमा छ लेश्या लाजे १–२ नरके कापोत लेश्या २, त्रीजी नरके कापोत घणी नील थोडी ३, चोथी नरके नील लेश्या ४, पांचमी नरके नील घणी कृष्ण थोडी ५, छट्ठी नरके कृष्ण लेश्या ६, सातमी नरके महाकृष्ण लेश्या ७ ॥ १ ॥ १० जवनपतिमां लेश्या ४ लाजे ॥ ११ ॥ पृथ्वी, पाणी, वनस्पति ए त्रणना अपर्याप्तावस्थामां लेश्या ४, पर्याप्तावस्थामां ३ लेश्या ॥ १४ ॥ तेउ वाउ त्रण विगलेंद्रिय ए पांचमां पहेली ३ लेश्या ॥ १९ ॥ तिर्यंच पचेंद्रिय समुर्छिममा प्रथम ३ लेश्या, गर्जजमां ६ लेश्या ॥ २० ॥ मनुष्यमां पण तेज रीते जाणवी ॥ २१ ॥ वाणव्यतरमा प्रथम ४ लेश्या ॥ २२ ॥ ज्योतिषीमां १

वर्ष उणी पूर्व कोमीनी ए लेश्या तिर्यंच मनुष्यनी कही हवे देवतानी स्थिति कहे छे– तेमां जवनपति व्यंतर आश्रि कृष्ण लेश्यानी स्थिति ज० दश हजार वर्षनी, उत्० पल्यना असंख्यातमा जागनी ॥ १ ॥ जेटली कृष्ण लेश्यानी उत्कृष्टी स्थिति तेटली १ समयाधिक नील लेश्यानी ज० स्थिति, उत्० पल्योपमना असंख्यातमा जागनी ॥ २ ॥ जेटली उत्० नीलनी स्थिति तेटली १ समयाधिक कापोत लेश्यानी ज० स्थिति, उत्० पल्योपमना असंख्यातमा जागनी ॥ ३ ॥ समुच्चय देव आश्रि तेजुलेश्यानी स्थिति ज० १० हजार वर्षनी, उ० २ सागर ने पल्यना असंख्यातमा जाग अधिकनी ज्योतिषी, वैमानिक आश्रि तेजुलेश्यानी स्थिति ज० पल्य १ नी, उत्० २ सागर पल्यने असंख्यातमे जाग अधिकनी ॥ ४ ॥ जेटली तेजु लेश्यानी उत्० स्थिति तेटली १ समय अधिक पद्मलेश्यानी ज० स्थिति, उ० १० सागर अंतर्मुहूर्त्त अधिकनी ॥५॥ जेटली पद्म लेश्यानी उत्० स्थिति तेटली १ समयाधिक शुक्ल लेश्यानी ज० स्थिति, उत्० ३३ सागर अंतर्मुहूर्त्ताधिकनी ॥६॥९॥ दशमु लेश्यानी गतिनु द्वार कहे छे–कृष्ण, नील, कापोत ए त्रण अप्रशस्त अधम लेश्या,

जुदा जुदा विवरो कहे छे पहेली नरके ज० दश हजार वर्ष, उ० १ सागर ॥ बीजी नरके ज० १ सागर, उ० ३ सागर ॥ त्रीजी नरक ज० ३ सागर, उ० ७ सागर ॥ चोथी नरके ज० ७ सागर, उ० १० सागर ॥ पांचमी नरके ज० १० सागर, उ० १७ सागर ॥ छठी नरके ज० १७ सागर, उ० २२ सागर ॥ सातमी नरके ज० २२ सागर, उ० ३३ सागर ॥ ए प्रत्येक प्रत्येक नरकना नाम आश्रि आयुष्य कह्यां हवे प्रतर भेदे आयुष्य कहे छे–पहेली नरके प्रतर १३ छे तेमां पहेले प्रतरे ज० १० हजार वर्ष, उ० ९० हजार वर्ष ॥ बीजे ज० ९० हजार वर्ष, उ० ९० लाख वर्ष ॥ त्रीजे ज० ९० लाख वर्ष, उ० पूर्व कोमी १ ॥ चोथे ज० पूर्व कोमी १, उ० सागर १ तेना भाग १० करीए तेमांनो १ भाग ॥ पांचमे ज० भाग १, उ० भाग २ ॥ छठे ज० भाग २, उ० भाग ३ ॥ सातमे ज० भाग ३, उ० भाग ४ ॥ आठमे ज० भाग ४, उ० भाग ५ ॥ नवमे ज० भाग ५, उ० भाग ६ ॥ दशमे ज० भाग ६, उ० भाग ७ ॥ अग्यारमे ज० भाग ७, उ० भाग ८ ॥ बारमे ज० भाग ८, उ० भाग ९ ॥ तेरमे ज० भाग ९, उ० सागर १ ॥ १ ॥ बीजी नरके पाथमा ११

तेजु लेश्या ॥ २३ ॥ वैमानिकमां १–२ देवलोके तेजु लेश्या, ३–४–५ देवलोके पद्म लेश्या, उठायी सर्वार्थसिद्ध लगी शुक्ल लेश्या ॥ २४ ॥ सिद्ध अलेशी जाणवा हवे ठ लेश्याना जीवनु अल्पबहुत्व ठे–सर्वथी थोमा शुक्कलेशी १ तेथी पद्मलेशी सख्यातगुणा २ तेथी तेजुलेशी स० ३ तेथी अलेशी अनतगुणा ४ तेथी कापोतलेशी अन० ५ तेथी नील लेशी विसेसाहिया ६ तेथी कृष्णलेशी वि० ७ तेथी सलेशी विसेसाहिया ८ ॥ ए लेश्यानो अधिकार उतराध्ययन सूत्रना अध्ययन ३४ मा तथा पन्नवणा पद १७ मां तथा जीवाभिगम सूत्रमा ठ, त्यांथी विस्तार जाणवो

॥ इति बीजु लेश्याद्वार सपूर्ण ॥

— —

अथ त्रीजु स्थितिद्वार कहे ठे ॥

समुच्चय स्थिति आश्रि जघन्य अतर्मुहूर्त्तनी, उत्कृष्टी ३३ सागरनी हवे तेनो

जुदा जुदो विवरो कहे ठ पहली नरके ज० दश हजार वर्ष, उ० १ सागर ॥ बीजी नरके ज० १ सागर, उ० ३ सागर ॥ त्रीजी नरक ज० ३ सागर, उ० ७ सागर ॥ चोथी नरके ज० ७ सागर, उ० १० सागर ॥ पांचमी नरके ज० १० सागर, उ० १७ सागर ॥ ठही नरके ज० १७ सागर, उ० २२ सागर ॥ सातमी नरके ज० २२ सागर, उ० ३३ सागर ॥ ए प्रत्येक प्रत्येक नरकना नाम आश्रि आयुष्य कह्यां हवे प्रतर नेदे आयुष्य कहे ठ—पहेली नरके प्रतर १३ ठे तेमा पहेले प्रतरे ज० १० हजार वर्ष, उ० ए० हजार वर्ष ॥ बीजे ज० ए० हजार वर्ष, उ० ए० लाख वर्ष ॥ त्रीजे ज० ए० लाख वर्ष, उ० पूर्व कोमी १ ॥ चोथे ज० पूर्व कोमो १, उ० सागर १ तेना नाग १० करीए तेमानो १ नाग ॥ पांचमे ज० नाग १, उ० नाग २ ॥ ठहे ज० नाग २, उ० नाग ३ ॥ सातमे ज० नाग ३, उ० नाग ४ ॥ आठमे ज० नाग ४, उ० नाग ५ ॥ नवमे ज० नाग ५, उ० नाग ६ ॥ दशमे ज० नाग ६, उ० नाग ७ ॥ अग्यारमे ज० नाग ७, उ० नाग ८ ॥ बारमे ज० नाग ८, उ० नाग ए ॥ तेरमे ज० नाग ए, उ० सागर १ ॥ १ ॥ बीजी नरके पाथमा ११

छे त्यां श्रकेका सागरना ११ भाग करीए, तेमांना बबे भाग वधारीए ॥ प्रथम पाथडे ज० सागर १, उ० सागर १ भाग २ ॥ बीजे पाथडे ज० सागर १ भाग २, उ० सागर १ भाग ४ ॥ त्रीजे ज० सागर १ भाग ४, उ० सागर १ भाग ६ ॥ चोथे पाथडे ज० १ सागर ने ६ भाग, उ० १ सागर ने ८ भाग ॥ पांचमे ज० सागर १ भाग ८, उ० १ सागर भाग १० ॥ छठ्ठे ज० १ सागर भाग १०, उ० २ सागर १ भाग ॥ सातमे ज० २ सागर १ भाग, उ० २ सागर ३ भाग ॥ आठमे ज० २ सागर ३ भाग, उ० २ सागर ५ भाग ॥ नवमे ज० २ सागर ५ भाग, उ० २ सागर ७ भाग ॥ दशमे ज० २ सागर ७ भाग, उ० २ सागर ए भाग ॥ अग्यारमे ज० २ सागर ए भाग, उ० ३ सागर ॥ २॥ त्रीजी नरके पाथडा ए त्यां एकेका सागरना ए भाग करीए ते प्रतर प्रतरे ४ भाग वधारीए ॥ प्रथम पाथडे ज० ३ सागर, उ० ३ सागर ४ भाग ॥ बीजे ज० ३ सागर ४ भाग, उ० ३ सागर ८ भाग ॥ त्रीजे ज० ३ सागर ८ भाग, उ० ४ सागर ३ भाग ॥ चोथे ज० ४ सागर ३ भाग, उ० ४ सागर ७ भाग ॥ पांचमे ज० ४ सागर ७ भाग, उ० ५ सागर २ भाग ॥ छठ्ठे ज० ५ सागर २

भाग, उ० ५ सागर ६ भाग ॥ सातमे ज० ५ सागर ६ भाग, उ० ६ सागर १ भाग ॥ आठमे ज० ६ सागर १ भाग, उ० ६ सागर ५ भाग ॥ नवमे ज० ६ सागर ५ भाग, उ० ७ सागर ॥ ३ ॥ चोथी नरके पाथडा ७ ॥ त्यां एकेका सागरना ७ भाग करीए तेमां त्रण त्रण भाग वधारीए ॥ प्रथम पाथडे ज० ७ सागर, उ० ७ सागर ३ भाग ॥ बीजे ज० ७ सागर ३ भाग, उ० ७ सागर ६ भाग ॥ त्रीजे ज० ७ सागर ६ भाग, उ० ८ सागर २ भाग ॥ चोथे ज० ८ सागर २ भाग, उ० ८ सागर ५ भाग ॥ पाचमे ज० ८ सागर ५ भाग, उ० ९ सागर १ भाग ॥ छठे ज० ९ सागर १ भाग, उ० ९ सागर ४ भाग ॥ सातमे ज० ९ सागर ४ भाग, उ० १० सागर ॥ ४ ॥ पांचमी नरके पाथडा ५ ॥ त्या एकेका सागरना ५ भाग करीए तेमा १ सागरन २ भाग प्रतरे प्रतरे वधारीए ॥ प्रथम पाथडे ज० १० सागर, उ० ११ सागर २ भाग ॥ बीजे ज० ११ सागर ने २ भाग, उ० १२ सागर ४ भाग ॥ त्रीजे ज० १२ सागर ४ भाग, उ० १४ सागर १ भाग ॥ चोथ ज० १४ सागर १ भाग, उ० १५ सागर ३ भाग ॥ पाचमे ज० १५ सागर ३ भाग, उ० १७ सागर ॥ ५ ॥ छठ्ठी नरके

पाथमा ३ त्यां एकेका सागरना ३ जाग करीए तेमां २ जाग १ सागर प्रतरे प्रतरे वधारीए॥ पहेले प्रतरे ज० १७ सागर, ७० १८ सागर २ जाग ॥ बीजे ज० १८ सागर २ जाग, ७० २० सागर १ जाग ॥ त्रीजे ज० २० सागर १ जाग, ७० २२ सागर ॥ ६ ॥ सातमी नरके १ पाथमो ठे त्या ५ नरकावासा ठे तेना नाम—काल ॥ १ ॥ महाकाल ॥ २ ॥ रौद्र ॥ ३ ॥ महारौद्र ॥ ४ ॥ ए चार नरकावासाए ज० २२ सागर, ७० ३३ सागर ॥ अपइठाण पांचमा नरकावासाए ३३ सागर जघन्योत्कृष्ट ॥ हवे जवनपतिनी स्थिति कहे ठे— तेमा दक्षिण दिशाना जवनपतिनी ज० १० हजार वर्षनी, ७० १ सागरनी ॥ तेनी देवीनी ज० १० हजार वर्षनी, ७० साढा त्रण पल्यनी तेना नवनीकायना देवतानी स्थिति ज० १० हजार वर्षनी, ७० दोढ पल्यनी तेनी देवीनी ज० १० हजार वर्षनी, ७० पोणा पल्यनी उत्तर दिशाना जवनपतिनी ज० १० हजार वर्षनी, ७० १ सागर झाझेरी तेनी देवीनी ज० १० हजार वर्षनी, ७० साढाचार पल्यनी ॥ नवनीकायनी ज० १० हजार वर्षनी, ७० बे पल्य देशे उणी तेनी देवीनी ज० १० हजार वर्षनी, ७० १ पल्य देशे उणी ॥ अथ बादर

पृथ्वीनी स्थिति सघळीनी ज० अंतर्मुहूर्त्तनी ॥ हवे उत्कृष्टीनो विवरो कहे छे—सन्हानी उ० हजार वर्षनी ॥ सुद्धानी उ० १२ हजार वर्षनी ॥ वालुयानी उ० १४ हजार वर्षनी ॥ मणोशिलानी उ० १६ हजार वर्षनी ॥ शर्करानी उ० १८ हजार वर्षनी ॥ खरपृथ्वीनी उ० २२ हजार वर्षनी ॥ अपनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ७ हजार वर्षनी ॥ तेउनी ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ३ अहोरात्रिनी ॥ वायुनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ३ हजार वर्षनी ॥ वनस्पतिनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० १० हजार वर्षनी ॥ सूक्ष्म ५ स्थावरनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० तेटली ॥ बेंद्रियनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० १२ वर्षनी ॥ तेइंद्रियनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ४९ दिवसनी ॥ चउरिंद्रियनी १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ६ मासनी ॥ हवे तिर्यंच पचेंद्रियनी स्थिति कहे छे—जलचर गर्भज समुर्छिमनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० १ पूर्वक्रोडनी॥ स्थलचर गर्भजनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ३ पल्योपमनी ॥ समुर्छिमनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ८४ हजार वर्षनी ॥ खेचर गर्भजनी ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० पल्योपमना असंख्यातमा भागनी ॥ समुर्छिमनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ७२ हजार वर्षनी ॥ उरपर गर्भजनी

ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० १ पूर्वक्रोडनी समुर्छिमनो ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ५३ हजार वर्षनो ॥ भुजपर गर्भजनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० १ पूर्वक्रोडीनी समुर्छिमनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनो, उ० ४२ हजार वर्षनी ॥ ए तिर्यंच पचेंद्रियनी स्थिति कही ॥ हवे मनुष्यनी स्थिति कहे छे—जे असंख्याता आयुष्यना मनुष्य छे तेनी ज० पल्योपमना असंख्यातमा जागनी ॥ जे मनुष्य संख्याता वर्षना आयुष्यना छे तेनी ज० १ अंतर्मुहूर्त्तनी ॥ ए समस्तनी जघन्य स्थिति कही ॥ हवे उत्कृष्टीनो विवरो कहे छे—देवकुरु उत्तरकुरुना मनुष्यनी स्थिति ३ पल्योपमनी ॥ हरिवास रम्यकवासे २ पल्यनी ॥ हेमवंत एरणवते १ पल्यनी ॥ छप्पन अंतरद्वीपे पल्योपमना असंख्यातमा जागनी ॥ महाविदेहे १ पूर्वक्रोडनी ॥ जरत ऐरवते आराने मेळे आयुष्य तथा आरानु मानादि जाणवु ॥ प्रथम सुसमसुसम आरो ४ कोडाकोडी सागरोपमनो ॥ तेना मनुष्यनु ३ पल्यनु आयुष्य अपत्यप्रतिपालणा ४९ दिवस ॥ बीजो सुसम आरो ३ कोडाकोडी सागरोपमनो। तेना मनुष्यनु आयुष्य २ पल्योपमनु अपत्यप्रतिपालणा ६४ दिवस ॥

त्रीजो सुसम दुसम आरो २ कोडाकोडी सागरनो तेना मनुष्यनु आयुष्य १ पल्यनु, अ पल्यप्रतिपालणा ३९ दिवस ॥ उतरते आरे पूर्व कोडीनु ॥ ते आरामांहि ८४ लाख पूर्व ३ वर्ष ८ मास शेष बाकी होय, त्यारे प्रथम तीर्थंकर उपजे ॥ त्रण वर्ष साडा आठ मास शेष बाकी होय, त्यारे ८४ लाख पूर्वनुं आयुष्य पाळीने मोक्ष जाय ॥ पांच कल्याणीक होय ॥ दुसम सुसम चोथो आरो १ कोडाकोडी सागरमांहि ४२ हजार वर्ष ओछां तेने पुरे आयुष्य पूर्व कोडीनु ॥ उतरते १०० वर्ष ऊऊेरानु ॥ ते आरामा २३ तीर्थंकर होय, तेनु आयुष्य कहे छे ॥ बीजा तीर्थंकरनु ७२ लाख पूर्वनु आयुष्य ॥ त्रीजानु ६० लाख पूर्वनु ॥ चोथानु ५० लाख पूर्वनुं ॥ पांचमानु ४० लाख पूर्वनु ॥ छठानुं ३० लाख पूर्वनु ॥ सातमानु २० लाख पूर्वनु ॥ आठमानुं १० लाख पूर्वनु ॥ नवमानु २ लाख पूर्वनु ॥ दशमानु १ लाख पूर्वनु ॥ अग्यारमानु ८४ लाख वर्षनु ॥ बारमानु ७२ लाख वर्षनु ॥ तेरमानु ६० लाख वर्षनु ॥ चौदमानुं ५० लाख वर्षनु ॥ ॥ पंदरमानु १० लाख वर्षनु ॥ सोळमानु १ लाख वर्षनु ॥ सत्तरमानु ९५ हजार वर्षनु ॥ अढारमानु ८४ हजार वर्षनु ॥ ओगणीसमानु ५५ हजार

वर्षनुं ॥ वीसमानुं ३० हजार वर्षनुं ॥ एकवीसमानुं १० हजार वर्षनुं ॥ बावीसमानुं एक हजार वर्षनुं ॥ त्रेवीसमानुं १०० वर्षनुं ॥ चोवीसमानुं ७२ वर्षनुं आयुष्य जाणवुं ॥ चोथा आराना ७५ वर्ष ८॥ मास शेष थाकता होय त्यारे चरम तीर्थंकर उपज ॥ ३ वर्ष ८॥ मास शेष थाकता होय त्यारे मोक्ष जाय ॥ पांच कल्याणीक होय ॥ पांचमो दुसम आरो २१ हजार वर्षनो ॥ पूरे आयुष्य १०० वर्ष झाझेरानुं उतरतां २० वर्षनुं ॥ छठ्ठो दुसम दुसम आरो २१ हजार वर्षनो ॥ पुरे आयुष्य २० वर्षनुं, उतरतां १६ वर्षनुं ॥ समुर्छिम मनुष्यनुं आयुष्य जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्तनुं जाणवुं ॥ व्यंतरनी स्थिति जघन्य १० हजार वर्षनी, उ० १ पल्यनी तेनी देवीनी ज० १० हजार वर्षनी, उ० अर्द्ध पल्यनी ॥ ज्योतिषीनी ज० पल्यना आठमा भागनी, उ० १ पल्य झाझेरी ॥ ए समुच्चय आयुष्य कह्युं ॥ हवे जुदो जुदो विवरो कहे छे—चंद्रमानुं आयुष्य ज० पा पल्यनुं, उ० १ पल्य ने लाख वर्षनुं ॥ सूर्यनुं आयुष्य ज० पा पल्यनुं, उ० १ पल्य ने १ हजार वर्षनुं ॥ ग्रहनुं ज० पा पल्यनुं, उ० १ पल्यनुं ॥ नक्षत्रनुं ज० पा पल्यनुं, उ० अर्द्ध पल्यनुं ॥ तारानुं ज० पल्यनो आठमो भाग,

उ० पल्यनो ८ मो भाग जाझेरु ॥ हवे देवीनु आयुष्य कहे छे—चंद्रमानी देवीनु आयुष्य ज० पा पल्यनु, उ० अर्द्धपल्य ने ५० हजार वर्षनु ॥ सूर्यनी देवीनु ज० पा पल्यनु, उ० अर्द्ध पल्य ने ५०० वर्षनु ॥ ग्रहनी देवीनु ज० पा पल्यनु, उ० अर्द्ध पल्यनु ॥ नक्षत्रनी देवीनु ज० पल्यनो आठमो भाग, उ० पा पल्यनु ॥ तारानी देवीनु ज० पल्यनो आठमो भाग, उ० पल्यनो आठमो भाग जाझेरु ॥ हवे वैमानिकनी स्थिति कहे छे—जघन्य १ पल्योपम, उत्० ३३ सागरनी, ए समुच्चय स्थिति जाणवी ॥ हवे तेनो जुदो विवरो कहे छे—प्रथम देवलोके ज० १ पल्यनुं, उत्० २ सागरनु ॥ तेनी देवीनु ज० १ पल्योपमनु उ० ७ पल्य ते परिग्रहीतनु तथा अपरिग्रहीतनुं ज० १ पल्यनु, उत्० ५० पल्यनु ॥ बीजे देवलोके ज० १ पल्य जाझेरु, उत्० २ सागर जाझेरु ॥ तेनी देवीनु ज० १ पल्य जाझेरु उत्० ए पल्य ते परिग्रहीतनु अने अपरिग्रहीतनु ज० १ पल्य जाझेरु, उत्० ५५ पल्यनु ॥ त्रीजे देवलोके ज० २ सागरनु, उत्० ७ सागरनु ॥ चोथे देवलोके ज० २ सागर जाझेरु, उत्० ७ सागर जाझेरु ॥ पांचमे देवलोके ज० ७ सागरनु, उत्० १० सागरनु ॥ छट्ठे देवलोके

ज० १० सागरनु, उत्० १४ सागरनु ॥ सातमे देवलोके ज० १४ सागरनु, उत्०१७ सागरनु ॥ आठमे देवलोक ज० १७ सागरनुं, उत्० १७ सागरनु ॥ नवमे देवलोके ज० १७ सागरनु, उत्० १९ सागरनु ॥ दशमे देवलोके ज० १९ सागरनु, उत्० २० सागरनुं ॥ अग्यारमे देवलोके ज० २० सागरनु, उत्० २१ सागरनु ॥ बारमे देवलोके ज० २१ सागरनु, उत्० २२ सागरनु ॥ नव ग्रैवेयके पहेली त्रिके ज० २२ सागरनु उत् २३ सागरनु, ॥ एमज एकेक सागर एकेक ग्रैवेयके वधारता जवुं ॥ जावत् नवमी ग्रैवेयक ज० ३० सागरनु, उत्० ३१ सागरनु ॥ चार अनुत्तर विमाने ज० ३१ सागरनुं, उत्० ३३ सागरनु ॥ सर्वार्थसिद्धे ३३ सागर जघन्योत्कृष्ट ॥ हवे प्रतरनी स्थिति कहे छे—पहेला बीजा देवलोके प्रतर १३ छे, त्यां एकेका सागरना १३ जाग करीए तेमाना बबे जाग वधारता जइए ॥ पहेले प्रतरे ज० १ पल्य, उत्० १ पल्य ने २ जाग ॥ बीजे ज० १ पल्य, उत्० १ पल्य ने ४ जाग ॥ त्रीजे ज० १ पल्य, उत्० १ पल्य ने ६ जाग ॥ चोथे ज० १ पल्य, उत्० १ पल्यने ७ जाग ॥ पांचमे ज० १ पल्य, उत्० १ पल्य ने १० जाग ॥ छठे ज० १ पल्य, उत्० १ पल्य ने १२ जाग ॥

सातमे ज० १ पल्य, उत्० १ सागर १ भाग ॥ आठमे ज० १ पल्य, उत्० १ सागर ३ भाग ॥ नवमे ज० १ पल्य, उत्० १ सागर ५ भाग ॥ दशमे ज० १ पल्य, उत्० १ सागर ७ भाग ॥ अग्यारम ज० १ पल्य, उत्० १ सागर ए भाग ॥ बारमे ज० १ पल्य, उत्० १ सागर ११ भाग ॥ तेरमे ज० १ पल्य, उत्० २ सागर ॥ त्रीजे चोथे देवलोके प्रतर १२ ढे त्यां एकेका सागरना १२ भाग करीए, तेमाना ५ भाग वधारता जइए ॥ पहेले प्रतरे ज० २ सागर, उत्० २ सागर ने ५ भाग ॥ बीजे ज० २ सागर, उत्० २ सागर १० भाग ॥ त्रीजे ज० २ सागर, उत्० ३ सागर ३ भाग ॥ चोथे ज० २ सागर, उत्० ३ सागर ८ भाग ॥ पाचमे ज० २ सागर, उत्० ४ सागर १ भाग ॥ ठठे ज० २ सागर, उत्० ४ सागर ६ भाग ॥ सातमे ज० २ सागर, उत्० ४ सागर ११ भाग ॥ आठमे ज० २ सागर, उत्० ५ सागर ४ भाग ॥ नवमे ज० २ सागर, उत्० ५ सागर ए भाग ॥ दशमे ज० २ सागर, उत्० ६ सागर २ भाग ॥ अग्यारमे ज० २ सागर, उत्० ६ सागर ७ भाग ॥ बारमे ज० २ सागर, उत्० ७ सागर ॥ ब्रह्मलोक देवलोके प्रतर ६ ढे त्यां एकेका सागरना ६ भाग करीए, तेमांना ३

भाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० ७ सागर, उत्० ७ सागर ३ भाग ॥ बीजे ज० ७ सागर, उत्० ८ सागर ॥ त्रीजे ज० ७ सागर, उत्० ८ सागर २ भाग ॥ चोथे ज० ७ सागर, उत्० ९ सागर ॥ पांचमे ज० ७ सागर, उत्० ९ सागर ३ भाग ॥ छठे ज० ७ सागर, उत् १० सागर ॥ लांतक देवलोक प्रतर ५ छे त्यां एकेका सागरना ५ भाग करीए, तेमांना ४ भाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १० सागर, उत्० १० सागर ४ भाग ॥ बीजे ज० १० सागर, उत्० ११ सागर ३ भाग ॥ त्रीजे ज० १० सागर, उत्० १२ सागर २ भाग ॥ चोथे ज० १० सागर, उत्० १३ सागर १ भाग ॥ पांचमे ज० १० सागर, उत्० १४ सागर ॥ महाशुक्र देवलोके प्रतर ४ छे ॥ त्यां एकेका सागरना ४ भाग करीए, तेमांना ३ भाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १४ सागर, उत्० १४ सागर ३ भाग ॥ बीजे ज० १४ सागर, उत्० १५ सागर २ भाग ॥ त्रीजे ज० १४ सागर, उत्० १६ सागर १ भाग ॥ चोथे ज० १४ सागर, उत्० १७ सागर ॥ सहस्रार देवलोके प्रतर ४ छे ॥ त्यां एकेका सागरना ४ भाग करीए, तेमानो १ भाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १७ सागर, उत्० १७ सागर १ भाग ॥ बीजे ज० १७ सागर,

उत्० १७ सागर २ नाग ॥ त्रीजे ज० १७ सागर, उत्० १७ सागर ३ नाग ॥ चोथे ज० १७ सागर, उत्० १० सागर ॥ श्रानत देवलोके प्रतर ४ ठे त्यां एकेक सागरना ४ नाग करीए, तेमानो १ नाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १० सागर, उत्० १० सागर १ नाग ॥ बीजे ज० १० सागर, उत्० १० सागर २ नाग ॥ त्रीजे ज० १० सागर, उत्० १० सागर ३ नाग ॥ चोथे ज० १० सागर, उत्० १ए सागर ॥ प्राणत देवलोके प्रतर ४ ठे त्यां एक सागरना ४ नाग करीए तमांना एकेको नाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० १ए सागर, उत्० १ए सागर १ नाग ॥ बीजे ज० १ए सागर, उत्० १ए सागर २ नाग ॥ त्रीजे ज० १ए सागर, उत्० १ए सागर ३ नाग ॥ चोथे ज० १ए सागर, उत्० २० सागर ॥ आरण देवलोके प्रतर ४ ठ त्या एक सागरना ४ नाग करीए, तेमांनो एकको नाग वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० २० सागर, उत्० २० सागर १ नाग ॥ बीजे ज० २० सागर, उत्० २० सागर २ नाग ॥ त्रीजे ज० २० मागर, उत्० २० सागर ३ नाग ॥ चोथे ज० २० सागर, उत्० २१ सागर ॥ अच्युत दवलोके प्रतर ४ ठ त्यां एकेका सागरना ४ नाग करीए, तेमानो एकेको नाग

वधारीए ॥ पहेले प्रतरे ज० २१ सागर, उत्० २१ सागर १ जाग ॥ बीजे ज० २१ सागर, उत्० २१ सागर २ जाग ॥ त्रीजे ज० २१ सागर, उत्० २१ सागर ३ जाग ॥ चोथे ज० २१ सागर, उत्० २२ सागर ॥ ते उपर नव नव ग्रैवेयके एकेक सागर वधारीए ॥ त्यां प्रतर नथी ॥ हवे देवीनो विचार कहे छे—सौधर्म देवलोके अपरिग्रहित देवीनां ६ लाख विमान छे ॥ तेमा जेनु १० पल्यनु आयुष्य छे ते सनत्कुमार इन्द्रने जोग आवे ॥ २० पल्यनी ब्रह्मलोक देवलोकना देवताने जोग आवे ॥ ३० पल्यनी महाशुक्रना देवताने जोग आवे ॥ ४० पल्यनी आणतना देवताने जोग आवे ॥ ५० पल्यनी आरणना देवताने जोग आवे ॥ ईशान देवलोके ४ लाख विमान छे ॥ तेनु एक पल्य ऊाफेरानु आयुष्य छे ते ईशानना देवताने जोग आवे ॥ १५ पल्यनी देवी माहेंद्रना देवताने जोग आवे ॥ २५ पल्यनी देवी लांतकना देवताने जोग आवे ॥ ३५ पल्यनी देवी सहस्रारना देवताने जोग आवे ॥ ४५ पल्यनी देवी प्राणतना देवताने जोग आवे ॥ ५५ पल्यनी देवी अच्युतना देवताने जोग आवे ॥ पहेले बीजे देवलोके जोग मनुष्यनी रीते ॥ त्रीजे चोथे तेमाथी जाय ॥ पांचमे

छठे स्पर्शभोग ॥ सातमे आठमे रूपभोग ॥ नवमे दशमे शब्दभोग ॥ अग्यारमे बारमे नजर मेळानो भोग ॥ ते उपरांत अल्प विकार, असंख्य सुख छे ॥

इति त्रीजु स्थितिद्वार संपूर्ण ॥ ३ ॥

हवे चोथु अवगाहना द्वार कहे छे ॥

सर्व जीवनी अवगाहना जघन्य आंगुलना असंख्यातमा भागनी जाणवी ॥ उत्कृष्टीनो विवरो कहे छे—पहेली नरके पोणा आठ धनुष्य ने ६ आंगुल ॥ बीजीए १५॥ धनुष्य १२ आंगुल ॥ त्रीजीए ३१। धनुष्य ॥ चोथीए अवगाहना ६२॥ धनुष्य ॥ पांचमीए १२५ धनुष्य ॥ छठीए २५० धनुष्य ॥ सातमीए ५०० धनुष्यनी काया जाणवी ॥ हवे प्रतर प्रतरनी जुदी अवगाहना कहे छे—पहेली नरके १३ प्रतर छे तेमां प्रथम पाथडे ३ हाथनी काया ते उपर २ हाथ ८॥ आंगुल वधारीए ॥ बीजे पाथडे १ धनुष्य १ हाथ ८॥ आंगुल ॥ त्रीजे १ धनुष्य ३ हाथ १७॥ आंगुल ॥ चोथे २ धनुष्य

२ हाथ १॥ आगुल ॥ पांचमे ३ धनुष्य १० आगुल ॥ छट्ठे ३ धनुष्य २ हाथ १८॥ आगुल ॥ सातमे ४ धनुष्य १ हाथ ३ आंगुल ॥ आठमे ४ धनुष्य ३ हाथ ११॥ आंगुल ॥ नवमे ५ धनुष्य १ हाथ २० आंगुल ॥ दशमे ६ धनुष्य ४॥ आगुल ॥ अग्यारमे ६ धनुष्य २ हाथ १३ आंगुल ॥ बारमे ७ धनुष्य २१॥ आगुल ॥ तेरमे ७ धनुष्य ३ हाथ ६ आंगुल ॥ बीजी नरके पाथरा ११ छे ॥ त्यां ३ हाथ ३ आगुल पाथरे पाथरे वधारीए ॥ प्रथम पाथरे ७ धनुष्य ३ हाथ ६ आगुल ॥ बीजे ८ धनुष्य २ हाथ ए आंगुल ॥ त्रीजे ए धनुष्य १ हाथ १२ आंगुल ॥ चोथे १० धनुष्य १५ आगुल ॥ पांचमे १० धनुष्य ३ हाथ १८ आगुल ॥ छट्ठे ११ धनुष्य २ हाथ २१ आंगुल ॥ सातमे १२ धनुष्य २ हाथ ॥ आठमे १३ धनुष्य १ हाथ ३ आगुल ॥ नवमे १४ धनुष्य ६ आंगुल ॥ दशमे १४ धनुष्य ३ हाथ ए आंगुल ॥ अग्यारमे १५ धनुष्य २ हाथ १२ आगुल ॥ त्रीजी नरके पाथरा ए छे ॥ त्यां ७ हाथ, १ए॥ आंगुल पाथरे पाथरे वधारीए ॥ प्रथम पाथरे १५ धनुष्य २ हाथ १२ आगुल ॥ बीजे १७ धनुष्य २ हाथ ७॥ आंगुल ॥ त्रीजे १ए धनुष्य २ हाथ ३ आगुल ॥ चोथे

२१ धनुष्य १ हाथ २२॥ आंगुल ॥ पांचमे २३ धनुष्य १ हाथ १८ आंगुल ॥ छठे २५ धनुष्य
१ हाथ १३॥ आंगुल ॥ सातमे २७ धनुष्य १ हाथ ९ आंगुल ॥ आठमे २९ धनुष्य १ हाथ
४॥ आंगुल ॥ नवमे ३१ धनुष्य १ हाथ ॥ चोथी नरके पाथडा ७ छे ॥ त्यां ५ धनुष्य
२० आंगुल, एकेके पाथडे वधारीए ॥ पहेले पाथडे ३१ धनुष्य १ हाथ ॥ बीजे ३६ धनुष्य
१ हाथ २० आंगुल ॥ त्रीजे ४१ धनुष्य २ हाथ १६ आंगुल ॥ चोथे ४६ धनुष्य ३ हाथ
१२ आंगुल ॥ पांचमे ५२ धनुष्य ८ आंगुल ॥ छठे ५७ धनुष्य १ हाथ ४ आंगुल ॥ सातमे
६२ धनुष्य २ हाथ ॥ पांचमी नरके पाथडा ५ छे त्यां १५ धनुष्य २ हाथ १२ आंगुल
एकेके पाथडे वधारीए. प्रथम पाथडे ६२ धनुष्य २ हाथ ॥ बीजे ७८ धनुष्य १२ आंगुल ॥
त्रीजे ९३ धनुष्य ३ हाथ ॥ चोथे १०९ धनुष्य १ हाथ १२ आंगुल ॥ पाचमे १२५ धनुष्य ॥
छठ्ठी नरके पाथडा ३ छे ॥ त्यां एकेके पाथडे ६२ धनुष्य २ हाथ वधारीए ॥ प्रथम पाथडे
१२५ धनुष्य ॥ बीजे १८७ धनुष्य २ हाथ ॥ त्रीजे २५० धनुष्य ॥ सातमी नरके ५०० धनु
ष्यनी काया छे ॥ ते भवधारणी काया जाणवी ॥ वैक्रेय करे तो जघन्य आंगुलनो सख्यातमो

नाग, उत्कृष्टी वैक्रेय कर तो बमणी काया करे ॥ ए नारकीनी अवगाहना करी ॥ हवे नवनपति वाणव्यतर ज्योतिषी वैमानिक देवलोक बे सुधी नवधारणी ७ हाथनी काया ॥ त्रीजे चोथे ६ हाथ ॥ पाचमे ठठ्ठे ५ हाथ ॥ सातमे आठमे ४ हाथ ॥ उपरना ४ देवलोके ३ हाथनी काया ॥ ए देवता उत्तर वैक्रेय करे तो ज० अंगुलनो सख्यातमो नाग, उत्० लाख जोजन करे एथी उपरना देवता उत्तर वैक्रेय न करे नव ग्रैवेयके २ हाथनी काया ॥ चार अनुत्तर विमाने १ हाथनी काया ॥ सर्वार्थसिद्ध विमाने १ हाथ माठेरी काया ॥ ए अवगाहना उच्छेद आगुले करी सर्वनी जाणवी ॥ हवे सिद्धनी अवगाहना ज० १ हाथ ८ आंगुल, मध्यम ४ हाथ १६ आंगुल, उत्० ३३३ धनुष्य ३२ आंगुल ॥ वादर, पृथ्वी, पाणी, तेउ, वाउ अने सूक्ष्म एकेंद्रिय ए सर्वेनी ज० उ० आंगुलना असख्या तमा नागनी अवगाहना जाणवी ॥ प्रत्येक वनस्पतिनी ज० अंगुलनो असख्यातमो नाग, उ० हजार जोजन झाझेरी कमलाना मोटाने न्याये ॥ सूक्ष्म वनस्पतिना असख्यात शरीरे एक सूक्ष्म वायुनु शरीर थाय ॥ सूक्ष्म वायुना असख्य शरीरे एक सूक्ष्म तेउनु शरीर थाय ॥

सूक्ष्म तेउना असख्य शरीरे एक सूक्ष्म अपनु शरीर थाय॥ सूक्ष्म अपना असंख्य शरीरे एक सूक्ष्म पृथ्वीनु शरीर थाय॥ सूक्ष्म पृथ्वीने असख्य शरीरे एक बादर वायुनु शरीर थाय॥ बादर वायुने असंख्य शरीरे एक बादर तेउनु शरीर थाय॥ बादर तेउने असख्य शरीर एक बादर अपनु शरीर थाय॥ बादर अपने असख्य शरीरे एक बादर पृथ्वीनु शरीर थाय॥ एटले केवमो थयो ते उपर चूर्णपीसिका दासीनु दृष्टात कहे छे—बत्रीस वर्षनो जुवान जोध बळवत पुरुष रत्नने एरण उपर मुकीने गाढा घणनो प्रहार करे तो ते रत्न एरणमा खुचे पण भांगे नहि॥ एवु रत्न ते चूर्णपीसिका दासी आगळी ने अगुठा वचे चापीने तेनो साथीयो काढे एवी बळवत ते रत्नने वज्रमय खरल उपर मुके, वज्रमय लोढागती २१ वार पीसे, वाटे तो ते जीव केटलाएक विलय जाय, केटलाएक किलामना पामे, केटलाएके जाण्यु पण नथी॥ वळी नगरने दृष्टाते—जेम कोइ नगर मादु होय, ते नगरने ब्याक पासे जुरू होय, ते जुरू करता केटलाएक वीलय जाय, केटलाएक कीलामना पामे, केटलाके जाण्यु पण नथी, एवु सूक्ष्म शरीर छे॥ वे इन्द्रि

य शख प्रमुखनु शरीर १२ जोजननुं ॥ तेइन्द्रिय खजुरा प्रमुखनु गाउ ३ नु ॥ चउरिंद्रिय भमरा प्रमुखनु गाउ ४ नु ॥ जलचरनु खाबोमांहि ए जोजनना मछ ॥ लवण समुद्रमांहि ५०० जोजनना मछ ॥ कालोदधीमां ७०० जोजननां मछ ॥ स्वयम्भूरमण समुद्रमां १००० जोजनना मछ छ ॥ ए जलचर समुर्छिम अने गर्भज बन्ने जाणवा ॥ स्थलचर समुर्छिमनुं शरीर पृथक् गाउनु ॥ गर्भजनु ६ गाउनु ॥ उरपर समुर्छिमनु पृथक् जोजननु ॥ गर्भजनु १ हजार जाजननु ॥ भुजपर समुर्छिमनु पृथक् धनुष्यनु ॥ गर्भजनु पृथक् गाउनुं ॥ खेचर समुर्छिम ने गर्भजनु पृथक् धनुष्यनु ॥ वैक्रेय ज० अंगुलनो सख्यातमो भाग करे, उत्० लखसें जोजननी काया करे ॥ मनुष्यनी काया देवकुरु उत्तरकुरुना युगलियानी ३ गाउनी हरिवास रम्यक्वासे २ गाउनी ॥ हेमवय एरणवये १ गाउनी ॥ छपन्न अंतरद्वीपे ८०० धनुष्यनी ॥ पांच महाविदेहे ५०० धनुष्यनी ॥ भरत ऐरवते आराना प्रमाणे अवगाहनानु मान जाणवु ॥ पहेले आरे ३ गाउ ॥ बीजे आरे २ गाउ ॥ त्रीजे आरे १ गाउ ॥ उतरते आरे ५०० धनुष्य ॥ त्यां तीर्थंकरनी काया५००धनुष्यनी ॥ चोथे आरे ५०० धनुष्यनी ॥ उतरते आरे ७ हाथ॥

ते आर बीजा तीर्थंकरनुं ४५० धनुष्यनु शरीर ॥ त्रीजानु४०० धनुष्यनु ॥ चाथानु ३५०धनुष्यनु॥ पाचमानु ३०० धनुष्यनु ॥ छठ्ठानु २५० धनुष्यनु ॥ सातमानु २०० धनुष्यनु ॥ आठमानु १५० धनुष्यनु ॥ नवमानु १०० धनुष्यनु ॥ दशमानु ए० धनुष्यनु ॥ अग्यारमानु ७० धनुष्यनु ॥ बारमानु ७० धनुष्यनु ॥ तेरमानु ६० धनुष्यनु ॥ चौदमानु ५० धनुष्यनु ॥ पनरमानु ४५धनुष्यनु॥ सोलमानु ४० धनुष्यनु॥ सत्तरमानु ३५ धनुष्यनु ॥ अढारमानु ३० धनुष्यनु ॥ ओगणीसमानु २५ धनुष्यनु॥ वीसमानु २० धनुष्यनु ॥ एकवीसमानु १५ धनुष्यनु ॥ बावीसमानु १० धनुष्यनु ॥ तेवीसमानु ९ धनुष्य १ हाथनु ॥ चोवीसमानु १ धनुष्य ३ हाथनु॥ पाचमे आरे ७ हाथनु, उतरते आरे १ हाथनु ॥ छट्ठे आरे १ हाथ, उतरते आरे मूढा हाथनो ॥ सर्व जीव उपजतान आगुलना असख्यातमा नागनी अवगाहना जाणवी, अन उत्तर वैक्रेय करे तो लाख जोजननी ऊफेरी जाणवी ॥

इति चोथु अवगाहनाद्वार सपूर्ण ॥ ४ ॥

हवे पांचमु विरहद्वार कहे छे ॥

समुच्चय ४ गतिनो विरहकाल ज० १ समयनो, उ० १२ मुहूर्त्तनो सर्व जीवनो विरह ज० एक समयनो सर्वत्र जाणवो ॥ हवे उत्कृष्टो प्रत्येक् प्रत्येक्नो जुदो जुदा विरहकाल कहे छे–प्रथम नरके २४ मुहूर्त्त ॥ बीजीए ७ दिवस ॥ त्रीजीए १५ दिवस ॥ चोथीए १ मास ॥ पांचमीए २ मास ॥ छठ्ठीए ४ मास ॥ सातमीए ६ मास ॥ भवनपतिनो २४ मुहूर्त्त ॥ पांच एकेंद्रिय अविरहिया समय समय उपजे अने समय समय चवे ॥ सख्याताने गमे सख्याता, असख्याताने गमे असख्याता अने अनताने गमे अनता उपजे अने चवे ॥ विगलेंद्रियनो अंतमुहूर्त्तनो विरह ॥ तिर्यंच पचेंद्रियसमुर्छिमनो विरह अतर्मुहूर्त्तनो ॥ गर्भजनो १२ मुहूर्त्त ॥ मनुष्य समुर्छिमनो २४ मुहूर्त ॥ गर्भज मनुष्यनो १२ मुहूर्त्त ॥ व्यतर ज्योतिषी अने पहेले बीजे देवलोके २४ मुहूर्त्त ॥ त्रीजे देवलोके ए दिवस २० मुहूर्त्त ॥ चोथे देवलोके १२ दिवस १० मुहूर्त्त ॥ पांचमे देवलोके २२ दिवस १५ मुहूर्त्त ॥ छठ्ठे देवलोके ४५ दिवस ॥ सातमे देवलोके ८०

दिवस ॥ आठमे देवलोके १०० दिवस ॥ नवमे दशमे सख्यातामास ॥ अग्यारमे बारमे सख्याता वर्ष ॥ पहेली त्रिके सख्याता वर्षना सेंकमा ॥ बीजी त्रिके सख्याता वर्षनां सहस्र ॥ त्रीजी त्रिके सख्याता वर्षना लाखनो विरह ॥ चार अनुत्तर विमाने पल्यनो असख्यातमो जाग ॥ सर्वार्थसिद्धे पल्यनो सख्यातमो जाग विरह ॥ मोक्ष जावानो विरह ज० १ समय, उत्० ६ मास ॥

इति पांचमु विरहद्वार संपूर्ण ॥ ५ ॥

हवे छठ्ठु जवनद्वार कहे छे ॥

प्रथम सात नरकनी विगत ॥ रत्नप्रजा पृथ्वी केम कही ? तेमा १६ जातिना रत्नना १६ कांम छे एकेको हजार जोजननो छे एटले १६ हजार जोजननो खर कांम छे ॥ आउवल कांम ८० हजार जोजननो छे ॥ चोराशी हजार जोजननो पंकबहुल कांम छे ॥ १ ॥ शर्करप्रजा केम कही ? तेमा कांकरा छे ॥ २ ॥ वालु

: केम कही ? तेमा वेलु ठ ॥ ३ ॥ ५कप्रजा केम कही ? तेमां कादव ठे ॥ ४ ॥ धूम प्रजा केम कही ? तेमां धुमाको ठे ॥ ५ ॥ तमप्रजा केम कही ? तेमा अंधकार ठे ॥ ६ ॥ तमतमाप्रजा केम कही ? तेमां अधकारमा अधकार ठे ॥७॥ साते पृथ्वी जाकी केटली ठ ते कहे ठे ॥ प्रथम पृथ्वी १ लाख ८० हजार जोजन जाकी ठे ॥ बीजी पृथ्वी १ लाख ३२ हजार जोजन जाकी ठे ॥ त्रीजी पृथ्वी १ लाख २८ हजार जोजन जाकी ठे ॥ चोथी पृथ्वी १ लाख २० हजार जोजन जाकी ठे ॥ पांचमी पृथ्वी १ लाख १८ हजार जोजन जाकी ठे ॥ ठही १ लाख १६ हजार जोजन जाकी ठे ॥ सातमी नरकनो पिंम १ लाख ८ हजार जोजन जाकीना ठे, ते शेने आधारे रह्यो ठे ? पहेलोए २० हजार जोजन घनो दधि ठे, असंख्याता जोजननां सहस्रनो घनवात ठे, असंख्याता जोजन सहस्रनो तनुवात ठे ॥ असंख्याता जोजनना सहस्रनो आकाश ठे ॥ एमज साते नरके जाणवु ॥ सातमी नरके पटला विशेष जे हेठे अलोक ठे ॥ हवे त्रीठो अलोक केटले दूर ठे ते कहे ठे ॥ पहेली नरकथी बार जोजने त्रीठो अलोक ठे ॥बीजीए एक जोजनना त्रण जाग करीए

तेमांना २ नाग वधारीए ॥ ठेल्ला सुधी बीजीए जोजन १२ अइया नाग २ ॥ त्रीजीए जोजन १३ नाग १ अइयो ॥ चोथीए १४ जोजन ॥ पांचमीए १४ जोजन अइया नाग २॥ छठीए १५ जोजन अइयो नाग १ ॥ सातमीए १६ जोजन ॥ एटले श्लोक ठे ॥ एकेकी नरके वलयाने आकारे त्रण वलय ठे ॥ पेली नरके ६ जोजननो घनोदधि ठे ॥ साढाचार जोजननो घनवात ठे १॥ जोजनना तनवात ठे एकएक नरके एकएक अइयो नाग वधारतो जाव सातमी नरके आठ जोजननो घनोदधि ठे वळी एकेकी नरके पा पा जोजन घनवातमा वधारता वधारता जाव सातमी नरके ठ जोजननो घनवात ठे॥ वळी एकेकी नरके एक जोजनना १२ नाग करीए एवो एकेको नाग वधारतां जाव सातमी नरके वे जोजननो तनवात ठे ॥ सात पृथ्वी झालरने संस्थाने ठे साते नरके ४ए पाथडा ठे तेनी विगत– पहेली नरके १३ पाथडा ठे ॥ बीजीए ११ ॥ त्रीजीए ए ॥ चोथीए ७ ॥ पांचमीए ५ ॥ छठीए ३ ॥ सातमीए १ ॥ ए सर्वे ४ए पाथडा ठे ॥ एकेको पाथडो ३ हजार जोजननो जाडो ठ ॥ ते मध्ये १ हजार जोजननो हेठे जाडो ठे ॥ एक हजार जोजननो उपर जाडो

छे ॥ वच्चे १ हजार जोजननो पोलार छे, तेमां नारकीनो वास छे ॥ एकेको पाथडो असंख्याता जोजनना सहस्रनो लांबो पहोळो छ ॥ हवे पाथडानुं आंतरो कहे छे–प्रथम नरके १२ आतरा छे ॥ एकेके पाथडे आंतरो ११५८३ जोजन १ गाउ ६६६ धनुष्य २ हाथ १६ आंगळ एटलो छे ॥ बीजी नरके १० आंतरा छे, त्या एकेक पाथडे आंतरो ९७०० जोजननो छे ॥ त्रीजी नरके आंतरा ८ छे, त्यां एकेक पाथडे १२३७५ जोजननो आतरो छे ॥ चोथी नरके आंतरा ६ छे, त्यां एकेक पाथडे आंतरो १६१६६ जोजन २ गाउ १३३३ धनुष्य ३२ आंगळनो छे ॥ पांचमी नरके आंतरा ४ छे, त्यां एकेक पाथडे आतरो २५२५० जोजननो छे ॥ छठी नरके आंतरा बे छे, त्यां एकेक पाथडे आंतरो ५२५०० जोजननो छे ॥ ए समस्त पाथडाना आंतरा कह्या ॥ हवे पृथ्वीना पिंडनुं मान कहे छे ॥ प्रथम नरके १ लाख ८० हजार जोजननो पिंड छे, ते मांहिथी १ हजार जोजन उपर मुकीए, एक हजार जोजन हेठे मुकीए, वच्चे १ लाख ७८ हजार जोजननी पोलार छे तेमां १३ पाथडा ने १२ आंतरा छे ए रीते तारतमपणे ७ पृथ्वी सुधी एमज जाणवुं ॥

सातमी नरके सामी थावन हजार जोजन उपर मुकीए, सामी पावन हजार जोजन हेठ मुकीए, वच्चे ३ हजार जोजननी पोलार ठे त्यां १ पाथमो ठे ॥ साते नरके थइ ८४ लाख नरकावासा ठे तेनी विगत–पहेली नरके ३० लाख नरकावासा ठे, बीजीए २५ लाख, त्रीजीए १५ लाख, चोथीए १० लाख, पांचमीए ३ लाख, छठीए १ लाख पांच उणा ॥ सातमीए पांच नरकावासा ठे ॥ ते मध्ये एक नरकावासो सख्याता जोजननो ठे ॥ ४ नरकावासा असख्याता जोजनना ठे जे सख्याता जोजनना नरकावासा ठे त्यां सख्याता नारकीनो वास ठे ॥ जे असख्याता जोजनना ठे त्यां असख्याता नारकीनो वास ठे ॥ हवे सख्यातानु मान कहे ठे ॥ कोइ एक देवता ७॥ लाख जोजननु एक मगलु भरतो ६ मास सुधी चाले ॥ छठे मासे पार पामे, कोइ न पामे ते असख्याता जोजनना जाणवा ॥ जे असख्याता जोजनना ठे तेनो पार न पामे ॥ सख्याता जोजनना ठे तेनो पार पामे ॥ एटले नानो ते लाख जोजनना ठे मोटा ते असख्याता जोजननो ठे ॥ हवे ४९ पाथरु मध्य भागे ४९ इन्द्रक नरकावासा ठे, तेना नाम कहे ठे–सीमंत १, रोरुक २, रज ३, उद्भ्रांत ४,

सम्रात ५, असम्रात ६, विभ्रात ७, लक्ष ८, शीत ९, वक्रांत १०, अवक्रांत ११, विकक्ष १२, रौरव १३ ॥ ए १३ प्रथम नरकना क्रमे प्रतरना इन्द्रक जाणवा ॥ १ ॥ स्तनिक १, स्तनक २, मणक ३, चणक ४, घट्ट ५, सघट्ट ६, जिव्ह ७, अवजिव्ह ८, लोल ९, लोलावत्त १०, घणलोलुक ११, ए बीजी नरके प्रतरना क्रमे ११ इन्द्रक जाणवा ॥ २ ॥ तप्त १, तपिक २, तपन ३, तापन ४, विदाय ५, प्रज्वलित ६, उज्वलित ७, सज्वलित ८, सप्रज्वलित ९, ए त्रीजी नरके प्रतरना क्रमे ९ इन्द्रक जाणवा ॥ ३ ॥ आर १, तार २, मार वव ४, तम ५, खारूखरू ६, खरूखड ७, ए चाथी नरके प्रतरना क्रम ७ इन्द्रक जाणवा ॥ ४ ॥ खात १, तमस, उस ३, अध ४, तिमिस ५. ए ५मी नरके प्रतरना क्रमे ५ इन्द्रक जाणवा ॥ ५ ॥ माद्दी १, वादल २, लल्लक ३ ए ठठी नरके प्रतरना क्रमे ३ इन्द्रक जाणवा ॥ ६ ॥ अपइठाण १, ए सातमी नरके प्रतर १ नो इन्द्रक (मद्दोटो) नरकावासो जाणवा ॥ ७ ॥ इय साते नरके यइ आवलीका बद्ध ९६५३ नरकावासा ठे तेमा केटलाएक त्र्यस्त्र ठ, केटलाएक चउरस ठे, केटलाएक वाटला ठ, बाकीना पुष्पाविकिर्ण जाणवा ॥ रत्नप्रभा

पृथ्वीना उपला पिंडथकी ४२ हजार जोजन नीचे गया पछी चमरेंद्रनी राजधानी छे त्यां ७ क्रोड, ७२ लाख जवनपतिनां जवन छे, तेनी विगत—४ क्रोड ६ लाख जवन दक्षिण दिशे छ, ३ क्रोड ६६ लाख जवन उत्तर दिशे छे ॥ दक्षिण दिशामां प्रथम असुर कुमारनां जवन ३४ लाख छे, नागकुमारनां ४४ लाख छे, त्रीजाने ३८ लाख, चोथाने ४० लाख, पान्चमाने ४० लाख, छठाने ४० लाख, सातमाने ४० लाख, आठमाने ४० लाख, नवमाने ५० लाख, दशमाने ४० लाख जवन छे ॥ उत्तर दिशामां असुर कुमारना ३० लाख जवन छ, बीजान ४० लाख, त्रीजाने ३४ लाख, चोथाने ३६ लाख, पांचमाने ३६ लाख, छठाने ३६ लाख, सातमाने ३६ लाख, आठमाने ३६ लाख, नवमाने ४६ लाख, दशमाने ३६ लाख, एटला जवनपतिनां जवन छे ॥ हवे १० जवनपतिना मुगटनां चिह्न कहे छे—असुर कुमारने चुडामणीनु, बीजाने नागनी फेणनु, त्रीजाने गरुडपखीनु, चोथाने वज्रनु, पाच माने कळसनु, छठाने सिंहनु, सातमाने घाडानु, आठमाने गजनु, नवमाने मगरमच्छनु, दशमाने सरावला सपुटनु, ए चिह्ने करी आप आपणी जाति जाणवी ॥ हवे एनो वर्ण

कहे छे—असुर काळा, नागने उदधि पंडुरा, सुवन, दिशा ने स्तनित ए त्रण सोवनवर्णो, विज्जु, अग्नि ने दीव ए त्रण रक्तवर्णो पवननो लीलो वर्ण ॥ ए दश भवनपतिना वर्ण जाणवा ॥ हवे तेनां वस्त्र कहे छे—असुर कुमारनां रक्त वस्त्र ॥ नाग १, उदधि २, विज्जु ३, दीव, ४, अग्नि ५ ए ५ नां लीलां वस्त्र ॥ दिशा स्तनित ने सुवन ए त्रणनां श्वेत वस्त्र ॥ वायुकुमार ने सध्याना राग सरखा वस्त्र जाणवां ॥ ए १० भवनपतिनां वस्त्र कह्यां ॥ हवे रत्नप्रभा पृथ्वीनो उपलो पिंड हजार जोजननो छे ते मध्ये १०० जोजन उपर मुकीए, १०० हेठे मुकीए, तेनी वच्चे १६ व्यंतरनां असंख्याता नगर छे उत्० जंबूद्वीप जेवडां ॥ मध्यम महाविदेह जेवडां ॥ जघन्य भरतक्षेत्र जेवडां॥ एनी जाति ध्वजाने चिह्ने करी जाणवी ते कहे छे ॥ पहेलाने कलंबु वृक्षनु, बीजाने शालि वृक्षनु, त्रीजाने वड वृक्षनु, चोथाने पाडली वृक्षनु, पांचमाने अशोक वृक्षनु, छठाने चंपक वृक्षनु, सातमाने नागवृक्षनु, आठमाने टींबरु वृक्षनु, ए आप आपणां चिह्न कह्यां ॥ हवे तेनो वर्ण कहे छे—पिशाच, यक्ष, महोरग ने गंधर्व ए ४ श्यामवर्णो ॥ किंनर

नीला ॥ राक्षस, किंपुरिस श्वेतवर्णे ॥ भूत कृष्ण वर्ण ॥ ए ७ नो वर्ण जाणवो ॥ हवे लोकनु मान कहे छे ॥ त्रिछी दिशे असंख्याती जोजननी कोमाकोमीनु छे ॥ तेमज उंची दिशे तथा नीची दिशे असंख्याता जोजननी कोमाकोमीनु छ ॥ हवे असख्यात जोजननी कोमाकोमीनु मान कहे छे ॥ जम्बूद्वीपनी ४ पोले ४ देवागना ४ बलिपींड समकाळे उछा ळे, अने शीघ्र गतिना धणी ६ देवता जम्बूद्वीप पाखली एक चपटीमांहि २१ फेरा देइ त ४ बलिपिंड समकाळे अद्धरथी झीली ले नीचे पडवा न दे, एवो शीघ्र गतिना धणी ६ देवता ६ दिशे चाल्या ॥ तेवारे कोइ एक व्यवहारीयाने घर एक दीकरानो जन्म थयो, तेनु आयुष्य १ हजार वर्षनु, तेना ७ पेढिया एवे आउखे थया तोए लोकनो पार पाम्या ? नोइणट्ठे समट्ठे ॥ तेनां नाम गोत्र क्षय गया तोपण लोकनो पार पाम्या ? नोइणट्ठे समट्ठे ॥ तो स्वामी केटला लगी गया ? घणु गया अने थोडु बाकी रह्या ॥ मेरु पर्वतनो कद त्यां रुचक प्रदेश थकी लोकनु मान मपाय ॥ ते लोकने विषे असख्याता द्वीपसमुद्र छे ॥ ते असख्यातानु मान अढी उद्धार सागरे जेटला रोमखंड होय अथवा

२५ कोमाकोमी पढ्योपमे जेटला रोमखम होय तेटला द्वीप समुद्र छे ॥ अथवा वारुणी द्वीप पछी ससारमाहि जेटली शुज्ञ वस्तुना नाम छे तेने वर अने वरावज्ञास शब्द जोमतां एकेक वस्तुना नामे त्रण त्रण द्वीप समुद्रना नाम थाय तेवी रीते पण एकेके नामे असंख्याता द्वीपसमुद्र छ, यावत् विज्ञास समुद्रसुधी ते पण असंख्यात ज गणवा ॥ पछी त्यांथी एकेके नामे देव १, नाग २, जक्ष ३, जूत ४, अने स्वयंजूरमण एम पाच द्वीप तथा समुद्र छे ५ ॥ हवे समस्त द्वीप अने समुद्रनो मध्यतो जम्बूद्वीप ज छे ते जम्बूद्वीप पूर्ण चंद्रमाने अथवा पूर्ण पुमलाने आकारे छे ॥ बाकी सर्व द्वीपसमुद्र वलयाने आकारे छे ॥ जम्बूद्वीप १ लाख जोजननो छे तेनी विगत–प्रथम दक्षिण उत्तरे पहोळाइनु मान कहे छे–५२६ जोजन ६ कलानो जरतक्षेत्र पहोळो छे, तेने ठेके १०५२ जोजन १२ कलानो चूलहीमवत पर्वत छे, तेने ठेके २१०५ जोजन ५ कलानु हेमवय क्षेत्र छे, तेने ठेके ४२१० जोजन १० कलानो महाहेमवत पर्वत छे, तेने ठेके ७४२१ जोजन १ कलानु हरिवास क्षेत्र छे, तेने ठेके १६७४२ जोजन २ कलानो निषध पर्वत छे, तेने ठेके ३३६०४ जोजन ४ कलानो महावि

देहनो विभाग ठ, तेने ठेके १६०४२ जोजन २ कलानो नीलवत पर्वत ठे, तेने ठेके ७४२१ जोजन १ कलानु रम्यगवास क्षेत्र ठे, तेने ठेके ४२१० जोजन १० कलानो रूपी पर्वत ठे, तने ठेके २१०५ जोजन ५ कलानु परणवय क्षेत्र ठे, तेने ठेके १०५२ जोजन १२ कलानो शिखरी पर्वत ठे, तेने ठके ५२६ जोजन ६ कलानु पेरवतक्षेत्र ठे, ए सर्वे दक्षिण उत्तर पोहोळा कह्या ॥ हव पूर्व पश्चिम लांबा कहे ठे ॥ १४५२८ जोजन ११ कलानो भरतक्षेत्र लांबु ठे, ३७६७४ जोजन १६ कला देशे उणो हेमवय क्षेत्र लांबु ठे, ७३९०१ जोजन १७॥ कला हरिवास क्षेत्र लांबु ठे, एक लाख जोजन महाविदेह क्षेत्र लांबुं ठे, ७३९०१ जोजन १७॥ कला रम्यकवास क्षेत्र लांबु ठे, ३७६७४ जोजन १६ कला देशे उणु परणवय क्षेत्र लांबु ठे, १४५२७ जोजन ११ कला परवत क्षेत्र लांबु छे, ए क्षेत्र लांबा कह्या ॥ हवे वासधर पर्वतनु लांबापणु कहे ठे ॥ २४९३२ जोजन हेमवत पर्वत लांबा ठ, ५३९३१ जोजन महाहेमवत पर्वत लांबो ठे, ९४१५६ जोजन २ कलानो निषधने नीलवत पर्वत लांबो ठे, ५३९३१ जोजन फाफेरो रूपी पर्वत लांबो ठे, २४९३२ जोजन शिखरी

पर्वत लांबो छे, ए वासधर पर्वतनुं लांबापणु कह्युं ॥ हवे ऊंचापणु कहे छे ॥ चूलहिमवत पर्वत अने शिखरी पर्वत १०० जोजनना ऊचा छे, १०० गाउ नीचे धरतीमां छे महाहेमवत पर्वत अने रूपीपर्वत २०० जोजन ऊचा छे, २०० गाउ नीचे धरतीमां ने निषध नीलवत पर्वत ४०० जोजन ऊचा छे, ४०० गाउ नीचे धरतीमां छे मानुष्योतर पर्वत १७२१ जोजन उंचा छे, १७२१ गाउ नीचे धरतीमां छे ॥ जम्बूद्वीप पूर्व पश्चिम लाख जोजननो छे तेनुं पहोलपणु कहे छे ॥ ५७४२ ये वनमुख छे, ७५० जोजन ६ अंतर नदी छे, ४००० जोजनना ७० वखारा पर्वत छे, ४४००० जोजनना बे भद्रसाल वन छे १०००० जोजन मेरु पर्वत जाडो छे, ३५४०४ जोजन विजयनु पहोलपणु छे, ए जम्बूद्वीपनु पहोलपणु कह्यु तेनी परिधि ३१६२२७ जोजन ३ गाउ १२८ धनुष्य १३॥ आगुलनी जाणवी ए जम्बूद्वीपने चारे दिशे ४ दरवाजा छे तेनु अंतर ७९०५२ जोजन देशे ऊणु छे जम्बूद्वीपनु क्षेत्रफल सातसें नेवु कोडी, ५६ लाख, ९४ हजार, १५० जोजन अने पोणा बे गाउ तथा साडी बासठ हाथ थाय अर्थात् जोजन जोजनना ककडा करीए तो ऊपर कह्या तेटला थाय ॥

जबूद्वीप पहोळो १ लाख जोजननो छे तेने फरतो २ लाख जोजननो लवण समुद्र छे, तेने फरता ४ लाख जोजननो धातकी खन्ड छे, तेने फरतो ८ लाख जोजननो कालोदधि समुद्र छे, तेने फरतो १६ लाख जोजननो पुष्करद्वीप छे ॥ मेरुपर्वत ९९००० जोजन उंचो छे एक हजार जोजन धरतीमा उन्डो छे तेना मध्य जागथी दक्षिण उत्तरे पुष्करार्द्ध सुधी गणीए, एम करता ४५ लाख जोजन थाय ते मनुष्यक्षेत्र जाणवुं तेनी परिधि १ कोडी ४२ लाख ३० हजार २४९ जोजन थाय उपरात द्वीपसमुद्र ठाम घसणा जाणवा ॥ हवे जबुद्वीपनी नदीओनो विचार कहे छे ॥ जबूद्वीप मध्ये मेरु पर्वतनी दक्षिण दिशे ७ नदी शाश्वती छे तेनी विगत ॥ प्रथम गगा अने सिंधु चूलहिमवत पर्वतथी निकली छे ॥ मूखे जाडपणे ६। जोजन–पूर्व पश्चिम जरत मध्ये चाली, समुद्रमां जळी त्यां पहोळपणु ६२॥ जोजननु छे गगा नदीनो परिवार १४००० नदीनो छे सिंधु नदीनो परिवार १४००० नदीनो छे ॥ त्रीजी रोहितसा नदी ते पण चूलहेमवतना पद्मद्रहथी उत्तरी, पेले पासे हेमवय क्षेत्र मध्ये चाली मूखे पहोलपणुं

१२॥ जोजननो छे, अने समुद्रमां जल्री, त्यां १२५ जोजन पहोळपणो छे ॥ चोथी रोहिता नदी ते महाहेमवतना द्रहथी उतरी, ते आ बाजु हेमवत क्षेत्र मध्ये चाली मूले पहोळपणुं १२॥ जोजननुं छे अने समुद्र मध्ये जळी, त्यां पहोळपणु १२५ जोजननु छे ए बन्ने नदीनो परिवार २०००० नदीनो छे ॥ पांचमी हरिकांता नदी छे ॥ छठी हरिसलीला नदी ते महाहेमवतनां द्रह थकी उतरी ते पहेले पासे हरिवास क्षेत्र मध्ये चली मूले पहोळपणु २५ जोजननुं छे, अने समुद्र मध्ये मळी पूर्व पश्चिमने पासे, त्यां २५० जोजन पहोळपणु छे ए बेउनो परिवार ५६००० नदीनो छे ॥ सातमी सीता नदी ते निषध पर्वतना द्रह थकी उतरी, ते पहेले पासे देवकुरुक्षेत्र मध्य चाली मूले पहोळपणु ५० जोजननु छे अने समुद्र मध्ये जळी, त्यां ५०० जोजन पहोळी छे तेनो परिवार ५३२००० नदीनो छे ॥ हवे मेरुनी उत्तरनी दिशाए ७ शाश्वती नदी छे प्रथम सीतोदा नदी ते नीलवत पर्वतना द्रहथी उतरी, उत्तर कुरुक्षेत्र मध्ये चाली मूले पहोळपणु ५० जोजननु छे, अने समुद्रमा जळी त्या ५०० जोजन पहोळी छे,

तेनो परिवार ५३२००० नदीनो छे ॥ बीजी नारीकता, त्रीजी नरकता, ए बे रूपी पर्वतना द्रहथी उतरी, ते आ तरफ रम्यक्वास क्षेत्र मध्ये चाली मूखे पहोळपणु २५ जोजन, अने समुद्रमां जळी, त्या २५० जोजन पहोळी छे, ए बेनो परिवार ५६००० नदीनो छे ॥ चोथी रूपकुला, पांचमी सोवन्नकुला ॥ ते मध्ये रूपकुला नदी रूपी पर्वतना द्रहथकी उतरी, ते पेरणवय क्षेत्र मध्ये चाली, मूखे १२॥ जोजन पहोळपणु छे, अने समुद्र मध्ये जळी, त्यां १२५ जोजन पोहोळी छे, अने सोवन्नकुला नदी शिखरी पर्वतना द्रह थकी उतरी, ते आ तरफ पेरणवय क्षेत्र मध्ये चाली, मूखे १२॥ जोजननु पहोळपणु छे, अने समुद्र मध्ये जळी, त्या १२५ जोजन पहोळी छे, ए बेनो परिवार २८००० नदीनो छे ॥ छठी रत्ता, सातमी रतवइ ॥ ते शिखरी पर्वतना द्रहथकी उतरी, ते पेरवत्त क्षेत्रे पेले पासे पूर्व पश्चिम दिशे चाली, मूखे ६। जोजन पहोळपणु छ, अने समुद्र मध्ये जळी, त्या ६२॥ जोजन पहोळी छे ए बे नदीनो परिवार १४००० नदीनो छे॥ सर्व मळी १४५६००० नदीना परिवार छे ॥ इवे पर्वत आश्री कहे छे ॥ सर्व मळी अढी द्वीप मध्ये १३४९ शाश्वता

पर्वत ८ ॥ हवे ४ समुद्र प्रत्येक प्रत्येक रसना छे ते कहे छे ॥ लवण समुद्र खारो १ ॥ मद्य सरिखो वारुणी २ ॥ क्षीर समुद्र दूध सरिखो ३ ॥ घय समुद्र घृत सरिखो ४ ॥ कालोदधि, पुष्कर अने स्वयम्भूरमण ए त्रण समुद्र स्वच्छ पाणीना छे, बाकी सर्व समुद्र इक्षु रसना छे सर्व समुद्र १००० जोजन उंडा छे ॥ हवे ज्योतिषीनो विचार कहे छे ॥ द्वीप समुद्र मध्ये चन्द्रमा, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, तारा सघळे छे, तेनो विवरो ॥ जम्बुद्वीप मध्ये २ चन्द्रमा २ सूर्य छे ॥ लवण समुद्र मध्ये ४ चन्द्रमा ४ सूर्य छे ॥ धातकी खंड मध्ये १२ चन्द्रमा १२ सूर्य छे ॥ कालोदधि समुद्र मध्ये ४२ चन्द्रमा ४२ सूर्य छे ॥ पुष्करार्द्ध मध्ये ७२ चन्द्रमा ७२ सूर्य छे ॥ पुष्करद्वीप मध्ये १४४ चन्द्रमा १४४ सूर्य छे ॥ पुष्कर समुद्र मध्ये ४९२ चन्द्रमा ४९२ सूर्य छे ॥ वारुणी द्वीप मध्ये १६०० चन्द्रमा १६०० सूर्य छे ॥ वारुणी समुद्र मध्ये ५७३६ चन्द्रमा ५७३६ सूर्य छे ॥ क्षीर द्वीप मध्ये १९५०४ चन्द्रमा १९५८४ सूर्य छे ॥ क्षीर समुद्र मध्ये ६६०६४ चन्द्रमा ६६०६४ सूर्य छे ॥ घृत द्वीप मध्ये २२८२०० चन्द्रमा २२८२०० सूर्य छे ॥ घृत समुद्र मध्ये ७७९४२४ चन्द्रमा ७७९४२४ सूर्य छे ॥ इक्षु

द्वीप मध्य २६६११२० चन्द्रमा २६६११२० सूर्य छे ॥ इक्षु समुद्र मध्ये ९०८५६३२ चन्द्रमा ९०८५६३२ सूर्य छे ॥ नदीश्वर द्वीप मध्ये ३१०२०२८८ चन्द्रमा ३१०२०२८८ सूर्य छे ॥ नंदीश्वर समुद्र मध्ये १०५९०९८८० चन्द्रमा १०५९०९८८० सूर्य छे ॥ अरुणद्वीप मध्ये ३६१५९८९७६ चन्द्रमा ३६१५९८९७६ सूर्य छे ॥ अरुण समुद्र मध्ये २५८२३८६२१८ चन्द्रमा, २५८२३८६२१८ सूर्य छे ॥ ते उपरात द्वीपसमुद्र, जे सख्याता जोजनना छे, त्यां सख्याता चन्द्रमा अने सख्याता सूर्य छे ॥ जे द्वीप समुद्र असख्याता जोजननां छे त्यां असख्याता चन्द्रमा अने असख्याता सूर्य छे ॥ ज्योतिष चक्र अढि द्वीप मध्ये चर छे ॥ अढि द्वीप वहार ज्योतिष चक्र स्थिर छे तेनु परिमाण अढी द्वीपना ज्योतिषी विमान करता अरधु छ अने ज्योति पण अरधी छे ॥ अर्द्ध कोठाने सस्थाने छे ते स्फाटिक रत्नमय छे ॥ प्रथम पृथ्वी रत्नप्रभा थकी ७९० जोजन मध्ये ज्योतिष चक्र नथी, ते उपर ११० जोजन मध्ये ज्योतिष चक्र छे ॥ ७९० जोजने ताराना विमान छे ॥ ८०० जोजने सूर्यनु विमान छे ॥ ८८० जोजने चन्द्रमानु विमान छे ॥ ८८४ जोजने नक्षत्रनां विमान छे ॥ ८८८ जोजने

बुधनु विमान ठे ॥ ८९१ जोजने शुक्रनो विमान ठे ॥ ८९४ जोजने बृहस्पतिनु विमान ठ ॥ ८९७ जाजने मगळनु विमान ठ ॥ ९०० जोजने शनिश्चरनु विमान ठे ॥ एक चंद्रमानो परिवार ८८ ग्रह २८ नक्षत्र, ६६ हजार ९ से ७५ पटखी कोमाकोमी ताराना विमान ठ ॥ तेटला परिवार सूर्यनो पण जाणवो ॥ चंद्रमानु विमान एक जोजनना ६१ भाग करीए तेमाना ५६ भागनु लांबु पहोळु ने २८ भागनु उंचु ने जाडु ठ ॥ त्रिगुणी झाझेरी परिधि ठ ॥ सूर्यनु विमान ६१ या ४८ भागनु लांबु पहोळु ठे ने २४ भागनु उंचु ने जाडु ठ ॥ त्रिगुणी झाझेरी परिधि ठे ॥ ग्रहना विमान २ गाउ लांबां पहोळां ठे ॥ एक गाउना उंचा ने जाडा ठे, त्रिगुणी झाझेरी परिधि ठे ॥ नक्षत्रनां विमान १ गाउ लांबां पहोळां ठे अर्द्ध गाउनां उंचा ने जाडा ठे ॥ त्रिगुणी झाझेरी परिधि ठे ॥ तारानां विमान अर्द्ध गाउ लांबा पहोळां ठे॥पा गाउ उंचा ने जाडां ठे, त्रिगुणी झाझेरी परिधि ठे ॥ चंद्रमानुं विमान १६ हजार देवता उपाडे ठे ॥ ते ४ हजार हाथीने रूपे दक्षिण दिशे ॥ ४ हजार सिंहने रूपे पूर्व दिशे ॥ ४ हजार घोडाने रूपे उत्तर दिशे ॥ ४ हजार वृषभने रूपे पश्चिम

दिशे उपाडे छे ॥ तेम सूर्यने पण जाणवु ॥ ए रीते ४ दिशे ८ हजार देवता ग्रहनां विमानने उपाडे छे, तेमज ४ हजार देवता नक्षत्रनां विमानने उपाडे छे, तेमज २ हजार देवता तारानां विमानने उपाडे छे ॥ चारे दिशे चार रूपे चंद्रमानी माफक जाणवु ॥ वाहनवानी गति चंद्रमानी मंद गति छे, तेथी सूर्यनी गति उतावळी, तेथी ग्रहनी गति उतावळी छे, तेथी नक्षत्रनी गति उतावळी, तेथी तारानी गति उतावळी ॥ चंद्रमाना एक विमानथी बीजा चंद्रमाना विमानने १ लाख जोजन झाझेरानु आंतरु छे ॥ एक सूर्यथी बीजा सुर्यने १ लाख जोजन झाझेरु आंतरु छे ॥ सूर्य चंद्रमाने ५० हजार जोजननु आंतरु छे ॥ चंद्रमा ने सूर्यना विमानने ५० हजार जोजननु आंतरु छे ॥ हवे ज्योतिषीना उत्कृष्ट व्याघात आश्रि आंतरां कहे छे ॥ १२२४२ जोजन आंतरु छे ते केम ? १० हजार जोजन मेरुनो कद छे अने ११२१ जोजन ज्योतिषी चक्र मेरु थकी अळगु फरे छे ॥ ते बेउ पासाना आंतरा अने मेरुनो कद सर्व मळी उ० १२२४२ जोजन आंतरु थाय ॥ ज० २६६ जोजन आंतरु ते किम ? निषध नीलवंत पर्वतना कुट २५० जोजन पहोळा छे ते थकी ८ जोजन ज्योतिषचक्र अळगु

फरे ते ते घेउ पासानुं श्यांतरु श्यने कूटना कंद सर्व मळी २६६ जोजन थाय ॥ हवे निव्पाघाते श्यांतरुं ॥ निव्याघात ते शु ? ज्यां पर्वत कूट श्याडु नथी ते ॥ त्यां उ० गाऊ २ नु श्यांतरुं ॥ ज० ५०० धनुष्यनु श्यांतरु जाणावु ॥ ए यांतरु कह्यु ॥ हवे सूर्यनु तेज उंचु १०० जोजन श्यने नीचु १८०० जोजन तपे ॥ ते केम ? रत्नप्रजा पृथ्वी थकी पश्चिमना पासानी पाचमी विजय १००० जोजन उंडी छे श्यने रत्नप्रजा पृथ्वी थकी ८०० जोजन सूर्य उंचो छ ॥ सर्व मळी एटलु थाय ॥ ४७२६३ जोजनने एक जोजनना, ६० जाग करीए तेमांना २१ जाग एटलु त्रीछु तेज करे ॥ एना विमान समस्त वाटला संस्थाने छे ॥ हवे ज्योतिषचक्रथी श्यसंख्यात जोजननी कोडाकोडी उंचा जइए त्यारे स्या वार देवलोक नव ग्रैवेयक श्यने पाच श्यनुत्तर विमान श्यावे छे ॥ ते शेने श्याधारे छे ? पहेलु, बीजु देवलोक घनोदधिने श्याधारे छे, तेनी उपरना ३ देवलोक घन वा ने श्याधारे छ, ते उपरना ३ देवलोक घनोदधि श्यने घनवातने श्याधारे छे, ते उपर ४ देवलोक, ए ग्रैवेयक श्यने ५ श्यनुत्तर विमान ए सर्व श्याकाश प्रतिष्ठित छे ॥ पहेला बीजा देवलोकनां तला

२६०० जोजनना जाका छे ॥ ते उपरना २ देवलोकनां तळां २५०० जोजनना जानां छे ॥ ते उपरना २ देवलोकनां तळा २४०० जोजननां जाकां छे ॥ ते उपरना ४ देवलोकनां तळा २३०० जोजनना जाका छे ॥ नव ग्रैवेयकना तळा २२ सें जोजनना जाका छे ॥ पाच अनुत्तर विमानना तळां २१ सें जोजनना जाका छे ॥ पहेला बीजा देवलोकनां विमान ५०० जोजन उचा छे ॥ ते उपरना २ देवलोकनां विमान ६०० जोजन उचा छे ॥ ते उपरना २ देवलोकनां विमान ७०० जोजन उचा छे ॥ ते उपरना २ देवलोकनां विमान ८०० जोजन उचां छे ॥ ते उपरना ४ देवलोकना विमान ९०० जोजन उचा छे ॥ ते उपर ए ग्रैवेयकनां विमान १००० जोजन उचां छे ॥ पाच अनुत्तर विमान ११०० जोजन उचा छे ॥ पहेला ४ देवलोक अर्द्धचंद्राकार छे ॥ ते उपरना ४ देवलोक पूर्णचंद्राकारे छे ॥ ते उपरना ४ देवलोक अर्द्धचंद्राकारे छे ॥ नव ग्रैवेयक सेढाने आकारे छे ॥ चार अनुत्तर विमान अर्द्धचंद्राकारे छे ॥ पाचमु पूर्णचंद्राकारे छे ॥ पहेला बीजा देवलोके ५ वर्ण छे ॥ ते उपरना २ देवलोके ४ वर्ण छे, काळो नथी ॥ ते उपरना २ देवलोके ३ वर्ण

छे, काळो नीलो नथी ॥ ते उपरना २ देवलोके बे वर्ण छे, पीळो ने धोळो ॥ ते उपरना ४ देवलोक, ९ ग्रैवेयके धोळो वर्ण छे ॥ पांच अनुत्तर विमाने उत्कृष्टो श्वेत वर्ण छे ॥ चार देवलोक ९ ग्रैवेयक अने ५ अनुत्तर विमाने १० प्रकारना मनोज्ञ भोग छे॥ मनोज्ञ शब्द १ ॥ मनोज्ञ रूप २ ॥ मनोज्ञ गंध ३ ॥ मनोज्ञ रस ४ ॥ मनोज्ञ स्पर्श ५ ॥ मनोज्ञ कान्ति ६ ॥ मनोज्ञ लावण्य बोलवानुं ७ ॥ मनोज्ञ गति चालवानी ८ ॥ मनोज्ञ आभरणनी ज्योति ९ ॥ मनोज्ञ आयुष्यनी स्थिति १० ॥ हवे देवलोकमां प्रतर ६२ छे तेनी विगत ॥ पहेले बीजे थइ १३ प्रतर छे ॥ त्रीजे चोथे १२ प्रतर छे ॥ पांचमे ६ प्रतर छे ॥ छठे ५ प्रतर छे ॥ उपला ६ देवलोके चार चार प्रतर छे ॥ ९ ग्रैवेयकनां ९ प्रतर छे ॥ पांच अनुत्तर विमाननुं १ प्रतर छे ॥ हवे विमाननी संख्या कहे छे ॥ पहेला सौधर्मे ३२ लाख विमान छे ॥ बीजे २८ लाख विमान छे ॥ त्रीजे १२ लाख विमान छे ॥ चोथे ८ लाख विमान छे ॥ पांचमे ४ लाख विमान छे ॥ छठे ५० हजार विमान छे ॥ सातमे ४० हजार विमान छे ॥ आठमे ६ हजार विमान छे ॥ नवमे दशमे ४०० विमान

ठे ॥ अग्यारमे बारमे ३०० विमान ठे ॥ पहेली त्रीके १११ विमान ठे ॥ बीजी त्रीके १०७ विमान ठे ॥ त्रिजी त्रीके १०० विमान ठे ॥ पांच अनुत्तरना ५ विमान ठे ॥ सर्व मळी ८४९७०२३ विमान ठे ॥ तेमां केटलाएक सख्यातानें केटलाएक असख्याता जोजनना ठे ॥ तेमा सर्व देवलोके थई २५०६ वाटला विमान ठे ॥ २६०७ त्र्यंश विमान ठे ॥ २६०४ चउरस विमान ठे ॥ सर्व मळी आवलीकाबध विमान ७०७४ ठे ॥ बाकी ८४०७९४९ पुष्पाविकी र्णक ठे ॥ हवे सर्वार्थसिद्ध विमानथी १२ जोजन ऊंची सिद्धशिला ठे, ते ४५ लाख जोजन लांबी पहोळी ठे, आठ जोजन मध्ये जाडी ठे, ठेहे माखीनी पांखथी पातळी ठे ॥ तेनी परिधि १४२३०२४९ जोजन १ गाउ १७ धनुष्य ६ हाथ १३ आंगळ झाझेरी ठ ॥ उज्वल जेवो शंख, अकरत्न, जेवो मचकुंद, जेवु दुधनु फीण, जेवो रूपानो पट, जेवां चन्द्रमानां किरण, जेवु दर्शीनु खोट, तेथी ते अधिक उजळी ठे ॥ ते उपर एक जोजनने २४ मे अग्र विभागे सिद्ध रह्या ठे ॥ लोकने मस्तके रह्या ठे ॥ अलोकथी ४ आंगळ नीचे रह्या ठे ॥ ३१ गुणे करी विराजमान ठे ॥ ते ३१ गुण कहे ठे ॥ पांच ज्ञानावर्णीय

क्षय कर्यो, ए दर्शनावर्णीय क्षय कर्यो, बे वेदनीय क्षय कर्यो, समकित मोहनीय, चारित्र मोहनीय क्षय कर्यो, ४ गतिना आउखा क्षय कर्यो, शुभ नाम अशुभ नाम क्षय कर्यो, उच गोत्र नीच गोत्र क्षय कर्यो, दानांतराय, लाभांतराय, भोगांतराय, उपभोगांतराय, वीर्यांतराय क्षय कर्यो ॥ ए ३१ गुणे करी सहित सिद्ध छे ॥ हवे १४ राज कहे छे ॥ सात पृथ्वी नीचे ७ राज छे ॥ रत्नप्रभाथी उंचु सौधर्म देवलोक सुधी १ राज ॥ सौधर्मथी माहेंद्र देवलोक सुधी २ राज ॥ माहेंद्रथी लांतक सुधी ३ राज ॥ लांतकथी सहस्रार सुधी ४ राज ॥ सहस्रारथी अच्युत सुधी ५ राज ॥ अच्युतथी ए ग्रैवेयक सुधी ६ राज ॥ ए ग्रैवेयकथी लोकना अंत सुधी ७ राज ॥ एटले ७ राज झाझेरा नीचा ने ७ राज माठेरा उंचा जाणवा ॥

इति भवनद्वार संपूर्ण ॥ ६ ॥

हवे सातमु गतागतिद्वार कहे छे ॥

हवे कया दंडकमांथी कया दंडकमां जाय, क्यांथी आवे ते कहे छे ॥ नरकमां

तिर्यंच पचेन्द्रिय समुर्ध्छिम अन गर्भज अने मनुष्य गर्भज ए एमांथी आवे ॥ नरकना नीवळ । तिर्यंच पचेंद्रिय गर्भज ने गर्भज मनुष्यमा जाय ॥ ए समुच्चय कह्यो ॥ हवे विस्तारथी कहे छे ॥ नरकमां क्यांनो आवे कइ नरके जाय ? पहेली नरके तिर्यंच पचेंद्रिय समुर्च्छिम ने गर्भज जाय ॥ बीजी नरके भुजपर जाय ॥ त्रीजी सुधी खेचर जाय ॥ चोथी सुधी चउपद सिंहादिक जाय ॥ पाचमी सुधी उरपर सर्प जाय ॥ छट्ठी सुधी स्त्री जाय ॥ सातमी सुधी नर नपुसक मच्छादिक जाय ॥ हवे नरकना नीकळ्या क्यां आवे ते कहे छे ॥ सातमी नरकनो नीकळ्यो मनुष्य न थाय पण तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भजमां जाय ॥ पांम तो समकित पामे, पण विरती कशी न पामे ॥ छठी नरकनो नीकळ्यो तिर्यंच पचेंद्रिय गर्भज अने मनुष्य गर्भजमा आवे, पामे तो देशविरती, पण सर्व विरती न पामे ॥ पाचमी नरकनो नीकळ्यो तिर्यंच गर्भज ने मनुष्य गर्भजमा आवे, पामे तो सर्वविरती, पण केवल ज्ञान न पामे ॥ चोथी नरकनो नीकळ्यो तिर्यंच गर्भज ने मनुष्य गर्भजमां आवे, पामे तो केवल ज्ञान पामे पण तीर्थंकरपद न पामे ॥ त्रीजी

नरकनो नीकळ्यो तीर्थंकरपद पामे, पण वासुदेव बळदेवनी पदवी न पामे ॥ बीजी नरकनो नीकळ्यो वासुदेवनी पदवी पामे, पण चक्रवर्त्तीनी पदवी न पामे ॥ पहेली नरकनो नीकळ्यो चक्रवर्त्ती विगेरे सघळी पदवी पामे ॥ हवे भवनपतिमां तिर्यंच पचेंद्रिय-समुर्छिम अने गर्भज, मनुष्य गर्भज ए बेमांथी आवे ॥ त्यांनो नीकळ्यो बादर पृथ्वी अप ने प्रत्येक वनस्पति, तिर्यंच पचेंद्रिय गर्भज, मनुष्य गर्भज एटलामां आवे॥ पृथ्वीमा नारकी वर्जी बाकी २३ दंडक थकी आवे, त्यांनो नीकळ्यो नारकी देवता वर्जी बाकी १० दंडकमा जाय ॥ अपमा नारकी वर्जी २३ दंडकनो आवे, त्यांनो नीकळ्यो नारकी देवता वर्जी १० दंडकमां जाय ॥ वनस्पतिमां नारकी वर्जि बाकी २३ दंडकमांथी आवे, त्यांनो नीकळ्यो नारकी देवता वर्जी १० दंडकमां जाय ॥ तेउ वायुमां नारकी देवता वर्जी बाकी १० दंडकमांथी आवे, त्यांनो नीकळ्यो नारकी देवता मनुष्य वर्जी नव दंडकमा जाय ॥ विगलेंद्रिय त्रणे १० दंडकमां जाय ॥ एमां नारकी देवता वर्जी बाकी १० दंडकमांथी आवे ॥ तिर्यंच समुर्छिम पचेंद्रियमां नारकी देवता वर्जी बाकी

१० दंडकमांथी आवे, एमांथी नीकळ्या ज्योतिषी वैमानिक वर्जी बाकी २२ दंडकमां जाय ॥ हवे गर्भज तिर्यचमा २४ दंडकथी आवे, चोवीसे दंडकमां जाय ॥ उपर आठमा देवलोक उपरांत न जाय ॥ हवे मनुष्य गर्भजमां तेउवाउ वर्जी २२ दंडकमांथी आवे, त्यांना नीकळ्या २४ दंडके जाय ॥ हवे मनुष्य समुर्च्छिममां तेउवायु नारकी देवता वर्जी बाकी ८ दंडकमांथी आवे, त्यांना नीकळ्या देवता नारकी वर्जी बाकी १० दंडकमां जाय ॥ वाणव्यंतरमा तिर्यंच पचेंद्रिय समुर्च्छिम ने गर्भज अने गर्भज मनुष्यमांथी आवे, त्याना नीकळ्या बादर पृथ्वी अप ने प्रत्येक वनस्पति, तिर्यंच पचेंद्रिय गर्भज, मनुष्य गर्भज एमा जाय ॥ ज्योतिषीमां तिर्यंच पचेंद्रिय गर्भज अने मनुष्य गर्भजमांथी आवे, त्यांना नीकळ्या बादर पृथ्वी अप ने प्रत्येक वनस्पति तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भज, मनुष्य गर्भजमां जाय ॥ वैमानिक पेहला बीजा देवलोकमां तिर्यंच पचेंद्रिय गर्भज, मनुष्य गर्भजमांथी आवे, त्याना नीकळ्या बादर पृथ्वी अप ने प्रत्येक वनस्पति, तिर्यंच पचेंद्रिय गर्भज, मनुष्य गर्भज ए पांचमां जाय ॥ त्रीजा देवलोकथी मांडी आठमा सुधी

तिर्यंच पचेंद्रिय गर्नज अने मनुष्य गर्नज एमांथी आवे, त्यांना नीकळ्या तिर्यंच गर्नज पचेंद्रिय अने मनुष्य गर्नजमा जाय ॥ नवमा देवलोकथी सर्वार्थसिद्ध सुधी मनुष्य गर्नजमाथी आवे, त्यांना नीकळ्या गर्नज मनुष्यमां जाय ॥ मनुष्य गर्नज मोक्ष पण जाय, पण त्यांथी आवे नहि ॥ हवे १ समये मोक्ष जाय तेनी सख्या अने क्याथी केटला जाय ते कहे छे ॥ पहेली ३ नरकना नारकीना जीव मनुष्य गर्नजमां आवे ॥ एक समये १० मोक्ष जाय ॥ ए सङ्घा सघळे जाणवी ॥ चोथीना ४ जाय ॥ पांचमी छठी सातमीना नीकळ्या न जाय ॥ नवनपतिना देवताना १० जाय ॥ तेनी देवीनां ५ जाय ॥ पृथ्वी अपना ४ जाय ॥ तेउ वायुना न जाय ॥ वनस्पतिना ६ जाय ॥ विगलेंद्रियना ४ ज्ञान पामे, पण मोक्ष न जाय ॥ तिर्यंच पचेंद्रियना १० जाय ॥ तिर्यंचणीना १० जाय ॥ मनुष्य गतिना १० जाय ॥ पुरुष लिंगे १० जाय ॥ स्त्रीलिंगना २० जाय ॥ नपुसकलिंगना १० जाय व्यतरना १० जाय ॥ तेनी देवीना ५ जाय ॥ ज्योतिषीना १० जाय ॥ तेनी देवीना २० जाय ॥ वैमानिकना १०० जाय ॥ तेनी देवीना २० जाय ॥ उंचा लोकमाथी ४ जाय ॥ नीचा लोकमाथी २० जाय ॥

त्रीठा लोकमाथी १०७ जाय ॥ समुद्रमाथी २ जाय ॥ शेष जळमाथी ३ जाय ॥ उत्कृष्टी अवगा हनाना २ जाय ॥ मध्यम अवगाहनाना १०७ जाय ॥ जघन्य अवगाहनाना ४ जाय ॥ स्वलिंगना १०७ जाय ॥ अन्यलिंग १० जाय ॥ गृहलिंगे ४ जाय ॥ नंदनवनमाथी २ जाय ॥ पुरुषथी पुरुष थइने १०७ जाय ॥ वाकी ७ भांगे १० जाय ॥ पुरुषथी स्त्रीलिंगे थइ १० जाय ॥ पुरुषथी नपुसकलिंगे थइ १० जाय ॥ स्त्रीथी पुरुषलिंगे थइ १० जाय ॥ स्त्रीथी स्त्री थइने १० जाय ॥ स्त्रीथी नपुसक थइ १० जाय ॥ नपुसकथी पुरुष थइ १० जाय ॥ नपुसकथी स्त्री थइ १० जाय ॥ नपुसकथी नपुसक थइ १० जाय ॥ एक समये जे जे गतिना मनुष्यसा आवी उत्कृष्टा मोक्ष एक समये जाय ते कह्या ॥ हवे १५ भेदे सिद्ध थाय ते कहे छे ॥ तीर्थ सिद्धा १ ॥ अतीर्थ सिद्धा २ ॥ तीर्थंकर सिद्धा ३ ॥ अतीर्थंकर सिद्धा ४ ॥ स्वयंबुद्ध सिद्धा ५ ॥ प्रत्येक बुद्ध सिद्धा ६ ॥ बोधवाहि सिद्धा ७ ॥ स्वलिंग सिद्धा ८ ॥ अन्यलिंग सिद्धा ९ ॥ गृहलिंग सिद्धा १० ॥ पुरुषलिंग सिद्धा ११ ॥ स्त्रीलिंग सिद्धा १२ ॥ नपुसक लिंग सिद्धा १३ ॥ एक सिद्धा १४ ॥ अनेक सिद्धा १५ ॥ हवे

स्वलिंग सिद्धा ते कहे ठे ॥ पहेले समये १०८ मोक्ष जाय ॥ बीजे समये १०२ जाय ॥ त्रीजे समये ए६ जाय ॥ चोथे समये ८४ जाय ॥ पांचमे समये ७२ जाय ॥ ठठे समये ६० जाय ॥ सातमे समये ४८ जाय ॥ आठमे समये ३२ जाय ॥

इति गतागतिद्वार संपूर्ण ॥ ७ ॥

हवे आठमु संघयणद्वार कहे ठे ॥

वज्रऋषभ नाराच संघयण १ ॥ ऋषभ नाराच संघयण २ ॥ नाराच संघयण ३ ॥ अर्द्धनाराच संघयण ४ ॥ किलक संघयण ५ ॥ ठेवट्ठ संघयण ६ ॥ हवे वज्रऋषभ नाराच संघयण ते केने कहिये ? जे अस्थिना ठेका परस्पर वींटाया होय वच्चे अस्थिनी खिली अने उपर अस्थिनो पाटो एवी रीते देहनी संधि सर्वे होय, ते प्रथम संघयण जाणवुं॥ ऋषभ नाराच ते केने कहिये ? तेने बन्ने पासे अस्थिना ठेका विंटाया होय अने उपर पाटो होय वच्चे खिली न होय, ए बीजु संघयण जाणवु ॥ २ ॥ त्रीजु नाराच ते केने कहिये ? तेने बन्ने पासे अस्थिनां ठेका विंटाया होय अने बच्चे खिली पाटो न होय,

ए त्रीजु सघयण जाणवु ॥ ३ ॥ चोथु अर्द्धनाराच सघयण ते केने कहिये ? अस्थिनो ठेको एक बाजुनो विंटायो होय, बीजो सामो अस्थिनो ठेको अरुकी रहे, अने बीजी पासे खीली होय, ते चोथु सघयण जाणवु ॥ ४ ॥ पांचमु किलकु सघयण ते केने कहिये? सधिनो अस्थि बन्ने उपरना ठेके आवी रहे अने बच्चे खीली होय पण उपर पाटो नहि अने बन्ने अस्थिना अंत परस्पर विंटाया नहि ते पांचमुं सघयण जाणवु ॥ ५ ॥ छठु छेवटु सघयण ते केने कहिये ते सघयण बच्चे खिली नहि पाटो नहि, बन्ने बाजु अस्थिना ठेका परस्पर विंटाया नहि एवा अन्यवस्थित अस्थिना सांधा, सामसामा अरुकी रहे अने अति नबलु ते छठु छेवटु सघयण जाणवु ॥ ६ ॥ नारकी देवता असघयणी, ५ एकेंद्रिय, ३ विगलेंद्रिय, तिर्यंच पचेंद्रिय समुर्छिम ने मनुष्य समुर्छिम एटलाने छेवटु सघयण ॥ तिर्यंच पचेंद्रिय गर्भज ने मनुष्य गर्भजमां सघयण ६ लाभे ॥ सिद्ध असघयणी जाणवा ॥

इति सघयणद्वार सपूर्ण ॥ ७ ॥

हवे नवमुं संठाणद्वार कहे छे ॥

समचउरस संस्थान १ ॥ निग्गोह परिमंडल संस्थान २ ॥ सादि संठाण ३ ॥ वामन संठाण ४ ॥ कुब्ज संठाण ५ ॥ हुंड संठाण ६ ॥ हवे समचउरंस संठाण ते केने कहिये? जे चार बाजु सरखुं होय ॥ पद्मासन वेठां जेटलुं बन्ने जानुनुं आंतरु ॥ तेटलुं वळी आसनने ललाटनुं आंतरुं ॥ वळी तेटलुंज आंतरु डाबा जानुथी जमणा स्कंध सुधी, अने जमणा जानुथी डाबा स्कंधसुधी, एटले चारे बाजु सरखुं आंतरु होय ते समचउरस संठाण जाणवुं ॥ १ ॥ निगोह परिमंडल संठाण ते केहने कहिये? जे वडवृक्षनी माफक उपर पूर्ण अने नाभीथी नीचे हीनांग ते बीजुं संठाण जाणवुं ॥ २ ॥ सादि संठाण ते केहने कहिये? जे नाभी नीचे युक्तमान प्रमाण, पग कटी जानु प्रमुख सर्व रुडुं होय, अने नाभीथी उपरलो सर्व पातलो होय, हैयुं हाथ मार्थुं मुख प्रमुति सर्व अति कुराकृति होय ते त्रीजुं संठाण होय ३ ॥ कुब्ज संठाण ते केने कहिये? जे संस्थाने हाथ पग मस्तक ग्रीवा कहिये? रुडां होय, अने उदर पुठ मुख प्रमुख वांका होय ते चोथुं संठाण

जाणवुं ॥ ४ ॥ वामन संठाण ते केने कहिये ? जे पूर्वना चोथाथी उपरांतुं होय ते जाणवुं ॥ ५॥ हुंड ते केहने कहिये ? ल्ड मूढ मृगापुत्र लोढीयानी माफक पाचमु सठाण जाणवु ॥ ६ ॥ अंगे अवयवे करी अलक्षण होय, सर्वांगे पाडुवो ते छठु हुंड सठाण जाणवु ॥ ६ ॥ नारकी भवधारणीय अने वैक्रेय शरीर करे तोये हुंड सठाण ॥ देवताने भवधारणीय सम चउरस संठाण, वैक्रेय शरीर करे तो नाना सठाण सठिया, चार देवलोक सुधी वैक्रेय करे, ते उपरात न करे॥ पृथ्वीने हुंड सठाण पण चंद्राकारे तथा मसुरनी दाळने आकार छे॥ अपने हुंड सठाण पण जळना परपोटानो आकार छे ॥ तेउने हुंड सठाण पण सोयना भारानो अणीनो आकार छे ॥ वायुने हुंड सठाण पण ध्वजा पताकानो आकार छे ॥ वनस्पतिने हुंड सठाण पण नाना प्रकारनो आकार छे॥ विगलेंद्रिय,समुर्छिम तिर्यंच पचेंद्रिय,मनुष्य समुर्छिमने हुंड सठाण ॥ तिर्यंच पचेंद्रिय गर्भज, ने मनुष्य गर्भजने छए सठाण होय॥

इति सठाणद्वार सपूर्ण ॥ ९ ॥

हवे दसमु वेद द्वार कहे छे ॥

वेद ३, ते स्त्रीवेद १ ॥ पुरुषवेद २॥ नपुंसकवेद ३ ॥ नारकी, एकेंद्रि ५, विगल इंद्रिय, तिर्यंच पचेंद्रिय समुर्छिम, समुर्छिम मनुष्य ए सर्वने १ नपुंसक वेद जाणवु ॥ तिर्यंच पचेंद्रिय गर्भज ने मनुष्य गर्भजमा वेद ३ लाभे ॥ देवतामा वेद २ ॥ स्त्रीवेद १ पुरुषवेद २ ॥ ते भवनपति आदि देइ २ देवलोक सुधी वेद २ लाभे ॥ उपर सघळा पुरुषवेदी जाणवा ॥ अल्प बहुत्व कहे छे ॥ सर्वथी थोडा गर्भवकंतिय मणुसा १ ॥ मनुसणी संखेज्ज गुणी २ ॥ बादर तेउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ३ ॥ अणुत्तरोववाइया देवा असंखेज्ज गुणा ४ ॥ उवरीमगेविज्जगादेवा असंखेज्जगुणा ५ ॥ मज्झिमगेविज्जगादेवा संखेज्जगुणा ६॥ हेठीमगेविज्जगादेवा संखेज्जगुणा ७ ॥ अचूएकप्पे देवा संखेज्जगुणा ८ ॥ आरणे कप्पे देवा संखेज्जगुणा ए ॥ पाणए कप्पे देवा संखेज्जगुणा १० ॥ आणए कप्पे देवा संखेज्जगुणा ११ ॥ अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा १२ ॥ छठीतमाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा १३ ॥ सहसारे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा १४ ॥ महा कप्पे देवा असंखेज्जगुणा

१५ ॥ पचमाएधूम्मप्पनाए पुढवीए नेरइया असखेज्जगुणा १६ ॥ लतए कप्पे देवा असखेज्ज
गुणा १७ ॥ चउत्थीए पकप्पनाए पुढवीए नेरइया असखेज्जगुणा १८ ॥ बंजलोए कप्पे देवा
असखेज्जगुणा १९ ॥ तच्चाए वालुयप्पनाए पुढवीए नेरइया असखेज्जगुणा २० ॥
माहिंदकप्पेदेवा असखेज्जगुणा २१ ॥ ॥ सणकुमार कप्पेदेवा असखेज्जगुणा २२ ॥
दोच्चाए सक्करप्पनाए पुढवीए नेरइया असखेज्जगुणा २३ ॥ समुच्छिम मणुसा
असखेज्जगुणा २४ ॥ इसाणे कप्पे देवा असखेज्जगुणा २५ ॥ इसाणे कप्पे देवीओ
सखेज्जगुणी २६ ॥ सुहम्मे कप्पे देवा सखेज्जगुणा २७ ॥ सुहम्मे कप्पे देवीओ सखेज्जगुणी
॥ २८ ॥ नवणवासी देवा असखेज्जगुणा २९ ॥ नवणवासिणी देवीओ सखेज्जगुणी ३० ॥
इमोसे रयणप्पनाए पुढवीए नेरइया असखेज्जगुणा ३१ ॥ खहयर पंचिंदिय तिरिख
जोणिया पुरिसा असखेज्जगुणा ३२ ॥ खहयर पंचिंदिय तिरिख जोणिणीओ सखेज्जगुणी
३३ ॥ थलयर पंचिंदिय तिरिख जोणिया पुरिसा सखेज्जगुणा ३४ ॥ थलयर पंचि
दिय तिरिख जोणिणीओ सखेज्जगुणी ३५ ॥ जलयर पंचिंदिय तिरिख जोणिया पुरिसा

सखज्जगुणा ३६ ॥ जलयर पांचेंदिय तिरिख जोणिणीओ सखेज्जगुणी ३७ ॥ वाणवतर
देवा सखेज्जगुणा ३८ ॥ वाणवतरवासि देवीओ सखेज्जगुणी ३९ ॥ जोइसिया देवा
सखेज्जगुणा ४० ॥ जोइसिणी देवीओ सखेज्जगुणी ४१ ॥ खहयर पचिंदिय तिरिख जो
णिया नपुसगा सखेज्जगुणा ४२ ॥ थलयर पचिंदिय तिरिख जोणिया नपुसगा सखेज्ज
गुणा ४३ ॥ जलयर पंचिंदिय तिरिख जोणिया नपुसगा सखेज्जगुणा ४४ ॥ चउरिंदिया
पज्जत्ता सखेज्जगुणा ४५ ॥ पचिंदिया पज्जत्ताय विसेसाहिया ४६ ॥ बेइंदिया पज्जत्ता विसे
साहिया ४७ ॥ तेइंदिया पज्जत्ता विसेसाहिया ४८ ॥ पचिंदिया अपज्जत्ता असखे
ज्जगुणा ४९ ॥ चउरिंदिया अपज्जत्ता विसेसाहिया ५० ॥ तेइंदिया अपज्जत्ता विसे-
साहिया ५१ ॥ बेइंदिया अपज्जत्ता विसेसाहिया ५२ ॥ पत्तेय सरीर बायर वणस्सइका
इया पज्जत्ता असखेज्जगुणा ५३ ॥ बायर निगोदा पज्जत्ता असखेज्जगुणा ५४ ॥ बादर
पुढवी काइया पज्जत्ता असखेज्जगुणा ५५ ॥ बादर आउकाइया पज्जत्ता असखेज्जगुणा ५६॥
बादर वाउकाइया पज्जत्ता असखेज्जगुणा ५७॥ बादर तेउकाइया अपज्जत्ता असखेज्जगुणा

५८ ॥ पत्तेय सरीर बादर वणस्सइकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ५९ ॥ बादर निगोदा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ६० ॥ बादर पुढवीकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ६१ ॥ बादर आउकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ६२ ॥ बादर वाउकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ६३ ॥ सुहुम तेउकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ६४ ॥ सुहुम पुढवी काइया अपज्जत्ता विसेसाहिया ६५ ॥ सुहुम आउकाइया अपज्जत्ता विसेसाहिया ६६ ॥ सुहुम वाउकाइया अपज्जत्ता विसेसाहिया ६७ ॥ सुहुम तेउकाइया पज्जत्ता संखेज्जगुणा ६८ ॥ सुहुम पुढवी काइया पज्जत्ता विसेसाहिया ६९ ॥ सुहुम आउकाइया पज्जत्ता विसेसाहिया ७० ॥ सुहुम वाउकाइया पज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ७१ ॥ सुहुम निगोदा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ७२ ॥ सुहुमनिगोदा पज्जत्ता संखेज्जगुणा ७३ ॥ अभवसिद्धिया अणंतगुणा ७४ ॥ पडिवाइ सम्म दिट्ठि अणंतगुणा ७५ ॥ सिद्धा अणंतगुणा ७६ ॥ बादर वणस्सइ काइया पज्जत्ता अणंत गुणा ७७ ॥ पज्जत्ता विसेसाहिया ७८ ॥ बादर वणस्सइ काइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ७९ ॥ बादर अपज्जत्ता विसेसाहिया ८० ॥ समुच्चय बादर विसेसाहिया ८१ ॥ सुहुम

वणस्सइ काइया अपज्जाचा असंखेज्जगुणा ७२ ॥ सुहुम अपज्जाचा विसेसाहिया ७३ ॥ सुहुम वणस्सइ काइया पज्जाचा सखेज्जगुणा ७४ ॥ सुहुम पज्जाचा विसेसाहिया ७५ ॥ समुच्चय सुहुमा विसेसाहिया ७६ ॥ भवसिद्धिया विसेसाहिया ७७ ॥ निगोद जीवा विसेसाहिया ७८ ॥ वणस्सइ काइया जीवा विसेसाहिया ७९ ॥ एगिंदिया जीवा विसेसाहिया ८० ॥ तिरिखजोणिया विससाहिया ८१ ॥ मिछदिट्ठी विसेसाहिया ८२ ॥ अविरया जीवा विसेसाहिया ८३ ॥ सकसाइया विसेसाहिया ८४ ॥ छउमत्थजीवा विसेसाहिया ८५ ॥ सजोगी जीवा विसेसाहिया ८६ ॥ ससारस्थाजीवा विसेसाहिया ८७ ॥ सव्वजीवा विसेसाहिया ८८ ॥ ५ अथ अठाणु बोलनो अल्प बहुत्व जाणवो ॥ सर्वथी थोडा पुरुषवेद ॥ १ ॥ तेथी स्त्रीवेद सख्यातगुणो ॥ २ ॥ तेथी नपुसकवेद अनतगुणा ॥ ३ ॥ मनुष्य पुरुषथी मनुष्यणी स्त्री २७ गुणी अधिक ॥ देवताथी देवी ३२ गुणी अधिक ॥ तिर्यंचथी तिर्यंचणी ३ गुणी अधिक ॥ पुरुषनो विषय स्त्रणना पुळा सरिखो ॥ स्त्रीनो विषय बकरानी लिंडीना ताप सरिखो ॥ नपुसकनो विषय नगरना दाह सरिखो ॥ भवनपति व्यतर ज्योतिषी वैमानिक

पहेला बीजा देवलोक सुधीमां मनुष्यनी माफक जोग छे ॥ ते उपरना बे देवलोके स्पर्शनो जोग छे ॥ ते उपरना बे देवलोके रूपनो जोग छे ॥ ते उपरना बे देवलोके शब्दनो जोग छे ॥ ते उपरना ४ देवलोके मननो जोग छे ॥ ते उपरांत देवताने जोग नथी

॥ इति वेदद्वार सपूर्ण ॥ १० ॥

हवे जोगद्वार कहे छे ॥

जोग १५, तेमा मनना ४ ते साचु मन १ ॥ जूठु मन २ ॥ मिश्र मन ३॥ व्यवहार मन ४॥ वचनना जोग ४ ते साचु वचन १ ॥ जूठु वचन २ ॥ मिश्र वचन ३ ॥ व्यवहार वचन ४ ॥ कायाना जोग ७ ते उदारिक १ ॥ उदारिकनो मिश्र २ ॥ वैक्रेय ३ ॥ वैक्रेयनो मिश्र ४ ॥ आहारक ५ ॥ आहारकनो मिश्र ६ ॥ कार्मण कायजोग ७॥ नारकी देवताने जोग ११ ते मनना ४ ॥ वचनना ४ ॥ कायाना ३ ते वैक्रेय १ वैक्रेयनो मिश्र २ कार्मणकाय जोग ॥ ॥ पृथ्वी १ अप २ तेउ ३ वनस्पति ४ ए ४ ने जोग ३ ॥

ज्दारिकनो १ उदारिकनोमिश्र २ कार्मण कायजोग ३॥ वायुने जोग ५ ते उदारिक १ ॥ उदारिकनो मिश्र २ ॥ वैक्रेय ३ ॥ वैक्रेयनो मिश्र ४ ॥ कार्मणकाय जोग ५ ॥ विगलेंड्रियने जोग ४ ते उदारिक १ ॥ उदारिकनो मिश्र २ ॥ कार्मण काय जोग ३ ॥ व्यवहार नाषा ४ ॥ तिर्यंच पचेंड्रिय समुर्छिमने विगलेंड्रियनी माफक जाणवु ॥ तिर्यंच पचेंड्रिय गर्नजने जोग १३ ते मनना ४ ॥ वचनना ४ ॥ उदारिक १ ॥ उदारिकनो मिश्र २ ॥ वैक्रेय ३ ॥ वैक्रेयनो मिश्र ४ ॥ कार्मण काय जोग ५ ॥ ए५ कायाना मली १३ जोग जाणवा ॥ मनुष्य समुर्छिमने जोग जेम विगलेंड्रियने तेम जाणवा ॥ मनुष्य गर्नजने जोग १५ जाणवा ॥ सिद्ध अजोगी कहीये ॥

इति जोगद्वार सपूर्ण ॥ ११ ॥

हवे उपयोग द्वार कहे छे ॥

उपयोग (१२, ते मतिज्ञान १ ॥ श्रुतज्ञान २ ॥ अवधिज्ञान ३ ॥ मनःपर्यवज्ञान ४ ॥

केवलज्ञान ५ ॥ मतिअज्ञान ६ ॥ श्रुतअज्ञान ७ ॥ विभंगज्ञान ८ ॥ चक्षुदर्शन ए ॥ अचक्षु दर्शन १० ॥ अवधिदर्शन ११ ॥ केवलदर्शन १२ ॥ ए १२ उपयोग २४ दंमक उपर उतारे ठे ॥ नारकीने उपयोग ए, ते केवलज्ञान, केवलदर्शन, मन पर्यवज्ञान ए ३ वर्जीने बाकीना ए जाणवा ॥ तेमां समदृष्टिने ६ उपयोग, ३ अज्ञान नहि ॥ मिथ्यात्वीने ६ उपयोग, ३ ज्ञान नहि ॥ देवताने ए उपयोग समुच्चये नारकीनी परे ॥ तेमां समदृष्टिने ६ उपयोग, ३ अज्ञान नहि ॥ मिथ्यात्वीने ६ उपयोग, ३ ज्ञान नहि ॥ नवर अनुत्तर विमाने ६ उपयोग, त्यां ३ अज्ञान नहि ॥ पांच एकेंड्रियने ३ उपयोग, ते मति अज्ञान १ ॥ श्रुत अज्ञान २ ॥ अचक्षुदर्शन ३ ॥ बेइंड्रिय तेइंड्रियने उपयोग ५ ते मतिज्ञान १ ॥ श्रुतज्ञान २ ॥ मतिअज्ञान ३ ॥ श्रुत अज्ञान ४ ॥ अचक्षु दर्शन ५ ॥ चउरिंड्रियने ६ उपयोग तेमा चक्षुदर्शन वध्यो ॥ तिर्यंच पचेंड्रिय समुर्छिमने चउरिंड्रियनी माफक ॥ तिर्यंच पचेंड्रिय गर्भजने नेरइयानी माफक ॥ मनुष्य समुर्छिमने उपयोग ४ ते मति अज्ञान १ ॥ श्रुत अज्ञान २ ॥ चक्षुदर्शन ३ ॥ अचक्षुदर्शन ४ ॥ मनुष्य गर्भज ने उपयोग १२ लाभे ॥

सिद्धने उपयोग २ ते केवलज्ञान १, केवलदर्शन २ ॥

इति उपयोगद्वार संपूर्ण ॥ १२ ॥

हवे शरीरद्वार कहे छे ॥

शरीर ५, ते उदारिक १ ॥ वैक्रय २ ॥ आहारक ३ ॥ तेजस् ४ ॥ कार्मण ५ ॥ देवताने ३ शरीर, ते वैक्रेय १ ॥ तेजस् २ ॥ कार्मण ३ ॥ नारकीने पण तेमज जाणवु ॥ पुढवी, अप, तेउ, वनस्पतिने ३ शरीर, ते उदारिक १ ॥ तेजस् २ ॥ कार्मण ३ ॥ वायराने शरीर ४ ते वैक्रेय वध्यु ॥ विगलेंद्रियने शरीर ३ ते उदारिक १ ॥ तेजस् २ ॥ कार्मण ३ ॥ तिर्यंच पचेंद्रिय समुर्छिम तथा मनुष्य समुर्छिमने ३ शरीर, ते उदारिक १ ॥ तेजस् २ ॥ कार्मण ३ ॥ तिर्यंच पचेंद्रिय गर्भजने शरीर ४, ते वैक्रेय वध्यु ॥ मनुष्य गर्भजने शरीर ५ ॥ सिद्ध अशरीरी कहिये ॥

इति शरीरद्वार संपूर्ण ॥ १३ ॥

हवे गुणठाणाद्वार कहे छे ॥

गुणठाणा १४ ते मिथ्यात्व १॥ सास्वादान २ ॥समामिथ्यात्व ३ ॥ अव्रति समदृष्टि ४ ॥ देशविरति ५॥ प्रमत्त ६॥ अप्रमत्त ७ ॥ निवृत्ति बादर ८ ॥ अनिवृत्ति बादर ९ ॥ सूक्ष्मसपराय १० ॥ उपशातमोह ११ ॥ क्षीणमोह १२॥सजोगी केवली १३ अयोगी केवली १४ ॥ नारकी देवताने गुणठाणा ४, ते मिथ्यात्व १ ॥ सास्वादान २ ॥ मिश्र ३ ॥ अविरति समदृष्टि ४ ॥ ए ग्रैवेयके गुणठाणा ३ ॥ मिथ्यात्व १ ॥ सास्वादान २ ॥ अविरति ३ ॥ अनुत्तर विमाने गुणठाणु १ ॥ अविरति सम्यक्दृष्टि ॥ विगलेन्द्रियने गुणठाणा २, ते मिथ्यात्व १ ॥ सास्वादान २ ॥ तिर्यंच पचेंद्रिय समुर्छिमने गुणठाणा २, ते मिथ्यात्व १ ॥ सास्वादान २ ॥ तिर्यंच पचेंद्रिय गर्भजने गुणठाणा ५, ते मिथ्यात्व आदि यावत् देशविरति ॥ मनुष्य समुर्छिमने गुणठाणु १, मिथ्यात्व ॥ मनुष्य गर्भजने गुणठाणा १४ जाणवा ॥ सिद्धने गुणठाणु एके नहि ॥

इति गुणठाणाद्वार सपूर्ण ॥ १४ ॥

हवे दृष्टिद्वार कहे छे ॥

दृष्टि ३, ते समकित १ ॥ मिथ्यात्व २ ॥ मिश्रदृष्टि ३ ॥ नारकी देवताने ३ दृष्टि लाभे ॥ नव ग्रैवेयकमां दृष्टि २, ते समकित १ ॥ मिथ्यात्व २ ॥ अनुत्तर विमाने दृष्टि १ समकित ॥ एकेंद्रियने दृष्टि १ मिथ्यात्व ॥ विगलेंद्रिय तिर्यंच पंचेंद्रिय समुर्छिमने दृष्टि २, ते समकित १ ॥ मिथ्यात्व २ ॥ मनुष्य समुर्छिमने दृष्टि १ मिथ्यात्व ॥ तिर्यंच पचेंद्रिय गर्भज, मनुष्य गर्भजने दृष्टि ३ लाभे ॥ सिद्धमां दृष्टि १ समकितनी लाभे ॥

इति दृष्टिद्वार सपूर्ण ॥ १५ ॥

हवे पर्याप्तिद्वार कहे छे ॥

पर्या ६, ते आहार पर्या १ ॥ शरीर पर्या २ ॥ इंद्रिय पर्या ३ ॥ श्वासोश्वास पर्या ४ ॥ भाषा पर्या ५ ॥ मन पर्या ६ ॥ नारकी देवताने ५ पर्या ॥ भाषा मन साथे बांधे ॥ एकेंद्रिय ५ ने मनुष्य समुर्छिमने पर्या ४ पहेली जाणवी ॥ ३ विगलेंद्रियने तिर्यंच पंचें

द्रिय समुर्छिमने पर्या ५ पहेली ॥ तिर्यंच पचेंद्रिय गर्भजने मनुष्य गर्भजने पर्या ६ जाणवी ॥ सिद्धने पर्या नथी ॥

इति पर्याद्वार संपूर्ण ॥ १६ ॥

हवे प्राणद्वार कहे छे ॥

प्राण १०, ते इंद्रिय ५, ३ जोग ७, श्वासोच्छ्वास ए, आउखु १० ॥ नारकी देवताने प्राण १० ॥ एकेंद्रियने प्राण ४ ॥ स्पर्शेंद्रिय १ ॥ कायबल २ ॥ श्वासोच्छ्वास ३ ॥ आउखुं ४ ॥ बेइंद्रियने प्राण ६ तेमा मुख अने वचन ए बे वध्या ॥ तेइंद्रियने प्राण ७ ते नासिका वधी ॥ चउरिंद्रियने प्राण ७ ते चक्षु वधी ॥ तिर्यंच पचेंद्रिय समुर्छिमने प्राण ए ते कान वध्यो ॥ मनुष्य समुर्छिमने प्राण ७ ते मनबल वचनबल ए बे नहि ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय गर्भजने, मनुष्य गर्भजने प्राण १० ॥ सिद्धने द्रव्य प्राण नथी पण भाव प्राण ४ छे ॥

इति प्राणद्वार संपूर्ण ॥ १७ ॥

हवे नाण अनाणद्वार कहे छे ॥

ज्ञान ५, ते मतिज्ञान १ ॥ श्रुतज्ञान २ ॥ अवधिज्ञान ३ ॥ मनःपर्यवज्ञान ४ ॥ केवलज्ञान ५ ॥ त्रण अज्ञान ते मति अज्ञान १ ॥ श्रुत अज्ञान २ ॥ विभग ज्ञान ३ ॥ नारकीने ज्ञान ३ प्रथम, अज्ञान ३ नी भजना ॥ भवनपति वाणव्यंतरने ज्ञान ३ प्रथम, अज्ञान ३ नी भजना ॥ ज्योतिषी वैमानिकने ज्ञान ३ प्रथम, अज्ञान ३ नियमा ॥ नवर अनुत्तर विमाने ज्ञान ३ प्रथम छे, अज्ञान नथी ॥ एकेंद्रिय ५ ने मतिअज्ञान १ ॥ श्रुत अज्ञान २ ॥ विगलेंद्रियने तिर्यंच पचेंद्रिय समुर्छिमने मतिनाण श्रुतनाण ॥ मति अनाण श्रुतअनाण ॥ तिर्यंच पचेंद्रिय गर्भजने ज्ञान ३ अने अज्ञान ३ नी भजना ॥ मनुष्य समुर्छिमने मतिअज्ञान श्रुतअज्ञान ॥ मनुष्य गर्भजने ज्ञान ५, अज्ञान ३ नी भजना ॥ पहेली नरके नारकी उत्कृष्टो ४ गाउ देखे, जघन्य ३॥ गाउ देखे ॥ बीजी नरके नारकी उत्० ३॥ गाउ देखे, ज० गाउ ३ देखे ॥ त्रीजी नरके उत्० गाउ ३ देखे, ज० २॥ गाउ देखे ॥ चोथी नरके उत्० २॥ गाउ, ज० २ गाउ देखे ॥ पांचमी नरके

उत्० २ गाउ, ज० १॥ गाउ देखे ॥ उठीए उ० १॥ अने ज० १ गाउ देखे ॥ सातमीए उ० १ गाउ देखे, ज० अर्द्धगाउ देखे ॥ एवु चारे दिशे देखे ॥ हवे असुर कुमार ज० २५ जोजन देखे, उ० असख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ तेना नवनिकाय ज० २५ जोजन, उ० सख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ तिर्यंच पचेंद्रिय गर्भज ज० आंगुलनो असख्यातमो भाग, उ० सख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ मनुष्य गर्भज ज० अंगुलनो असख्यातमो भाग, उ० असख्याता द्वीप समुद्र देख ॥ वली जेवडो लोक तेवडा असख्याता खाडुयां अलोक मांहि देखे ॥ व्यतर ज० २५ जोजन देखे, उ० सख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ ज्योतिषी ज० उ० सख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ वैमानिक पहेला बीजा देवलोकना देवता ज० २५ जोजन देखे, उ० नीचे पहेली नरक सुधी देखे, त्रिर्छु असख्याताद्वीप समुद्र देखे, उचे पोताना विमाननी ध्वजा सुधी देखे ॥ त्रीजा चोथानां बीजी नरक सुधी देखे ॥ उचु त्रिछु पहेला २ देवलोकनी माफक जाणवु॥ पांचमा छठाना त्रीजी नरक सुधी देखे॥ उचुत्रिछु तेमज जाणवु ॥ सातमा आठमाना चोथी नरक सुधी देखे ॥ उचुं त्रिछु जिम

पडमे ॥ नवमा, दशमा, अग्यारमा, बारमाना पांचमी नरक सुधी देखे ॥ ठचु त्रिछु जिम पडमे ॥ नव ग्रैवेयकना ठठी नरक सुधी देखे ॥ ठचु त्रिछु जिम पडमे ॥ चार अनुत्तर विमानना सातमी नरक सुधी देखे ॥ ठंचु त्रिछु जिम पडमे ॥ सर्वार्थसिद्धना आखी लोकनाली कांइक उणी देखे ॥ सिद्ध लोकालोक समस्त देखे ॥

इतिनाण अनाणद्वार सपूर्ण ॥ १८ ॥

हवे १ए मु सजतिद्वार कहे ठे ॥

सजति आदि आठे बोले चोवीस भेद कहे ठे ॥ सजति १ ॥ असजति २ ॥ सजतासजति ३ ॥ व्रति १ ॥ अव्रति २ ॥ व्रताव्रति ३ ॥ पच्चखाणी १ ॥ अपच्चखाणी २ ॥ पच्चखाणापच्चखाणी ३ ॥ पडिया १ ॥ अपंडिया २ ॥ पडियापडिया ३ ॥ सुत्ता १ ॥ जागरिया २ ॥ सुत्ताजागरिया ३ ॥ संवुडा १ ॥ असंवुडा २ ॥ संवुडासंवुडा ३ ॥ धम्मिया १ ॥ अधम्मिया २ ॥ धम्माधम्मिया ३ ॥ धम्मववसाइया १ ॥ अध

म्मववसाइया २ ॥ धम्माधम्मववसाइया ३ ॥ ए आठे बोलना त्रण२ प्रकार जाणवा ॥ नारकी देवता एकेंद्रिय विगलेंद्रिय तिर्यंच पंचेंद्रिय समुर्छिम, मनुष्य समुर्छिम ए सर्व असंजति, अव्रति, अपच्चखाणी, अपक्रिया, अजागरा, असंवुडा, अधम्मिया, अध म्मववसाइया एटला बोल जाणवा ॥ तिर्यंच पचेंद्रिय गर्भज संजतासंजति आदि देइ यावत् धम्माधम्मववसाइया ए १६ बोल जाणवा ॥ मनुष्य गर्भजमां एकेका बोलना त्रण त्रण प्रकार गणतां २४ बोल लाजे ॥ सिद्धने एमानो एके बोल न लाजे ॥

इति संजतिद्वार संपूर्ण ॥ १९ ॥

हवे २० मु आहारद्वार कहे छे ॥

आहारना त्रण प्रकार॥ ओज आहार जे समस्त जीव उपजतां करे ते कहीए १ ॥ रोम आहार जे त्वचाए करी ग्रहण करे ते कहीए २ ॥ कवल आहार ते कवल करी पुद्गल ग्रहण करे ते कहीए ३ ॥ नारकीने आहार २ ते ओज अने रोम॥ चितव्या पछी अशुभ अने अमनोज्ञपणे परिणामे ॥ देवताने आहार २ ओज अने रोम ॥ चितव्या पछी

शुन्न मनोझकारिया परिणमे ॥ एकेंड्रिय पांचेने आहार २ ते ओज अने रोम, ते शुन्ना शुन्नपणे परिणमे ॥ ३ विगलेंड्रिय तिर्यंच पचेंड्रिय समुर्छिम अने गर्नज, मनुष्य गर्नज एटलान आहार ३ जाणवा ॥ मनुष्य समुर्छिमने आहार १ ते ओज अने रोम ॥ सिद्ध अणाहारी जाणवा ॥

इति आहार द्वारसपूर्ण ॥ २० ॥

हवे बीजे प्रकारे ११ मु आहारद्वार कहे छे ॥

आहार ३, ते सचित्त १ ॥ अचित्त १ ॥ मिश्र ३ ॥ नारकी देवता अचित्त आहार लिये, बाकी सघळा त्रण आहार लिये, सिद्ध एके आहार न लिये ॥

इति ११ मु आहारद्वार सपूर्ण ॥ ११ ॥

हवे २२ मु संज्ञा आहारद्वार कहे छे ॥

ससारी जीवने आहार लेवानी संज्ञा उपजे ते कहे छे ॥ नारकीने अतमुंहूर्से आहारनी संज्ञा

उपजे ॥ असुर कुमारने जघन्य चउत्थ भक्ते, उत्कृष्ट सागर १ जाजेरुं आउखु छे, तेने १ हजार जाजेरा वर्षे आहारनी इच्छा उपजे ॥ तेना नवनिकायने ज० चउत्थ भक्ते, उ० पृथक् दिवसे ॥ व्यंतरने ज० चउत्थ भक्ते, उ० पृथक् दिवसे ॥ ज्योतिषीने जघनोत्कृष्ट पृथक् दिवसे॥ वैमानिकने ज० पृथक् दिवसे, उ० ज्या जेटला सागर आयु त्यां तेटला हजार वर्षे आहार लेवानी इच्छा उपजे ॥ ज्यां जाजेरा सागर त्यां जाजेरा हजार वर्षे आहारनी इच्छा उपजे॥ एकेंद्रिय पांचेने समये समये आहारनी इच्छा उपजे ॥ विगलेंद्रियने अंतर्मुहूर्ते इच्छा उपजे ॥ तिर्यंच पंचेंद्रियने छठ भक्ते आहारनी इच्छा उपजे ॥ मनुष्यने अठम भक्ते इच्छा उपजे ॥ देवकुरु उत्तरकुरुए अठम भक्ते ॥ हरिवास रम्यकवासे छठ भक्ते ॥ हेमवय एरणवए चउत्थ भक्ते आहारनी इच्छा उपजे ॥ सिद्ध अणाहारी ॥

इति २१ मु इच्छा आहारद्वार संपूर्ण ॥ २१ ॥

हवे २२ मु कायस्थितिद्वार कहे छे ॥

नारकी देवताने जेने जेटली आयुस्थिति छे तेने तेटली कायस्थिति जाणवी ॥

पुढवी अप तेउ वायुमां गयो थको जीव कालथी असंख्याती उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी काल रहे ॥ क्षेत्रथी असंख्याता लोक पुरे ॥ ते लोकनुं मान–लोकक्षेत्र मांहि १ मनथी कल्पीने आंगुल क्षेत्र भाग चिंतवीए, ते १ आंगुल क्षेत्रमांहि एटला आकाश प्रदेश छे ॥ ते आकाश प्रदेश समये समये एकेको काढीए तो ते १ आंगुल क्षेत्रे असंख्याती उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणीए अवहराय कहेतां उलवाय ॥ एक हाथ तथा १ धनुष्य तथा १ गाउ क्षेत्र उलवातां केटलो काल थाय ? ते असंख्याती उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी काल उलवाता थाय ॥ एम आखो लोक उलवातां पण एटलो काल थाय, एटले १ लोके, एम असंख्याता लोक उलवातां जेटलो काल थाए तेटली असंख्याती उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी जाणवी ॥ ए उत्कृष्टो काल कह्यो ॥ जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति जाणवी ॥ बादर काय पृथिव्यादि एकेकी मांहि गयो थको ७० कोडाकोडी सागर रहे ॥ ए उत्कृष्टो काळ जाणवो, ज० अंतर्मुहूर्त्त रहे ॥ वनस्पति कायमां गयो थको काले अनंती उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी काल रहे ॥ क्षेत्रे अनंता लोक पुरे॥ असंख्याता पुद्गल परावर्त्तन करे ॥ ते

असंख्यातानुं मान कहे छे ॥ आवली १ ने असंख्यातमे भागे जेटला समय थाय, तेटला पुद्गल परावर्त्तन करे, ज० अंतर्मुहूर्त्त ॥ १ ॥ एकली सूक्ष्म निगोदमां गयो थको काले असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल रहे ॥ क्षेत्रे असंख्याता लोक पुरे ॥ २ ॥ सूक्ष्म अने बादर निगोद ए बेमां गयो थको, काले अनंती उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी काल रहे ॥ क्षेत्रे अनंता लोक अढि पुद्गल परावर्त्तन करे ॥ ३ ॥ एकली बादर निगोदमां गयो थको ७० कोडाकोडी सागर रहे ॥ ४ ॥ प्रत्येकमां गयो थको ७० कोडाकोडी सागर रहे ॥ ५ ॥ बादर निगोद प्रत्येक वनस्पतिमां गयो थको, काले असंख्याती उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी काल रहे ॥ क्षेत्रे अंगुलनो असंख्यातमो भाग, ते तेना जेटला आकाश प्रदेश थाय तेटला पुद्गल परावर्त्तन करे ॥ बेइंद्रियमांहि गयो थको संख्याता वर्ष रहे ॥ तेइंद्रिय मांहि गयो थको संख्याता दिवस रहे ॥ चउरिंद्रियमांहि गयो थको संख्याता मास रहे ॥ पचेंद्रिय तिर्यंचमांहि गयो थको केटलो काल रहे ? जे असंख्याता आउखानां तिर्यंच छे तेने तेज भव कायस्थिति ॥ जे संख्याता आउखानां तिर्यंच ते उत्कृष्टा सत्तठ भव

करे ॥ मनुष्यने पण एमज तिर्यचनी परे जाणवु, ज० समस्तने अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति जाणवी ॥

इति कायस्थितिद्वार संपूर्ण ॥ २३ ॥

हवे २४ मु समुद्घातद्वार कहे छे ॥

समुद्घात ७, ते वेदनीय समुद्घात १ ॥ कषाय समुद्घात २ ॥ मारणांतिक समुद्घात ३ ॥ वैक्रेय समुद्घात ४ ॥ तेजस् समुद्घात ५ ॥ आहारक समुद्घात ६ ॥ केवल समुद्घात ७ ॥ नारकीने पहेली ४ ॥ देवताने पहेली ५ ॥ पुढवी अप तेउ वनस्पति ए ४ ने पहेली ३ ॥ वायुने पहेली ५ ॥ तिर्यच पंचेंद्रिय समुर्च्छिम अने मनुष्य समुर्छिमने पहेली ३ ॥ तिर्यच पंचेंद्रिय गर्भजने पहेली ५ ॥ मनुष्य गर्भजने ७ समुद्घात लाभे ॥ सिद्धमां एके समुद्घात न लाभे ॥

इति समुद्घातद्वार संपूर्ण ॥ २४ ॥

हवे २५ मु कुलकोमीद्वार कहे छे ॥

समस्त ससारी जीवनी एक कोमी सामी सत्ताणु लाख कुलकोमी छे ॥ नारकीनी २५ लाख कुलकोमी ॥ देवतानी २६ लाख ॥ पृथ्वीनी १२ लाख ॥ अपनी ७ लाख ॥ तेउनी ३ लाख ॥ वाउनी ७ लाख ॥ वनस्पतिनी २८ लाख कुलकोमी ॥ बेइन्द्रियनी ७ लाख ॥ तेइन्द्रियनी ८ लाख ॥ चउरिंद्रियनी ए लाख ॥ तिर्यंच पचेंद्रिय जलचरनी १२॥ लाख ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय थलचरनी १० लाख ॥ खेचरनी १२ लाख ॥ उरपरनी १० लाख ॥ भुजपरनी ए लाख ॥ मनुष्यनी १२ लाख कुलकोमी ॥ कुलकोमीनो शु अर्थ ? कुल ते जे जोनी थकी उपजे ॥ जेम एक छाणने पोमळे वींछीनां कुल घणां उपजे, तेम एकेंद्रियने घणाय कुल उपजे ॥ ते कुलनी कोमी कहे छे ॥

गाथा—एगदिएसु पचसु बार, सगति सत्त अठवीसाय ॥

विगलेसु सत्त अठ नव, जल खह चउपय उरग भूयगे ॥ १ ॥

अऊतेरस बारस, दस दस नवग नरामरे निरए ॥

बारस बीस पणविस, हुंति कुलकोमी लरकाइ ॥ २ ॥
इगकोमि सच नवइ, लक्खा सढा कुलाण कोमीण ॥
इइ सगहणी गाथे, कहिता पुव्वसूरिहिं ॥ ३ ॥
सिद्धने कुलकोमी एके नहि ॥ इति कुलकोमीद्वार सपूर्ण ॥ २५ ॥

हवे २६ मुं सोपकर्मी नोपकर्मी आयुष्यनुं द्वार कहे छे ॥

बे प्रकारे आयुष्य छे ॥ एक नोपकर्म्मी, बीजुं सोपकर्म्मी ॥ नारकी देवता तीर्थंकर चक्रवर्त्ती बलदेव वासुदेव असंख्याता वर्षनां आयुष्यनां तिर्यंच मनुष्य जुगलीया ए सर्वेनुं नोपकर्म्मी आयुष्य जाणवुं बाकी सर्वमां नोपकर्म्मी सोपकर्म्मी ए बन्ने आयुष्य होय ॥ सिद्धमां आयुष्य बेमानुं एके नहि ॥

इति नोपकर्म्मी सोपकर्म्मी आयुष्यद्वार सपूर्ण ॥ २६ ॥

हवे २७ मु देवद्वार कहे छे ॥

गाथा—नाम १ गुण २ उववाय ३, ठिइ ४ विउ ५ चवण ६ संचिठणा ७ ॥
अंतर ८ अप्पाबहुय ए, नवद्दारा पण देवाण णेया ॥ १ ॥

ए ए द्वार तेमां प्रथम नामद्वार कहे छे ॥ भविय द्रव्य देव ॥ १ ॥ नरदेव २ ॥ धर्मदेव ३ ॥ देवाधिदेव ४ ॥ भावदेव ५ ॥ १ ॥ हवे बीजुं गुणद्वार कहे छे ॥ मनुष्य तथा तिर्यंच पंचेंद्रिय जेने देवतामां उपजवु छे तेने भविय द्रव्य देव कहिये ॥ १ ॥ चोदरत्न नव निधान जेने होय तेने नरदेव कहिये ॥ २ ॥ साधुना सत्यावीश गुणे करी सहित अने समणेतिवा १ ॥ माहणेतिवा २ ॥ खतीतिवा ३ ॥ दंतीतिवा ४ ॥ गुत्तीतिवा ५ ॥ मुत्तीतिवा ६ ॥ इसीतिवा ७ ॥ मुणीतिवा ८ ॥ विरतीतिवा ए ॥ विड तिवा १० ॥ लुहेतिवा ११ ॥ भिक्खुतिवा १२ ॥ तीरट्ठीतिवा १३ ॥ ए १३ नामेयुक्त होय तेने धर्मदेव कहिये ३ ॥ अढार दोष रहित ने बारगुणे करी सहित होय तेने देवाधिदेव कहिये ॥ अढार दोष ते कहे छे ॥ अज्ञान १ ॥ क्रोध २ ॥ मद ३ ॥ मान ४ ॥

माया ५ ॥ लोन ६ ॥ रति ७ ॥ अरति ८ ॥ निद्रा ए ॥ शोक १० ॥ असत्य ११ ॥ चोरी १२ ॥ मत्सर १३ ॥ नय १४ ॥ प्राणिवध १५ ॥ प्रेम १६ ॥ क्रीडाप्रसंग १७ ॥ हास्य १८ ॥ ए १८ दोष रहित ने १२ गुणे करी सहित ॥ ते १२ गुण कहे छे ॥ ज्यां ज्यां नगवंत उना रहे वेसे समवसरे त्यां त्यां दश बोल सहित ते नगवतथी बारगुणो उंचो तत्काल अशोकवृक्ष थइ आवे स्वामिने गयमो करे ॥ १ ॥ नगवंत ज्यां ज्यां समवसरे त्यां त्यां पांचवर्णा अचेत फुलनी वृष्टि थाय, ढिंचण प्रमाणे ढगला थाय ॥२॥ नगवतनी जोजन प्रमाणे वाणी विस्तरे, सहुना मननो संशय हरे ॥ ३ ॥ नगवतने चोविस जोमा चामर विंजाय ॥ ४ ॥ स्फटिक रत्नमय पादपीठ सहित सिंहासन स्वामिने आगळे थाय ॥५॥ नामंमल अंबोमाने ठेकाणे तेज मंमल बिराजे, दिशो दिशनां अंधकार टाळे ॥६॥ आकाशे साढीबार क्रोम गेवी वाजां वागे ॥७॥ नगवतनी उपर त्रण उत्र उपराउपरी बिराजे ॥८॥ अनतज्ञानातिशय ॥ए॥ अनत अर्चातिशय परमपूज्यपणु ॥१०॥ अनंत वचनातिशय॥११॥ अनत अपायापगमातिशय ते सर्व दोष रहितपणु॥१२॥ए १२ गुणे करी सहित तथा

चोत्रीस अतिशय,पांत्रिस वचनातिशय आदे दइने अनतगुणे करी सहित होय तेने देवाधिदेव कहिये ॥ ४ ॥ नावदेव ते केने कहिये ॥ नवनपति १ ॥ वाणव्यतर २ ॥ ज्योतिषी ३ ॥ वैमानिक ४ ॥ ए चार जातिना देवताने नावे प्रवर्ते छे तेने नावदेव कहिये ॥ ५ ॥ २ ॥ हवे त्रिजु उपवाय द्वार कहे छे ॥ नविय द्रव्य देवमां मनुष्य तिर्यंच १ ॥ जुगलीया २ ॥ सर्वार्थ सिद्ध ३ ॥ ए त्रण ठाम वर्जिने बाकी सर्व ठामना आवी उपजे ॥ १ ॥ नरदेवमां ४ जातिना देवताने पहेली नरक, ए ५ ठामना आवी उपजे ॥ २ ॥ धर्म देवमां छठी सातमी नरक ॥ तेउ वाउ मनुष्य तिर्यंच जुगलीया, ए ६ ठाम वर्जिने शेष सर्व ठामना आवी उपजे ॥ ३ ॥ देवाधिदेवमां पहेली बीजी त्रिजी नरक ने किल्बिषी वर्जिने, वैमानिक देवना आवी उपजे ॥ ४ ॥ नावदेवमां सन्नी तिर्यंच पचेंद्रिय १ सन्नी मनुष्य २ ए २ ठामना आवी उपजे ॥ ५ ॥ ३ ॥ हवे चोथु स्थिति द्वार कहे छे ॥ नविय द्रव्य देवनी जघ० अंत०, उत्० ३ पल्यनी १ ॥ नरदेवनी जघ० सातसें वर्षनी, उत्० चोराशीलाख पूर्वनी २ ॥ धर्मदेवनी जघ० अत०, उत्० देशे उणी पूर्वकोडिनी ३ ॥ देवाधिदेवनी जघ० बहुतेर

वर्षनी, उत्० ८४ लाख पूर्वनो ४ ॥ भावदेवनी जघ० दशहजार वर्षनी, उत्० ३३ सागरनी ५ ॥ ६ ॥ हवे पांचमु ऋद्धि तथा विकुर्वणा द्वार कहे छे ॥ भविय द्रव्य देवमां जेने वैक्रेय लब्धि उपजी होय तेनेज होय ॥ नरदेवने तो होयज ॥ धर्मदेवमां जेने लब्धि उपजी होय तेने होय ॥ भाव देवने तो होयज ॥ ए ४ वैक्रेय रूप करे तो ज० १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उत्० सख्याता करे॥शक्ति तो असख्याता रूप करवानी छे पण करे नहि ॥ देवाधिदेवनी शक्ति घणी छे पण करे नहि ॥ ५ ॥ हवे छठु चवण द्वार कहे छे ॥ भविय द्रव्य देव चवी देवता थाय १ ॥ नरदेव चवी नरके जाय २ ॥ धर्म देव चवी वैमानिक तथा मोक्षमां जाय ३ ॥ देवाधिदेव तो मुक्ति जाय ४ ॥ भाव देव चवीने बादर पृथवी पाणी वनस्पतिमां ने गर्भज मनुष्य तिर्यंचमां जाय ॥ ५ ॥ ६ ॥ हवे सातमु सचिठणा द्वार कहे छे ॥ सचिठणा ते देवनो देवपणे रहे तो केटला काळ रहे ते ॥ भविय द्रव्य देवनी सचिठणा जघ० अंत०, उत्० ३ पल्योपमनी १ ॥ नरदेवनी जघ० सातसें वर्षनी, उत्० ८४ लाख पूर्वनी २ ॥ धर्म देवनी जघ० १ समयनी, उत्० देशे उणी पूर्व क्रोडिनी ३ ॥ देवाधि

देवनी जघ० महुत्तेर वर्षनी, उत्० ८४ लाख पूर्वनी ४ ॥ नावदेवनी जघ० दश हजार वर्षनी, उत्० ३३ सागरनी ५ ॥ ७ ॥ हवे आठमु अतरद्वार कहे छे ॥ नवियद्रव्य देवनु आंतरु पके तो जघ० दश हजार वर्ष ने अंतर्मुहूर्त्त अधिकनुं, उत्० अनता कालनु आंतरु पके १ ॥ नरदेवनु जघ० १ सागर जाजेरु, उत्० अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन देशे उणुं २ ॥ धर्मदेवनु जघ० १ पल्य जाजेरुं, उत्० अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन देशे उणु ३ ॥ देवाधिदेवनु आंतरुं नथी ४ ॥ नावदेवनु जघ० अत०, उत्० अनता कालनु ॥ ५ ॥ ८ ॥ हवे नवमु अल्पवहुत्वद्वार कहे छे ॥ सर्वथी थाका नरदेव १ ॥ तेथी देवाधिदेव सख्यातगुणा २ ॥ तेथी धर्मदेव सख्यातगुणा ३ ॥ तेथी नविय द्रव्यदव असख्यात गुणा ४ ॥ तेथी नाव देव असख्यातगुणा ५ ॥ ९ ॥ ए अधिकार ज० श० १२ में उ० ए में छे ॥

इति २७ मु देवद्वार सपूर्ण ॥ २७ ॥

हवे २८ मुं जरा सोगद्वार कहे छे ॥

जे शरीरे करी वेदे ते जरा वेदनीय ॥ मने करी वेदे ते शोक वेदनीय ॥ नारकी देवता

ने तिर्यंच गर्भज, मनुष्य गर्भजने जरावेदनीय, अने शोक वेदनीय ए बे लाभे ॥ पांच एकेंद्रियने त्रण विगलेंद्रियने तिर्यंच मनुष्य समुर्च्छिम एटलाने एक जरा वेदनीय होय ॥ सिद्धने एके वेदनीय नहि ॥

इति जरासोगद्वार सपूर्ण ॥ २८ ॥

हवे २९ मुं परिग्रहद्वार कहे छे ॥

परिग्रह ३ प्रकारे ॥ कर्म परिग्रह १ ॥ शरीर परिग्रह २ ॥ बाह्य नरूमतोवगरण परिग्रह ३ ॥ नारकी, पाच एकेंद्रियने कर्म परिग्रह १ ॥ शरीर परिग्रह २ ॥ देवता, त्रण विगलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय, अने मनुष्यने त्रण परिग्रह ॥ कर्म परिग्रह १ ॥ शरीर परिग्रह २ ॥ बाह्यनरूमतोवगरण परिग्रह ३ ॥ सिद्धने परिग्रह एके नहि ॥

इति परिग्रहद्वार संपूर्ण ॥ २९ ॥

हवे ३० मु सांतर निरंतरद्वार कहे छे ॥

पांचसें त्रेसठ भेद जीवनां ते १४ भेद नारकीनां ॥ १ ॥ ४८ भेद तिर्यंचनां ॥ २ ॥ ३०३ भेद मनुष्यनां ॥ ३ ॥ १९८ भेद देवतानां ॥ ४ ॥ एव सर्व मळी ५६३ भेद जीवनां छे ॥ ते जीव सांतर निरतर उपजे के चवे ? उत्तर पहेली नरके नारकी सांतर निरंतर उपजे अने निरतर उपजे ता आवलीकानें १ असंख्यातमे भागे ॥ जेटला समय थाय तेटला समय लगे उपजे अने चवे ॥ आंतरु पडे तो २४ मुहूर्त्तनुं १॥ बीजी नरके सांतर निरतर एसज जाणवो ॥ आंतरु पडे तो ७ दिवसनुं ॥ २ ॥ त्रीजी नरके सांतर निरतर एमज, आतरू पडे तो १५ दिवसनु ३ ॥ चोथी नरके सांतर निरतर एमज ॥ आंतरु पडे तो मास १ नु ४ ॥ पांचमी नरके सांतर निरंतर एमज ॥ आंतरु पडे तो मास २ नु ५ ॥ छठी नरके सांतर निरतर एमज ॥ आंतरु पडे तो मास ४ नुं ६ ॥ सातमी नरके सांतर निरतर एमज ॥ आंतरुं पडे तो मास ६ नु ७ ॥ भवनपतिने सातर निरतर एमज ॥ आंतरु पडे तो २४ मुहूर्त्तनुं ॥ पांच एकेंद्रिय निरतरज उपजे

॥ अने च्यवे पण निरतरज, उपजवा चववामा आंतरुं नथी ॥ त्रण विगलेंद्रियने सांतर निरतर प्रमज ॥ आंतरु पके तो अतर्मुहूर्त्तनु ॥ तिर्यच समुर्च्छिमने सांतर निरंतर प्रमज ॥ आंतरुं पके तो अतर्मुहूर्त्तनु ॥ तिर्यच गर्भजने सांतर निरतर प्रमज ॥ आंतरु पके तो मुहूर्त्त १२ नु ॥ मनुष्य समुर्च्छिमने सांतर निरतर प्रमज ॥ आंतरु पके तो २४ मुहूर्त्तनु ॥ मनुष्य गर्भजने सांतर निरतर प्रमज, ॥ आंतरु ज० अत०, उत्० १२ मुहूर्त्तनु ॥ वाणव्यतर ज्योतिषी पहेला बीजा देवलोके सांतर निर० प्रमज, आंत० २४ मुहूर्त्तनुं ॥ त्रीजे देवलोके सांतर निरतर प्रमज ॥ आंतरु पके तो ए दिवस अने २० मुहूर्त्तनु ॥ चोथे देवलोके सांतर निरंतर प्रमज, ॥ आंतरु पके तो १२ दिवसने १० मुहूर्त्तनुं ॥ पांचमे देवलोके सांतर निरतर प्रमज ॥ आंतरु पके तो २२॥ दिवसनुं ॥ छठे देवलोके सांतर निरं० प्रमज, आं० ४५ दिवसनु॥ सातमे देवलोके सांतर निर० प्रमज, आं०८० दिवसनुं ॥ आठमे देवलोके सांतर निर०प्रमज, आं० १०० दिवसनु ॥ नवमे दशमे देवलोके सातर निरं० प्रमज, आं० सख्याता मासनुं ॥ अग्यारमा बारमा देवलोके सातर निर० प्रमज, आं० सख्याता वर्षनु ॥ नवग्रैवेयके पहेली त्रिके सांतर नि-

र०पमज, श्रां० सख्याता वर्षना सेंकमानुं ॥ बीजी त्रिके सांतर निर०पमज,श्रां० सख्याता वर्षनां हजारनुं ॥ त्रिजी त्रिके सातर निर० पमज, श्रातरु सख्याता वर्षनां लाखनु ॥ चार श्रनुत्तर विमाने सातर निर० पमज, श्रां० पक्ष्यनां श्रसख्यातमा नागनुं॥ सर्वार्थसिद्ध विमाने सातर निरतर पमज ॥ उपजे तो श्रावलीकाने श्रसख्यातमे नागे जेटला समय थाय तेटला समय लगे उपजे श्रने चवे ॥ श्रांतरु पक्ष्यना सख्यातमा नागनु पमे ॥ सिद्धनुं जघन्य श्रांतरु १ समयनु, श्रने उत्कृष्टु श्रांतरु ६ मासनु ॥ चार गतिमां समुच्चय पचेंद्रिय श्राश्रि श्रातरुं ज० १ समयनु, उ० १२ मुहूर्त्तनु ॥ इंद्रस्याननुं ज० १ समयनु, उ० ६ मासनु श्रांतरु पमे ॥

इति सांतर निरतरद्वार सपूर्ण ॥ ३० ॥

॥ इति श्री महादरुक सपूर्ण ॥

चार ध्यानना बोल ॥

अथ श्री उववाइ प्रमुख सिद्धांतथी ४ ध्यानना बोल लिख्यते ॥ सारु मातु चिंतवतुं ते ध्यान ॥ ते ध्यान ४ ॥ आर्त्तध्यान १ ॥ रौद्रध्यान २ ॥ धर्मध्यान ३ ॥ शुक्लध्यान ४ ॥ तेमां प्रथम आर्त्तध्यानना ४ भेद ॥ अमनोज्ञ शब्द रूप गंध रस स्पर्शनी जोगवाइ आवी मळी छे, ते कोण जाणे माराथी क्यारे दूर थशे, ए दूर थाय तो सारु एवी मनने विषे चिंता उपजे ते आर्त्तध्यानी जीव कहिये, ए पहेलो भेद ॥ १ ॥ हवे बीजो भेद कहे छे ॥ मनोज्ञ शब्द रूप गंध रस स्पर्श शुभ जोगवाइए आवी मळ्यां छे ते घणा दिवस रहे तो सारुं थाय, दूर न थाय तो ठीक एवी मनने विषे चिंता करे ते आर्त्तध्यानी जीव कहिये, ए बीजो भेद ॥ २ ॥ शरीरने विषे आतंकादिक रोग आवी उपज्या ते श्वास १॥ खास २ ॥ ज्वर ३ ॥ दाह ४ ॥ कुक्षि शूल ५ ॥ भगदर ६ ॥ हरस ७ ॥ अजिरण ८ ॥ दृष्टिशूल ९ ॥ अरुचि १० अक्षिवेदना ११ ॥ कर्णवेदना १२ ॥ कंडु १३ ॥ उदररोग १४ ॥

कुष्टी रोग १५ ॥ दृष्टिशूल १६ ॥ ए १६ प्रकारना रोगनी पीडा घणी आवी उपनी छे तियारे ते जाणे के ए क्यारे दूर थशे, एम घणो घणो विलाप करे, ए जाय तो सारु थाय एम चिंतवे तेने आर्त्तध्यानी जीव कहियें, ए त्रिजो भेद ॥ ३ ॥ ५ इंद्रियना कामभोग विषय सुख खावा पीवा पहेरवा ओढवा ए आदि घणा आवी मळ्यां छे तेने एम जाणे के ते दूर न थाय तो सारु एम घणी घणी लालच मनमां आणे तेने आर्त्तध्यानी जीव कहियें, ए चोथो भेद ॥ ४ ॥ ए आर्त्तध्यानना ४ भेद कह्यां ॥ हवे आर्त्तध्यानना ४ लक्षण कहे छे ॥ कंदनता कहेता गाढे गाढे शब्द करी रोवे आक्रंद शब्द करे ए, आर्त्तध्याननु पहेलु लक्षण ॥ १ ॥ शोचनता कहेता शोच करे थेगो थेगो गाले हाथ दइने घणो शोच करे, ए बीजु लक्षण ॥ २ ॥ तिप्पणिया कहेता विजोग पडे कोइ वाहली वस्तुनो अश्रुपात करे, हा हा ! ! मारी वस्तु गइ एम कहीने अश्रु पाडे, ए त्रीजु लक्षण ॥ ३ ॥ विलपनता कहेता विलाप करे, दीनपणु धरे, अनेरा आगळ दीनपणु भांखे, ए चोथु लक्षण ॥ ४ ॥ ए ४ चोल आर्त्तध्यानना कह्यां ॥ इति प्रथम आर्त्तध्यानाधिकार ॥१॥ हवे बीजुं रौद्र ध्या

न तेना ४ भेद ॥ हिंसानुबंधी कहेता हिंसाकारी जीवने हणवानु ध्यान चिंतवे, तथा हिंसा करीने आनद माने १ ॥ मृषानुबंधी कहेता मृषावाद बोलवानुं ध्यान चिंतवे, तथा मृषा वाद बोलीने आनद माने २ ॥ स्तेनानुबंधी कहेता चोरी करवानुं ध्यान चिंतवे, तथा चोरी करीने आनद माने ३ ॥ संरक्षणानुबंधी कहेता मारवो कुटवो बांधवो बंधीखाने नखाववानो ध्यान चिंतवे, तथा पूर्वोक्त काम करी आनद माने ४॥ हवे रौद्र ध्यानना ४ लक्षण कहे छे ॥ उसन्नदोसे कहेता जाणी प्रीछीने उत्तरगुण दशविध पच्चखाणने विषे दोष लगावे १ ॥ बहुदोसे कहेता मूलगुण ५ महाव्रतने विषे वारवार दोष लगावे २ ॥ अन्नाणदोसे कहेता अज्ञान शास्त्र भणे, भणीने प्ररुपे, अज्ञान शास्त्र सांभळे, सांभळीने ते अधर्मने धर्म करी जाणे, धर्म अर्थे हिंसा करे ३ ॥ आमरणांत दोसे कहेता मरणनो अंत लगे पण मिथ्यात्वथी निवर्त्ते नहि, अने हिंसा पापने विषे प्रवर्त्ते, माठी चिंतवणानो परिणाम मरणांत लगे राखे तथा ते मरणने अते पण पाप आलोवे नहि, निंदे नहि, प्रायश्चित्त प्रतिवजें नहि, मिछामिदुक्कडं पण देवे नहि ४ ॥ ए ४ रौद्रध्यानना लक्षण

कह्या ॥ ए ठ भेद बीजा रौद्रध्याननां थया ॥ इति द्वितीय रौद्राधिकार ॥ २ ॥ धर्म ध्यानना ४ भेद ॥ आज्ञाविचय कहेतां समकित सहित १२ व्रत श्रावकना, ११ श्राव कनी पडिमा, ५ महाव्रत साधुना, १२ पडिमा भिक्षुनी, ज्ञान दर्शन चारित्र तप ठकायनी रक्षा, ए वीतरागनी आज्ञा आराधवी, चतुर्विध तीर्थना गुण कीर्त्तन करवां, ए प्रथम भेद ॥ १ ॥ अपायविचय कहेतां संसारमांहि जीव मिथ्यात्व १ ॥ अव्रत २ ॥ प्रमाद ३ ॥ कषाय ४ ॥ अशुभ जोग ५ ॥ तथा १८ पाप स्थानक, ठकायनी हिंसा ए डुःखना कारण जाणी, आश्रव मार्ग ठांडी संवर मार्ग आदरवो, जेम जीव डुःख न पामे, ए बीजो भेद ॥ २ ॥ विपाकविचय कहेतां जीवे जेवे रसे करी शुभाशुभ कर्म उपराज्यां ठे ते शुभाशुभ कर्मना उदयथी सुख डुःख भोगवे ठे ते भोगवतां राग द्वेष करवो नहि, समभाव राखीये जेथी परम सुख पामीए, ए त्रीजो भेद ॥ ३ ॥ संस्थानविचय कहेतां लोकना आकारनो तथा परिमंडलादि संठाणनो तथा ५ इंडियना आकारनो चिंतववो, ए चोथो भेद ॥ ४ ॥ हवे धर्मध्याननां ४ लक्षण कहे ठे ॥ आज्ञारुचि १ ॥ निसर्गरुचि २ ॥ सूत्ररुचि ३ ॥ उपदेशरुचि ४ ॥ तेमां

आज्ञारुचि कहेतां वीतरागनी आज्ञा अंगीकार करवानी रुचि उपजे १ ॥ निसर्गरुचि कहेतां स्वभावथी अथवा सांभळवाथी तथा जातिस्मरण ज्ञाने करी श्रुत सहित चारित्र धर्म पाळवानी रुचि उपजे २ ॥ सूत्ररुचि कहेतां कालिक उत्कालिक तद्व्यतिरिक्त सूत्र सांभळवानी–भणवानी रुचि उपजे ३॥ उपदेशरुचि कहेतां मिथ्यात्व १ ॥ अव्रत २ ॥ प्रमाद ३ ॥ कषाय ४ ॥ जोगे ५ ॥ करी उपार्ज्यां कर्म, सम्यकत्व १ ॥ व्रत २ ॥ अप्रमाद ३ ॥ अकषाय ४ ॥ अजोगे ५ ॥ करी खपाविये, तथा ५ इंद्रियना विषय शब्द रूप गंध रस स्पर्श करी उपार्ज्यां कर्म ते तप रूप संवरे करी खपाविये, एवो तीर्थंकरनो उपदेश सांभळी तप संवर आदरिये ॥ जेम दुःख न पामीए एवो धर्म करवानी रुचि उपजे तेने उपदेशरुचि कहीए ४ ॥ हवे धर्मध्यानना ४ आलंबन कहे छे ॥ वाचना १ ॥ पृच्छना २ ॥ पर्यटना ३ ॥ धर्मकथा ४ ॥ तेमां विनय सहित ज्ञानने अर्थे निर्जराने अर्थे गीतार्थ गुरुनी समीपे वांचणी लइये ते वाचना १ ॥ अपूर्व ज्ञान पामवाने अर्थे विनय सहित गुर्वादिकने प्रश्न पुछीए ते पृच्छना २ ॥ पूर्वे अपूर्व सूत्र भण्या छीए ते अस्खलित

करवाने अर्थे उपयोग सहित सूत्रार्थनी वारवार सज्झाय करीए ते पर्यटना ३॥ वीतरागे जेवा नाव प्ररुप्या छे ते नाव भहीने शंकादि रहितपणे पोतानी निर्जरा अथवा परोपकार अर्थे सना मध्ये तेवा प्ररुपे ते धर्मकथा ४ ॥ हवे धर्मध्याननो ४ अनुप्रेक्षा कहे छे ॥ एक त्वानुप्रेक्षा १ ॥ अनित्यानुप्रेक्षा २ ॥ अशरणानुप्रेक्षा ३ ॥ ससारानुप्रेक्षा ४ ॥ तेमां एक त्वानुप्रेक्षा ते जीव निश्चयनये एकलो ज छे, बीजा पुद्गलिक पदार्थो जूदा छे, खावापीवा मोजमजाओ करवी ए बधी कर्मथी थाय छे ने ते कम पुद्गल छे माटे कर्म पुद्गल उप रथी प्रीति उतारी एक पोतानो आत्मा अनत ज्ञानमयी उपर उपयोग राखवो एवा एक त्वपणानी नावना, त एकत्वानु प्रेक्षा १ ॥ अनित्यानुप्रेक्षा ते रूपी पुद्गलना अनेक प्रकारे यत्न करीए तोपण रहे नहि ते नणी नित्य एक श्री जैनधर्म ते परम सुखदायी पोताना आत्माने माटे आत्मा जाणीने समकितादिक सवर करी पुष्ट करीए जेथी निराबाध सुख पामीए ते अनित्यानुपेक्षा २ ॥ अशरणानुप्रेक्षा ते आ नवने विषे पहोंचता जीवने एक समकितपूर्वक जैन धर्म विना बीजु कोई शरण नथी एम जाणी धर्मनु शरण अगीकार

करीए, ते अशरणानुप्रेक्षा ३ ॥ संसारानुप्रेक्षा ते आ जीवने संसाररूप समुद्रने विषे परिभ्रमण करता जगतना जीवने जैन धर्मरूप द्वीपानो आधार छे, बीजु कोई शरण नथी ते संसारानुप्रेक्षा ४ ॥ ए धर्मध्यानना १६ भेद कह्या ॥ इति तृतीय धर्मध्यानाधिकार ॥३॥ हवे शुक्लध्यानना ४ भेद ॥ पृथक्त्ववितर्कसविचारी १ ॥ एकत्ववितर्कअविचारी २ ॥ सूक्ष्म क्रिय अप्रतिपाति ३ ॥ समुच्छिन्नक्रिया अनिवृत्ति ४ ॥ पृथक्त्ववितर्कसविचारी ते अनंत द्रव्यरूप आ जगत छे एमाथी एक द्रव्यनु स्वरूप ग्रहण करी एनी उत्पत्ति व्यय अने ध्रुवताना जूदा जूदा पर्यायनु अर्थथी व्यंजनमां अने व्यंजनथी अर्थमां मने करी विचारवो ते १ ॥ एकत्ववितर्क अविचारी ते उत्पत्ति आदि जे द्रव्यना पर्याय तेनु एकत्व अभेदपणु अवलंबीने रहेवु, परम अविचारी कहेता अर्थ व्यंजननु विचाररहितपणु २ ॥ सूक्ष्मक्रिय अप्रतिपाति कहेता मन वचननो योग रोके ते छता पण अर्द्धकाय योगना रोकवाथी सूक्ष्म क्रियाने नथी पडवानो स्वभाव जेनो परिणामना वधवाथी अप्रतिपाती, ए पायो निर्वाण जवाने काले केवलीने होय ३॥ समुच्छिन्नक्रियअनिवृत्ति कहेता क्षय करी छे क्रिया,

कायिक्रयादि शैलेशी अवस्थाने विषे योगना रुंधवाथी जेथे ते तथा अपाछा वळवानो स्वभाव छे जेने विषे ते ४ ॥ हवे शुक्लध्याननां ४ लक्षण कहे छे ॥ विवेक १ ॥ व्युत्सर्ग २॥ अव्यहे ३॥ असमोहिता ४॥ तेमां विवेक कहेता जीव विवेकपणे चिंतवे—अरे जीव! जीव काया जूदो छ एम जाणीने काया उपर ममता न आणवी, ए काया तो पुद्गल छे, विणशवानो स्वभाव छ, ए प्रथम लक्षण कह्यु १ ॥ व्युत्सर्ग कहेतां कायाने वोसरावीने काउसग्ग करे, कायोत्सर्ग करीने निकाचित कर्मने ओळखे अथवा देवता, मनुष्य, तिर्यच सबंधि अनेक परिसह उपजे ते खमे अने धर्मथी डगाव्या डगे नहि, चळाव्या चळे नहि, सम्यक् प्रकारे ते खमे शुभ परिणामे, ए बीजुं लक्षण कह्युं २ ॥ अव्यहे कहेता अहो! जीव रोगादिक आवीने उपन्या थका कायरपणु वेदे नहि, मोढु बगाडे नहि, जीव तारां सच्यां कर्म ते तारा उपराजेल छे, ते तो समभावे करीने खमे, ए त्रीजु लक्षण कह्यु ३ ॥ असमोहिया कहेता कोइ बीजानी चक्रवर्त्ति, बळदेव, वासुदेव तथा देवतानी ऋद्धि देखीने तथा परनी सुख सामग्री देखीने मूर्छा आणे नहि ॥ अरे जीव! जे भाव सवारे

हता ते जाव सच्याए नहि, अने जे जाव सच्याए हता ते जाव सवारे नहि ॥ जे जीव
सुता हता ते उठ्या नहि, अने जे जीव उठ्या ते सुता नहि, एम अशाश्वती ऋद्धि
विषे मूर्छाय नहि, वांछे पण नहि, मनमां भली पण जाणे नहि ॥ अरे जीव! ए ऋद्धि
ता जीव घणी वार पाम्यो, पामे छे, अने पामशे पण जीवने कांइ त्राण शरण नथी, एम
जाणीने दया, शील, संतोष, तप, संयम आदरीए तो अनंता मोक्षनां सुख पामीए, ए
शुक्लध्याननुं चोथु लक्षण कह्यु ४ ॥ हवे शुक्लध्याननां ४ आलंबन कहे छे ॥ खंति
१ ॥ मुत्ति २ ॥ अज्जवे ३ ॥ मद्दवे ४ ॥ तेमां खंति कहेतां क्षमा करवी ॥ क्षमा उपरांत
तप नथी माटे क्रोधनो त्याग करवो १ ॥ मुत्ति कहेतां निर्लोभपणुं आणवुं ॥ रे जीव!
लोभ ते पापनुं मूळ छे ते माटे लोभनो त्याग करवो २ ॥ अज्जवे कहेता सरलपणुं आ
णवुं माया कपटनो त्याग करवो रे जीव! कपट करतां सारी गति न पामे एम
जाणी माया न करवी ३ ॥ मद्दवे कहेतां अति उत्कर्षपणुं ते मान टाळवुं रे जीव!
मान करतां थकां विनयधर्मनो नाश करे, एम जाणी मान न करवुं ४ ॥ हवे शुक्ल

ध्याननी ४ अणुपेहा कहे ठे ॥ अवायाणुपेहा १ ॥ असुजाणुपेहा २ ॥ अणतवत्तियाणुपेहा ३ ॥ विपरिणामाणुपेहा ४ ॥ तेमां अवायाणुपेहा कहेता रे जीव! तु पांच आश्रवे करी समये समये जारे थाय ठे एवु विचारी आश्रवथी निवर्त्तवु तथा अहो जीव! रागद्वेषथी जीवने डुःख उपजे ठे अथवा रागद्वेषथी बुटीने ए जीव क्यारे मुक्ति जाशे, एवुं चिंतवे १ ॥ असुजाणुपेहा कहेतां रे जीव! काया तो अशुचिनो जंमार ठे तथा अशुचिए करीने उपनी ठे एम जाणीने अशुचि परिहरे, ए ससारनु स्वरूप एवु जाणीने जे शुज कर्मना अशुज थाय ठे अने अशुज कर्मना शुज थाय ठे तेणे करीने जीव जारे थाय ठे ते क्यारे एवा शुजाशुज कर्मथी बूटीशु एवु ध्यान चिंतविए तो परम आनद सुख पामीए २ ॥ अणतवत्तियाणुपेहा कहेतां ए जीव ता अमर ठे, अजर ठे, अखम ठे, अरूपि ठे, मरे नहि पण आयुष्य आश्री अनित्य ठे, नित्य नहि, एम जाणीने रे जीव! धर्मने विषे प्रमाद न करवो तथा जव करे ठे तेनुं अनित्यपणो चिंतवे ॥ नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देवता ए ४ गतिनु अनित्यपणु चिंतवे एवु अनित्यपणु जरत चक्रवर्त्तिए चिंतव्यु ॥ रे जीव ! एवी

चिंतवणा चिंतवीए तो परमानद, अतुल्य, निराबाध उत्कृष्टा सुख पामीए ३ ॥ विपरिणामाणुपेक्षा कहेता ए जीव तो अनादि काळनो छे अने अनादि काळथी ज ४ गति २४ दन्कने विषे परिभ्रमण करे छे पण चोर्याशी लाख जीवाजोनीथी परिभ्रमण करवुं मटयु नथी ते माटे एम जाणीने शुद्ध निर्मळ धर्म आदरीए, पाळीए, फरसीए ए रीते करीने जन्मे जरा मरण मटाडीए जेथी परमसुख पामीए तथा विपरिणामाणुपेक्षा कहेतां विविध प्रकारना सगपण करीने हु विचर्यो, एकेक जीव साथे ते ४ गति संसारमां मात पिता भाइ बहेन भार्या पुत्रपणे अनतिवार सगाइ करी तथा राजा युवराजा शेठ सेनापतिपणुं अनंति वार पाम्या तथा वैरजायपणे एकेक जीवथी तें रे जीव ! अनंति वार वैर बांध्यु तथा अनतिवार मित्रपणु एकेक जीवथी तें रे जीव ! कीधु, एवु जाणी ससारथी विरक्त यइ शुद्ध लेश्या आणीए तो परम आनद सुख आत्मा पामे ४॥ ए १६ भेदे शुक्ल ध्यान थयुं विशेष विस्तार ठाणांग उववाइ सूत्रनी वृत्तिथी जाणवो ॥ इति चतुर्थ शुक्ल ध्यानाधिकारः ४॥

इति ४ ध्यानना बोल सपूर्ण ॥

देशवध सर्वबधना बोल ॥

प्रथम १२ ठेकाणे उदारिक शरीर लाजे ॥ समुच्चय उदारिक शरीर १ ॥ समुच्चय एकेंद्रिय २ ॥ ५ स्थावर ७ ॥ ३ विगलेंद्रिय १० ॥ तिर्यंच ११ ॥ मनुष्य १२ ॥ समुच्चय उदारिक उदारिकना सर्वबंधपणे रहेता जघ० उत्० १ समय, अने उदारिकना देशबधपणे रहेतो ज० १ समय, ते केम ? वायु तिर्यंच मनुष्य उदारिकना धणीए वैक्रेय कर्यु होय अने उदारिक प्रवेश काले प्रथम समय सर्वबध करीने वळी उदारिकना देशबधमां आवीने एक समय रहीने मरे ते माटे ज० १ समय, उत्० ३ पल्यमां १ समय उणानी स्थिति १॥ समुच्चय एकेंद्रियना सर्वबधनी स्थिति ज० उ० १ समयनी, देशबधनी ज० १ समय, उत्० २२ हजार वर्षमां १ समय उणानी २॥ पृथ्वी पाणी तेउ वनस्पति, ३ विगलेंद्रिय ए ७ ना सर्वबधनी स्थिति ज० उ० १ समयनी, देशबधनी ज० १ खुल्लक भवमां ३ समय उणानी, उत्० पोतपोताना आयुष्यमांथी १ समय उणानी ए ॥ वाउकायना सर्वबधनी स्थिति

ज० उ० १ समयनी, देशबंधनी ज० १ समयनी, वाउकाय वैक्रेय करीने देशबंधमां आवी १ समय रहीने मरे माटे, उत्० ३ हजार वर्षमा १ समय उणानी १० ॥ तिर्यंच मनुष्यना सर्वबंधनी स्थिति ज० उ० १ समयनी, देशबंधनी ज० १ समयनी ते वाउकायवत्, उत्० ३ पल्यमा १ समय उणानी १२ ॥ इति स्थितिद्वार ॥ हवे अंतरद्वार कहे छे ॥ समुच्चय उदारिकना सर्वबंधनु आंतरु ज० खुल्लकभव ३ समय उणानु उत्० ३३ सागर पूर्वकोडि ने १ समय अधिकनु, ते बे समय वाटना छे ते पूर्वकोडिमां १ समय उणो छे तेमा घालीए पटले १ समय वध्यो ॥ देशबंधनुं आंतरु ज० १ समयनुं, उत्० ३३ सागर ने ३ समय अधिकनु, ते १ समय सर्वबंधनो ने २ समय वाटना एम ३ समय अधिक जाणवा १ ॥ समुच्चय एकेंद्रियना सर्वबंधनु आंतरु ज० खुल्लाग भव ३ समय उणानु, ते केम ? २ समय वाटना ने १ समय सर्वबंधनो एम ३ समय, उत्० २२ हजार वर्ष ने १ समय अधिकनु, देशबंधनुं आंतरु ज० १ समयनु, ते सर्वबंधनु टल्यु, उत्० अंतर्मुहूर्त्तनु ते केम ? उदारिक वाउकाय वैक्रेय करीने अंतर्मुहूर्त्त

रहीने वळी उदारिकनो सर्वबंध करीने देशबंध थाये ते कारणे २ ॥ पृथ्वी पाणी तेउ वनस्पति, ३ विगलेंद्रिय ए ७ ना सर्वबंधनुं आंतरुं ज० खुल्लाग भव ३ समय उणानुं, उत्० पोतपोताना आयुष्य उपर १ समय अधिकनु ॥ देशबंधनु ज० १ समयनु, उत्० ३ समयनु ते २ समय वाटनाने १ समय सर्वबंधनो एव ३ समयनु ए ॥ वायराना सर्व बंधनुं आंतरु ज० खुल्लागभव ३ समय उणानु, उत्० ३ हजार वर्षने १ समय अधिकनु ॥ देशबंधनुं ज० १ समयनुं, उत्० अंतर्मुहूर्त्तनुं १० ॥ तिर्यंच मनुष्यना सर्वबंधनुं आंतरु ज० खुल्लागभव ३ समय उणानु, उत्० पूर्व क्रोडिने १ समय अधिकनु ॥ देशबंधनु आंतरु ज० १ समयनु, उत्० अंतर्मुहूर्त्तनु ११ ॥ ए पोतपोतानी जाति मांहि आंतरु पक्के छे ॥ हवे विशेषांतर द्वार कहे छे ॥ एकेंद्रिय मरीने नोएकेंद्रिय थाय वळी नोएकेंद्रिय मरीने एकें द्रिय थाय तेना सर्वबंधनु आंतरु ज० २ खुल्लागभव ३ समय उणानु, उत्० बे हजार सागर झाझेरानु ॥ देशबंधनु आंतरुं ज० खुल्लागभव १ समय अधिकनु, उत्० बे हजार सागर झाझेरानु ॥ पृथ्वी पाणी तेउ वाउ, ३ विगलेंद्रिय तिर्यंच मनुष्य ए ए मरीने अनेरे

ठमे जाय, जईने पाठा आपणे ठमे आवे ॥ ए ए ना सर्ववधनुं ज० २ खुमागजव ३ समय ठणानु, ठत्० वनस्पति कालनु, देशवधनुं ज० खुदागजव १ समय अधिकनु, ठत्० वनस्पति कालनु ॥ वनस्पति मरीने नोवनस्पति थाय, वळी नोवनस्पति मरीने वनस्पति थाय तेना सर्वंधनुं ज० खुमागजव ३ समय ठणानु, ठत्० पुढवीकालनु ॥ देशवधनु आंतरु ज० खुमागजव १ समय अधिकनुं, ठत्० पुढवीकालनुं ॥ हवे अल्प बहुत्वद्वार कहे ठे ॥ सर्वथी थोमा ठदारिकना सर्वधधक, ते पहेला समयना ठे माटे १ ॥ तेथी ठदारिकना अयधक विसेसाहिया २ ॥ तेथी ठदारिकना देशवधक असंख्यातगुणा ३ ॥ इति ठदारिकना सर्वबंध देशबंधनु स्वरूप संपूर्ण ॥ अथ वैक्रेयना सर्वबंध देशवधनु स्वरूप कहे ठे ॥ समुच्चय वैक्रेयना सर्ववधनी स्थिति ज० १ समयनी, ठ० २ समयनी ते केम ? कोइ मनुष्य तथा तिर्यंचे वैक्रेय मांमधु ॥ वैक्रेयनो पहेलो समय सर्ववधनो करीने तेज समये मरे, मरीने देवता तथा नारकीमां विग्रहगति विना ठपजे तेवारे बीजे समये सर्वबंध करे ए रीते २ समय जाणवा ॥ देशवधनी ज० १ समयनी, ठत्० ३३ सागरमां १ समय ठणानी ॥ एकेंद्रिय

वाउकाय १ तिर्यंच २ मनुष्य ३ ए ३ ना सर्वबंधनी ज० उ० १ समयनी ॥ देशबंधनी ज० १ समयनी, उ० अंतर्मुहूर्तनी ॥ नारकी देवताना सर्वबंधनो ज० उ० १ समयनी ॥ देशबंधनी ज० दश हजार वर्षमां ३ समय उणानी, उ० ३३ सागरमा १ समय उणानी ॥ हवे अंतरद्वार कहे छे ॥ समुच्चय वैक्रियना सर्वबंधनुं आंतरु ज० १ समयनु, उत्० वनस्पति कालनु ॥ देशबंधनुं आंतरु ज० १ समयनु, उत्० वनस्पति कालनु ॥ वाउकाय तिर्यंच मनुष्यना वैक्रिय शरीरना सर्वबंधनु आंतरु ज० अंतर्मुहूर्त्तनुं, वाउकायनुं उ० पल्योपमना असंख्यातमा भागनु आंतरु, तिर्यंच मनुष्यनुं उ० प्रत्येक पूर्व क्रोडनु ॥ एम देशबंधनु पण अंतर जाणवु ॥ ए पोतपोतानी जातिमा आंतरु पडे ॥ हवे विशेषांतर द्वार कहे छे॥ एकेंद्रिय मरीने नोएकेंद्रिय थाय वळी नोएकेंद्रिय मरीने एकेंद्रिय थाय तेना सर्वबंधनु आंतरुं ज० अंतर्मुहूर्त्तनु, उत्० अनंतकालनु ॥ देशबंधनु आंतरु पण एमज जाणवु ॥ वाउकाय १ तिर्यंच २ मनुष्य ३ ए ३ ना सर्वबंध देशबंधनुं आंतरु ज० अंतर्मुहूर्त्तनु, उ० वनस्पतिकालनु ॥ नारकी देवताना सर्वबंधनु आंतरुं ज० १० हजार वर्ष ने अंतर्मुहूर्त्त अधिकनु, उ० वनस्पति कालनुं ॥ देशबंधनुं आंतरु पण एमज ॥ ७ नारकी, १० भवनपति, १६ वाणव्यंतर,

ज्योतिषी, वैमानिक ए १ विलोगढ सुधी वैक्रेयना सर्वबंधनुं आंतरु पोतपोतानी स्थिति उपरे अंतर्मुहूर्त्त अधिकनु, उ० अनंतकालनुं ॥ देशबंधनुं आंतरुं ज० अंतर्मुहूर्त्तनु, उ० वनस्पति कालनुं ॥ नवमा देवलोकथी नव ग्रैवेयक सुधीना सर्वबंधनु आंतरुं ज० पोतपोताना आउखा उपर पृथक् वर्ष अधिकनुं, उ० अनंतकालनुं ॥ देशबंधनुं आंतरु ज० पृथक् वर्षनु, उ० अनंतकालनु ॥ चार अनुत्तर विमानना सर्वबंधनुं आंतरुं ज० ३१ सागरने पृथक् वर्ष अधिकनु, उ० संख्यात २ सागरनुं ॥ देशबंधनु आंतरु ज० पृथक् वर्षनुं, उ० संख्यात सागरनुं ॥ सर्वार्थसिद्धना सर्वबंध ने देशबंधनुं आंतरु नथी ॥ हवे अल्पबहुत्वद्वार कहे छे ॥ सर्वथी थोडा वैक्रेय शरीरना सर्वबंधक १ ॥ तेथी देशबंधक असंख्यात गुणा २ ॥ तेथी अबंधक अनंतगुणा ३ ॥२॥ इति वैक्रेयना देशबंध सर्वबंधनु स्वरूप संपूर्ण ॥ हवे आहारकना देशबंध सर्वबंधनु स्वरूप कहे छे ॥ आहारकना सर्व बंधनी स्थिति ज० उ० १ समयनी, देशबंधकनी स्थिति ज० उ० अंतर्मुहूर्त्तनी ॥ आहारकना सर्वबंधनु आंतरु ज० अंतर्मुहूर्त्तनुं, उ० अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन देशे उणानुं ॥ हवे अल्पबहुत्वद्वार कहे छे ॥ सर्वथी थोडा आहारकना सर्वबंधक १ ॥ तेथी देशबंधक संख्यातगुणा २ ॥ तेथी अबंधक अनंत

गुणा ३ ॥ ३ ॥ हवे तैजस् कार्मणनु स्वरूप कहे छे ॥ तेजस् कार्मणना सर्वबंध नहि ॥ देशबंधना ४ भेद ॥ आदि नहि अंत नहि ते अभव्य १ ॥ आदि नहि अंत छे ते भव्य २ ॥ हवे एनुं अल्पबहुत्व कहे छे ॥ सर्वथी थोडा अभव्य १ ॥ तेथी भव्य अनंत गुणा २ ॥ सर्वथी थोडा तेजस् कार्मणना अबंधक १ ॥ तेथी देशबंधक अनंतगुणा २ ॥ ५ ॥ हवे ११ बोलनु अल्पबहुत्व कहे छे ॥ सर्वथी थोडा आहारकना सर्वबंधक १ ॥ तेथी आहारकना देशबंधक संख्यातगुणा २ ॥ तेथी वैक्रेय शरीरना सर्वबंधक असंख्यात गुणा ३ ॥ तथी वैक्रयना देशबंधक असंख्यातगुणा ४ ॥ तेथी तेजस् कार्मणना अबंधक अनंतगुणा ५ ॥ तेथी उदारिकना सर्वबंधक अनंतगुणा ६ ॥ तेथी उदारिकना अबंधक विसेसाहिया ७ ॥ तेथी उदारिकना देशबंधक असंख्यातगुणा ८ ॥ तेथी तेजस् कार्मणना देशबंधक विसेसाहिया ९ ॥ तेथी वैक्रेयना अबंधक विसेसाहिया १० ॥ तेथी आहारकना अबंधक विसेसाहिया ११ ॥

इति देशबंध सर्वबंधना बोल संपूर्ण ॥

सख्याता असख्याताना वोल ॥

अनुयोगद्वार सूत्र मध्ये सख्याता असख्याता अनताना २० नेद कह्या छे तेनो विस्तार किंचित् मात्र लिख्यते ॥ सख्याताना ३ नेद ॥ जघन्य सख्यातो १ ॥ मध्यम सख्यातो २ ॥ उत्कृष्ट सख्यातो ३ ॥ ए ३ नेद ॥ असख्याताना नव नेद ॥ जघन्य परित असख्यातो १ ॥ मध्यम परित असख्यातो २ ॥ उत्कृष्ट परित असख्यातो ३ ॥ जघन्य जुत्त असख्यातो ४ ॥ मध्यम जुत्त असख्यातो ५ ॥ उत्कृष्ट जुत्त असख्यातो ६ ॥ जघन्य असख्यातो असख्यातो ७ ॥ मध्यम असख्यातो असख्यातो ८ ॥ उत्कृष्ट असख्यातो असंख्यातो ए ॥ ए ए नेद ॥ अनताना ८ नेद ॥ जघन्य परित अनतो १ ॥ मध्यम परित अनतो २ ॥ उत्कृष्ट परित अनंतो ३ ॥ जघन्य जुत्त अनतो ४ ॥ मध्यम जुत्त अनतो ५ ॥ उत्कृष्ट जुत्त अनतो ६ ॥ जघन्य अनतो अनतो ७ ॥ मध्यम अनंतो अनतो ८ ॥ ए ८ नेद ॥ सख्याताना ३ नेद, असंख्याताना ए नेद, अनंतताना ८ नेद ॥ ए सर्व मळी २०

भेद नामथी कह्या ॥ हवे विस्तारे वीस भेद तो अर्थ समजणपूर्वक कहे छे ॥ जघन्य संख्यातो ते बे १ ॥ मध्यम संख्यातो ते त्रणथी मांडीने उत्कृष्टा संख्याता मांहेथी १ ओछो तेटला सुधी मध्यम संख्यातो कहे।ए, एना संख्यातो रूप थाय २ ॥ उत्कृष्टो संख्यातो कहे छे ॥ जंबूद्वीप प्रमाणे पालो कल्पी सरसवने दाणे सग सुधी भरीने पछी १ दाणो द्वीप अने एक दाणो समुद्रे मुकता मुकतां सर्व पालाना कण खुटी जाय, पछी जे द्वीपसमुद्रे छेल्लो दाणो आव्यो तेवडो मोटो बीजो पालो कल्पवो ते सरसवने दाणे भरीन वळी एक दाणा द्वीपसमुद्रे मुकतां जे द्वीपसमुद्र सुधी छेल्ला दाणो पहोंचे तेवडो मोटो त्रीजो पालो कल्पवो ॥ एवा पाला केटला कल्पवा ? उत्तर–असंख्याता कहेता गण्या न जाय एटला पाला १ए अंकथी अधिक शिखा सहित सरसव करी भरवा ॥ पूरपूरा शिखा सुधी जेटला पालाना कण तेटलो उत्कृष्टो संख्यातो जाणवो ए ३ भेद संख्याताना कह्या ॥ हवे असंख्याताना ए भेद कहे छे ॥ जे उत्कृष्टो संख्यातो ते उपर एक दाणो अधिक मुकीए त्यारे जघन्य परित अ संख्यातो थाय,ते उपरांत ज्यांसुधी उत्कृष्टा परित असं

ख्यातामांथी १ ओछो तेने मध्यम परित असख्यातो कहीए २॥ हवे उत्कृष्टो परित असंख्यातो ते केम थाय ? उत्तर–जघन्य परित असंख्याताना रूप जेटलां थयां छ तेटली जघन्य परित असख्यातनी राशी मांडीए, तें राशी मांडीने पछी मांहोमांहे राशी सघाते अभ्यास कीजे ॥ ते गुणा करीए ते केम ? असत्कल्पनाये ५ नी राशी मांडीए, तेने वारवार गणतां

५	२५
५	१२५
५	६२५
५	३१२५

पांच पंचा २५ ॥ २५ पचा १२५ ॥ १२५ पचा ६२५ ॥ ६२५ पचा ३१२५ थाय तेम जघन्य परित असख्यातने जघन्य परित असख्यातगुणा करीए तेटलां रूप थाय तेमांथी एक रूप उणुं करीए, एटले उत्कृष्टो परित असख्यातो थाय ३ ॥ हवे उत्कृष्टो परित असख्यातो कह्यो तेमां १ दाणो नांखीए, एटले जघन्य जुत्त असंख्यातो थाय, एक आवलिकाना समय तेटला जाणवा ४ ॥ ते उपरांत ज्यां सुधी उत्कृष्टा जुत्त असख्यातानो छठो भेद छे तेमां १ रूप ओछु त्यांसुधी सर्व मध्यम जुत्त असख्यातो पांचमो भेद कहीए ५ ॥ हवे उत्कृष्टो जुत्त असख्यातो केम थाय ? उत्तर–जघन्य जुत्त असख्यातो चोथे भेदे आवलिकाना समय कह्या, तेने मांहोमांहि गुणां करतां जेटला रूप थाय तेमां १ रूप ओछुं करीए

त्यारे उत्कृष्टो जुत्त असंख्यातो कहीए ॥ ए छठो भेद ६ ॥ हवे उत्कृष्टो जुत्त असंख्यातो कह्यो तेमां १ रूप प्रक्षेपीए एटले सातमो भेद जघन्य असंख्यातो असंख्यातो थाय ७ ॥ ते उपरांत ज्यांसुधी उत्कृष्टो असंख्यातो असंख्यातामां १ रूप ओछुं तेने मध्यम असंख्यातो असंख्यातो कहीए॥ ए आठमो भेद ८ ॥ हवे उत्कृष्टो असंख्यातो असंख्यातो केम थाय ? उत्तर–जघन्य असंख्यातो असंख्यातो सातमो भेद छे तेने मांहोमांहि गुणा करतां जेटलां रूप थाय तेमां १ रूप ओछु करीए, त्यारे उत्कृष्टो असंख्यातो असंख्यातो थाय ए ॥ ए ए भेद असंख्याताना कह्या ॥ हवे अनंताना ८ भेद कहे छे ॥ जे उत्कृष्टो असंख्यातो असंख्यातो कह्यो, ते उपर १ रूप अधिक करीए, त्यारे जघन्य परित अनंतो थाय १ ॥ ते उपरांत ज्यांसुधी उत्कृष्ट परित अनंतामांहि १ ओछो तेने मध्यम परित अनंतो कहीए २ ॥ हवे उत्कृष्टो परित अनंतो केम थाय ? उत्तर–जघन्य परित अनंतो पहेलो भेद कह्यो, तेने मांहोमांहि गुणा करतां जेटलां रूप थाय ते मध्ये १ रूप ओछु करीए, त्यारे उत्कृष्टो परित अनंतो थाय ३ ॥ हवे जघन्य परित अनंतो

कहे छे ॥ तेने माहोमांहि गुणा करता जेटला रूप थाय तेने जघन्य जुत्त अनतो चोथो नद कहीए तेटला अजव्यसिद्धिया जीव जाणवा ४ ॥ ते उपरांत ज्यांसुधी उत्कृष्टो जुत्त अनतामांहि १ रूप ओछु तेने मध्यम जुत्त अनतो कहीए ५ ॥ हवे उत्कृष्टो जुत्त अनतो केम थाय ? उत्तर–जघन्य जुत्त अनते अजव्य जीव कह्या तेने मांहोमांहि गुणा करता जेटलां रूप थाय तेमा १ रूप ओछु करीए, त्यारे उत्कृष्टो जुत्त अनतो थाय ६ ॥ हवे उत्कृष्टो जुत्त अनतो कह्यो ते मध्ये १ रूप प्रक्षेपिए, त्यारे जघन्य अनंतानतो थाय ७ ॥ पछी सातमा अनता उपरे जेटला रूप मुकीए, ते सर्व आठमा अनता मध्ये जाणवां ॥ ते मध्यम अनतानतो जाणवो ॥ ८ ॥ नवमो अनतो नथी ॥ प्रकरण मध्ये नवमो अनंतो कहेल छे पण सूत्र मते नथी ॥

इति सख्याता असख्याता अनतानो बोल सपूर्ण ॥

पांच शरीरना बोल ॥

अथ पन्नवणा सूत्रना पद २१ थी १६ द्वारे ५ शरीरना बोल लिख्यते ॥

गाहा—नाम १ अथ २ सठाण ३ सामी ४,
उग्गाहणा ५ पुग्गलच्चयण ६ सजोयणा ७ ॥
दव्व ८ पएस ९ दव्वपएसठयाए १०,
सुहुम वायर ११ उग्गाहणा अप्पाबहु १२ ॥ १ ॥
पओयण १३ विसय १४ ठिइ १५,
अतर १६ सोलस दारा इमे ॥
पण सरीरोवरि एए,
उत्तारेयव्वा निउण बुद्धिहिं ॥ २ ॥

ए १६ द्वार ॥ तेमां प्रथम नामद्वार कहे छे ॥ उदारिक शरीर १ ॥ वैक्रेय शरीर २ ॥

आहारक शरीर ३ ॥ तैजस् शरीर ४ ॥ कार्मण शरीर ५ ॥ १ ॥ हवे बीजु अर्थद्वार कहे छे ॥ उदारिक कहेतां प्रधान सर्व शरीरथी ॥ तीर्थंकर गणधरादिकनुं शरीर तथा मुक्ति जाताना स्वजाव तथा उदारिक कहेतां मोटुं सहस्र योजनमान, जवधारणीक तेने उदारिक शरीर कहीए ॥ १ ॥ वैक्रेय शरीर ते केने कहीए ? रूप परावर्त्तन करवानी शक्ति तथा एक अनेक नाना मोटा खेचर जुचर दृश्य अदृश्य इत्यादिक विविध क्रियाए नवा रूप बनावे तेने वैक्रेय शरीर कहीए ॥ ते बे प्रकारे छे ॥ जवप्रत्ययिक १ ॥ लब्धिप्रत्ययिक २ ॥ जवप्रत्ययिक नारकी देवताने होय १, लब्धिप्रत्ययिक मनुष्य तिर्यंचने होय २ ॥ २ ॥ आहारक शरीर ते केने कहीए ? चौद पूर्वधारी साधु, तीर्थंकर महाराजनी ऋद्धि देखवा जणी तथा संशय टाळवा निमित्त उत्तम पुद्गलो ग्रहीने ज० मुंढा हाथनुं, उ० १ हाथनु शरीर करे तेने आहारक शरीर कहीए ॥ ते स्फटिकनी परे अति निर्मळ, कोइ न देखे एवु होय ३ ॥ तैजस् शरीर ते तेजना पुद्गले निष्पन्न तेने तैजस् शरीर कहीए ॥ अदृश्य जुत आहारने पचावे तथा लब्धिवंत तेजुलेश्या मुके तेने तैजस् शरीर कहीए ४ ॥

कार्मण शरीर ते केने कहीए ? कर्म पुद्गलथी निपज्यु तेने कार्मण शरीर कहीए ॥ जेना उदयथी जीव पुद्गल ग्रहीने ते कर्मादिरूपपणे परिणमावे तथा आहारने खेंचे तेने कार्मण शरीर कहीए ५॥ १ ॥ हवे त्रीजु संघयणद्वार कहे छे ॥ उदारिक शरीरमा संठाण ६ ॥ १ ॥ वैक्रेय शरीरमां देवताने संठाण एक समचउरस ॥ नारकीमां संठाण एक हुंड ॥ मनुष्य तिर्यंचमां वैक्रेय करतां समचउरस तथा नाना प्रकारनु ॥ वायुकायनां वैक्रेयमा एक हुंड ॥२॥ आहारक शरीरमां संठाण १ समचउरस ॥ ३ ॥ तैजस् कार्मणमां ६ संठाण लाभे ॥४-५॥३॥ चोथु स्वामीद्वार कहे छे॥ उदारिक शरीरना स्वामी मनुष्य तिर्यंच १ ॥ वैक्रेय शरीरना स्वामी देवता नारकी तथा लब्धिप्रत्ययिक मनुष्य तिर्यंच २ ॥ आहारक शरीरना स्वामी चउद पूर्वी साधु ३ ॥ तैजस् कार्मण शरीरना स्वामी सर्व संसारी जीव ४ ॥ ५ ॥ ४ ॥ हवे पांचमु अवगाहनाद्वार कहे छे ॥ उदारिक शरीरनी अवगाहना जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उत्कृष्टि हजार जोजन झाझेरी १ ॥ वैक्रेय शरीरनी अवगाहना भवप्रत्ययिक जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उ० ५०० धनुष्यनी ॥ लब्धि

प्रत्यधिकनी ज० अंगुलनो सख्यातमो भाग, उ० लाख जोजन जाजेरी ॥ ४ ॥ आहारक शरीरनी अवगाहना ज० मुंडा हाथनी, उ० एक हाथनी ६ ॥ तैजस कार्मणनी अवगाहना ज० अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उ० चउद राजलोक प्रमाणे ४–५ ॥ ५ ॥ हवे छठु पुद्गलचयणद्वार कहे छे ॥ उदारिक १ ॥ तैजस् २ ॥ कार्मण ३ ॥ ए ३ शरीर त्रण चार पांच छ दिशिनो आहार ले ॥ वैक्रेय आहारक ए बे छए दिशिनो आहार ले ५ ॥ ६ ॥ हवे सातमु संयोजनाद्वार कहे छे ॥ उदारिक शरीरमा वैक्रेयने आहारकनी भजना ॥ तैजस् कार्मणनी नियमा १ ॥ वैक्रेयमा उदारिकनी भजना ॥ आहारक नथी ॥ तैजस् कार्मणनी नियमा २ ॥ आहारक शरीरमा उदारिकनी नियमा ॥ वैक्रेय नथी ॥ तैजस् कार्मणनी नियमा ३ ॥ तैजस् शरीरमां उदारिक वैक्रेय आहारकनी भजना ॥ कार्मणनी नियमा ॥ ४ ॥ कार्मण शरीरमां उदारिक वैक्रेय आहारकनी भजना ॥ तैजस्नी नियमा ४–५ ॥ ७ ॥ हवे आठमुं दव्वठयाए द्वार कहे छे ॥ सर्वथी थोडा आहारकना दव्वठया ते जघन्य १,२,३ ॥ उत्कृष्टा पृथक् हजार ॥ १ ॥ तेथी वैक्रेयना दव्वठया असंख्यातगुणा २ ॥ तेथी उदारिकना दव्वठया असंख्यातगुणा

३॥ तेथी तेजस् कार्मण दव्वठयाए दो वितुल्ला ने उदारिकथी अनंतगुणा अधिक ४॥८॥ हवे नवमु पएसठयाए द्वार कहे छे॥ सर्वथी थोडा आहारकना प्रदेश १॥ तेथी वैक्रेयना प्रदेश असंख्यातगुणा २॥ तेथी उदारिकना प्रदेश असंख्यातगुणा ३॥ तेथी तेजस्ना प्रदेश अनंतगुणा ४॥ तेथी कार्मणना प्रदेश अनंतगुणा ५ ॥९॥ दशमु दव्वपएसठयाए द्वार कहे छे॥ सर्वथी थोडा आहारकना दव्वठया १॥ तेथी वैक्रेयना दव्वठया असंख्यातगुणा २॥ तेथी उदारिकना दव्वठया असंख्यातगुणा ३॥ तेथी आहारकना पएसठया असंख्यातगुणा ४॥ तेथी वैक्रेयना पएसठया असंख्यातगुणा ५ ॥ तेथी उदारिकना पएसठया असंख्यातगुणा ६ ॥ तेथी तेजस् कार्मण दो त्रितुल्ला ने दव्वठया अनंतगुणा ७-८॥ तेथी तेजस्ना पएसठया अनंतगुणा ९॥ तेथी कार्मणना पएसठया अनंतगुणा १० ॥१०॥ अग्यारमु सूक्ष्म बादर द्वार कहे छे॥ सर्वथी थोडा बादर पुद्गल उदारिकना १॥ तेथी वैक्रेयनां पुद्गल सूक्ष्म २॥ तेथी आहारकनां पुद्गल सूक्ष्म ३॥ तेथी तेजस्ना पुद्गल सूक्ष्म ४॥ तेथी कार्मणना पुद्गल सूक्ष्म ५ ॥ ११॥ हवे बारमु अवगाहनानो अल्पाबहुत्व

द्वार कहे छे ॥ सर्वथी थोमी उदारिकनी जघन्य अवगाहना १ ॥ तेथी तेजस् कार्मणनो माह्रोमाह्रि तुल्य ने जघन्य अवगाहनां विसेसाहिया ३ ॥ तेथी वैक्रेयनो जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी ४ ॥ तेथी आहारकनी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी ५ ॥ तेथी आहारकनी उत्कृष्टी अवगाहना विसेसाहिया ६ ॥ तेथी उदारिकनी उत्कृष्टी अवगाहना संख्यातगुणी ७ ॥ तेथी वैक्रेयनी उत्कृष्टी अवगाहना संख्यातगुणी ८ ॥ तेथी तेजस् कार्मणनी माह्रोमाह्रि तुल्य ने उत्० अवगाहना असंख्यातगुणी १० ॥ १२ ॥ हवे तरमुं प्रयोजनद्वार कहे छे ॥ उदारिकनु प्रयोजन मुक्ति जावानु १ ॥ वैक्रेयनु प्रयोजन अनेक रूप करवानुं २ ॥ आहारकनु प्रयोजन संशय टाळवानुं ३ ॥ तेजस्नु प्रयोजन आहार पचाववानु ४ ॥ कार्मणनु प्रयोजन आहार खेंचवानु अने आठ कर्म ग्रहण करीने ६ , परिभ्रमण करवानु ५ ॥ १३ ॥ चउदमु विषयद्वार कहे छे ॥ उदारिकनो विषय पन्नरमा रुचक द्वीपताई १ ॥ वैक्रेयनो विषय असंख्याता द्वीप समुद्रताई २ ॥ आहारकनो विषय अढी द्वीपताई ३ ॥ तेजस् कार्मणनो विषय सर्व लोकमां जवानो

४–५ ॥ १४ ॥ पंदरमु स्थितिद्वार कहे छे ॥ उदारिकनी स्थिति जघन्य अतर्मुहूर्त्तनी, उत्कृष्ट ३ पल्योपमनी १ ॥ वैक्रेयनी जघन्य अतर्मुहूर्त्तनी, उत्कृष्ट ३३ सागरनी २ ॥ आहारकनी ज० उ० अतर्मुहूर्त्तनी ३ ॥ तेजस कार्मणनी स्थिति बे प्रकारनी ॥ अणाइया अपज्जवसीया ते अभव्य आश्री आदि नथी ने अंत पण नथी अने अणाइया सपज्जवसीया ते भव्य आश्री आदि नथी ने अंत छे ॥ १५ ॥ हवे सोलमु अंतरद्वार कहे छे ॥ उदारिकनु आंतरु पडे तो जघन्य अतर्मुहूर्त्तनु, उत्० तेत्रीस सागरोपमनु १ ॥ वैक्रेय शरीरनु आंतरु पडे तो ज० अतर्मुहूर्त्तनु, उत्० अनंतो काल यावत् वणस्सईकालो २ ॥ आहारकनु आंतरु पडे तो ज० अतर्मुहूर्त्तनु, उत्० अर्द्ध पुद्गल परावर्तन देशे उणानु ३ ॥ तेजस कार्मणनु आंतरु नथी ४–५ ॥ तथा अंतर बीजा प्रकारे ॥ आहारिक शरीर वर्जि ४ शरीर लोकमा सदा लाभे पण तेनु अंतर पडतु नथी, अने आहारिक शरीरनु अंतर पडे तो उत्कृष्ट ६ मासनु अंतर पडे ॥ १६ ॥

इति पांच शरीरना बोल संपूर्ण ॥

पाच इंद्रिय ॥

अथ श्री पन्नवणा सूत्रना पदरमा पदना पहेला उद्देशाथी पांच इन्द्रियना बोल लिख्यते ॥

गाथा ॥ नाम १ संठाण २ बाहल्ल ३, पुहुत्त ४ कइपएस ५ उगाढे ६ ॥

अप्पाबहु ७ पुट्ठ ८ पविट्ठ ९, विसय १० अणागार ११ आहारे १२ ॥ १ ॥

हवे प्रथम नाम द्वार कहे छे ॥ १ श्रोत्रेंद्रिय, २ चक्षुइंद्रिय, ३ घ्राणेंद्रिय, ४ रसेंद्रिय, ५ स्पर्शेंद्रिय ॥ १ ॥

हवे बीजुं संस्थान द्वार कहे छे ॥ १ श्रोत्रेंद्रियनुं संस्थान कदंब वृक्षनां फूल सरखुं, २ चक्षुइंद्रियनुं संस्थान मसूरनी दाळ अथवा अर्ध चंद्रमा सरखुं, ३ घ्राणेंद्रियनुं संस्थान अतिमुक्तक पुष्प अथवा धमण सरखुं, ४ रसेंद्रियनुं संस्थान उरपलानी धार सरखुं, ५ स्पर्शेंद्रियनुं संस्थान नाना प्रकारनुं ॥ २ ॥

हवे त्रीजुं बाहुल्यद्वार कहे छे ॥ पांचे इंद्रियनुं जाडपणुं जघन्य उत्कृष्ट आंगुलना

असंख्यातमा जागनु ॥ ३ ॥

हवे चोथु पृथक्त्वद्वार कहे छे ॥ श्रोत्र, १ चक्षु ने २ घ्राण ए त्रण इन्द्रियनुं लांबपणु जघन्य उत्कृष्ट आंगुलना असंख्यातमा जागनु, ३ रसेंद्रियनु लांबपणु जघन्य आंगुलना असंख्यातमा जागनु, उत्कृष्ट पृथक् ते २ थी ए आंगुलनु ४ ॥ स्पर्शेंद्रियनुं लांबपणुं जघन्य आंगुलना असंख्यातमा जागनु, उत्कृष्ट हजार योजन जाजेरु ५ ॥ ४ ॥

हवे पांचमु प्रदेश द्वार कहे छे ॥ पांच इन्द्रियना अनंत अनंत प्रदेश छे ॥ ५ ॥

हवे छठु अवगाह द्वार कहे छे पांच इन्द्रिय छे तेमां दरेक इंद्रिय आकाशना प्रदेश असंख्यात असंख्यातने अवगाही रहेल छे ॥ दरेक इन्द्रियना अनंत अनंत कर्कश अने जारे स्पर्श छे, तेम अनंत अनंत हलका अने मृदु स्पर्श छे, ए स्थूल दृष्टिनी अपेक्षाए जाणवु ॥ ६ ॥

हवे सातमु अल्पबहुत्व द्वार कहे छे, तेमां प्रथम प्रदेशनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथी थोडा चक्षु इंद्रियना प्रदेश १ ॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियना प्रदेश संख्यातगुणा २ ॥ तेथी घ्राणें

ड्रियना प्रदेश सख्यातगुणा ३ ॥ तेथी रसेंड्रियना प्रदेश असंख्यातगुणा ४ ॥ तेथी स्पर्शें ड्रियना प्रदेश सख्यातगुणा ५ ॥

बीजो इंड्रियोनो आकाश प्रदेश अवगाह्यो रह्यानो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथी थोमा चक्षु इंड्रियना अवगाह्या आकाश प्रदेश १ ॥ तेथी श्रोत्रेंड्रियना अवगाह्या आकाश प्रदेश सख्यातगुणा २ ॥ तेथी घ्राणेंड्रियना अवगाह्या आकाश प्रदेश सख्यातगुणा ३ ॥ तेथी रसेंड्रियना अवगाह्या आकाश प्रदेश असख्यातगुणा ४ ॥ तेथी स्पर्शेंड्रियना अवगाह्या आकाश प्रदेश सख्यातगुणा ५ ॥

हवे त्रिजो इंड्रियोना प्रदेश अने आकाश प्रदेशने अवगाह्यो रह्या इंड्रियो ५ बेनो साथे अल्पबहुत्व ॥ सर्वथी थोमा चक्षु इंड्रियना अवगाह्य आकाश प्रदेश १ ॥ तेथी श्रोत्रेंड्रियना अवगाह्य सख्यातगुणा २ ॥ तेथी घ्राणेंड्रियना अवगाह्य सख्यातगुणा ३ ॥ तेथी रसेंड्रियना अवगाह्य असख्यातगुणा ४ ॥ तेथी स्पर्शेंड्रियना अवगाह्य सख्यातगुणा ५ ॥ तेथी चक्षु इंड्रियना प्रदेश अनंतगुणा ६ ॥ तेथी श्रोत्रेंड्रियना प्रदेश सख्यातगुणा ७ ॥ तेथी घ्रा

णेंद्रियना प्रदेश सख्यातगुणा ८ ॥ तेथी रसेंद्रियना प्रदेश असख्यातगुणा ए ॥ तेथी स्पर्शेंद्रियना प्रदेश सख्यातगुणा १० ॥

हवे चोथो इंद्रियोमां कर्कश ग्नारे स्पर्शनो अल्प बहुत्व ॥ सर्वथी थोमा चक्षु इंद्रियना कर्कश ग्नारे स्पर्श १ ॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियना अनतगुणा २ ॥ तेथी घ्राणेंद्रियना अनतगुणा ३ ॥ तेथी रसेंद्रियना अनतगुणा ४ ॥ तेथी स्पर्शेंद्रियना अनतगुणा ५ ॥ सर्वथी थोमा स्पर्शेंद्रियना लघुमृदु स्पर्श १ ॥ तेथी रसेंद्रियना अनत गुणा २ तेथी घ्राणेंद्रियना अनतगुणा ३ ॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियना अनतगुणा ४ ॥ तेथी चक्षु इंद्रियना अनतगुणा ५ ॥ हवे ठठो इंद्रियोमा कर्कश १ ग्नारे २ लघु ३ मृदु ४ ए चारे स्पर्शनो साथे अल्पबहुत्व ॥ सर्वथी थोमा चक्षु इंद्रियना कर्कश ग्नारे स्पर्श १ ॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियना कर्कश ग्नारे स्पर्श अनत गुणा २ ॥ तेथी घ्राणेंद्रियना अनतगुणा ३ ॥ तेथी रसेंद्रियना अनतगुणा ४ ॥ तेथी स्पर्शेंद्रियना अनतगुणा ५ ॥ तेथी स्पर्शेंद्रियना लघु मृदु स्पर्श अनतगुणा ६ ॥ तेथी रसेंद्रियना लघु स्पर्श अनतगुणा ७ ॥ तेथी घ्राणेंद्रियना लघु मृदु

स्पर्श अनंतगुणा ८ ॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियना लघु मृदु स्पर्श अनंतगुणा ॥ ९ ॥ तेथी चक्षु इंद्रियना लघु मृदु स्पर्श अनंतगुणा १० ॥ ७ ॥

हवे आठमु पृष्ट द्वार कहे छे ॥ इंद्रियोने जे पुद्गलो आवी स्पर्शे ते पुद्गलोने इंद्रियो मध्ये ते पृष्ट कहीए. पांच इंद्रियोमां चक्षु इंद्रिय विना चार इंद्रियोने पुद्गलो आवी स्पर्शे छे पण चक्षु इंद्रियने आवी स्पर्शता नथी ॥ ८ ॥

हवे नवमु प्रविष्ट द्वार कहे छे जे इंद्रियोने विषे अभिमुख (सामां) पुद्गलो आवीने प्रवेश करे तेने प्रविष्ट कहीए ॥ पांच इंद्रियमां चक्षु इंद्रिय विना चार इंद्रिय प्रविष्ट छे ने चक्षु इंद्रिय अप्रविष्ट छे ॥ ९ ॥

हवे दशमु विषयद्वार कहे छे ॥ पांचे इंद्रियोनो जघन्य विषय आंगुलना असंख्यातमा भागनो, उत्कृष्ट जुदो जुदो कहे छे ॥ एकेन्द्रियनो स्पर्शेंद्रियनो विषय ४०० धनुष्य, बेइंद्रियनो रसेंद्रियनो ६४ धनुष्य अने स्पर्शेंद्रियनो ८०० धनुष्यनो, तेइंद्रियनो घ्राणेंद्रियनो १०० धनुष्य, रसेंद्रियनो १२८ धनुष्य अने स्पर्शेंद्रियनो १६०० धनुष्यनो,

चउरिंद्रियनो चक्षुइंद्रियनो २९५४ धनुष्यनो, घ्राणेंद्रियनो २०० धनुष्यनो, रसेंद्रियनो २५६ धनुष्यनो अने स्पर्शेंद्रियनो ३२०० धनुष्यनो, असंज्ञी पचेंद्रियनो श्रोत्रेंद्रियनो १ योजनना, चक्षुइंद्रियनो ५९०८ धनुष्यनो, घ्राणेंद्रियनो ४०० धनुष्यनो, रसेंद्रियनो ५१२ धनुष्यना अने स्पर्शेंद्रियनो ६४०० धनुष्यनो, संज्ञी पचेंद्रियना श्रोत्रेंद्रियनो १२ योजननो, चक्षुइंद्रियनो १ लाख योजन झाझेरानो, घ्राणेंद्रियनो ए योजननो, रसेंद्रियनो ए योजननो, स्पर्शेंद्रियनो ए योजननो ॥ १० ॥

हवे अग्यारमु अनाकार (उपयोग) द्वार कहे छे, तेमा प्रथम जघन्य उपयोगकाळनो अल्पबहुत्व॥सर्वथी थोडो चक्षुइंद्रियना जघन्य उपयोगकाळ १॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ विशेषाधिक २ ॥ तेथी घ्राणेंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ विशेषाधिक ३ ॥ तेथी रसेंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ विशेषाधिक ४ ॥ तेथी स्पर्शेंद्रियना जघन्य उपयोगकाळ विशेषाधिक ५ ॥

हवे बीजो उत्कृष्ट उपयोगकाळना अल्पबहुत्व ॥ सर्वथी थोडो चक्षुइंद्रियना उत्कृष्ट

उपयोगकाळ १ ॥ तेथकी श्रोत्रेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेषाधिक २ ॥ तेथकी घ्राणेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेषाधिक ३ ॥ तेथकी रसेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोग काळ विशेषाधिक ४ ॥ तथकी स्पर्शेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेषाधिक ५ ॥

हवे जघन्य उत्कृष्ट बन्नेनो उपयोगकाळनो अल्पबहुत्व चेळु कहे छे सर्वथी थोडो चक्षुइंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ १ ॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ विशेषाधिक २ ॥ तेथी घ्राणेंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ विशेषाधिक ३ ॥ तेथी रसेंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ विशेषाधिक ४ ॥ तेथी स्पर्शेंद्रियनो जघन्य उपयोगकाळ विशेषाधिक ५ ॥ तेथी चक्षुइंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेषाधिक ६ ॥ तेथी श्रोत्रेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेषाधिक ७ ॥ तेथी घ्राणेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेषाधिक ८ ॥ तेथी रसेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेषाधिक ९ ॥ तेथी स्पर्शेंद्रियनो उत्कृष्ट उपयोगकाळ विशेषाधिक १० ॥ ११ ॥

हवे बारमु आकारद्वार कहे छे श्रोत्रेंद्रिय आदि पांच इंद्रियो द्रव्यथी अनंत

प्रदेशी स्कधनो आहार करे अर्थात् ग्रहण करे १ ॥ क्षेत्रथी असख्यात आकाशप्रदेशने अवगाही रहेल पुद्गलने ग्रहण करे २ ॥ कालथी एक समयथी मांडी असख्यात समयनी स्थितिवाळा पुद्गलने ग्रहण करे ३ ॥ भावथकी वर्ण गंध रस अने स्पर्शवाळा पुद्गलोने आहारपणे ग्रहण करे ४ ॥ १२ ॥

इति पांच इन्द्रियना बोल संपूर्ण ॥

पुद्गल परावर्त्तन ॥

अथ श्री भगवती शतक १२ माना उद्देशा चोथाथी पुद्गलपरावर्त्तनना बोल लिख्यते॥

गाथा—नाम १ गुण २ सखा ३ काल ४, कालोवम ५ च कालअप्पाबहु ६ ॥

पुग्गल मज्झे पुग्गल ७, पुग्गल कारणे अप्पाबहु ८ ॥ १ ॥

प्रथम नामद्वार कहे छे ॥ पुद्गल परावर्त्तनना ७ नाम ॥ उदारिक पुद्गल पराव

रीन १ ॥ वैक्रेय पु० २ ॥ तेजस् पु० ३ ॥ कार्मण पु० ४ ॥ मन पु० ५ ॥ वचन पु० ६ ॥ श्वासोश्वास पु० ७ ॥ १ ॥ हवे बीजु गुणद्वार कहे छे ॥ जे लोकमां जेटला पुद्गल छे ते सर्व उदारिक शरीरपणे लइने मुके त्यारे एक उदारिकनुं पुद्गल परावर्त्तन थाय ॥ एम ७ पुद्गल परावर्त्तन जाणवां ॥ २ ॥ हवे त्रिजुं संख्याद्वार कहे छे ॥ ते संख्याना चार बोल प्रथम बोल एक जीव आश्रि बीजो बोल घणा जीव आश्रि त्रीजो बोल एक जीव माहोमांहे आश्रि चोथो बोल घणा जीव माहोमांहे आश्रि ॥ हवे तेमां संख्यानो प्रथम बोल कहे छे ॥ जे एक वचने एक नारकीने जीवे पूर्वे उदारिक पुद्गल परावर्त्तन अनती २ वार कीधा अने आगळ कोइ करशे, कोइ नहि करशे ॥ जे करशे ते ज० १-२-३, उत्० अनता करशे ॥ एम साते कहवां ॥ एम यावत् वैमानिक देवने जीवे पूर्वे उदारिक पुद्गल परावर्त्तन अनती अनती वार कीधा अने आगळ कोइ करशे, कोइ नहि करशे ॥ जे करशे ते ज० १-२-३, उत्० अनता करशे ॥ एम साते कहेवा ॥, एम एक वचने १६८ प्रश्न थाय ॥ २ ॥ हवे संख्यानो बीजो बोल कहे छे ॥ बहुवचने

सर्व नारकीने जीवे पूर्वे उदारिक पुद्गल परावर्त्तन अनतां कीधां अने घणा नारकी आगळ अनतां करशे एम यावत् सात पुद्गल परावर्त्तन कहेवां ॥ एम यावत् सर्व वैमानिक देवने जीवे कीधां ॥ एम १६० प्रश्न थाय ॥ एवं २ सख्याना थइने ३३६ प्रश्न थाय ॥ ए सख्याना २ बोल कह्या ॥ ३ ॥ हवे सख्यानो त्रीजो बोल कहे छे ॥ एक नारकीने जीवे नारकीपणे पूर्वे उदारिक पुद्गल परावर्त्तन नथी कीधा, आगळ पण नहि करे १ ॥ अने एक नारकीने जीवे नारकीपणे पूर्वे वैक्रेय पुद्गल परावर्त्तन अनतां कीधां, आगळे कोई करशे ने कोई नहि करशे अने जे करशे ते ज० १–२–३, उत्० अनता करशे ॥ एम यावत् श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त्तन सुधी कहेवु ॥ एम यावत् एक नारकीये वैमानिक देवपणे ॥ पछी जे जे दरुके जे जे पुद्गल परावर्त्तन होय तेनो हा कहीए अने न होय तेनी ना कहीए, एम एक नारकीनो दरुक २४ दरुके उतारतां १६० प्रश्न थाय, तेम २४ दरुक २४ दरुके उतारवा ॥ एक वचने ४०३२ प्रश्न थाय ॥ ए सख्यानो त्रीजो बोल कह्यो ४ ॥ हवे सख्यानो चोथो बोल कहे छे ॥ बहु वचने सर्व नारकीये नारकीपणे पूर्वे

उदारिक पुद्गल परावर्त्तन नथी कीधां अने आगळे पण नहि कर १ ॥ अने सर्व नारकीये नारकीपणे पूर्वे वैक्रेय पुद्गल परावर्त्तन अनता कीधां अन आगळ पण घणा नारकी अनतां करशे २ ॥ एम यावत् श्वासोश्वास सुधी कहेवुं ॥ एम यावत् सर्व नारकीये वैमानिकदवपणे १६० प्रश्न थाय ॥ एम २४ दण्डके २४ दण्डक बहु वचने उतारतां ४०३२ प्रश्न थाय ॥ एम एक वचन ने बहु वचनना भेगा करता ८०६४ प्रश्न थाय ॥ ए संख्याद्वारनो चोथो बोल कह्या ॥ चारे बोलना मळीने कुल संख्या ८४०० भांगा थया ॥ हवे एनो विशेष खुलासा कहे छ ॥ सर्व जीवे उदारिक पुद्गल परावर्त्तन १० दण्डके अनती २ वार कीधां ते १० दण्डक कहे छे ॥ ५ एकेंद्रिय ॥ ३ विगलेंद्रिय ॥ तिर्यंच पचेंद्रिय ॥ मनुष्य ॥ ए १० दण्डकने विषे कीधा ॥ वैक्रेय पुद्गल परावर्त्तन १७ दंडके अनती २ वार कीधां ते १७ दण्डक कहे छे ॥ नारकी १ ॥ दश भवनपति १० ॥ वायुनो १ ॥ सन्नी तिर्यंच पचेंद्रिय प्रजालानो १ ॥ सन्नी मनुष्य प्रजालानो १ ॥ वाणव्यंतर १ ॥ ज्योतिषी १ ॥ वैमानिक १ ॥ ए १७ दण्डकने विषे कीधां ॥ तैजस् १ ॥ कार्मण २ ॥ श्वासोश्वास ३ ॥ पुद्गल परावर्त्तन २४ दंडके

अनती अनती वार कीधां ॥ मन पुद्गल परावर्त्तन सङ्गी पंचेंद्रिय प्रजाताना १६ दण्डकने विषे अनती अनतीवार कीधा ॥ वचन पुद्गल परावर्त्तन ५ एकेंद्रिय वर्जिने शेष १ए दण्डके अनंती अनतीवार कीधां ॥ ए सख्यानुं द्वार चार बोले सपूर्ण ॥ ३ ॥ हवे चोथु कालद्वार कहे छे ॥ अनंतां कालचक्र मेरुल वही जाय, त्यार एक उदारिक पुद्गल परावर्त्तन थाय ॥ एम ७ पुद्गल परावर्त्तन जाणवां ॥ ४ ॥ हवे पाचमुं कालनी उपमानुं द्वार कहे छे ॥ अनत सूक्ष्म परमाणुए एक व्यवहार परमाणु नीपज १ ॥ अनत व्यवहार परमाणुए एक उसनसनियो नीपजे २ ॥ आठ उसनसनिये एक सन्हसनीयो नीपजे ३ ॥ आठ सन्ह-सनिये एक उर्ध्वरेणु नीपजे ४ ॥ आठ उर्ध्वरेणुए एक त्रसरेणु नीपजे ५ ॥ आठ त्रसरेणुए एक रथरेणु नीपजे ६ ॥ आठ रथरेणुए एक देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्रना मनुष्यनो वालाग्र नीपजे ७ ॥ आठ वालाग्रे एक हरिवास रम्यक्वास क्षेत्रना मनुष्यनो वालाग्र नीपजे ८ ॥ आठ वालाग्रे हेमवय एरणवय क्षेत्रना मनुष्यनो वालाग्र नीपजे ए ॥ आठ वालाग्रे पूर्व पश्चिम महाविदेहना मनुष्यनो वालाग्र नीपजे १० ॥ ८ वालाग्रे १ लिख नीपजे ॥ तेवी ८

लीख १ जु नीपजे ॥ ८ जुए १ जव मध्य भाग नीपजे ॥ ८ जव मध्य भागे १ उच्छित अंगुल निपजे ॥ ६ उच्छित अंगुले १ पगनुं पहोळपणु निपजे ॥ बे पगे १ विहस्थ निपजे ॥ बे विहस्थे एक हाथ निपजे ॥ बे हाथे एक कुक्षि निपजे ॥ बे कुक्षिए १ धनुष निपजे ॥ बे हजार धनुषे १ गाउ निपजे ॥ चार गाउए १ जोजन निपजे ॥ तेवो १ जोजने प्रमाण लांबो पहोळो उन्डो कुवो कल्पीए, पछी १ वालाग्रना असंख्याता खंड कल्पीने करीए, तेवे वालाग्रे कुवो ठांसी ठांसीने भरीए ॥ पछी ते उपर चक्रवर्त्यादिकनुं कटक चाल्युं जाय, तोपण ते वालाग्र नमे नहि तथा गंगा नदीनो प्रवाह उपरथी चाले तो एक रज पण तणाय नहि तथा अग्निने दवे पण न बळे ॥ एवो कुवो ठांसीने भरीए पछी ते कुवामांथी सो सो वर्षे एक एक वालाग्र काढीए ॥ ते वर्षनुं संख्या तथा मान कहे छे ॥ जे असंख्याता समय वहि जाय त्यारे १ आवलिका थाय ॥ संख्याति आवलिकाये १ उश्वास थाय ॥ तेम संख्याति आवलिकाए १ निश्वास थाय ॥ १ उश्वास १ निश्वास भेगा थइने एक प्राण थाय ॥ सात प्राणे १ स्तोक थाय ॥ सात स्तोके १ लव थाय ॥

७७ लवे एक मुहूर्त्त थाय ॥ ३७७३ श्वासोश्वासे १ मुहूर्त्त थाय ॥ ३० मुहूर्त्ते १ अहोरात्र थाय ॥ १५ अहोरात्रे १ पक्ष थाय ॥ बे पक्षे १ मास थाय ॥ बे मासे १ ऋतु थाय ॥ ठ ऋतुए १ वर्ष थाय ॥ पांच वर्षे १ जुग थाय ॥ वीस जुगे १०० वर्ष थाय ॥ एवा सो सो वर्षे कुवामांथी एकेक वाळ काढीए ॥ एम काढतां काढतां ज्यारे कुवो खाली थाय त्यारे १ पल्योपम थाय ॥ एवा १० कोडाकोडी पल्योपमे १ सागरोपम थाय ॥ वीस कोडाकोडी सागरोपमे १ कालचक्र थाय ॥ एवा अनतां कालचक्रे १ उदारिक पुद्गल परावर्त्तन थाय ॥ ए कालनी उपमानु द्वार कह्युं ॥ ५ ॥ हवे ठठु कालना अल्पबहुत्वनु द्वार कहे छे ॥ एवा अनत कालचक्र वही जाय त्यारे १ कार्मण पुद्गल परावर्त्तन थाय १ ॥ अनतां कार्मण पुद्गल परावर्त्तन वही जाय, त्यारे १ तैजस् पुद्गल परावर्त्तन थाय २ ॥ एवां अनता तैजस् पुद्गल परावर्त्तन वहि जाय, त्यारे १ उदारिक पुद्गल परावर्त्तन थाय ३॥ एवां अनता उदारिक पुद्गल परावर्त्तन वही जाय,त्यारे १ श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त्तन थाय ४ ॥ एवा अनतां श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त्तन वही जाय, त्यारे १ मन पुद्गल

परावर्त्तन थाय ॥ ५ ॥ एवा अनतां मन पुद्गल परावर्त्तन वही जाय, त्यारे १ वचन पुद्गल परावर्त्तन थाय ६ ॥ एवा अनता वचन पुद्गल परावर्त्तन वही जाय, त्यारे १ वैक्रेय पुद्गल परावर्त्तन थाय ७ ॥ ६ ॥ हवे सातमु पुद्गल मध्ये पुद्गलनु द्वार कहे छे ॥ एक कार्मण पुद्गल परावर्त्तनमांहि अनता कालचक्र वही जाय १ ॥ एक तैजस् पुद्गल परावर्त्तनमांहि अनतां कार्मण पुद्गल परावर्तन वही जाय २ ॥ एक उदारिक पुद्गल परावर्त्तनमांहि अनता तैजस् पुद्गल परावर्त्तन वही जाय ३ ॥ एक श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त्तनमांहि अनतां उदारिक पुद्गल परावर्त्तन वही जाय ४ ॥ एक मन पुद्गल परावर्त्तनमांहि अनतां श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त्तन वही जाय ५ ॥ एक वचन पुद्गल परावर्त्तनमांहि अनंतां मन पुद्गल परावर्तन वही जाय ६ ॥ एक वैक्रेय पुद्गल परावर्त्तनमांहि अनतां वचन पुद्गल परावर्त्तन वही जाय ७ ॥ ७ ॥ हवे आठमु अल्पबहुत्वद्वार कहे छे ॥ सर्वथी थोडा जीवे वैक्रेय पुद्गल परावर्त्तन कीधां १ ॥ तेथी अनतगुणा अधिक जीवे वचन पुद्गल परावर्त्तन कीधां २ ॥ तेथी अनतगुणा अधिक जीवे मन पुद्गल परावर्त्तन

कीधा ३ ॥ तेथी अनतगुणा अधिक जीवे श्वासोश्वास पुद्गल परावर्त्तन कीधां ४ ॥ तेथी अनतगुणा अधिक जीवे उदारिक पुद्गल परावर्त्तन कीधां ५ ॥ तेथी अनतगुणा अधिक जीवे तेजस् पुद्गल परावर्त्तन कीधा ६ ॥ तेथी अनतगुणा अधिक जीवे कार्मण पुद्गल परावर्त्तन कीधा ७ ॥ ८ ॥ ए ७ पुद्गल परावर्त्तननो विचार जाणीने समकित सहित जिनाज्ञा प्रमाण करीने, ज्ञान दर्शन चारित्र तपनी आराधना करीए, जेथी पुद्गल परावर्त्तन न करवा पडे ॥

इति पुद्गल परावर्त्तनना बोल सपूर्ण ॥

पाच ज्ञानना बोल ॥

अथ श्री नदीसूत्रथी ५ ज्ञानना बोल लिख्यते ॥ प्रथम ज्ञान १ ज्ञेय २, ज्ञानी ३ ए ३ बोलनुं जाणपणु करवु ॥ जेणे करी वस्तु जाणीये ते ज्ञान १ ॥ ज्ञेय ते जाणवायोग्य

वस्तु २ ॥ ज्ञानी ते जाणनार पुरुष ३ ॥ ज्ञानना ५ भेद ॥ मतिज्ञान १ ॥ श्रुतज्ञान २ ॥ अवधिज्ञान ३ ॥ मन पर्यव ज्ञान ४ ॥ केवल ज्ञान ५ ॥ सम्यक्दृष्टिनु मतिज्ञान ॥ मिथ्या दृष्टिनुं मति अज्ञान ॥ सम्यक्दृष्टिनु श्रुत ते श्रुतज्ञान ॥ मिथ्यादृष्टिनुं श्रुत ते श्रुत अज्ञान ॥ मतिज्ञान ने श्रुतज्ञान ए २ ज्ञान मांहोमांहि खीरनीरनी पेरे मळी रह्या छे, जीव अन्यतर शरीरनी पेठे ॥ हवे इहां ए ज्ञानने विषे आचार्य विशेष कहे छे ॥ मतिये करी जाणे ते मतिज्ञान ॥ श्रुते करी जाणे ते श्रुतज्ञान ॥ मतिज्ञान वर्त्तमानकाल ग्राही छे, ने श्रुतज्ञान त्रिकाळ ग्राही छे, तेथी मति श्रुत ज्ञान ए जूदां कह्यां छे ॥ मतिज्ञानना २ भेद ॥ श्रुतनिश्रित १ ॥ अश्रुत निश्रित २ ॥ अश्रुत निश्रितना ४ भेद ॥ औत्पातिकी १ ॥ वैनयिकी २ ॥ कार्मिकी ३ ॥ पारिणामिकी ४ ॥ तेमा औत्पातिकी बुद्धि ते अण साभळी अणधारी तत्काळ बुद्धि उपजे ते १ ॥ वैनयिकी बुद्धि ते गुरुनो विनय करवाथी शास्त्रना अर्थनो फेलावो थाय ते २ ॥ कार्मिकी बुद्धि ते जोतां लखतां चितरता भणतां गणतां अनेक प्रकारे कला प्रमुख अभ्यास करतां अभ्यासमां अत्यंत कुशल थाय ते ३ ॥ पारि

णामिकी बुद्धि ते जेम जेम वय परिणमे तेम तेम बहुश्रुत थाय ४ ॥ श्रुतनिश्रितना ४ भेद ॥ अवग्रह १ ॥ इहा २ ॥ अवाय ३ ॥ अने धारणा ४ ॥ तेमां अवग्रह त निर्देश न पइ शके तेवी रीते पदार्थना सामान्य अशनु ग्रहण करवु ते १ ॥ गृहीत अर्थनी पर्यालो चना करवी ते इहा २ ॥ अवगृहित अने इहित अर्थनो निश्चय करवो ते अवाय ॥ जेमके आ बाळक छे ॥ आ गाय छे इत्यादि ३ ॥ निश्चित अर्थने धारी राखवो ते धारणा ४ ॥ अवग्रहना बे भेद ॥ व्यजनावग्रह १ ॥ अने अर्थावग्रह २॥ पदार्थनो प्रथम समये अ व्यक्त स्वरूप बोध थाय ते व्यंजनावग्रह १ ॥ अने व्यक्त स्वरूप बोध थाय ते अर्थाव ग्रह २ ॥ व्यजनावग्रह आंख अने मन सिवाय बीजी चार इन्द्रियोथी थाय छे, त्यारे अ- र्थावग्रह छए इन्द्रियथी थाय छे ॥ व्यजनावग्रह त शब्दादि रूपे परिणत द्रव्यनो उपकर णेन्द्रियथी अवग्रह परिच्छेद अर्थात् अव्यक्त बोध थाय त अथवा दीवे करी पदार्थ प्रगट करीये तेम उपकरणेन्द्रिये करी पोताने सबधे रह्या पदार्थ शब्दादिनु ग्रहवु अव्यक्तरूपे परिच्छेद ते व्यजनाग्रह, चक्षु इन्द्रिय ने मन विना शेष चार इन्द्रियनो थाय छे ॥ चक्षु अने

मनने अप्राप्तकारिपणु छे, तेथी अर्थावग्रह सर्व इन्द्रियोनो थाय छे ॥ अवग्रह १ समय ॥ इहा अपाय अंतर्मुहूर्त ॥ धारणा संख्याता असंख्याता कालनी ॥ व्यंजनावग्रह ४ प्रकारे ते कहे छे ॥ श्रोत्रेंद्रिय व्यंजनावग्रह ते श्रोत्रेंद्रिये शब्दना पुद्गल ग्रहीने शब्द सांभळवो एवं यावत् स्पर्शेंद्रिय व्यंजनावग्रह ते स्पर्शेंद्रिये करी खरखरादिक स्पर्शना पुद्गलनो अर्थ समुच्चय ग्रहवो ४॥ हवे अर्थावग्रहना छ प्रकार ते कहे छे ॥ श्रोत्रेंद्रिय अर्थावग्रह ते श्रोत्रेंद्रिये करी शब्दना समुच्चय अर्थनो परमार्थ ग्रहे एम यावत् नोइंद्रिय (-मन) नी विचारणादिकना समुच्चय अर्थना परमार्थनुं ग्रहवु ॥ हवे व्यंजनावग्रह समजवाने २ दृष्टांत कहे छे ॥ जगाडता पुरुषने दृष्टांते ॥ जेम काइ पुरुष सुतो छे तेने कोई जगाडे, अमुक एम बोलावे, असंख्यात समये पुद्गल स्पर्शे, उपयोग वर्त्ते, हुं इति बोले, ए प्रतिबोधकनुं दृष्टांत १ ॥ बीजु सरावलानु ते सरावलामां कोइ एक बिंदु नांखे एम बिंदु नाखतां नाखतां छेक सुधी भरे ने पाणी उछळी जाय, तेम कानमा पुद्गल पुरां भराय, त्यारे ते सुतो पुरुष हुंकारो करे पण नहि के केनो शब्द छे २ ॥ ए बे दृष्टांत कह्यां ॥ एकंदर मतिज्ञानना २८ भेद थया

ने ४ भेद व्यंजनावग्रहना, ६ भेद अर्थावग्रहना, ६ भेद इहाना, ६ भेद अवायना अने ६ भेद धा रणाना, एव २८ ॥ हवे मतिज्ञान संक्षेप ४ प्रकारे छे॥ तेमां द्रव्यथी मतिज्ञानी सामान्य प्रकारे सर्व द्रव्यने जाणे ने देखे एव क्षेत्र कालभावथी पण जाणवु ॥ शब्द स्पर्शो सांभ ळे॥ जापानां पुद्गलो समश्रणीए होय॥ पोताना पासेनी श्रेणिमां रहेल बीजां पुद्गलोने भा षापणे परिणमावतां जाय॥ ते बन्ने मिश्रित पुद्गलोने सांभळे पण एकलां मुखगां पुद्गलोने न सांभळे ॥ ए मतिज्ञान परोक्ष २८ भेदे करी कह्यु १ ॥ हवे श्रुतज्ञान परोक्ष कहे छे ॥ श्रुतज्ञानना १४ भेद ॥ अक्षरश्रुत १ ॥ अनक्षरश्रुत २ ॥ संज्ञीश्रुत ३ ॥ असंज्ञीश्रुत ४॥ सम्यक्श्रुत ५ ॥ मिथ्याश्रुत ६ ॥ सादिश्रुत ७ ॥ अनादिश्रुत ८ ॥ सपर्यवसितश्रुत ९ ॥ अपर्यवसितश्रुत १० ॥ गमिकश्रुत ११ ॥ अगमिकश्रुत १२ ॥ अंगप्रविष्टश्रुत १३ ॥ अंगबाहिरश्रुत १४ ॥ हवे अक्षरश्रुतना ३ भेद ॥ संज्ञाक्षर १ ॥ व्यंजनाक्षर २ ॥ लब्ध्यक्षर ३ ॥ तमां अकारादि वर्णात्मक अक्षरना संठाणनो आकार ते संज्ञाक्षर ते ब्राह्म्यादि लिपिना भेदथी अनेक प्रकारनु १ ॥ व्यंजनाक्षर ते व्यंजन (अक्षर) अका

रादि ह्रस्व दीर्घ प्रमुखनु उच्चारवु २ ॥ लब्ध्यक्षर ते अकारादि अक्षरोनु जाणपणुं सज्ञी जीवान उपजे त ५ प्रकारनु श्रोत्रइंद्रिय लब्ध्यक्षर यावत् नोइंद्रिय (मन) लब्ध्य क्षर ॥ ५ तेमां श्रोत्रेंद्रिय लब्ध्यक्षर ते काने शब्द सांजळीने कहे जे ए नेरि प्रमुखनो शब्द छ, त वार तेने नेरी प्रमुख ए अक्षरना ज्ञाननी प्राप्ति थइ ॥ एवं नोइंद्रिय लब्ध्यक्षर तेमन विचारता सांजळ्यु जे फलाणु छे ए अक्षरनुं ज्ञान थयु ते ३ ॥ १ ॥ हवे अनक्षर श्रुतना अनेक नेद छ ॥ अक्षरना उच्चार विना शब्द बोले ते ॥ उच्छ्वास नि श्वास करवा, थुकवु, खुखारो करवो, छिंकवु विगेरे २ ॥ सज्ञीश्रुतना ३ नेद ॥ कालिकोपदेश १ ॥ हेतूपदेश २ ॥ दृष्टिवादोपदश ३ ॥ सज्ञी ते जेने इहा अपोहा यावत् विमसा होय, ते सज्ञी ॥ जेने ए नहि, ते असज्ञी ॥ कालिकोपदेश ते घणा कालनी सज्ञा ते कालिकी तेनो ते उपदेश, जेम चक्षुवाळो दीवायके करी स्फुट अर्थने जाणे तेम ए पण, मनोल विधेये सपन्न मनोद्रव्यना अवष्टंजनथी उपन्या विचारे, पूर्वापर अनुसधान करी यथाव स्थित स्फुट अर्थने जाणे १ ॥ हेतूपदेश सज्ञा ते युक्तायुक्त विचारपूर्वक इष्ट प्रवृत्ति अनिष्ट

निवृत्ति करवी ते ॥ तेवी सज्ञावाळा जीव हेतूपदेश सज्ञाए करी सज्ञी कहेवाय २ ॥ दृष्टिवादोपदेश सज्ञी ते ज्ञान सहित समकितदृष्टि जीव सूत्रना क्षयोपशमे करी युक्तायुक्त जाणे ते ३ ॥ असज्ञी श्रुत ते भाषार्थरहित विचारशून्य उपयोगशून्य पूर्वापर आलोचन रहित भण भणावे इत्यादिक ४ ॥ सम्यक् श्रुत ते अरिहंत देव केवलज्ञानी केवलदर्शनी देवाधिदेव १२ गुणे करी युक्त, १८ दोषरहित, अनंत गुणे करी सहित, देवाधिदेवना प्ररूप्या अर्थ तथा गणधरे पाठ गुंथ्या भांख्या १४–१३–१२–११–१० पूर्वधारिनु रच्यु ते समश्रुत कहीये ने तेथी उणा पूर्वश्रुधीना रच्या ते समश्रुत होय ने मिथ्याश्रुत पण होय ५ ॥ मिथ्याश्रुत ते जे अज्ञानी मिथ्यादृष्टिए स्वछंदबुद्धिए करी रच्या भारत रामायण यावत् ४ वेद अंगोपांग सहित ते मिथ्यादृष्टिने मिथ्यात्वपणे मळ्या मिथ्यात्व श्रुत ॥ सम्यक् दृष्टिने सम्यक्त्वपणे मळ्या समश्रुत अथवा मिथ्यादृष्टिने ए सम्यक्त्व श्रुत होय शामाट के सम्यक्त्वना हेतुपणाथी मिथ्या दृष्टि पोतानां शास्त्र विचारता केटलाक स्वपक्षदृष्टिने त्यजे छे ६ ॥ सादि १ ॥ सपर्यवसित २ ॥ अने अनादि ३ ॥ अपर्यवसित ४ ॥

ते आ १२ अंग पर्यायास्तिक नयनी अपेक्षाये सादि १ सपर्यवसित २ छे ॥ ने द्रव्या स्तिक नयनी अपेक्षाये अनादि १ अपर्यवसित २ छे॥ ते संक्षेपथी ४ भेदे छे ॥ द्रव्यथी १ ॥ क्षेत्रथी २ ॥ कालथी ३ ॥ भावथी ४ ॥ द्रव्यथी सम्यक् श्रुत एक जीव आश्रि सादि, सपर्यवसित अने घणा जीव आश्री अनादि, अपर्यवसित ॥ क्षेत्रथी पांच भरत अने पांच इरवत आश्रि सादि सपर्यवसित, पच महाविदेह आश्रिने अनादि अपर्य वसित ॥ कालथी अवसर्पिणी उत्सर्पिणीने आश्रिने सादि १ सपर्यवसित २ ॥ नो अवसर्पिणी नोउत्सर्पिणीने आश्रिने अनादि १ अपर्यवसित २ ॥ भावथी जे जेवारे जिन प्ररूप्या भाव कह्या प्ररूप्या तेवारे ते भावने आश्रिने सादि १ सपर्यवसित २ ॥ क्षयोपसम भावन आश्रिने अनादि १ अपर्यवसित २ ॥ अथवा भव्य सिद्धिकनु श्रुत सादि १ सपर्यवसित २ ॥ अभव्य सिद्धिकनु श्रुत अनादि १ अपर्यवसित २ ॥ त्रीजे चोथे भागे श्रुतनो अनादि भाव कह्यो, ते जघन्य ने मध्यमथी जाणवो ॥ तेनु मान सर्वा- काश लोकाकाश तेना प्रदेश तेने अनतवार गुणोये ॥ एक आकाश प्रदेशे अनता अगुरु

लघु पर्यायना नावथी पर्याय अक्षर निपजे ते केवल ज्ञान तेनो अनंतमो नाग सदा जीवने उघाड़ो छे ॥ जा ते आवरे तो जीव अजीवपणाने पामे ॥ जेम गाढ मेघनो समुदाय छते पण चंद्र सूर्यनी तमाम प्रजानो नाश न होय, तेम ए न्याये जीवनो पण ज्ञाननाव जाणवो ॥ ए रीते मतिश्रुतनो अनादिनाव अंगीकार करनो ७—८—९—१० ॥ हवे गमिकश्रुत ते जेमा सरखा गमा छे ते दृष्टिवाद श्रुत ११ ॥ अगमिक श्रुत ते जेमां सरखा गमा अखावा नही तेवा आचारांगादि श्रुत १२ ॥ अंगप्रविष्ट श्रुत ते १२ अंग गणधरकृत मूल सूत १३ ॥ शेष जे श्रुत ते अनियमथी अनंग प्रविष्ट कहेवाय छे ॥ अनंग प्रविष्ट (अंग बाह्य) तेना बे नेद ॥ आवश्यक १ ॥ आवश्यक व्यतिरिक्त २ ॥ आवश्यक ते सामायकादि छ अध्ययन ॥ आवश्यक व्यतिरिक्तना २ नेद ॥ कालिक १ ॥ उत्कालिक २ ॥ कालिक उत्कालिकनो विस्तार सिद्धांत प्रमाणना बोलथी जाणी लेवो १४ ॥ यावत् १२ अंग गणिपिटक अनंता जीवो आज्ञाए विराधीने अनंते काले पूर्वे ४ गति संसारमां नम्या ॥ वर्तमानकाले संख्याता जीव विराधीने नमे छे ॥ नविष्य काले अनंता जीव

विराधीने जमशे ॥ एमज ए १२ अंग आज्ञाये आराधीने पूर्व काले अनता जीवो तर्या ॥ वर्त्तमान काले आराधीने तरे छे ॥ जविष्य काले आराधीने तरशे ॥ ते श्रुत ज्ञाननी स्थिति ४ नेदे ॥ ड्रव्यथी १ ॥ क्षेत्रथी २ ॥ कालथी ३ ॥ जावथी ४ ॥ ड्रव्यथी श्रुतज्ञानी उपयुक्त थको सर्व ड्रव्यने जाणे देखे, एवं क्षेत्रथी १ ॥ कालथी २ ॥ जावथी ३ ॥ पण जाणी लेवु ॥ सूत्र ज्ञानी अनतां ड्रव्यने जाणे देखे, ते मेरु आदि अदृष्ट पदार्थने पण शिष्यने अर्थे आलेखीने (चितरीने) देखाके तेनाथी, ते श्रोताने ए बुद्धि थाय के ए जगवान् आचार्य साक्षात् देखतानी परे कहे छे ॥ एम क्षेत्रादिने विषे पण जाणवु ॥ इति परोक्ष श्रुत ज्ञान समाप्त २ ॥ प्रत्यक्ष ज्ञानना २ नेद ॥ इंड्रिय प्रत्यक्ष ते श्रोत्रेंड्रिय यावत् स्पर्शेंड्रिय प्रत्यक्ष १ ॥ नोइंड्रिय प्रत्यक्षना ३ नेद ॥ अवधिज्ञान प्रत्यक्ष १ ॥ मनःपर्यवज्ञान प्रत्यक्ष २ ॥ केवलज्ञान प्रत्यक्ष ३ ॥ अवधिज्ञान प्रत्यक्षना २ नेद ॥ जव प्रत्ययिक १ ॥ क्षायोपशमिक २ ॥ जवप्रत्ययिक देवता नारकी थेने होय ॥ क्षायोपशमिक सञ्ज्ञी तिर्यंच पचेंड्रिय मनुष्यने होय, तेना हेतु ए छे के तदावरणीय कर्म उदय आ

ज्याना क्षये करीने, अनुदय आव्याना उपशमे करी, अवधिज्ञान उत्पन्न थाय अथवा अप्रमादी गुणवत साधुने अवधिज्ञान उत्पन्न थाय ते सक्षेपथी छ प्रकारे कह्यु छे ॥ आनुगामिक १ ॥ अनानुगामिक २ ॥ वर्द्धमान ३ ॥ हायमान ४ ॥ पडिवाइ ५ ॥ अपडिवाइ ६ ॥ तेमां आनुगामिक ते ज्यां जाय त्यां साथे आवे तेना २ भेद ॥ अंत गत १ ॥ मध्यगत २ ॥ तेमां अंत गत ते आत्माना पर्यंत वर्ति प्रदेशे रह्यु तथा उदारिक शरीरने अंते रह्यु ॥ अंतःगतना ३ भेद ॥ पुरतो अंतगत १ ॥ मार्गतो अंतःगत २ ॥ पार्श्वतो अंतःगत ३ ॥ तेमां पुरतो अंतगत ते जेम कोइ पुरुष बळतो पुळो, बळती दीवी, बळतु उंबाडीयु, बळतु ज्योतिनुं भाजन, मणीरत्न प्रमुख घटस्थानोनां लइने आगळ करीने चाले तेनी आगळ प्रकाश थाय अने पाछळ बेउ पासे अंधारु थाय तेम पुरतो अंतगत अवधिज्ञाननु एवुं आवरण क्षयोपशम थयु के जेणे करी आगळनु क्षेत्र देखे, पण पुठे बेउ पासे न देखे ए पुरतो अंतगत १ ॥ मग्गओ (मार्गतो) अंतःगत ते ए पूर्वोक्त छ मोलने लइ पाछले करी चाले तेने आगले बेउ पासे अंधारुं ॥ पाछले अजवाळु थाय, तेम मग्गओ अंतःगत अवधिज्ञाननु

जाणवा १ ॥ अणाणुगामिक ते जेम कोइक पुरुषे तापणी करी होय, दीवो करी मूक्यो होय, तेनी समीपे आसपास क्षेत्र देखे, पण आघो जाय त्यारे देखे नहि, तेम ज्यां अवधि उपजे ते ज क्षेत्रे रह्यो थको जाणे देखे, पण आघो जाय त्यारे देखे नहि ॥२॥ हवे वर्द्ध मान ते प्रशस्त अध्यवसायना स्थानके करी वध्यु छे चारित्र जेने तथा विशुध्यमान छे चारित्र जेने एवा अणगारने सर्वथी सर्व दिशे अवधिज्ञान वधे ॥ जेटला त्रि समयाहारक सूक्ष्म निगोदना शरीरनी अवगाहना तेटलु जघन्य क्षेत्र जाणे देखे, उत्० अग्निकायना जीव अजितनाथने वारे घणा होय, ते अग्निकायना जीव एकेक आ काश प्रदेशे एकेको मुकीये एम आंतरा रहित मुकता मुकतां असंख्यात लोक जराय अलोकमां लोक जेवडा असंख्याता खांडुआ प्रमाणे क्षेत्र देखवानी शक्ति प्रगटे, एटली अवधिज्ञाननी समर्थाइ होय, एटलुं क्षेत्र जाणे देखे ॥ हवे क्षेत्र ने कालथी देखवुं कहे छ ॥ जे क्षेत्रथी अगुलना असख्यातमा भाग जाणे देखे, ते कालथी आवलिकाना अस ख्यातमा भागना कालनी आगली पाछली वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी अगुलनो

सख्यातमो भाग जाणे देखे, ते कालथी आवलिकाना सख्यातमा भागनी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी अगुल प्रमाणे जाणे देखे, त कालथी आवलिकानी माठेरी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी प्रत्यक अगुल क्षेत्र जाणे देखे, ते कालथी आवलिका पुरीनी आगली पाछली वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी हाथ प्रमाणे क्षेत्र जाणे देखे, ते कालथी अंतर्मुहूर्त्त प्रमाणे कालनी आगली पाछली वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी गाउक्षेत्रने जाणे देखे, ते कालथी एक दिवस माठेरानी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी जोजन प्रमाणे क्षेत्र जाणे देखे, ते कालथी प्रत्येक दिवसनी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी २५ जोजन जाणे देखे, ते कालथी पक्ष माठेरानी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी भरतक्षेत्र जाणे देखे, ते कालथी पक्ष पूरानी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी जंबूद्वीप जाणे देखे, ते कालथी मास झाझेरानी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी अढीद्वीपने जाणे देखे, ते कालथी वर्षनी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी

क्षेत्रथी १५ मा रुचकद्वीपने जाणे देखे, ते कालथी प्रत्येक वर्षनी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी नाना सख्याता जोजनना द्वीपने जाणे देखे, ते कालथी सख्याता का लनी वात जाणे देखे ॥ जे अवधिज्ञानी क्षेत्रथी असंख्याता द्वीपने जाणे देखे, ते कालथी असंख्याता कालनी वात जाणे देखे ॥ एम उर्द्धलोक अधोलोक त्रिछो लोक ए त्रण लोके वधतां वधता असंख्याता लोक प्रमाणे जाणे देखे॥ एटली समर्थाइ प्रगटे ते वर्द्धमान अवधिज्ञान ४ प्रकारे ते द्रव्यथी १ ॥ क्षेत्रथी २ ॥ कालथी ३ ॥ जावथी ४॥ वृद्धिनी रीत कहे छे ॥ ज्यारे कालथी जाणवानी वृद्धि होय, त्यारे द्रव्यथी, क्षेत्रथी, जावथी, जाणवानी वृद्धि होय १॥ ज्यारे क्षेत्रथी जाणवानी वृद्धि होय, त्यारे कालथी जाणवानी जजना होय, न द्रव्य जावथी जाणवानी नियमा वृद्धि होय, २ ॥ ज्यारे द्रव्यथी जाणवानी वृद्धि होय, त्यारे क्षेत्रथी कालथी जाणवानी जजना होय, अने जावनी वृद्धि होय ३ ॥ ज्यारे जावथी जाणवानी वृद्धि होय, त्यारे द्रव्य क्षेत्र कालथी जाणवानी जजना होय ४ ॥ सर्वथी काल सूक्ष्म छे ॥ आंख मिंची उघाडीये तेमां

असख्याता समय थाय, ते मांहिलो एक समय छे माट १ ॥ तेथी क्षेत्र असख्यातगणु सूक्ष्म छे, केमके एक अगुल प्रमाणे क्षेत्र लइये, तेमां असख्याती श्रेणी छे, तेमांथी एक श्रेणी लइये ॥ ते श्रेणी अगुल प्रमाणे लांबी ने एक आकाश प्रदेश प्रमाणे पहोळी तेमांथी समय २ एकेक प्रदेश हरतां २ असख्याता कालचक्रना समय वही जाय, तोपण त खूटे नहि एवो कालथी क्षेत्र सूक्ष्म छे २ ॥ तेथी द्रव्य अनतगणु सूक्ष्म छे, कमके एक अगुल प्रमाणे श्रेणी लइये, तेमां असख्यात श्रेणीयो छे, त मांहेली एक श्रेणी एक अगुल प्रमाणे लांबी एक आकाश प्रदेश प्रमाणे पहोळी, तेमां असख्याता आकाश प्रदेश छे ॥ एकेक प्रदेशे अनता २ परमाणु द्रव्य छे ॥ अनतद्वीपप्रदेशी स्कध एवां द्रव्य अनतां छे ते समये २ एकेको द्रव्य हरता अनता कालचक्रना समय वही जाय, तोपण खूटे नहि, एटला एक प्रदेश उपर द्रव्य छे, एम सर्व प्रदेश उपर छे, एवु क्षेत्रथी द्रव्य सूक्ष्म छे ३ ॥ द्रव्यथी भाव अनतगुणो सूक्ष्म छे, केमके एक अगुल प्रमाणे क्षेत्र लइए, तेमां असंख्याती श्रेणीयो छे, तेमांथी एक श्रेणी लइये, ते श्रेणी एक अगुल प्रमाणे लांबीने एक

प्रदेशनी पहोळी, तेमां असंख्याता प्रदेश छे ॥ एकेक प्रदेशमां अनंता परमाणु प्रमुख द्रव्य छे ॥ एकेक द्रव्यमां अनंता पर्यव छ ॥ जेमके एक परमाणुमां, १ वर्ण ॥ १ गंध ॥ १ रस ॥ २ स्पर्श छ ॥ एक वर्णमां एक गुण कालो, यावत् अनंत गुण कालो, ए ५ बोलना अनंता भेद कहेवा, एम द्विप्रदेशी स्कंधमां, बे वर्ण, बे गंध, बे रस, चार स्पर्श, ए दश जातिना अनंता भेद छे ॥ एक त्रिप्रदेशी स्कंधमां, त्रण वर्ण, बे गंध, त्रण रस, चार स्पर्श, ए बार जातिना अनंता भेद छे ॥ एम सर्व द्रव्यना पर्यव कहेवा, ते पर्याय समय समय एकेको अपहरतां अनंता कालचक्रना समय वही जाय, त्यारे एक परमाणुना पर्यव थाय ॥ एम द्विप्रदेशी स्कंधना अनंता पर्यव छे ॥ एम अनंतानंत प्रदेशी स्कंधना अनंत पर्यव छे ॥ एम एक प्रदेश संबंधी अनंता द्रव्यना अनंतानंत भेद पर्यव छे ॥ एम संपूर्ण लोकना अनंता पर्यव छे माटे द्रव्यथी पर्याय (भाव) अनंतगुणो सूक्ष्म छे ४ ॥ हवे ४ ने उपमा दइ बतावे छे ॥ कालने चणानी १ ॥ क्षेत्रने जुवारनी २ ॥ द्रव्यने तलनी ३ ॥ भावने खसखसनी उपमा ४ ॥ ए ४ उपमाए करी समजवु

३ ॥ हायमान ते अप्रशस्त–माठा अध्यवसाये करी, अशुभ जोगे करी, अशुभ लेश्याए करी, अशुभ ध्याने करी, अवधिज्ञानना पर्यव हीणा पके तेनु आवरण थाय ॥ जेम वधतु हतु तेम घटतु जाय ४ ॥ पकिवाइ अवधिज्ञान ते जघन्य अंगुलना असंख्यातमा जागनु क्षेत्र देखीने पकि जाय, एम संख्यातमो जाग, वालाग्र, प्रत्येक वालाग्र ॥ लीख, प्रत्येक लीख ॥ जु, प्रत्येक जु ॥ जवमध्य, प्रत्येक जवमध्य ॥ अंगुल, प्रत्येक अंगुल ॥ पग, प्रत्येक पग ॥ वेंत, प्रत्येक वेंत ॥ हाथ, प्रत्येक हाथ ॥ कुक्षि, प्रत्येक कुक्षि ॥ धनुष, प्रत्येक धनुष ॥ गाउ, प्रत्येक गाउ ॥ जोजन, प्रत्येक जोजन ॥ लाख, प्रत्येक लाख ॥ कोक, प्रत्येक कोक ॥ सो कोक, प्रत्येक सो कोक ॥ हजार कोक, प्रत्येक हजार कोक ॥ लाख कोक, प्रत्येक लाख कोक ॥ कोकाकोक, प्रत्येक कोडाकोक ॥ एम यावत् संख्यात कोकाकोक, असंख्यात कोकाकोक, जोजन प्रमाणे क्षेत्र देखीने पकी जाय, उ० लोकने देखीने पकी जाय॥ जे पके ते जेम दीवो करी मुक ते दीवो पवनने जोगे करी ओलवाइ जाय, तेम पकिवाइ अवधिज्ञान आव्युं जाय ५ ॥ अपकिवाइ अवधिज्ञान ते जे अलोकना एक पण आकाश

प्रदेशने देखे, ते अपडिवाइ एवु ज्ञान तीर्थंकरने जन्मथी होय ६ ॥ हवे अवधिज्ञानी केटलु जाणे ते कहे छे ॥ पहेली नरकना नारकी ज० साडात्रण गाउ, उ० ४ गाउ देखे॥ बीजीना ज० ३ गाउ, उ० साडात्रण गाउ देखे ॥ एम एकेक नरके ज० उ० मांथी अर्धो-अर्ध जोजन घटाडतां सातमी नरकना नारकी ज० अर्द्ध गाउ, उ० १ गाउ देखे॥ असुर कुमार ज० २५ जोजन देखे, उ० असख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ नवनिकायना देव तथा व्यतर ज० २५ जोजन देखे, उ० सख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ ज्योतिषी ज० उ० सख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ पहेला बीजा देवलोकना देवता उचु पोताना विमाननी ध्वजा लगी देखे ॥ नीचुं रत्नप्रभानो हेठलो चरिमांत जाणे देखे ॥ तिर्छु ज० अगुलनो असख्यातमो भाग जाणे देखे, उ० असख्याता द्वीपसमुद्र जाणे देखे ॥ त्रीजाथी मांडी अनुत्तर विमानना देव सुधी, उचु पोतपोताना विमाननी ध्वजा सुधी देखे ॥ तीछु ज० अगुलनो असख्यातमो भाग, उ० असख्यात द्वीपसमुद्र जाणे देखे ॥ नीचु देखे तो त्रीजा चोथा देवलोकना देवता बीजी नरकना हेठला चरिमांत सुधी जाणे देखे ॥ पांचमा छठा देव

लोकना देवता त्रीजी नरकना हेठला चरिमांत सुधी ॥ सातमा आठमा देवलोकना देवता चोथी नरकना हेठला चरिमांत सुधी ॥ ए–१०–११–१२ ए ४ देवलोकना देवता पांचमी नरकना हेठला चरिमांत सुधी ॥ पहेलीथी छठी ग्रैवेयक सुधीना देवता छठी नरकना हेठला चरिमांत सुधी ॥ सातमी ग्रैवेयकथी मांमी नवमा ग्रैवेयक सुधीना देवता सातमी नरकना हेठला चरिमांत सुधी ॥ पांच अनुत्तर विमानना देव कांइक उणो लोक देखे ॥ सन्नी तिर्यंच पचेंद्रिय ज० अंगुलनो असंख्यातमो नाग, उ० असंख्याता द्वीपसमुद्र देखे ॥ सन्नी मनुष्य पचेंद्रिय ज० अंगुलनो असंख्यातमो नाग, उ० अलोकमध्ये लोक जेवडा असंख्याता खांडुआ जाणे देखे ॥ अवधिज्ञाननु संठाण (देखवानो आकार) कहे छे ॥ नारकी त्रापाने आकारे देखे ॥ नवनपति पालाने आकारे ॥ व्यंतर पडहने आकारे ॥ ज्योतिषी झालरने आकारे ॥ बार देवलोकना देव उर्ध्वमुख मृदंगने आकारे ॥ नव ग्रैवेयकना देव फूलचंगेरीने आकारे ॥ पांच अनुत्तर विमानना देव जवनालिका तथा कुमारिकाना कंचुवाने आकारे ॥ सन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय तथा सन्नी मनुष्य नाना प्रकारने आकारे

देखे ॥ नारकी देवता तीर्थंकरने अभ्यंतर अवधिज्ञान ॥ तिर्यंचने बाहिर अवधिज्ञान ॥ मनुष्यने अभ्यंतर ने बाहिर अवधिज्ञान होय ॥ नारकी देवताने अणुगामी १ ॥ अपडिवाइ २ ॥ अवस्थित ३ ॥ ए प्रकारनु अवधिज्ञान होय ॥ तिर्यंच ने मनुष्यने अनुगामी १ ॥ अनानुगामी २ ॥ वर्द्धमान ३ ॥ हायमान ४ ॥ पडिवाइ ५ ॥ अपडिवाइ ६ ॥ अवस्थित ७ ॥ अनवस्थित ८ ॥ ए प्रकारनु अवधिज्ञान होय ॥ हवे अवधिज्ञान सक्षेपथी ४ प्रकारे कहे छे ॥ द्रव्यथी अवधिज्ञानी ज० अनंतां रूपी द्रव्यने जाणे देखे, उ० अनंता रूपी द्रव्यने जाणे देखे १ ॥ क्षेत्रथी अवधिज्ञानी ज० अंगुलनो असंख्यातमो भाग जाणे देखे, उ० अलोकमां लोक जेवडा असंख्याता खांडुआ जाण देखे ॥ कालथी अवधिज्ञानी ज० आवलिकानो असंख्यातमो भाग जाणे देखे, उ० असंख्याता उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल गयानी अने आवतानी वात जाणे देखे ३ ॥ भावथी अवधिज्ञानी ज० अनंता भावने जाणे देखे, उ० अनंता भावने ते सर्व भावना अनंतमा भागने जाणे देखे ४ ॥ इति प्रत्यक्ष अवधिज्ञान समाप्त २ ॥ हवे प्रत्यक्ष मन पर्यव ज्ञाननु स्वरूप कहे छे ॥ मन-

पर्यव ज्ञान मनुष्य,सन्नी,कर्मभूमि,संख्याता वर्षनी स्थितिवाळा,पर्याप्ता,समदृष्टि,संयति,अप्रमादी,लब्धिवंत, एटला बोलवाळाने होय ॥ मन पर्यव ज्ञानना २ भेद॥ ऋजुमति १॥ विपुलमति २॥ ऋजुमति कांइक विपुलमतिनी अपेक्षाए ओछु जाणे देखे, माटे भेद जूदा पाम्या छे ॥ हवे मनःपर्यवज्ञान संक्षेपथी ४ प्रकारे कहे छे ॥ द्रव्यथी अनंत अनंत प्रदेशी स्कंधने जाणे देखे ए ऋजुमति विपुलमतिथी विशेष जाणे देखे १ ॥ क्षेत्रथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उ० हेठु रत्नप्रभाना उपला ने हेठला क्षुल्लक प्रतर सुधी ॥ उंचु ज्योतिषीना उपला तळा सुधी ॥ त्रिछुं अढि द्वीप सुधी ॥ ऋजुमति अढि अंगुल ओछु ने विपुलमति पूरुं जाणे देखे २॥ कालथी पल्योपमनो असंख्यातमो भाग, उ० पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अतीत अनागत कालने जाणे देखे ॥ ए ऋजुमति विपुलमति पणी विशेष जाणे देखे ३ ॥ भावथी अनंता भाव ते सर्व भावने अनंतमे भागे जाणे देखे ॥ विपुलमति पणी कांइ विशेष जाणे देखे ४ ॥ इति प्रत्यक्ष मन पर्यव ज्ञान समाप्त ४ ॥ हवे प्रत्यक्ष केवलज्ञान कहे छे ॥ सर्व प्रत्यक्ष निरावरण संपूर्ण ज्ञान ते केवलज्ञान ॥ तेना २ भेद ॥ भवस्थ केवल

ज्ञान १॥ सिद्धस्थ केवल ज्ञान २ ॥ जवस्थ केवल ज्ञानना बे जेद ॥ सजोगी जवस्थ केव ल ज्ञान १ ॥ अजोगी जवस्थ केवल ज्ञान २ ॥ सिद्धस्थ केवल ज्ञानना २ जेद ॥ अनतर सिद्धस्थ केवल ज्ञान १ ॥ परपर सिद्धस्थ केवल ज्ञान २ ॥ हवे केवलज्ञान सक्षेपथी ४ प्रकारे कहे छ ॥ द्रव्यथी सर्व द्रव्यने १ ॥ क्षेत्रथी सर्व क्षेत्रने २ ॥ कालथी सर्व कालने ३ ॥ जावथी सर्व जावन जाणे देखे ४ ॥ केवल ज्ञाने करी तीर्थकर अर्थने जाणी प्ररूपवा योग्य अर्थने कहे ते वचनजोगे करी गणधरादि सूत्र गुथे ॥ इति प्रत्यक्ष केवल ज्ञान समाप्त ॥

इति पांच ज्ञानना बोल सपूर्ण ॥

सप्रदेशी अप्रदेशीना बोल ॥

अथ जगवती शतक ६ उद्देशा ४ याथी काल आश्री सप्रदेशी अप्रदेशीना बोल लिख्यते ॥ गाथा–सपएसा १ आहारग २ जविय ३, सन्नि ४ लेस्सा ५ दिठी ६ सजय ७ कसाए ८ ॥

नाणे ए जाणु १० यथोगे ११, वेएय १२ सरीर १३ पज्जत्ती १४ ॥ १ ॥

ए चोद द्वारनी गाथा कही ॥ हवे ते चोद द्वार उपर एक जीव आश्री अथवा घणा जीव आश्री सप्रदेशी अप्रदेशीनो विचार कहे छे ॥ सप्रदेशी एटले एकथी वधारे समयनी स्थिति वाळा, अप्रदेशी एटले प्रथम समयवर्ती अर्थात् जीवने अमुक भाव प्राप्त थयाने एकज समय थया होय ते अप्रदेशी अने बे त्रण आदि अनेक समय थया होय ते सप्रदेशी कहेवाय ॥ तेमा प्रथम सप्रदेशी द्वार कहे छे ॥ समुच्चय एक जीव काल आश्री केम सप्रदेशी ? के अप्रदेशी ? उत्तर–नियमा सप्रदेशी ॥ एक नारकी काल आश्री केम सप्रदेशी ? के अप्रदेशी ? उत्तर–सिय सप्रदेशी, सिय अप्रदेशी ॥ एम यावत् वैमानिक अने सिद्ध सुधी पचीस दंडक कहेवा ॥ हवे घणा जीव काल आश्री केम सप्रदेशी ? के अप्रदेशी ? उत्तर–नियमा सप्रदेशी ॥ घणा नारकी काल आश्री केम सप्रदेशी ? के अप्रदेशी ? उत्तर–त्रण भांगा ॥ सर्व सप्रदेशी १, अथवा सप्रदेशी घणा अने अप्रदेशी एक २, अथवा सप्रदेशी घणा अने अप्रदेशी घणा ३ ॥ एम एकेंद्रिय वर्जीने वैमानिक सुधी वीश दंडक कहेवा ॥ पांच स्थावर काल आश्री

सप्रदेशी घणा अने अप्रदेशी घणा ॥ इति प्रथम द्वार सपूर्ण ॥ १ ॥ बीजुं आहारक द्वार कहे छे ॥ आहारक एक जीव आश्री केम सप्रदेशी ? क अप्रदेशी ? उत्तर–सिय सप्रदेशी, सिय अप्रदेशी ॥ एम नारकीथी वैमानिक सुधी चोवीश दंडकना एक एक जीव कहेवा॥ घणा जीव आश्री समुच्चय जीवने पांच स्थावरमा तो सप्रदेशी घणा अने अप्रदेशी घणा ॥ शेष नरकादि १९ दंडकमां घणा जीवोमां प्रत्येक प्रत्येक दंडकमां ३ भांगा उपर प्रमाणे जाणवा ॥ अणाहारिक आश्री समुच्चय एक जीव केम सप्रदेशी ? के अप्रदेशी ? उत्तर–सिय सप्रदेशी, सिय अप्रदेशी॥ एम नारकादि चोवीश दंडक अने सिद्ध पचीस दंडक कहेवा ॥ घणा जीव आश्री समुच्चय जीव ने पांच एकेंद्रियमां सप्रदेशी घणा ने अप्रदेशी घणा अने शेष नारकादि ओगणीश दंडकना घणा जीवोमा प्रत्येक प्रत्येकमां छ(६) भांगा जाणवा॥ सर्व सप्रदेशी होय १, अथवा सर्व अप्रदेशी होय २, अथवा एक सप्रदेशी अने एक अप्रदेशी ३, अथवा सप्रदेशी एक अने अप्रदेशी घणा ४, अथवा सप्रदेशी घणा अने अप्रदेशी एक ५, अथवा सप्रदेशी घणा अने अप्रदेशी घणा ६, एना भांगा तो ८ थाय पण

इहा ० विवर्या ठे॥ घणा सिद्ध आश्री नांगा ३ पूर्वोक्त॥ इति बीजु आहारकद्वार संपूर्ण॥ २॥ त्रीजु नव्यद्वार कहे ठे॥ नव्य समुच्चय एक जीव आश्री नियमा सप्रदेशी॥ शेष चोवीस दंमकना एक एक जीव सिय सप्रदेशी, सिय अप्रदेशी॥ घणा जीव आश्री समुच्चय जीव तो नियमा सप्रदेशी अने नरकादि १ए दंमकना घणा जीवोमां प्रत्येकमां नांगा ३ पूर्वोक्त॥ पांच स्थावरमां सप्रदेशी घणा अप्रदेशी घणा॥ एम अनव्य पण समुच्चय जीवने चोवीश दंमक कहेवा॥ नोनविनोअनवि, समुच्चय एक जीव सिय सप्रदेशी, सिय अप्रदेशी॥ एम एक सिद्ध पण कहेवा॥ घणा जीव आश्री समुच्चय जीवने सिद्धनगवानमां प्रत्येकमां ३ नांगा पूर्वोक्त॥ इति त्रीजु नव्यद्वार संपूर्ण॥ ३॥ चोथुं सन्नीद्वार कहे ठे॥ सन्नी एक जीव काल आश्री सिय सप्रदेशी, सिय अप्रदेशी॥ एम सोल दंमक सन्नीना एक जीव आश्री कहेवा॥ घणा जीव आश्री समुच्चय जीवने सोल दंमकमां प्रत्येकमां त्रण नांगा पूर्वोक्त॥ असन्नी समुच्चय एक जीव अने बावीश दंमकमां सिय सप्रदेशी, सिय अप्रदेशी॥ घणा जीव आश्री एकेंडियमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा॥ घणा नारकी असन्नी आश्री

जांगा ६ पूर्वोक्त ॥ एम दश जवनपति, मनुष्य अने वाणव्यतर मळी वार दरुक कहेवा ॥ शेष त्रण विकलेंड्रिय, तिर्यंच पचेंड्रिय असज्ञी घणा जीव आश्री प्रत्येकमा त्रण जांगा पूर्वोक्त ॥ नोसज्ञीनोअसज्ञी आश्री समुच्चय एक जीव सिय सप्रदेशी, सिय अप्रदेशी ॥ एम मनुष्य अने सिद्ध एक जीव आश्री कहेवा ॥ घणा जीव, घणा मनुष्य अने घणा सिद्धमा नोसज्ञीनोअसज्ञी आश्री प्रत्येकमा त्रण जांगा पूर्वोक्त ॥ इति चोथु सज्ञीद्वार संपूर्ण ॥४॥ पांचमु लेश्याद्वार कहे छे ॥ सलेशी तो एक जीव ने घणा जीव ओघिक प्रथम द्वार वत् जाणवा ॥ कृष्णलेशी, नीललेशी अने कापोतलेशी एक जीवने घणा जीव आश्री आहारकवत् कहेवा ॥ नवर दरुक वावीस कहेवा ॥ तेजु लेश्या समुच्चय जीव अने पदर दरुकमा त्रण जांगा पूर्वोक्त ॥ पृथ्वीकाय, अप्काय अने वनस्पतिकायमां प्रत्येक प्रत्येकमां ६ जांगा पूर्ववत् कहेवा ॥ पद्मलेश्या अने शुक्ललेश्यामा समुच्चय जीव, तिर्यंच पचेंड्रिय, मनुष्य अने वैमानिक प्रत्येकमा ३ जांगा पूर्वोक्त ॥ अलेशी जीव अने सिद्धमां ३ जांगा पूर्वोक्त ॥ मनुष्यमा ६ जांगा पूर्वोक्त ॥ इति पांचमु लेश्याद्वार संपूर्ण ॥ ५ ॥

हवे ६ छु दृष्टिद्वार कहे छे ॥ समदृष्टि, समुच्चय जीव, सोळ दंडक अने सिद्ध भगवान प्रत्येकमां ३ भांगा पूर्ववत् ॥ त्रण विकलेंद्रिय प्रत्येकमां ६ भागा पूर्ववत् ॥ मिथ्यादृष्टि, समुच्चय जीव, ओगणीश दंडकमा प्रत्येकमां ३ भांगा पूर्वोक्त ॥ पांच स्थावरमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ मिश्रदृष्टि, समुच्चय जीव, सोळ दंडक प्रत्येकमां ६ भांगा पूर्वोक्त ॥ इति दृष्टिद्वार संपूर्ण ॥ ६ ॥ हवे सातमु संयतिद्वार कहे छे ॥ समुच्चय संयति, समुच्चय जीव अने मनुष्यमा ३ भांगा पूर्वोक्त ॥ असंयति समुच्चय जीवना ओगणीश दंडकमा ३ भांगा ॥ पांच स्थावर असंयति आश्री सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ संयता संयति, समुच्चय जीव, तिर्यंच पंचेंद्रिय अने मनुष्य प्रत्येकमां त्रण भांगा पूर्वोक्त ॥ नोसंयतिनोअसंयतिनोसंयतासंयति समुच्चय जीव ने सिद्धमां प्रत्येकमां ३ भांगा पूर्वोक्त ॥ इति संयतिद्वार संपूर्ण ॥ ७ ॥ हवे आठमु कषायद्वार कहे छे ॥ सकषाय समुच्चय जीव ने ओगणीश दंडकमा प्रत्येकमां ३ भांगा पू० ॥ पांच स्थावरमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ क्रोधकषायी आश्री समुच्चय जीव ने पांच स्थावरमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ देवता

श्राश्री तेर दन्मकमा प्रत्येकमा ६ नागा पूर्ववत् ॥ शेप नरकादि ठ दन्मकमा प्रत्येकमा ३ नागा पूर्ववत् ॥ मानकपायी, मायाकपायीमा समुच्चय जीव ने पांच स्यावरमा क्रोध कपायी माफक ॥ नारकी अने देवता श्राश्री तेर दन्मकमा ६ नांगा पूर्ववत् ॥ शेप पाच दन्डकमा ३ नागा पु० ॥ लोजकपायी समुच्चय जीव अने पांच स्थावर प्रत्येकमां क्रोधवत् ॥ नारकीमां ६ नागा पूर्ववत् ॥ १० दन्मकमां प्रत्येकमा ३ नांगा ॥ अकपायी समुच्चय जीव, मनुष्य अने सिद्धमां प्रत्येकमां ३ नांगा ॥ इति कपायद्वार सपूर्ण ॥ ७ ॥ हवे नवमु नाणद्वार कहे ठे ॥ समुच्चय ज्ञानी, समुच्चय जीव, सोल दन्मक अने सिद्ध नगवान प्रत्येकमां ३ नागा पूर्ववत् ॥ त्रण विकलेंड्रिय प्रत्येकमां ६ नागा पूर्ववत् ॥ एम सिद्ध वर्जीने मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी पण १ए दन्मकमा कहेवा ॥ अवधिज्ञानी, समुच्चय जीव अने सोले दन्मक प्रत्येकमां ३ नागा ॥ मन पर्यव ज्ञानी अने केवल ज्ञानी, समुच्चय जीव अने मनुष्यमा प्रत्येकमां ३ नांगा पुर्ववत् ॥ समुच्चय अज्ञानी, मति अज्ञानी अने श्रुत अज्ञानी, समुच्चय जीव अने १ए दन्मक प्रत्येकमां ३ नांगा पूर्ववत् ॥ पाच स्यावरमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ विनग

ज्ञानी, समुच्चय जीव अने सोल दंरुक प्रत्येकमां ३ जांगा पूर्ववत ॥ इति नाणद्वार सपूर्ण ॥ ए ॥ हवे १० मु जोगद्वार कहे छे ॥ सजोगी, समुच्चय जीव, ओघिक प्रथम द्वारवत् ॥ मनजोगी, समुच्चय जीव अने सोल दंरुक ॥ वचन जोगी, समुच्चय जीव ने १ए दंरुक ॥ अने कायजोगी, समुच्चय जीव ने १ए दंडक ॥ प्रत्येकमा ३ जांगा पूर्ववत् ॥ पांच स्थावरमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ अजोगी, समुच्चय जीव अने सिद्धमां ३ जागा ॥ मनुष्यमां ६ जांगा अलेशीवत् ॥ इति योगद्वार सपूर्ण ॥१०॥ हवे ११ मु उपयोगद्वार कहे ठे ॥ सागारोवउत्ता अने अणागारोवउत्ता, समुच्चय जीव अने पाच स्थावरमां सप्रदशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ शेष १ए दंरुक अन सिद्ध आश्री प्रत्येकमां ३ जागा पूर्ववत् ॥ इति उपयोगद्वार सपूर्ण ॥ ११ ॥ हवे १२ मु वेदद्वार कहे ठे ॥ सवेदी, समुच्चय जीव ने चोवीश दंरुकमां सकपायवत् ॥ स्त्रीवेदी, समुच्चय जीव ने पदर दंरुक, पुरुष वेदी, समुच्चय जीव ने १५ दंरुक, प्रत्येकमां ३ जांगा पूर्ववत् ॥ नपुंसक वेदी, समुच्चय जीव अने ठ दंरुक प्रत्येकमा ३ जागा पूर्ववत् ॥ पांच स्थावरमा सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ अवेदी, समुच्चय जीव, मनुष्य अने

सिद्ध अकषायवत् ॥ इति वेदद्वार सपूर्ण ॥ १२ ॥ हवे १३ मु शरीरद्वार कहे छे ॥ सशरीरी, समुच्चय जीवने २४ दण्डक ओघिक प्रथम द्वारवत् ॥ उदारिक शरीर आश्रि समुच्चय जीवने पांच स्थावरमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ शेष पांच दंडकमां प्रत्येकमां उदारिक शरीर आश्री ३ जांगा पूर्ववत् ॥ वैक्रेय शरीर आश्री, समुच्चय जीवने वाउकायमां सप्रदेशी घणा, अप्रदेशी घणा ॥ शेष सोल दण्डकमां प्रत्येकमां ३ जांगा ॥ आहारक शरीर आश्री समुच्चय जीवने मनुष्यमां ६ जागा पूर्ववत् ॥ तेजस कार्मण शरीर आश्री समुच्चय जीवने चोवीश दण्डक ओघिक प्रथम द्वारवत् ॥ अशरीरी, समुच्चय जीवने सिद्धमा ३ जांगा ॥ इति शरीरद्वार सपूर्ण ॥ १३ ॥ हवे १४ मु पर्याप्तिद्वार कहे छे ॥ आहारप्रजा, शरीरप्रजा, इन्द्रियप्रजा अने श्वासोच्छ्वासप्रजा ए चार प्रजाना पर्याप्ता आश्री समुच्चय जीवने पाच स्थावरमा सप्रदेशी घणा, ने अप्रदेशी घणा ॥ शेष ओगणीश दण्डकमा प्रत्येकमा ३ जांगा पूर्ववत् ॥ जाषाप्रजा ने मनप्रजामां सज्ञीवत् ॥ आहारप्रजाना अपर्याप्ता अणाहारकवत् ॥ शरीरप्रजाना अपर्याप्ता, इन्द्रियप्रजाना अपर्याप्ता, श्वासोच्छ्वास प्रजाना अपर्याप्ता,

समुच्चय जीवने पांच स्थावरमां सप्रदेशी घणा अने अप्रदेशी घणा ॥ शेष नारकी देवताना १३ दण्डक अने मनुष्यमां ६ भांगा ॥ शेष प्रत्येकमां ३ भांगा ॥ भाषा मन अप्रजासा आश्रो समुच्चय जीव, ३ विकलेंद्रिय, तिर्यंच पचेंद्रिय प्रत्येकमां ३ भागा ॥ शेष नारकी, तेर दण्डक देवता अने मनुष्य प्रत्येकमां ६ भांगा पूर्ववत् ॥ १४ ॥ इति सप्रदेशी अप्रदेशीना बोल संपूर्ण॥ विशेष विस्तार सूत्र श्री भगवतीजी शतक ६ उदेशा चोथाथी जाणवो ॥ पण आमां ओछुं अधिकु विपरीत थयु होय तो मिच्छामि डुक्कड ॥ समेव सच्च निसक ज जिणेहिं पवेइय ॥

पढमापढमना बोल ॥

अथ श्री भगवती श० १८ माने उद्देशा १ साथी १४ द्वारे पढमापढमना बोल लख्या छे ॥

गाया ॥ जीवा १ हारग २ जव ३ सण्णि ४, लेस्सा ५ दिठि ६ सजय ७ कसाए ८ ॥

नाणे ए जोगु १० वओगे ११, वेए १२ य सरीर १३ पज्जत्ती १४ ॥ १ ॥

जो जेणपत्त पुवो, जावो सो तेण अपढमो होइ ॥

सेसेसु होइ पढमो, अपत्त पुवेसु जावेसु ॥ २ ॥

जावार्थ–जे जीव जे जाव पूर्वे पाम्यो ते जावे करी ते अप्रथम (अपढम) १ ॥ जे जाव पूर्वे नथी पाम्यो, ते जावने पामवु ते प्रथम (पढम) २ ॥

हवे पहेलु जीवद्वार कहे ठे ॥

एक वचन आश्री जीव, जीवजावे अप्रथम (अपढम) केमके जीवपणु तो ठे ज ॥ काइ नवु पामवु नथी, ते अपेक्षाए १ ॥ एवं नारकीथी मांमी वैमानिकना दंमक सुधी ते ते जावे अपढमपणु कहेवुं २५ ॥ सिद्ध, सिद्ध जावे पढम केमके सिद्धपणुं पूर्वे पाम्यो नथी, तेनु प्रथम पामवापणु थयु ते अपेक्षाए २६ ॥ ए एक वचन आश्रि २६ दंमक थया ॥ बहुवचन आश्रि कहे ठे ॥ जीवो, जीवजावे अपढम ॥ अपेक्षा पूर्ववत् समजवी १ ॥ एव

नारकीथी मांमी वैमानिकना दंमक सुधी, ते ते नामे अपढमपणु कहेवु २५ ॥ सिद्धो, सिद्ध नावे प्रथम, तेनी अपेक्षा पूर्ववत् समजवी २६ ॥ ए ५२ दंमके करी जीवद्वार सपूर्ण ॥ १ ॥

हवे बीजु आहारकद्वार कहे ठे ॥

एक वचन आश्रि एक आहारक जीव, आहारक नावे अपढम (अप्रथम) केमके आहारकपणु पूर्वे अनंति वार पाम्या ते अपेक्षाए १ ॥ एव नारकीथी मांमी वैमानिकना दंमक सुधी, ते ते नावे अपढमपणु कहेवु २५ ॥ ए एक वचन आश्रि २५ दंमक थया ॥ बहुवचन आश्रि पण २५ दंमक एज रीते जाणवा ॥ ए ५० दंमक थया ॥ सिद्धने अनाहारकपणु ठे माटे एक वचने बहुवचने पुठया नहि ॥ एक वचन आश्रि अनाहारक जीव, अनाहारक नावे काइ प्रथम (पढम) केमके सिद्धने अनाहारकपणानो नाव प्रथम प्राप्त थयो ठे ते अपेक्षाए ॥ कोइ अप्रथम (अपढम) केमके विग्रह गतिने विषे अनाहारकपणुं अनंति वार पाम्यो ते अपेक्षाए १ ॥ एव नारकीथी मांमी वैमानिकना दंमक सुधी ते ते

नावे एक अपढमज कहेवा केमके विग्रहगतिने विषे अनाहारकपणु अनंति वार पामयाथी २५ ॥ सिद्ध अनाहारकनावे प्रथम (पढम) केमके सिद्धने अनाहारकपणु प्रथम प्राप्त थयुं छे ते अपेक्षाए २६ ॥ ए एक वचन आश्रि २६ दंडक थया ॥ बहुवचन आश्रि २६ दंडक पूर्ववत् जाणवा ॥ ए ५२ दंडक थया ॥ एव आहारक अनाहारकना सर्व मळी १०२ दंडक थया ॥ इति आहारकद्वार संपूर्ण ॥ २ ॥

हवे त्रिजु भव्यद्वार कहे छे ॥

एक वचन आश्रि भव्यसिद्धिक जीव, भव्यसिद्धिक भावे अपढम (अप्रथम) केमके भव्यनु भव्यपणु अनादि छे, माटे भव्यपणे प्रथम (पढम) नहि, एम अभव्य सिद्धिकपणु पण अपढम ज जाणवु १ ॥ एव नारकीथी मांडी वैमानिकना दंडक सुधी, ते ते भावे अपढम कहेवा २५ ॥ एव बहुवचने पण २५ दंडक अपढम ज कहेवा ॥ एव ५० दंडक थया ॥ एव ५० दंडक अभव्यसिद्धिकना पण कहेवा ॥ नोभव्यसिद्धिकनोअभव्यसिद्धिकना जीव नोभव्यसिद्धिकनोअभव्यसिद्धिकने भावे पढम (प्रथम), नो

नव्यसिद्धिकनोअनव्यसिद्धिकपणानु प्रथम पामवापणु ठे ते अपेक्षाए १ ॥ एव सिद्धना दंमकमां पण ते नावने पामवा आश्रिमां पढमपणुं कहेवु ॥ एकेक वचने २, एव बहु वचने पण २ दंमक जाणवा ॥ एवं ४ दंमक थया ॥ सर्व मळी १०४ दंमक थया ॥ इति नव्यद्वार संपूर्ण ॥

हवे चोथु सन्नीद्वार कहे ठे ॥

एक वचन आश्रि सन्नी जीव, सन्नी नावे अपढम (अप्रथम) केमके सन्नीपणु पूर्वे अनंति वार पाम्यो ते अपेक्षाए १ ॥ एव नारकीथी मांमी, ५ स्थावर, ३ विगलेंडियना ए ७ दंमक वर्जिने वैमानिकना दंमक सुधी, ते ते नावे अपढमपणु कहेवु १७ ॥ ए एक वचन आश्रि १७ दंमक थया, एवं बहु वचन पण १७ दंमक अपढम, एव ४३ दंमक थया ॥ असन्नी जीव, असन्नीनावे अपढम (अप्रथम) १ ॥ एव नारकीथी मांमी वाणव्यतर सुधी, ते ते नावे अपढम कहेवा ॥ ज्योतिषी वैमानिकमां असन्नी उपजे नहि, माटे असन्नीपणु लाने नहि, तेथी ए २ दंमक वर्जवा ॥ ए एक वचन आश्रि २३ दंमक थया ॥ एवं बहु

वचने पण २३ दंडके अपढमपणुं कहेवु, ए ४६ दंडक थया ॥ नोसज्ञीनोअसज्ञी जीव, नो सज्ञीनोअसज्ञी जावे पढम (प्रथम) केमके ए जावनुं प्रथम पामवापणु ठ, ते अपेक्षाए १ ॥ मनुष्यने सिद्धमां पण पढम (प्रथम) पणु ज छाजे ॥ ए ३ दंडक एक वचने थया ॥ एम बहु वचन आश्रि पण त्रणे दंडके प्रथमपणुज कहेवु ॥ ए ६ दंडक ॥ सर्व मळीने ७९ दंडक थया ॥ ए सज्ञीद्वार संपूर्ण ॥ ४ ॥

हवे पांचमु लेश्याद्वार कहे ठे ॥

एक वचन आश्रि सलेशी जीव, सलेशी जावे अपढम केमके पूर्वे सलेशीपणानु अनंति वार पामवु थयु ठ, ते अपेक्षाए १ ॥ नारकीथी मांडी वैमानिक सुधीमां, ते ते जावे अपढमपणु होय २५ ॥ ए एक वचन आश्रि २५ दंडक, एम बहु वचन आश्रि पण २५ दंडके अपढमपणुं लाजे ॥ ए ५० दंडक थया ॥ एम समुच्चय कृष्णलेशी जीव, कृष्णलेशी जावे अपढम १ ॥ नारकीथी मांडी वाणव्यंतर सुधी, २२ दंडके पण अपढम ॥ ए २३ दंडक एक वचनना, एम २३ बहु वचनना दंडक, सर्व मळी कृष्णलेशीना ४६ दंडक ॥ एम नीललेशीना

४६ ॥ कापातना ४६ ॥ तेजुलेशीना एक वचने १ए दंमक, बहु वचने १ए, एव ३० दंमके अपढमपणु ॥ पद्मलेशीना ४ दंमक एक वचने ४ ॥ बहु वचने ४ ॥ एवं ८ दंमके अपढमपणु ॥ शुक्ललेशीना पण ८ दंमके अपढमपणु कहेवु ॥ अलेशी जीव, अलेशी जावे पढम (प्रथम) केमके अलेशीपणानु प्रथम पामवापणु ठे, ते अपेक्षाए १ ॥ एव मनुष्य ने सिद्धमां पण पढमपणु ॥ ए एक वचने ३ दंमक, एम बहु वचने ३ दंमके प्रथमपणुं, ए ६ दंमक थया ॥ एव २४० दंमक सर्व मळीने थया ॥ इति लेश्याद्वार संपूर्ण ॥ ५ ॥

हवे ठठुं दृष्टिद्वार कहे ठे ॥

एक वचन आश्रि समदृष्टि जीव, समदृष्टि जावे कोइ प्रथम, ते कोइ समदृष्टिपणु प्रथम पाम्यो ते अपेक्षाए ॥ कोइ अपढम, ते तेणे प्रतिपतित (पमवा) थी समदृष्टिपणुं फरीथी लाध्यु ते अपेक्षाए १ ॥ एव नारकीथी मांमी ५ स्थावर वर्जिने वैमानिक सुधी, प्रथम सम्यक्त्वना लाजे करी, प्रथम द्वितीयादि लाजे करी अपढम २० ॥ सिद्ध समदृष्टिजावे प्रथम १ ॥ ए २१ दंमक एक वचनना थया ॥ एव २१ दंमक बहु वचनना, ते समदृष्टिजावे प्रथम,

प ४२ दण्डक थया ॥ मिथ्यादृष्टि जीव, मिथ्यादृष्टिभावे अपढम १ ॥ एव नारकीथी वैमानिक सुधी अपढम कहेवा २५ ॥ ए एक वचनना २५ दण्डक, एव बहु वचन आश्रि पण २५ दण्डक, एव ५० दण्डक थया ॥ समामिथ्यादृष्टि जीव, समामिथ्यादृष्टिभावे एक वचने, समुच्चय जीवने सोल दण्डक, सिय पढम, सिय अपढम ॥ पढम केमके नवी दृष्टि पामवापणु छे तेथी १ ॥ एव नारकीथी मांडी, ५ स्थावर, ३ विगलेंद्रिय, ए ८ दण्डक वर्जि १६ दण्डके प्रथमपणुं, ए १७ दण्डक एक वचनना, ने १७ दण्डक बहु वचनना, ए ३४ दण्डके सिय पढम, सिय अपढमपणु ॥ सर्व मळी १२६ दंडक थया ॥ इति दृष्टिद्वार संपूर्ण ॥ ६ ॥

हवे सातमु सयतद्वार कहे छे ॥

एक वचन आश्रि सयत जीव, सयतभावे कोइ प्रथम, कोइ अपढम, अपेक्षा समदृष्टिवत् १॥ मनुष्य सयत भावे कोइ पढम, कोइ अपढम २॥ ए एक वचने २ दण्डक, एव बहुवचन आश्रि बे दण्डके अपढमपणु कहेवु ॥ ए ४ दंडक थया ॥ असयत जीव, असयत भावे अपढम, असयतपणु अनती वार पाम्यो ते अपेक्षाए १ ॥ एव नारकीथी मांडी वैमानिक

सुधी, २४ दंडक ते ते भावे अपढमपणु कहेवु २५ ॥ ए २५ दंडक एक वचन आश्रि, एव २५ दंडक बहुवचन आश्रि अपढम जाणवा ॥ ए ५० दंडक थया ॥ सयतासयति आश्री समुच्चय जीव, तिर्यच पचेंद्रिय अने मनुष्य ३ दंडक एक जीव आश्री, तेम त्रण दंडक घणा जीव आश्री ॥ एम ६ ए दंडक थया ॥ सयतासयतो भाव आश्री, सिय प्रथम सिय अप्रथम भावना समदृष्टिवत् ॥ नासयतनोअसयत जीव, नोसयतनोअसयत भावे पढम केमके एनु प्रथम पामवापणु ठे ते अपेक्षाए ॥ सिद्धमां पण एज रीते पढमपणु कहेवु ॥ ए एक वचन आश्रि २ दंडक ॥ एव बहु वचन आश्रि बे दंडके प्रथमपणु कहेवु ॥ सर्व मळीने ६४ दंडक थया ॥ इति सयतद्वार सपूर्ण ॥ ७ ॥

हवे आठमु कषाय द्वार कहे ठे ॥

एक वचन आश्रि सकषायी जीव, सकषाय भावे अपढम केमके सकषायपणाने अनादिपणु ठे तेथी १ ॥ नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी सकषाय भावे अप्रथम २५ ॥ ए एक वचनना २५ दंडक ॥ एव बहु वचन आश्रि पण २५ दंडके ते ते भावे अपढमपणुं कहेवुं ॥

ए ५० दरुक थया ॥ एव क्रोधकपायीना ५० दरुक ॥ मानकपायीना ५० दरुक ॥ माया कपायीना ५० दरुक ॥ लोजकपायीना ५० दरुक॥ सर्वत्र अपढमपणु कहेवु ॥ अकपायी जीव, अकपायी नावे कोइ पढम, ते यथाख्यात चारित्रनो प्रथम लाज पामवाथी ॥ कोइ अपढम, ते यथाख्यात चारित्रनो द्वितीयादि लाज पामवाथी १ ॥ एव मनुष्य १ ॥ ते ते नावे कोइ पढम, कोइ अपढम जाणवा २॥ सिद्ध, अकपायी नावे पढम जाणवा, केमके सि द्धपणाने अनुगत अकपायनावनु प्रथम पामवापणुं ठे तेथी ३ ॥ ए ३ दरुक एक वचन आश्रि॥ एव बहु वचन आश्रि ३ दरुके पूर्वोक्त एक वचननी रीते ज्यां जे लाजे त्यां ते कहेवुं ॥ एव ६ दरुक थया ॥ सर्व मळी २५६ दरुक थया॥ इति कपायद्वार सपूर्ण ॥ ० ॥

हवे नवमु ज्ञानद्वार कहे ठे ॥

एक वचन आश्रि ज्ञानी जीव, ज्ञाननावे कोइ पढम, केमके कोइ ज्ञानीपणानो लाज प्रथम पामे ते अपेक्षाए ॥ कोइ अपढम (अप्रथम) केमके कोइ पडिवाइपणाथी ज्ञाननो लाज फरीथी पाम्यो ते अपेक्षाए १ ॥ एव नारकीथी मांडी ५ स्थावर वर्जिने वैमानिक

सुधी, ज्ञानभाव पढम अपढमपणु कहेवु २० ॥ सिद्ध ज्ञानभावे पढम, केमके प्रथम ज्ञान पामराथी २१ ॥ ए एक वचन २१ दंडक ॥ एव बहु वचन २१ दंडक, पण पूर्वोक्त रीत जाणजो ॥ ए ४२ दंडक थया ॥ एव मतिज्ञानना ४० दंडक, ते पूर्वोक्तमांथी सिद्धना एक वचन ने बहु वचन आश्रिना २ दंडक वर्जना ॥ एव श्रुतज्ञानना ४० दंडक पण ए रीते जाणवा ॥ एव अवधिज्ञानना एक वचने बहु वचन ३४ दंडक, ते पूर्वोक्त ४० थी, ३ विगलेंद्रियना एक बहु वचने ६ दंडक वर्ज्या, ते दंडके पढम अपढमपणु पूर्ववत् जाणवु ॥ एव मन पर्यव ज्ञानना एक बहु वचन ४ दंडके पण एमज जाणवुं ॥ केवलज्ञानी, ते ते भावे एक बहु वचने ६ दंडके पूर्ववत् जाणवु ॥ अज्ञानी अज्ञानभावे अपढम, अपेक्षा अनादि काळथी अज्ञाननु पामवापणु छे ते अपक्षाए १ ॥ एव नारकीथी वेमानिक सुधी, ते ते भावे अपढमपणु थाने २५ ॥ ए एक वचनना २५ दंडक ॥ एव बहु वचन आश्रि २५ दंडक एमज जाणवा ॥ एव ५० दंडक थया ॥ एमज मतिअज्ञानीना एक बहु वचने ५० दंडक जाणवा ॥ एव श्रुतअज्ञानना पण, एक बहु वचने ५० दंडके पूर्ववत् जाणवु ॥ विभंगज्ञानना

३४ दरुके ते, ५ स्थावर, ३ विगलेंद्रियना एक वचनना १६ दरुक वर्जिने अपढमपणु होय ॥ सर्व मळीने ३५० दडक थया ॥ इति ज्ञानद्वार सपूर्ण ॥ ए ॥

हवे दशमु जोगद्वार कहे छे ॥

एक वचन आश्रि सयोगी सयोगीजावे अपढम, अनादि काळथी ए जावनु पामवापणु छे ते अपेक्षाए १ ॥ एव नारकीथी मारूी वैमानिक सुधी ते ते जावे अपढमपणु कहेवु २५ ॥ ए एक वचने २५ दरुक ॥ एव बहु वचन आश्रि पण २५ दरुके अपढमपणु कहेवु ॥ ए ५० दरुक थया ॥ एव मनयोगीना एक वचने १७ दरुक, बहु वचने १७ दरुक, ए ३४ दरुके ते ते जावे अपढमपणु जाणवुं ॥ वचनजोगीना एक वचने २० दरुक ॥ बहु वचने २० दरुक ॥ ए ४० दरुके अपढमपणु कहेवु ॥ काययोगीने ५० दरुके ते ते जावे सयोगीनी परे कहेवु ॥ अजोगी जीव अजोगीजावे प्रथम, प्रथम प्राप्तनी अपेक्षाए १ ॥ एव मनुष्य सिद्धने जावे पढम, ए एक वचनना ३ दरुक ॥ एव बहु वचनना ३ दरुक, ए ६ दरुके पढमपणु कहेवु ॥ ए १०० दंरुक थया ॥ इति जोगद्वार सपूर्ण ॥ १० ॥

हवे अग्यारमु उपयोग द्वार कहे छे ॥

एक वचन आश्रि सागारोवउत्ता, सागारोवउत्ता जावे कोइ अपढम, केमके अनादि पणु छे ते अपेक्षाए ॥ कोइ पढम, केमके सागारने अणागार उपयोगे करी विशपित सिद्ध-पणाने प्रथम (पढम)पणानो ज जाव छे ते अपेक्षाए १ ॥ एम नारकीथी माण्डी वैमानिकना दण्डक सुधी अपढमपणु कहेवु २५ ॥ सिद्धमां पढम (प्रथम)पणु कहेवु, ओधिक अपेक्षा दण्डकवत् २६ ॥ एव बहु वचनना २६ दंडकपण पूर्वोक्त रीते जाणवा ॥ ए ५२ दण्डक थया ॥ एव अणागारोवउत्ताना ५२ दण्डके एक वचने बहु वचने पढम-अपढम पूर्वोक्त सागारो वउत्तानी रीते समजी लेवु ॥ सर्व मळी १०४ दण्डक थया ॥ इति उपयोग द्वार सपूर्ण ॥११॥

हवे १२ मु वेदद्वार कहे छे ॥

एक वचन आश्रि सवेदी जीव, सवेदी जावे अपढम, केमके अनादि काळथी एनो लाभ पामवाथी १ ॥ एवं नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी ते ते जावे अपढमपणु जाणवु २५ ॥ ए एक वचने २५ दण्डक ॥ एव २५ दण्डक बहु वचन आश्रि पण अपढम जाणवा ॥ ए ५०

दरुक थया ॥ एव स्त्रीवेदना एक बहु वचने ३२ दरुके ॥ एव पुरुषवेदना एक बहु वचने ३२ दरुके ॥ एव नपुंसकना २४ दरुके अपढमपणु कहेवु ॥ अवेदी जीव अवेदीजाव कोइ पढम, केमके अवेदी जावना प्रथम लाभ पामवाथी ॥ कोइ अपढम, केमके अवेदी जावनो द्वितीयादि लाभ पामवाथी १ ॥ एव मनुष्यने दरुके पण ते ते जावे पढम अपढमपणु जाणवु ॥ सिद्धमां अवेदीजावे, पढमपणु ज लाजे, द्वितीयादि लाभनो अभाव छे तेथी ॥ ए ३ दरुक एकवचनना, एव ३ दरुक बहुवचनना पण जाणवा ॥ ए ६ दरुक थया ॥ सर्व मळी १४४ दरुक थया ॥ इति वेदद्वार संपूर्ण ॥ १२ ॥

हवे १३ मु शरीरद्वार कहे छे ॥

एक वचन आश्रि सशरीरी जीव, सशरीरी भावे अपढम, अनादिकाळथी एतो लाभ पामवाथी ॥ एम नारकीथी मांडी वैमानिकना दरुक सुधी ते ते भावे अपढमपणुं कहेवु २५ ॥ ए एकवचनना २५ दरुके ने बहुवचनना २५ दरुके ते ते भावे अपढमपणु जाणवु ॥ ए ५० दरुक थया ॥ एव उदारिक शरीरना एक बहुवचने २२ दरुके ॥ एवं वैक्रेयना एक बहु

चरमाचरमना बोल ॥

अथ श्री भगवती शतक १८ मा ने उद्देशा पहेलाथी चरमाचरमना बोल लिख्यते ॥ गाथा ॥ जीवा १ हारग २ भव ३ सण्णि ४, लेस्सा ५ दिठी य ६ संजय ७ कसाए ८ ॥ नाणे ९ जोगु १० उवओगे ११, वेएय १२ सरीर १३ पज्जत्ती १४ ॥ १ ॥

इहां प्रथम जीवद्वार कहे छे ॥ एकवचन आश्रि जीव, जीवभावे अचरम, केमके जीवपणानो नाश नथी ते अपेक्षाए १ ॥ एवं नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी, ते ते भावे कोइ चरम, केमके नरकादिथी नीकल्याने सिद्धगमनथी फरी नरकादिने विषे जावु नथी ते अपेक्षाए १॥ कोइ अचरम ते पूर्वोक्तथी विपरीत २५ ॥ एव सिद्ध, सिद्धभावे अचरम, केमके सिद्धपणानो नाश नथी ते अपेक्षाए ॥ ए २६ दंडक एक वचनना, एव २६ दंडक बहुवचनना, ए ५२ दंडक थया ॥ इति प्रथम जीवद्वार १ ॥ हवे बीजु आहारकद्वार कहे छे ॥ आहारक जीव, आहारक भावे कोइ चरम, केमके फरीथी आहारकपणु न पामशे, सिद्ध-

गमनथी, ते अपेक्षाए ॥ कोइ जीव अचरम १ ॥ नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी, ते ते जाव कोइ चरम, केमके—नरकादिपणे फरी आहारकपणु न पामशे, ते अपेक्षाए ॥ कोइ अचरम । फरीथी नरकादिपण आहारकपणु पामवाथी २५ ॥ ए २५ दंमक एकवचनना, एव बहुवचनना २५ दंमक, एव ५० दंमक थया ॥ अनाहारक जीव अनाहारकपणे अचरम, केमक अनाहारकपणाने अनाशपणु छे तेथी १॥ एव नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी अनाहारकजावे कोइ चरम, केमके नरकादिपणे फरी अनाहारकपणु न पामशे ते अपेक्षाए, कोइ अचरम २५॥ सिद्ध अनाहारकपणे अचरम, अनाहारकपणानो नाश नथी ते अपेक्षाए २६ ॥ ए एक वचनना २६ दंमक, एव बहु वचनना २६ दंमक ॥ सर्व मळी ५२ दंमक थया ॥ इति आहारक द्वार ॥ २ ॥ हवे त्रिजु जव्यद्वार कहे छे ॥ जव्यसिद्धिक जीव, जव्यसिद्धिक जावे चरम, केमके मोक्षगमनथी ते जावनो नाश थवाथी १ ॥ एवं नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी, ते ते जावे कोइ चरम, सिद्धपणु पामसे करी॥ कोइ अचरम २५ ॥ ए २५ दंमक एकवचने, ने २५ बहुवचने, एव ५० दंमक थया ॥ अजव्यसिद्धिक

जीव, अभव्यसिद्धिक भावे अचरम, अभव्यनो भव्यपण अभाव छे तेथी १ ॥ एव नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी ते ते भावे अचरम २५ ॥ ए २५ दंडक एक वचनना, ने २५ बहु वचनना, ए ५० दंडक थया ॥ नोभव्यसिद्धिकनोअभव्यसिद्धिक जीव, नोभव्यनो अभव्य भावे अचरम, केमके तने सिद्धपणु छे तेथी ॥ वळी सिद्धपणाना पर्यायनु अनपगम (अनाश) पणु छे तेथी १ ॥ एव सिद्धने पण जाणवु २ ॥ ए २ दंडक एकवचने, २ दंडक बहुवचने, एम ४ दंडक थया ॥ सर्व मळी १०४ दंडक थया ॥ इति भव्यद्वार ३ ॥ हवे चोथु सज्ञीद्वार कहे छे ॥ सज्ञी जीव, सज्ञीभावे कोइ चरम, कोइ अचरम, युक्ति आहारकवत् ॥ एव नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी त ते भावे कोइ चरम, कोइ अचरम १७ ॥ ए एकवचने १७ दंडक, बहुवचने १७ दंडक, सर्व मळी ३४ दंडक थया ॥ असज्ञी जीव, असज्ञीभावे कोइ चरम, कोइ अचरम १ ॥ एव नारकीथी मांडी वाणव्यतर सुधी जाणवु २३ ॥ ए एकवचने २३, बहुवचन २३, सर्व ४६ दंडक थया ॥ नोसज्ञीनोअसज्ञी जीव, नोसज्ञीनोअसज्ञीभावे अचरम १ ॥ मनुष्य ते ते भावे चरम, केमके मनुष्यने केवलीपणे

फरी मनुष्यपणानो अभाव ठे तेथी १॥ सिद्ध ते ते जावे अचरम, केमके ते जावना पर्यायनु (अनपगम) अनाशपणु ठे तेथी ३ ॥ ए ३ एकवचने, ३ बहुवचने, एव ६ दरूक थया ॥ सर्व मळी ७६ दरूक थया ॥ इति सञ्जीद्वार ॥ ४ ॥ हवे पांचमु लेश्याद्वार कहे ठे ॥सलेशी जीव,सलेशी जावे कोइ चरम, केमके जे निर्वाण पामशे ते सलेशीपणाना चरम, कोइ अचरम १ ॥ एव नारकीथी मांफी वैमानिक सुधी कोइ चरम, कोइ अचरम २५ ॥ ए एकवचनना २५ ॥ बहुवचनना २५ ॥ सर्व मळी ५० दरूक थया ॥ एव कृष्णलेशीना एक बहुवचने ४६ दरूके ॥ नीललेशीना ४६ दरूके॥ कापोतलेशीना ४६ दरूके॥ एव तेजु लेशीना एक बहुवचने ३७ दंरूके ॥ पद्मलेशीना एक बहु वचने ७ दरूके ॥ शुक्ललेशीना एक बहुवचन ७ दरूके ॥ सर्वत्र काइ चरम कोइ अचरम ॥ अलेशी जीव, अलेशीजावे अचरम १॥ मनुष्य ते ते जावे चरम, अपेक्षा नोसञ्जीनाअसञ्जीवत् २ ॥ सिद्ध ते ते जाव अचरम, केमके ते जावना पर्यायनु अनाशपणुं ठे तेथी २ ॥ ए ३ एकवचने, ते ३ बहुवचने, ६ दरूक थया ॥ सर्व मळी २४७ दरूक थया ॥ इति लेश्याद्वार ॥ ५ ॥ हवे ठहु दृष्टिद्वार कहे ठे ॥

समदृष्टि जीव समदृष्टि जावे अचरम केमके समदृष्टिथी पमतो ठते पुनर्जावे अचरमपणु ॥ नारकीथी मांमी वमानिक सुधी ते ते जावे अचरमपणु २१ ॥ सिद्ध ते त जावे अचरम अपळ्याथीज २२, प एकवचनना २२, ने बहुवचनना २२, सर्व मळी ४४ दमक थया ॥ मिथ्यादृष्टि जीव ते ते जावे कोइ चरम, कोइ अचरम, अपेक्षा आहारकवत् १ ॥ एव नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी ते ते जावे कोइ चरम, कोइ अचरम् २५ ॥ प एकवचनना २५, ने बहुवचनना २५, सर्व मळी ५० दमक थया ॥ समामिथ्यादृष्टि जीव ते ते जावे कोइ चरम, कोइ अचरम १ ॥ एवं नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी ते ते जाव कोइ चरम, कोइ अचरम १७ ॥ प एकवचनना १७ दंमक, ने १७ दमक बहुवचनना प ३४ दमक थया ॥ सर्व मळी १२६ दमक थया ॥ इति दृष्टिद्वार॥६॥ हवे सातमुं सयतद्वार कहे ठे ॥ सयत जीव, सयतजावे कोइ सिद्धगमनथी चरम, कोइ अचरम १ ॥ एम मनुष्य कोइ चरम, कोइ अचरम २ ॥ प एकवचनना २ दमक, ने बहु वचनना २, एव ४ दमक ॥ असयत जीव, असयत जावे कोइ चरम, कोइ अचरम १ ॥

एव नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी ते ते नावे कोइने चरमपणु, कोइने अचरमपणु जाणवु २५ ॥ ए एक वचनना २५, ने बहुवचनना २५, ए ५० दंमक थया ॥ सयतासयत जीव, सयतासयत नावे कोइ चरम, ने कोइ अचरम १ ॥ तिर्यंच ते ते नावे पूर्ववत् २ ॥ मनुष्य ते ते नावे पूर्ववत् ३ ॥ ए एकवचने ३, ने बहुवचने ३, एवं ६ दंमक थया ॥ नोसयतनोअसयत जीव, ते ते नावे अचरम, केमके सिद्धने सिद्धपणाना पर्यायनु अनपगम (अनाश) पणु छे तेथी १ ॥ एव सिद्धपणु एमज जाणवुं २ ॥ ए एकवचनना २, ने बहुवचनना २, एव ४ दंमके अचरमपणु ॥ सर्व मळीने ६४ दंमक थया ॥ इति सयतद्वार ॥ ७ ॥ हवे आठमु कषाय द्वार कहे छे ॥ सकषायी जीव, सकषाय नावे कोइ चरम, कोइ अचरम १ ॥ नारकीथी मांमी वैमानिक सुधी ते ते नावे कोइ चरम, कोइ अचरम २५ ॥ एव एकवचने २५, ने बहुवचने २५, सर्व मळी ५० दंमक थया ॥ एव क्रोधकषायीने ५० दंमके ॥ एवं मानकषायीने ५० दंमके ॥ मायाकषायीने ५० दंमके ॥ लोजकषायीने ५० दंमके कोइ चरम, कोइ अचरम ॥ अकषायी जीव, अकषाय नावे अचरम १ ॥ मनुष्य ते ते नावे

कोइ चरम, केमके अकषायीपणे युक्त मनुष्यपणाने जे वळी फरी नहि पामे, ते अपेक्षाए ॥ कोइ अचरम, केमके जे फरीने पामशे ते अपेक्षाए २ ॥ सिद्ध ते ते जावे अचरम ३ ॥ एक वचने ३ दंडक, बहु वचने ३ दंडक, एव ६ दंडक ॥ सर्व मळीने ११६ दंडक थया ॥ इति कषाय द्वार ॥ ७ ॥ हवे नवमु ज्ञान द्वार कहे छे ॥ ज्ञानी, ज्ञानी जावे अचरम, केमके ज्ञानथी अपकवे पुनर्जावे अचरमपणु छे माटे १ ॥ एव नारकीथी मांकी वैमानिक सुधी ते ते जावे कोइ चरम, केमके ज्ञानयुक्त नारकीपणादि पुनर्लाजना अजावथी ॥ कोइ अचरम २० ॥ सिद्ध त ते जावे अचरम, केमके अक्षीण ज्ञानजाव छतोज होय ते अपेक्षाए २१ ॥ ए एक वचनना २१, ने बहुवचनना २१, एव ४२ दंडक थया ॥ एव मतिज्ञानी ते ते जावे एक वचने, बहुवचने ४० दंडके ॥ श्रुत ज्ञानी ४० दंडके ॥ अवधिज्ञानी ३४ दंडके ॥ मन पर्यवज्ञानी ४ दंडके कोइ चरम, कोइ अचरम, केमके केवलज्ञानप्राप्तिए फरी मति ज्ञानादि न पामे ते अपेक्षाए चरम ॥ केवलज्ञानी ६ दंडके अचरम ॥ अज्ञानी जीव अज्ञान जावे कोइ चरम, केमके अज्ञानने फरी नहि पामे ते अपेक्षाए ॥ तेथी विपरीत जे

अज्ञव्य ते ज्ञानने नहि पामे ते अपेक्षाए कोइ अचरम १ ॥ एव नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी, ते ते जावे कोइ चरम, कोइ अचरम २५ ॥ ए एक वचनना २५, ने बहुवचनना २५, एव ५० दंडक थया ॥ एव मतिअज्ञानना एक बहुवचने ५० दंडके ॥ श्रुतअज्ञानना ५० दंडके ॥ विजंगज्ञानना ३४ दंडके कोइ चरम, कोइ अचरम ॥ सर्व मळीने ३५० दंडक थया ॥ इति ज्ञानद्वार ॥ ए ॥ हवे दशमु जोग द्वार कहे छे ॥ सजोगी जीव, सजोगजावे कोइ चरम, केमके अजोगपणु पामवानी अपेक्षाए ॥ कोइ अचरम १ ॥ एव नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी, ते ते जावे कोइ चरम, ने कोइ अचरम २५ ॥ ए एकवचने २५, ने बहुवचने २५, एव ५० दंडक थया ॥ एवं मनजोगीना एक बहुवचने ते ते जावे ३४ दंडके ॥ एव वचनजोगीना एक बहुवचने ते ते जावे ४० दंडके ॥ एव काययोगीना ५० दंडके कोइ चरम, कोइ अचरम ॥ अयोगी जीव, अयोगजावे अचरम १ ॥ मनुष्य ते ते जावे चरम, केमके मनुष्यने अयोगीपणे फरी मनुष्यपणानो अज्ञाव छे, ते अपेक्षाए २ ॥ सिद्ध ते ते जावे अचरम, केमके ते जावनु नाश थवापणु नथी, ते अपेक्षाए ३ ॥

ए एक वचनना ३, ने बहुवचनना ३, एव ६ दंडक थया ॥ सर्व मळी १७० दंडक थया ॥ इति जोगद्वार ॥१०॥ हवे ११ मु उपयोगद्वार कहे छे ॥ सागारोवउत्ता जीव, सागारोवउत्ता जावे अचरम, केमके ते जावनु अनाशपणु छे, ते अपेक्षाए १ ॥ एव नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी त ते जावे कोइ चरम, केमके नारकादिपणे फरी सागरोवउत्तापणु न पामशे, ते अपेक्षाए ॥ तेथी विपरीत कोइ अचरम ॥ २५ ॥ सिद्ध से ते जावे अचरम, केमके सागारोवउत्तापणानो नाश नथी, ते अपेक्षाए २६ ॥ ए एकवचने २६, ने बहुवचने २६ ॥ सर्व मळी ५२ दंडक थया ॥ एव अणागारोवउत्तानां पण ५२ दंडक, ते ते जावे सागारोवउत्तानी परे जाणवा ॥ सर्व मळी १०४ दंडक थया ॥ इति उपयोगद्वार ॥ ११ ॥ हवे १२ मु वेद द्वार कहे छे ॥ सवेदी जीव, सवेदी जावे कोइ चरम, केमके सवेदपणु फरीथी न पामे, ते अपेक्षाए ॥ कोइ अचरम ते फरीथी पामे ते अपेक्षाए १ ॥ एव नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी ते ते जावे कोइ चरम, कोइ अचरम, २५ ॥ ए एकवचने २५, ने बहुवचने २५, सर्व मळी ५० थया ॥ एव स्त्रीवेदना एक बहुवचने ३४ दंडके ॥ पुरुषवेदना

एक बहुवचने ३२ दरुके ॥ नपुसक वेदना २४ दरुके ॥ ते ते जावे कोइ चरम, कोइ अचरम ॥ अवेदी जीव, अवेदजावे अचरम १॥ मनुष्य अवेदजावे कोइ चरम, केमके अवेदपणे युक्त मनुष्यपणाने जे वळी फरी नहि पामे ते अपेक्षाए ॥ कोइ अचरम, केमके कोइ फरी पामशे से अपेक्षाए २ ॥ सिद्ध ते ते जावे अचरम ३ ॥ ए एक वचने ३, ने बहु वचने ३, एव ६ दरुक थया ॥ सर्व मळीने १४५ दरुक थया ॥ इति वेदद्वार ॥ १२ ॥ हवे १३ मु शरीरद्वार कहे छे ॥ सशरीरी जीव, सशरीरजावे कोइ चरम, केमके सिद्धगमनथी फरी शरीर नहि पामे, ते अपेक्षाए ॥ तेथी विपरीत कोइ अचरम १ ॥ एव नारकीथी मारुी वैमानिक सुधी, ते ते जावे कोइ चरम, केमके नारकादिपणे फरी शरीर नहि पामे, ते अपेक्षाए ॥ तेथी विपरीत कोइ अचरम २५ ॥ ए एक वचनना २५, ने बहुवचनना २५, एव ५० दरुक थया ॥ एवं उदारिक शरीरी ते ते जावे, एक बहुवचने ११ दरुके ॥ एव वैक्रेय शरीरी एक बहुवचने ते से जावे ३६ दरुके ॥ एव आहारक शरीरी ते ते जावे एक बहुवचने ४ दरुके ॥ एव तेजस् शरीरी ते ते जावे एक बहुवचने ५० दरुके ॥

एव कार्मण शरीरी ते त जाव एक बहुवचने ५० दरूके कोइ चरम, ने कोइ अचरम ॥ अशरीरी जीव, अशरीरजावे अचरम, केमके तेने सिद्धपणु छे तथी ते जावनुं अनाशपणु छे, त अपक्षाये १ ॥ ए एक वचने १, ने बहुवचने १, एव २ दरूक थया ॥ सर्व मळीने २१४ दरूक थया ॥ इति शरीरद्वार ॥ १३ ॥ हवे १४ मु पज्जत्तिद्वार कहे छे ॥ ५ पर्याप्तिए पर्याप्तिजीव पर्याप्तिजावे कोइ चरम, कोइ अचरम १ ॥ एव नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी, ते ते जावे कोइ चरम, ने कोइ अचरम २० ॥ ए एक वचनना २०, ने बहुवचनना २०, एवं ४० दरूक थया ॥ एव आहार पर्याप्तिना ते ते जावे एक बहुवचने ५० दरूके ॥ एव शरीर पर्याप्तिना एक बहुवचने ५० दरूके ॥ एव इन्द्रिय पर्याप्तिना ५० दरूके ॥ एव श्वासोच्छ्वास पर्याप्तिना ५० दरूके ॥ एव भाषा मनपर्याप्तिना ४० दरूके कोइ चरम, कोइ अचरम जाणवा ॥ ए २०० दरूक थया ॥ ५ अपर्याप्तिए अपर्याप्ति जीव, अपर्याप्तिजावे कोइ चरम, कोइ अचरम १ ॥ एव नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी, ते ते भावे कोइ चरम, कोइ अचरम २० ॥ ए एक वचनना २०, ने बहुवचनना २०, एवं ४०

दरुक थया ॥ एव आहार अपर्याप्तिना एक घट्ठु वचने ५० दरुके ॥ एवं शरीर अपर्याप्तिना ५० दरुके ॥ एव इन्द्रिय अपर्याप्तिना ५० दरुके ॥ एव श्वासोश्वास अपर्याप्तिना ५० दरुके ॥ एव भाषा मन अपर्याप्तिना ४० दरुके कोइ चरम, काइ अचरम ॥ सर्व मळीने ५६० दरुक थया ॥ इति पर्याप्तिद्वार ॥ १४ ॥ सर्व मळीने दरुक २५७४ थया ॥

गाथा ॥ जो ज पाविहिति पुणो, भाव सो तेण अचरिमो होइ ॥
अच्चंत विजोगो जस्स, तेण भावेण सो चरिमो ॥ १ ॥

भावार्थ—जे जे भावने फरीने पामे, ते ते भावे करी अचरम होय ॥ जे भावनो अत्यंत वियोग, ते तेणे भावे करी चरम होय ॥ १ ॥

॥ इति चरमाचरमना बोल संपूर्ण ॥

आहारक अनाहारकना बोल ॥

अथ श्री आहारक अनाहारकना बोल पन्नवणा पद २८ मांथी लख्या छे ॥

गाथा ॥ आहार १ भविय २ सन्नी ३, लेस्सा ४ दिठि ५ संजय ६ कसाए ७ ॥

नाण ८ जोग ए वओगे १०, वेदे य ११ सरीर १२ पजत्ति १३ ॥ १ ॥

हवे प्रथम आहार द्वार कहे छे॥ समुच्चय जीव एक वचन आश्रि कोइ आहारक ने कोइ अनाहारक, ते विग्रह गतिने विषे तथा केवल समुद्घाते तथा १४ मे गुणठाणे तथा सिद्धपणे अनाहारक होयतेथी, एव नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी एक वचने जाणवु ॥ समुच्चय जीव बहु वचन आश्रि आहारक ने अनाहारक होय ते विग्रह गतिने विषे निगोद तथा सिद्ध अनाहारक घणा होवाथी ॥ नारकीना बहु वचन आश्रि ३ भांगा, ते आहारक घणा १ ॥ आहारक घणा ने अनाहारक एक २ ॥ ते नारकीमां १२ मुहूर्त्तनो विरह पडे, विग्रह गतिए कोइ वखते एक उपजवा आश्रि॥ आहारक घणा ने अनाहारक घणा, ते कोइ वखते विग्रह गतिए घणा जीव उपजे ते आश्रि॥ एव यावत् वैमानिक सुधी जाणवु॥ नवर एकेंद्रिय ५, समुच्चय ओघिकनी परे जाणवा ॥ १॥ हवे बीजु भव्य द्वार कहे छे॥ भव्यसिद्धिक एक वचन आश्रि आहारक अनाहारक, ते युक्ति पूर्ववत् ॥ एव नारकीथी मांडी वैमानिक सुधी जाणवु ॥ बहु वचन आश्रि भव्यसिद्धिकमां ओघिक ने एकेंद्रियना भंगक वर्जिने ३ भांगा ॥

एय अन्नव्यसिद्धिक एक वचन आश्रि, बहु वचन आश्रिने जाणवु ॥ नोजव्यनोअ
जव्यसिद्धिक एक वचन आश्रि एक अनाहारक ॥ एव सिद्ध पण बहु वचन आश्रि अना
हारक ॥ २ ॥ हवे त्रिजु सन्नी द्वार कहे छे ॥ एक वचन आश्रि सन्नी जीव, कोइ आहार
क, ने कोइ अनाहारक, विग्रह गतिनी अपेक्षाए ॥ सन्नीनु आयु वेदवाथी सन्नी शेष काल
आहारक, यावत् वैमानिक सुधी ॥ बहु वचन आश्रि सन्नीने विषे ३ भांगा, वैमानिक
सुधी ॥ असन्नी जीव, एक वचन आश्रि कोइ आहारक, कोइ अनाहारक ॥ एव नारकी
थानए वाणव्यतर सुधी ॥ बहु वचन आश्रि असन्नी जीव, आहारक ने अनाहारक घणा,
एक भांगा ॥ असन्नी नारकी बहु वचन आश्री ६ भांगा ॥ एव १० भवनपतिमा, ६ एकेंद्रि
यमा अभंगक ॥ ३ विगलेंद्रिय, तिर्यच पचेंद्रियमा ३ भांगा ॥ मनुष्य वाणव्यतरमा ६ भांगा ॥
नोसन्नीनोअसन्नी मनुष्य, सिद्धमा एक वचने आहारक ने अनाहारक ॥ बहु वचने नो
सन्नीनोअसन्नीमां आहारक, ने अनाहारक समुद्घात आश्री घणा ॥ मनुष्यमा ३ भागा ॥
सिद्धो अनाहारक घणा ॥ ३ ॥ हवे चोथु लेश्याद्वार कहे छे ॥ सलेशी तथा सलेशी नारकी

थी मांडी वैमानिक सुधी, एक वचने कोइ आहारक, कोइ अनाहारक॥ बहु वचन आश्री स लेशी, कृष्ण नील कापात लेशीमां समुच्चय ने एकेंद्रियना ५ दंडक वर्जिने, बीजामां ३ भागा लाभे॥ बहु वचन आश्रि तेजु लेश्यामा पृथ्वी पाणी वनस्पतिमा ६ भांगा, बीजा देवलोक सुधीना देवनु तेमा आगमन छे माटे ॥ शेष जीवोमा भांगा ३ लाभे ॥ जेने तेजुलेश्या होय तेने ३ भांगा, शेषने नहि ॥ पद्म शुक्ल लेश्या तिर्यंच पंचेंद्रिय, मनुष्य, वैमानिकने विषे होय ॥ एक वचन आश्रि आहारक, बहु वचन आश्रि भांगा ३ ॥ अलेशी जीव तथा मनुष्य तथा सिद्ध एक वचन बहु वचने अनाहारक ॥ ४ ॥ हवे पांचमु दृष्टि द्वार कहे छे ॥ समदृष्टि जीव कोइ आहारक, कोइ अनाहारक ॥ ३ विगलेंद्रिय समदृष्टिमा ६ भांगा ॥ सिद्ध अनाहारक ॥ शेषमां भांगा ३ लाभे ॥ मिथ्यादृष्टिमां समुच्चय जीवने एकेंद्रिय वर्जिने, शेषमां ३ भागा ॥ समामिथ्यादृष्टि जीव, आहारक एकेंद्रिय, ३ विगलेंद्रिय वर्जिने, वैमानिक सुधीमां एक बहु वचने आहारक ज होय ॥ ५ ॥ हवे छठु संयति द्वार कहे छे ॥ संजति मनुष्य ने समुच्चय जीव कोइ आहारक, कोइ अनाहारक, बहु वचने ३ भांगा ॥ असंजति

एक वचने कोइ आहारक, कोइ अनाहारक ॥ बहु वचने समुच्चय जीवने एकेंद्रिय वर्जिने, शेषमा ३ नागा ॥ सजतासजति समुच्चय जीव, पचेंद्रिय तिर्यंच ने मनुष्यमा एक बहु वचने आहारक ॥ नासयतना असयतनोसयतासयत समुच्चय जीवने सिद्ध एक बहु वचने अनाहारक ॥ ६ ॥ हवे सातमु कषाय द्वार कहे छे ॥ सकषायी जीव कोइ आहारक, कोइ अनाहारक, एम वैमानिक सुधी, बहु वचने समुच्चय जीवने एकेंद्रिय वर्जिने, शेषमा ३ नांगा ॥ क्रोध कषायी जीवाने विषे एमज जाणवु ॥ नवर देवमा ६ नांगा केमके देवमा स्वनावथी लोन्न बहु होय, क्रोधादि बहु न होय तेथी, क्रोध कषायी एक पण लाने छे तेथी ॥ मान कषायी माया कषायी देव नारकीने विषे ६ नांगा, शेषमा समुच्चय जीवने एकेंद्रिय वर्जिने त्रण नांगा लाने ॥ लोन्न कषायी नारकीमा ६ नांगा, शेषमा जीव एकेंद्रिय वर्जिने ३ नांगा लाने ॥ अकषायी नोसन्नीनोअसन्नीनी परे जाणवा ॥ ७ ॥ हवे आठमु ज्ञान द्वार कहे छे ॥ ज्ञानी एक वचने समदृष्टिनी परे, मतिज्ञानी श्रुत ज्ञानी, ३ विगलेंद्रियमा ६ नांगा, शेषमा ३ नांगा ॥ अवधिज्ञानी एक वचने तेमज बहुवचने तिर्यंच पचेंद्रिय आहा

रक ते पचेंद्रिय तिर्यंचने विग्रहगतिने विषे नहि, त्यारे तेने गुण प्रत्ययथी अवधिनो संजव गुणना असजवथी नहि ॥ वळी अव्रति पतित अवधिदेव अथवा मनुष्य तिर्यंचने विषे उपजे तेथी, अवधिज्ञानी उतां तिर्यंचने अनाहारकनो योग न होय, शेष स्थानकने विषे ५ एकेंद्रिय, ३ विगलेंद्रिय वर्जितने विषे एकेक प्रते जांगा ३ ॥ तिर्यंच पचेंद्रिय आहारक, शेष जीवादिने विषे ३ जांगा, जेने अवधिज्ञान होय तेने विषे ॥ मन पर्यवज्ञान मनुष्यने तथा समुच्चय दंडके होय ॥ एक बहुवचने आहारक, विग्रह गत्यादि अवस्थाने विषे मनःपर्यवज्ञाननो संजव नथी माट ॥ केवलज्ञानी, नोसन्नीनोअसन्नीवत्, केवळज्ञान चिंतवणाने विषे त्रण पद, सामान्यथी जीवपद १, मनुष्य २, सिद्ध ३, सामान्यथी जीवपदे मनुष्यपदे आहारक तथा अनाहारक ॥ सिद्धपदे अनाहारक ॥ बहुवचने सामान्यथी जीवपदे आहारक पण अनाहारक पण ॥ मनुष्यपद ३ जांगा पूर्वे देखाड्या, ते सिद्धपदे अनाहारक, पण समुच्चय अज्ञानी, मति श्रुत अज्ञानी, एकवचन पूर्ववत् ॥ बहुवचने जीवपद एकेंद्रिय पृथ्व्यादिने विष आहारक अनाहारक, शेषने विषे ३ जांगा ॥ विजंगज्ञानीने विषे एक

बहुवचने तिर्यच पर्चेंद्रिय, मनुष्य आहारक, विभंग ज्ञान सहितन विग्रह गतिए ॥ तिर्यंच पर्चेंद्रिय मनुष्यने विषे उत्पत्तिनो असजव छे माटे॥ शेष स्थाने एकेंद्रिय विगलेंद्रिय वर्जितने विषे जांगा ३ ॥ ८ ॥ हवे नवमु योग द्वार कहे छे॥ सयोगीने विषे समुच्चय जीवने, एकेंद्रिय वर्जिने, शेषमां ३ जांगा ॥ मनयोगी वचनयोगी समामिथ्यादृष्टिनी परे, नवर वचनयोगी ३ विगलेंद्रियने, कायजोगने विषे समुच्चय जीवने एकेंद्रिय वर्जिने, शेषमा जांगा ३ ॥ अजोगी जीव मनुष्य, सिद्ध, अनाहारक ॥ए॥ हवे दशमु उपयोगद्वार कहे छे ॥ साकार अनाकार उपयोगने विषे जीव एकेंद्रिय वर्जिने, शेषमां जांगा ३॥ सिद्ध अनाहारक ॥ १० ॥ हवे अग्यारमु वेद द्वार कहे छे॥ सवेदने विषे समुच्चय जीवने, एकेंद्रिय वर्जिने, शेषमां ३ जांगा ॥ स्त्री पुरुषवेदने विषे एकवचने तेमज बहुवचने जीवादिने विषे एकेक प्रते ३ जांगा ॥ नपुसक वेदने विषे जीव एकेंद्रिय वर्जिने त्रण जांगा ॥ जीवमा एकेंद्रिय आहारक घणा अनाहारक घणा, अवेदी जेम केवळी, एक बहुवचने, जीवपदे मनुष्य पदे एकवचने आहारक, कोऽ अनाहारक, बहुवचने जीवपदे आहारक पण, अनाहारक पण, मनुष्यने विषे जांगा ३ ॥ सिद्धने विषे तो अनाहारक ॥ ११ ॥ हवे बारमु शरीर द्वार

कहे छे ॥ सशरीरन विप समुच्चय जीवने एकेंद्रिय वर्जि, शेपमां ३ नांगा ॥ उदारिक शरीरन विपे समुच्चय जीवने मनुष्यने विपे ३ नागा ॥ शेपने विपे आहारक अनाहारक नहि ॥ वैक्रेय आहारक शरीरी एक घहुवचने आहारक अनाहारक नहि, जेने वैक्रेय आहारक सत्रवे तेज जाणवा, बीजा नहि ॥ नारकी, नवनपति, वाउकाय, तिर्यंच पचेंद्रिय, मनुष्य, व्यतर, ज्योतिप, वैमानिकने विपे आहारक नहि ॥ मनुष्यने विपे होय ॥ तैजस् कार्मण शरीरने विपे एकवचने कोइ आहारक, कोइ अनाहारक, बहुवचने समुच्चय जीवने एकेंद्रियने विपे अनगक ॥ शेपमां ३ नागा ॥ अशरीरी सिद्धमां जीवने, सिद्धमां एक बहुवचने अनाहारक ॥ १२ ॥ हवे तेरमुं पर्याप्तिद्वार कहे छे ॥ प्रथम ४ आहारादि पर्याप्तिने विपे समुच्चय जीवने, मनुष्यने विपे ३ नागा ॥ शेप आहारक नापा मन पर्याप्ति पचेंद्रियने होय, बीजान न होय ॥ आहारक पर्याप्तिए अपर्याप्ते अनाहारक एक ने बहु वचने ॥ शरीर पर्याप्तिए अपर्याप्त कोइ आहारक, कोइ अनाहारक ॥ उपरनी ४ पर्याप्तिए अपर्याप्त नारकी, देव मनुष्यने विपे ६ नागा ॥ समुच्चय जीवने एकेंद्रिय वर्जिने शेपने विपे ३ नागा ॥ नापा, मन पर्याप्तिने विपे समुच्चय जीवने पंचेंद्रिय तिर्यंचमां नागा ३ ॥ नारकी देव

मनुष्यने विषे ६ भांगा ॥ सर्व पदे ए एक बहुवचने जीवादि दंडक कहेवो॥ जेने जे होय ते पुछवु, जेने जे न होय ते न पुछवु ॥ यावत् भाषा मन पर्यासिये अपर्यास नारकी देव मनुष्यने विषे ६ भांगा ॥ शेषने विष ३ भागा ॥ १३ ॥

॥ इति आहारक अनाहारकना बोल सपूर्ण ॥

बधिशतकना बोल ॥

अथ श्री भगवती शतक २६ मांथी बधिशतकना बोल लिख्यते ॥

गाथा ॥ जीवा य १ लेस्स २ पक्खिय ३, दिठ्ठि य ४ नाण ५ अनाणे ६ ॥

सण्णा य ७ वेय ८ कसाय ए, जोगु १० वओग ११ एगारस ठाणाइ ॥ १ ॥

ए ११ द्वारनी गाथा कही ॥ हवे ११ उद्देशानी गाथा कहे छे ॥

अणतरोववन्नादि चत्तारि ४, परपरोववन्नादि तहेवय ४ ॥

उहिया १ चरिमा चरिमे य २, इह एगारस उद्देशा ॥ १ ॥

समुच्चय दंडकथी मांडी चोवीसे दंडकमां जे ठकाणे जेटला बोल लाभे तेनो यत्र आ प्रमाणे—

२५ दंडकनां नाम	समुच्चय जीव १	लेश्या ८	पक्ष २	दृष्टि ३	ज्ञान ६	अज्ञान ४	संज्ञा ५	वेद ५	कषाय ६	योग ५	उपयोग २	सर्व मळी ४७
समुच्चय दंडकमां	१	८	२	३	६	४	५	५	६	५	२	४७
७ नारकीना १ दंडकमां	१	४	२	३	६	४	६	२	५	४	२	३५
१० भवनपति,१६वाणव्यंतर, ए २७ दंडकमां	१	५	२	३	४	४	४	३	५	४	२	३७
ज्योतिषी,१ २देवलोक सुधीमा	१	२	२	३	४	४	४	३	५	४	२	३६
३ थी १२ देवलोक सुधीमां	१	२	२	३	४	४	४	२	५	४	२	३३
९ ग्रैवेयकमां	१	२	२	३	४	४	४	२	५	६	२	३०
५ अनुत्तर विमानमां	१	२	१	१	४	०	६	२	५	६	२	२६
पृथ्वी,पाणी,वनस्पति ए ३ दंडकमां	१	५	२	१	०	३	४	२	५	२	२	२७
तेउ,वाउ ए बे दंडकमां	१	४	२	१	०	३	६	२	५	२	२	२६
३ विगलेंद्रियना ३ दंडकमां	१	६	२	२	३	३	४	२	५	३	२	३१
तिर्यंच पंचेंद्रियना दंडकमां	१	७	२	३	४	४	६	४	५	८	२	४०
मनुष्यना दंडकमां	१	८	२	३	६	६	५	५	६	५	२	४७

हवे बधीना ४ ज्ञांगा कहे ठे ॥ बंधी, बधइ, बधिस्सइ—बांधतो हवो, बांधे ठे, बांधशे १ ॥ बंधी, बंधइ, न बंधिस्सइ—बांधतो हवो, बांधे ठे, बांधशे नहि २॥ बधी, न बधइ, बधिस्सइ, बांधतो हवो, बांधतो नथी, बांधशे ३ ॥ बधी, नबधइ, नबंधिस्सइ—बांधतो हवो, बांधतो नथी, बांधशे नहि ४ ॥ ए बधी त्रण काल श्राश्रि ठे, तेमा प्रथम पापकर्म (श्रशुज कर्म) बांधवा श्राश्रि २५ दंमकमां जे जे बोल लाजे तेमां कोण २ ज्ञांगा लाज्ञे ते कहे ठे ॥ समुच्चय जीवमा ४७ बोल लाज्ञे, तेमां समुच्चय जीव १ ॥ सलेशी २ ॥ शुक्ललेशी ३ ॥ शुक्लपक्षी ४ ॥ समदृष्टि ५ ॥ सनाणी ६ ॥ मतिज्ञानीश्रादि ज्ञानी ४ ॥१०॥ नोसन्नावउत्ता ११ ॥ श्रवेदी १२ ॥ सकपायी १३ ॥ लोज्ञ कषायी १४ ॥ सजोगी १५ ॥ मनजोगी १६ ॥ वचन जोगी १७ ॥ कायजोगी १८ ॥ सागारोवउत्ता १९ ॥ श्रणागारो वउत्ता २० ॥ ए २० बोलमां ४ ज्ञांगा लाजे ॥ श्रलेशी १ ॥ केवली २ ॥ श्रजोगी ३ ॥ ए ३ बोलमा एक चोथो ज्ञागो लाजे ॥ श्रकपायीमां २ ज्ञांगा लाजे ॥ त्रीजो ने चोथो ॥ शेष बोल २३ रह्या, तेमां पहेलो ने बीजो ए २ ज्ञागा लाज्ञे ॥ नारकोथी मारूी मनुष्य वर्जि वैमानिक सुधी २३ दंमकमां

जे जे ठेकाणे जेटला जेटला बोल लाभे, तेमां पहेलो बीजो ए २ जांगा लाभे॥ मनुष्यमां समुच्चय जीवनी परे जांगा उतारवा ॥ हवे ज्ञानावरणीय १ ॥ दर्शनावरणीय २ ॥ नाम ३ ॥ गोत्र ४ ॥ अंतराय ५ ॥ ए ५ कर्मनो जेगो अधिकार कहे छे ॥ समुच्चय जीवमां ४७ बोल लाभे, तेमां समुच्चय जीव १ ॥ सलेशी २ ॥ शुक्ललेशी ३ ॥ शुक्लपक्षी ४ ॥ समकितदृष्टि ५ ॥ सनाणी ६ ॥ मत्यादि ४ ज्ञानी १० ॥ नोसन्नाउवउत्ता ११ ॥ अवेदी १२ ॥ सजोगी १३ ॥ त्रण जोगी १६ ॥ सागारोवउत्ता १७ ॥ अणागारोवउत्ता १८ ॥ ए १८ बोलमां ४ जांगा लाभे ॥ अलेशी १ ॥ अजोगी २ ॥ केवली ३ ॥ ए ३ मां एक चोथो जांगो लाभे ॥ अकषायीमां त्रीजो ने चोथो बे जांगा लाभे ॥ शेष बोल २५ रह्या, तेमां पहेलो ने बीजो भांगो लाभे ॥ हवे मनुष्य वर्जिने २३ दंडकना सर्व बोलमां पहेलो ने बीजो ए २ जांगा लाभे ॥ मनुष्यमां समुच्चय जीवनी परे जांगा उतारवा ॥ हवे वेदनीय कर्म आश्रा आश्रि कहे छे ॥ समुच्चय जीवमा ४७ बोल लाभे, तेमां समुच्चय जीव १ ॥ सलेशी २ ॥ शुक्ललेशी ३ ॥ शुक्लपक्षी ४ ॥ समकितदृष्टि ५ ॥ सनाणी ६ ॥ केवलज्ञानी ७ ॥ नोसन्ना-

मउत्ता ७ ॥ अवेदी ए ॥ अकषायी १० ॥ सागारोवउत्ता ११ ॥ अणागारोवउत्ता १२ ॥ ए १२ बोलमां ३ नांगा लाने त्रिजो नागो वर्जिने ॥ त्रिजो नागो वेदनीय कर्मना बंध आश्रि मूलथी ढे ज नहि ॥ अलेशी १ ॥ अजोगी २ ॥ ए २ मां १ चोथो नांगो लाने ॥ शेष ३३ बोल रह्या, तेमा पहेलो ने बीजो बे नांगा लाने ॥ नारकीथी मांमी मनुष्य वर्जिने २३ दंमकमा पहेलो ने बीजो बे नांगा लाज ॥ मनुष्यना दंमकमां समुच्चय जीवनी परे नांगा जाणवा ॥ मोहनीय कर्मनो विस्तार ओघिक अशुभ कर्मनी परे जाणवो ॥ हवे आयुष्य कर्म बांधवा आश्रि कहे ढे ॥ समुच्चय जीवमां ४७ बोल लाने, तेमां अलेशी १ ॥ केवली २ ॥ अजोगी ३ ॥ ए ३ मां एक चोथो नांगो लाने ॥ समामिथ्यात्वदृष्टि १ ॥ अवेदी २ ॥ अकषायी ३ ॥ ए त्रणमा त्रीजो ने चोथो ए बे नांगा लाने ॥ कृष्णपक्षीमां पहेलो ने त्रीजो ए २ नांगा लाने ॥ मनःपर्यव ज्ञानी १ ॥ नोसन्नावउत्ता २ ॥ ए २ मां १–३–४ ए ३ नांगा लाने ॥ शेष ३० बोल रह्या तेमां चार नांगा लाने ॥ नारकीमां कृष्ण पक्षी १ ॥ कृष्णलेशी २ ॥ ए २ मां पहेला ने त्रीजो ए २ नांगा लाने ॥ समामि

प्यात्व दृष्टिमा त्रीजो ने चोथो ए २ जांगा लाजे ॥ शेष ३१ मां ४ जांगा लाजे ॥ हवे दश जवनपति ॥ वाणव्यंतर ॥ ज्योतिषी ॥ वैमानिक ॥ १२ देवलोक ॥ ए ग्रैवेयकमां ॥ कृष्णपक्षीमां पहेला ने त्रीजो ए २ जांगा लाजे ॥ समामिथ्यात्व दृष्टिमा त्रिजो ने चोथो ए २ जांगा लाजे, पण एटलुं विशेष जे ए ग्रैवेयकमां समामिथ्यात्व दृष्टि नथी ॥ शेष जेटला जेटला बोल जे जे ठेकाणे रह्या, तेमा ४ जांगा लाजे ॥ चार अनुत्तर विमानमां २६ बोल लाजे, तेमां ४ जांगा लाजे ॥ सर्वार्थसिद्धमां २-३-४ ए ३ जांगा लाजे ॥ पृथ्वी १ ॥ पाणी २ ॥ वनस्पतिमा २७ बोल लाजे तेमां कृष्णपक्षीमा १-३ ए २ जांगा लाजे, तेजुलेशीमा १ त्रिजो जांगो लाजे, शेष २५ बोलमां ४ जांगा लाजे ॥ तेउ वाउमां बोल २६ लाजे, तेमां पहेलो ने त्रिजो ए २ जांगा लाजे ॥ त्रण विगलेंद्रियमा बोल ३१ लाजे, तेमा समदृष्टि १ ॥ ज्ञान ३ ॥ ए ४ बोलमां एक त्रिजो जांगो लाजे, शेष २७ बोलमा १-३ ए २ जांगा लाजे ॥ तिर्यंच पचेंद्रियमां बोल ४० लाजे, तेमां कृष्णपक्षीमां १-३ ए २ जांगा लाभे ॥ समामिथ्यात्वदृष्टिमां त्रिजो ने चोथो

ए २ नांगा लाभे ॥ समदृष्टि १ ॥ ज्ञान ४ ॥ ए ५ बोलमां १—३—४ ए ३ नांगा लाभे, शेष बाल ३३ मा ४ नांगा लाभे ॥ मनुष्यमां ४७ बोल लाभे ॥ तेमां अलेशी १ ॥ केवली २ ॥ अजोगी ३ ॥ ए ३ मां एक चोथो नांगो लाभे ॥ कृष्णपक्षीमा १—३ ए २ नांगा लाभे ॥ समामिथ्यात्वदृष्टि १ ॥ अवेदी २ ॥ अकषायी ३ ॥ ए ३ मा ३—४ ए २ नांगा लाभे ॥ समदृष्टि १ ॥ ज्ञान ५ ॥ नोसन्नावउत्ता ७ ॥ ए ७ बोलमां १—३—४ ए ३ नांगा लाभे ॥ शेष ३३ बोलमा ४ नांगा लाभे ॥ इति प्रथम ओधिक उद्देश समाप्तः ॥ १ ॥ हवे अनतरोववन्नगादि ४ उद्देशा कहे छे ॥ अनतरोववन्नगा ते एक समय उपज्यान थयो होय ते १ ॥ अनतरोगाढगा ते एक समय आकाश क्षेत्र स्पर्शीने थयो होय ते २ ॥ अननरोहारगा ते एक समय आहार लीधाने जेने थयो होय ते ३ ॥ अणतरपज्जत्तगा ते एक समय प्रजा बांध्याने जेने थयो होय ते ४ ॥ ए ४ उद्देशा ११ द्वार २५ दंडक ए अधिकारे करी बतावे छे ॥ पाप कर्म (अशुभ कर्म) बाधवा आश्रि समुच्चय जीवमां ४७ बोल लाभे, तेमाथी अलेशी १ ॥ समामिथ्यात्वदृष्टि २ ॥ मनःपर्यवज्ञान ३ ॥

केवलज्ञान ४ ॥ नासन्नावत्तत्ता ५ ॥ अवदी ६ ॥ अकषायी ७ ॥ मनजोगी ८ ॥ वचनजोगी ए ॥ अजोगी १० ए १० बोल प्रथम समये न होय ॥ शेष ३७ बोल रह्या, तेमां २ जांगा लाजे, ते पहेलो ने बीजो ॥ नारकीथी मांमी १२ देवलोक सुधीमां जे जे ठेकाणे जेटला जेटला बोल लाजे तेमांथी समामिथ्यात्वदृष्टि १ ॥ मनजोग २ ॥ वचनजोग ३ ॥ ए त्रण त्रण बोल वजवा, शेष जेटला जेटला बोल रह्या तेमा पहेला ने बीजो जांगो लाजे ॥ नव ग्रेवयक, पांच अनुत्तर विमानमां जेटला जेटला बोल लाजे, तेमाथी बे बे बोल वर्जवा ॥ मनजोग १ ॥ वचनजोग २ ॥ शेष जेटला २ बोल रह्या तेमा पहेलो ने बीजो जांगो लाजे ॥ पांच स्थावरमा जेटला बोल लाजे, तेमां बे जांगा लाजे ते पहेलो ने बीजो ॥ त्रण विगलें-द्रियमांथी १ वचनजोग वर्ज्यो, शेष ३० बोल रह्या तेमां बे जांगा लाजे, पहेलो ने बीजो ॥ तिर्यंच पंचेंद्रियमांथी ५ बोल वर्ज्या ॥ समामिथ्यात्वदृष्टि १ ॥ विजंगज्ञान २ ॥ अवधि ज्ञान ३ ॥ मनजोग ४ ॥ वचनजोग ५ ॥ शेष ३५ बोल रह्या तेमा २ जांगा लाजे, पहेलो ने बीजो ॥ मनुष्यमांथी ११ बोल वर्ज्या ॥ अलेशी १ ॥ समामिथ्यात्वदृष्टि २ ॥ विजंग-

ज्ञान ३ ॥ मनःपर्यवज्ञान ४ ॥ केवलज्ञान ५ ॥ नोसन्नावउत्ता ६ ॥ अवेदी ७ ॥ अकपायी ८ ॥ मनजोग ए ॥ वचनजोग १० ॥ अलेशी ११ ॥ शेष वोल २६ रह्या तेमां २ जागा लाने, पहेलो ने वीजो ॥ ए समुच्चय अशुनकर्म आश्रि कह्यु ॥ तेम ज्ञानावरणीय १ ॥ दर्शनावरणीय २ ॥ वेदनीय ३ ॥ मोहनीय ४ ॥ नाम ५ ॥ गोत्र ६ ॥ अतराय ७ ॥ ए ७ कर्मनो विचार ओधिकनी परे जाणवो ॥ हवे आयुष्यकर्म वांधवानो अधिकार कहे ठे ॥ मनुष्य वर्जि २३ दंडकमा जे जे वोल लाने ठे, ते ते सर्व वोलमा १ त्रिजो जागो लाने ॥ मनुष्यमा कृष्णपक्षी एक वोलमा त्रिजो जागो लाने ॥ शेष ३५ वोलमा २ जागा लाने ते त्रिजो ने चोथो ॥ ए रीते अनतरोववन्नगादि ४ उद्देशा जाणवा ॥ इति पाचमो उद्देशो समाप्त ५ ॥ हवे परंपरोववन्नगादि ४ उद्देशा कहे ठ ॥ परपरोववन्नगा ते घणा समय उपने थया होय ते १ ॥ परपरोगाढगा ते घणा समय आकाश क्षेत्र स्पर्शाने थया होय ते २ ॥ परपरोआहारगा ते घणा समय आहार लीधाने थया होय ते ३ ॥ परपरोपज्ञात्तगा ते घणा समय प्रजा वांध्याने थया होय ते ४ ॥ ए ४ उद्देशाना ११ द्वार, २५ दंडक, ए पापकर्मवधन अधि-

कार सर्व व्यक्तवता प्रथम ओघिक उद्देशानी परे जाणवी ॥ नवर पृथ्वी १ ॥ पाणी २ ॥ वनस्पति ३ ॥ ए ३ दरुकमां २६ बोल लाभे कहेवा ॥ एक तेजुलेस्या वर्जि, त्रण विगलेंद्रियमां २७ बोल लाभे कहेवा ॥ ते ३१ बोलमाथी समकितदृष्टि १ ॥ त्रण ज्ञान ४ ॥ ए ४ बोल वर्जवा ॥ ए ४ उद्देशा थया ॥ इति नवमो उद्देशो समाप्त ॥ ए ॥ हव दशमो चरमनो उद्देशो कहे ठ ॥ ए उद्देशाना ११ द्वार, २४ दरुक, ए पापकर्म बधनाधिकार सर्व व्यक्तवता प्रथम ओघिक उद्देशानी परे जाणवी ॥ नवर मनुष्यपदे आयुषनी अपेक्षाये सामान्यथी ४ भागा कह्या ठे, तेमा चरम मनुष्य आश्रि चोथो भांगो संभवे ठे ॥ एम न मानीए तो चरमपणुं न संभवे ॥ एम बीजे पण विशेष जाणवु ॥ इति दशमो चरम उद्देशो समाप्तः ॥ १० ॥ हवे ११ मो अचरमनो उद्देशो कहे ठे ॥ ए उद्देशाना, ए पापकर्म बधननो अधिकार, २४ दरुक, ११ द्वारथी बतावे ठे ॥ पापकर्म मोहनीय कर्म बांधवा आश्रि समुच्चय जीवमा ४४ बोल लाभे, ते ४७ बोलमांथी अलेशी १ ॥ केवलज्ञानी २ ॥ अजोगी ३ ॥ ए ३ बोल वर्ज्या ॥ ए ३ मे ठेल्लो भव करमापणु ठे माटे, ए ४४ बोलमां समु

म्वय जीव १ ॥ सलेशी २ ॥ शुक्कलेशी ३ ॥ शुक्कपक्षी ४ ॥ समकिती ५ ॥ ज्ञान ५ ॥ ए १० ॥ नोसन्नाव०त्ता ११ ॥ अवेदी १२ ॥ सकषायी १३ ॥ लोज्न कषायी १४ ॥ सजोगी १५ ॥ मनजोगी १६ ॥ वचनजोगी १७ ॥ कायजोगी १८ ॥ सागारोव०त्ता १९ ॥ अणागारोव०त्ता २० ॥ ए २० बोलमां १-२-३ ए ३ जांगा लाजे ॥ अकषायीमा एक त्रिजो जांगो लाजे ॥ शेष २३ बोल रह्या तेमा १ २ ए २ जांगा लाजे ॥ नारकीथी मांडी मनुष्य वर्जिने वैमानिकमां ठेठ ४ अनुत्तर विमान सुधीमा जे जे ठेकाणे जेटला जेटला बोल लाजे तेमा १-२ ए २ जांगा लाजे ॥ मनुष्यमा ४४ बोल लाजे, तेमा समुच्चय जीवनी परे जे जे बो लमां जे जे जांगा कह्या ठे ते ते जांगा कहेवा ॥ हवे आयुष्य वर्जिने ज्ञानावरणीयादि ५ कर्म बांधवा आश्रि समुच्चय जीवमां ४४ बोल लाजे ॥ तेमाथी पूर्वे २० बोल वर्ज्या हता तेमांथी सकषायी १ ॥ लोज्न कषायी २ ॥ ए २ बोल वर्ज्या, शेष १८ बोल रह्या तेमा १-२-३ ए ३ जांगा लाजे ॥ अकषायीमां १ त्रिजो जांगो लाजे, शेष २५ बोल रह्या तेमा १-२ ए २ जांगा लाजे ॥ नारकीथी मांडी ४ अनुत्तर विमान सुधीमा १-२

ए २ त्रागा लाभे ॥ मनुष्यमां समुच्चय जीवनी परे जाणवु ॥ हवे वेदनीय कर्म आश्रि समुच्चय जीवथी मांडी ४ अनुत्तर विमान सुधीमां जे जे ठेकाणे जेटला जेटला बोल लाभे छ, तेमा १–२ ए बे त्रागा लाभे ॥ हवे आयुष्य कर्म बांधवा आश्रि समुच्चय जीवमा ४४ बोल लाभे तेमांथी समामिथ्यात्व दृष्टि १ ॥ अवेदी २ ॥ अकषायी ३ ॥ ए ३ मा १ त्रिजो त्रांगो लाभे, शेष ४१ बोल रह्या तेमां १–३ ए बे त्रागा लाभे ॥ नारकीथी मांडी पृथ्वी, पाणी, वनस्पति, ३ विगलेंद्रिय, तथा मनुष्य वर्जिने वैमानिकमा ४ अनुत्तर विमान सुधीमा जे जे ठेकाणे जेटला जेटला बोल लाभे, तेमांथी एक समामिथ्यात्व दृष्टिमा एक त्रीजो त्रांगो लाभे, शेष बोल रह्या तेमा १–३ ए बे त्रांगा लाभे ॥ पृथ्वी, पाणी, वनस्पतिमां २७ बोल लाभे, तेमांथी एक तेजुलेशीमा त्रिजो त्रांगो लाभे, शेष २६ बोल रह्या तेमा १–३ ए बे त्रागा लाभे ॥ त्रण विगलेंद्रियमा ३१ बोल लाभे, तेमांथी समदृष्टि १ ॥ ज्ञान ३ ए ४ बोलमां एक त्रिजो त्रांगो लाभे ॥ शेष २७ बोल रह्या तेमा १–३ ए २ त्रांगा लाभे ॥ मनु

ज्यमा जे जे थोकमां जे ज नागा खाझे, ते समुच्चय जीवना दंमकनी परे उतारवा ॥ इति अगीयारमो अचरम उद्देशो समाप्त ॥ ११ ॥

इति बंधिशतकना बोल संपूर्ण ॥

समवसरणना बोल ॥

अथ श्री नगवती श० ३० मांथी समवसरणना बोल लिख्यते ॥

गाथा ॥ जीवाय १ लेस्स २ पक्खि य ३, दिठ्ठि य ४ नाण ५ अनाणे ६ ॥

सण्णाय ७ वेय ८ कसाय ९, जोग्गु १० वओगे ११ एगारस ठाणाइ ॥ १ ॥

ए ११ ठाणा, बोल ४७, दंमक २४ अने समुच्चय १, ए दंमक २५, उपर उतारवा, तेनो विचार कहे छे ॥

२५ दंडकना नाम	जीव	लेश्या	पक्ष	दृष्टि	ज्ञान	अज्ञान	संज्ञा	वेद	कषाय	जोग	उपयोग	सर्व
	१	८	२	१	६	४	५	५	६	५	२	४७
समुच्चय जीवमां	१	८	२	१	६	४	५	५	६	५	२	४७
७ नारकीमां	१	४	२	१	४	४	४	२	५	४	२	३५
१० भवनपति, १६ वाणव्यंतरमां	१	५	२	३	४	४	४	३	५	४	२	३७
ज्योतिषीथी, पहेला २ देवलोक सुधी	१	२	२	१	४	४	४	३	५	४	२	३४
३ मांथी १२ देवलोक सुधी	१	२	२	१	४	४	४	२	५	४	२	३३
९ ग्रैवेयकमां	१	२	२	२	४	४	४	२	५	४	२	३२
५ अनुत्तर विमानमां	१	२	१	१	४	०	४	२	५	४	२	२६
पृथ्वी, पाणी, वनस्पतिमां	१	५	२	१	०	३	४	२	५	२	२	२७
तेउ वाउमां	१	४	२	१	०	३	४	२	५	२	२	२६
३ विगलेंद्रियमां	१	४	२	२	३	३	४	२	५	३	२	३१
तिर्यंच पंचेंद्रियमां	१	७	२	३	४	४	४	३	५	४	२	४०
मनुष्यमां	१	८	२	१	६	४	५	५	६	५	२	४०

हवे समवसरण ४ ॥ क्रियावादी १ ॥ अक्रियावादी २ ॥ अज्ञानवादी ३ ॥ विनयवादी ४ ॥ ए ४ समवसरण उपर ४७ बोल उतारवा ॥ समुच्चय जीवमा बोल ४७ लाभे तेमां कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यादृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ॥ ए ७ बोलमा क्रियावादी वर्जिने ३ समवसरण लाभे, अने अलेशी १ ॥ समदृष्टि २ ॥ ज्ञान ६ ॥ एव ७ ॥ नोसंज्ञावउत्ता ९ ॥ अवेदी ॥ १० ॥ अकषायी ११ ॥ अजोगी १२ ॥ ए १२ बोलमां समवसरण १ क्रियावादीनु लाभे ॥ समामिथ्यात्व दृष्टिमां समवसरण २ लाभे ते अज्ञानवादी १ ॥ विनयवादी २ ॥ शेष बोल २७ मा समवसरण ४ लाभे ॥ ए पहेलु समुच्चयनु द्वार थयु ॥ १ ॥ हवे नारकीमां ३५ बोल लाभे तेमा कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यादृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ॥ ए ६ बोलमा क्रियावादी वर्जिने ३ समवसरण लाभे ॥ समदृष्टि १ ॥ ज्ञान ४ ॥ ए ५ बोलमा समवसरण एक क्रियावादीनु लाभे ॥ समामिथ्यात्व दृष्टिमा समवसरण २ लाभे ते अज्ञानवादी १ ॥ विनयवादी २ ॥ शेष बोल २३ रह्या तेमां समवसरण ४ लाभे ॥ ए नारकीनु बीजु द्वार थयु ॥ २ ॥ हवे भवनपति वाणव्यंतरमा ३७ बोल लाभे तेमा कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यात्व

दृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ॥ ए ६ बोलमां क्रियावादी वर्जिने ३ समवसरण लाभे ॥ समदृष्टि १ ॥
ज्ञान ४ ॥ ए ५ बोलमां १ क्रियावादीनु समवसरण लाभे ॥ समामिथ्यात्व दृष्टिमां समवसरण
बे लाभे ते अज्ञानवादी १ ॥ विनयवादी २ ॥ शेष २५ बोलमां समवसरण ४ लाभे ॥ ए
भवनपति वाणव्यतरनुं त्रीजु द्वार थयु ॥ ३ ॥ हवे ज्योतिषीने प्रथम २ देवलोकमां ३४
बोल लाभे तेमां पूर्वोक्त ६ बोलमां समवसरण ३ लाभे ॥ पूर्वोक्त ५ बोलमां समवसरण १
लाभे ॥ समामिथ्यादृष्टिमां अज्ञानवादी १ ॥ विनयवादी २ ॥ ए बे समवसरण लाभे ॥
शेष बोल २२ मां समवसरण ४ लाभे ॥ ए ज्योतिषीनु चोथु द्वार थयु ॥ हवे त्रिजा
देवलोकथी बारमा देवलोकसुधीमां ३३ बोल लाभे तेमां पूर्वोक्त ६ बोलमां तथा ५
बोलमां तथा समामिथ्यादृष्टिमां पूर्ववत् समवसरण लाभे ते उतारवा ने शेष २१ बोलमां
४ समवसरण लाभे ॥ ए ५ मु द्वार थयु ॥ हवे ९ ग्रैवेयकमां ३२ बोल लाभे तेमां पूर्वो
क ६ बोलमां तथा ५ बोलमां पूर्ववत् समवसरण लाभे ते उतारवा ॥ शेष २१ बोल रह्या
तेमां ४ समवसरण लाभे ॥ ए ६ ठुं द्वार थयु ॥ ६ ॥ हवे ५ अनुत्तर विमानमां २६

बोल लाभे तेमां समवसरण एक क्रियावादीनुं लाभे ॥ ए ७ मु द्वार थयुं ॥ ७ ॥ हवे
पृथ्वी पाणी वनस्पति ए ३ मा २७ बोल लाभे ते सर्वमा बे समवसरण लाभे ते अक्रिया
वादी १ ॥ अज्ञानवादी २ ॥ ए ८ मु द्वार थयु ॥ ८ ॥ हवे तेउ १ वाउ २ ए बेमा २६
बोल लाभे ते सर्वमां बे समवसरण लाभे ते पूर्ववत् ॥ ए ९ मु द्वार थयु ॥ हवे त्रण
विगलेंद्रियमा ३१ बोल लाभे ते सर्वमा २ समवसरण लाभे ते पूर्ववत् ॥ ए १० मु द्वार
थयु ॥ १० ॥ हवे तिर्यंच पंचेंद्रियमा ४० बोल लाभे तेमां ६ बोलमां ३ समवसरण लाभे
ते पूर्ववत् ॥ समदृष्टि १ ॥ ज्ञान ४ ॥ ए ५ बोलमां समवसरण १ क्रियावादीनु लाभे ॥
समामिथ्यात्वदृष्टिमां समवसरण २ लाभे ते पूर्ववत् ॥ शेष २८ बोल रह्या तेमा समवसरण
४ लाभे ॥ ए ११ मु द्वार थयु ॥ हवे मनुष्य पंचेंद्रियमा ४७ बोल लाभे तेमा पूर्वोक्त ६
बोलमां ३ समवसरण लाभे पूर्ववत् ॥ अलेशी १ ॥ समदृष्टि २ ॥ ज्ञान ६, ए ८ ॥ नोसन्नाव
उत्ता ९ ॥ अवेदी १० ॥ अकषायी ११ ॥ अजोगी १२ ॥ ए १२ बोलमां समवसरण
क्रियावादीनु लाभे ॥ समामिथ्यादृष्टिमां समवसरण २ लाभे ते पूर्ववत् ॥ शेष बोल २८ रह्या

तेमा समवसरण ४ लाभे ॥ प १२ मु द्वार थयु ॥ हवे आयुष्यना बंध आश्रि कहे छे ॥ समुच्चय जीवमा ४७ बोल लाभे तेमां कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यादृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ॥ प ६ बोलमां समवसरण ३ लाभे ॥ ते ४ गतिनु आयुष्य बांधे ॥ अलेशी १ ॥ अकषायी २ ॥ समामिथ्यादृष्टि ३ ॥ केवलनाणी ४ ॥ अवेदी ५ ॥ अजोगी ६ ॥ प ठ बोलवाळा आयुष्य बांधे नहि ॥ समदृष्टि १ ॥ ज्ञान ४ ॥ प ५ बोलवाळा बे गतिनु आयुष्य बांधे ते मनुष्य ने देवनु ॥ मनःपर्यवज्ञानी १ ॥ नोसन्नावउत्ता २ ॥ प २ बोलवाळा १ देवगतिनु आयुष्य बांधे ॥ कृष्ण १ ॥ नील २ ॥ कापोत ३ ॥ प ३ लेश्यामां समवसरण ४ लाभे तेमा क्रियावादी एक मनुष्य गतिनु आयुष्य बांधे ने शेष ३ समवसरणवाळा ४ गतिनु आयुष्य बांध ॥ तेजु १ ॥ पद्म २ ॥ शुक्ल ३ ॥ प ३ लेशीमा समवसरण ४ लाभे ॥ तेमां क्रियावादी मनुष्य ने देव प बे गतिनु आयुष्य बांधे ॥ शेष ३ समवसरणवाळा एक नारकी वर्जिने त्रण गतिनु आयुष्य बांधे ॥ शेष २२ बोल रह्या तेमां समवसरण ४ लाभे तेमा क्रियावादी मनुष्य ने देव प बे गतिनुं आयुष्य बांध अने नारकी देवता क्रियावादी होय ते मनुष्यनु आयुष्य बांधे ॥ शेष

३ समवसरणवाला ४ गतिनुं आयुष्य बांधे ॥ हवे नारकी भवनपति वाणव्यंतर ज्योतिषी तथा पहेला देवलोकथी मांडी आठमा देवलोक सुधीमां जे जे ठेकाणे जेटला जेटला बोल लाभे तेमा कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यादृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ॥ ए ६ बोलना होय ते, मनुष्य ने तिर्यंच ए २ गतिनु आयुष्य बांधे ॥ समदृष्टि १ ॥ ज्ञान ४ ॥ ए ५ बोलना होय ते १ मनुष्य गतिनु आयुष्य बांधे ॥ समामिथ्यादृष्टिवाळा आयुष्यना अबंधक, शेष बोल जेमा जेटला जेटला लाभे छे तेमा क्रियावादी एक मनुष्यगतिनुं आयुष्य बांधे ॥ शेष ३ समवसरणवाळा मनुष्य ने तिर्यंच ए बे गतिनु आयुष्य बांधे ॥ नवमा देवलोकथी मांडी सर्वार्थसिद्ध सुधीमां जे जे ठेकाणे जेटला जेटला बोल लाभे छे ते सर्वे समवसरणवाळा एक मनुष्यगतिनु आयुष्य बांधे ॥ समामिथ्यादृष्टिवाळा आयुष्यना अबंधक जाणवा ॥ ए ७ द्वार थयां ॥ ७ ॥ हवे पृथ्वी १ ॥ पाणी २ ॥ वनस्पति ३ ॥ ए ३ मा २७ बोल लाभे छे तेमां एक तेजुलेशी आयुष्यना अबंधक, शेष २६ बोलवाळा मनुष्य १ ॥ तिर्यंच २ ॥ ए बे गतिनु आयुष्य बांधे ॥ ए ८ मु द्वार थयु ॥ ८ ॥ हवे तेउ १ ॥ वाउ २ ॥ ए बेमां

२६ बोल लाभे ते सर्व १ तिर्यंच गतिनु आयुष्य बांधे ॥ ए ए मुं द्वार थयु ॥ ए ॥ हवे त्रण विगलेंद्रियमा ३१ बोल लाभे तेमां समकितदृष्टि १ ॥ ज्ञान २ ॥ ए ४ बोलवाळा आयुष्य न बांधे, शेष २७ बोलवाळा मनुष्य १ ॥ तिर्यंच २ ॥ ए बे गतिनु आयुष्य बांधे ॥ ए १० मु द्वार थयु ॥ १० ॥ हवे तिर्यंच पचेंद्रियमांहि ४० बोल लाभे तेमां कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यादृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ॥ ए ६ बोलवाळा ४ गतिनुं आयुष्य बांधे ॥ समदृष्टि १ ॥ ज्ञान ४ ॥ ए ५ बोलवाळा १ देवगतिनुं आयुष्य बांधे ॥ समामिथ्यात्वदृष्टि आयुष्य न बांधे ॥ शेष २७ बोल रह्या तेमां कृष्ण १ ॥ नील २ ॥ कापोत ३ ॥ ए त्रण लेश्यामां समवसरण ४ लाभे, तेमा जे क्रियावादी होय ते आयुष्य न बांधे ॥ शेष ३ समवसरणवाळा ४ गतिनु आयुष्य बांधे ॥ तेजु १ ॥ पद्म २ ॥ शुक्ल ३ ॥ ए त्रण लेश्यामां समवसरण ४ लाभे, तेमा जे क्रियावादी ते १ देवगतिनु आयुष्य बांधे ॥ शेष ३ समवसरणवाळा १ नारकीनु आयुष्य वर्जिने ३ गतिनु आयुष्य बांधे ॥ ए ११ मु द्वार थयु ॥ हवे मनुष्यमां ४७ बोल लाभे तेमां जे जे बोल आयुष्य बांधे न बांधे तेनो वर्णन समुच्चय जीवना आयुष्य

बाधवाना द्वारनी परे जाणवा ॥ नवर समुच्चय जीवमां प बोलमा मनुष्य अने देवतानुं आयुष्य बांधे ते ठेकाणे मनुष्य देवगति वैमानिकनु आयुष्य बांधे ॥ प १२ मु द्वार थयु ॥ हवे भव्य अभव्यनु द्वार कहे छे ॥ समुच्चय जीवमां ४७ बोल लाभे तेमा कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यादृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ प ६ बोलमा भव्य अभव्य बे होय ॥ अलेशी १ ॥ शुक्लपक्षी २ ॥ समदृष्टि ३ ॥ समामिथ्यादृष्टि ४ ॥ ज्ञान ६ ॥ एव १० ॥ नोसन्नावउत्ता ११ ॥ अवेदी १२ ॥ अकषायी १३ ॥ अजोगी १४ ॥ प १४ बोलमा एकला भव्य होय ॥ शेष २७ बोल रह्या तेमां जे क्रियावादी होय ते भव्य ज होय ॥ शेष ३ समवसरणवाळामा भव्य अभव्य ब होय ॥ नारकीथी मांडी १२ देवलोक सुधीमा कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यादृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ॥ प ६ बोलमा भव्य अभव्य बे होय ॥ समदृष्टि १ ॥ शुक्लपक्षी २ ॥ समामिथ्यादृष्टि ३ ॥ ज्ञान ४ ॥ एव ७ बोलमां एकला भव्य ज होय ॥ शेष बोल जे जे ठेकाणे जेटला जेटला लाभे छ तेमा समवसरण ४ लाभे, तेमां जे क्रियावादी ते निश्चये ज भव्य होय ॥ शेष ३ समवसरणवाळामां भव्य अभव्य बे होय ॥ नव ग्रैवेयकमा ३२ बोल

लाजे तेमा शुक्लपक्षी १ ॥ समदृष्टि २ ॥ ज्ञान ४ ॥ प ६ बोलमां निश्चय नव्य होय ॥ मिथ्यादृष्टि १ ॥ कृष्णपक्षी २ ॥ अज्ञान ४ ॥ प ६ बोलमां नव्य अनव्य बे होय ॥ शेष २० बाल रह्या तेमा समवसरण ४ लाजे, तेमां जे क्रियावादी ते निश्चये नव्य होय ॥ शेष ३ समवसरणवाळा ते नव्य अनव्य बे होय ॥ पांच अनुत्तर विमानमा २६ बोल लाजे ते सर्वे निश्चय नव्य होय ॥ पाच स्थावरमा शुक्लपक्षी एकला नव्य होय ॥ शेष २६ बोलमां नव्य अनव्य बे होय ॥ ३ विगलेंद्रियमा शुक्लपक्षी १ सम्यक्दृष्टि २ ज्ञान ३ प ५ बोलमां एकला नव्य होय ॥ शेष २६ बोलमा नव्य अनव्य बे होय ॥ तिर्यंच पचेंद्रियमां कृष्णपक्षी १ ॥ मिथ्यादृष्टि २ ॥ अज्ञान ४ ॥ प ६ बोलमां नव्य अनव्य बे होय ॥ समदृष्टि १ ॥ समामिथ्यादृष्टि २ ॥ शुक्लपक्षी ३ ॥ ज्ञान ४ ॥ प ७ बोलमां एकेला नव्य होय ॥ शेष २७ बोल रह्या तेमां समवसरण ४ लाजे, तेमा क्रियावादी एकला नव्य होय ॥ शेष ३ समवसरणवाळा तो नव्य अनव्य बे होय ॥ ११ ॥ हवे मनुष्यमा ४७ बोल लाजे तेमां जेटला जटला बोलमां नव्य अनव्यपणु जे जे ठेकाणे लाजे तेनो सर्वांग समुच्चय जीवनी परे जा

णवो ॥ ए १२ मुं द्वार थयुं ॥ इति समुच्चयनो प्रथम उद्देशो संपूर्ण ॥ १ ॥ हवे प्रथम समय उपन्या आश्रिना ४ उद्देशा कहे छे ॥ अणंतरोववणगा ते आंतररहित प्रथम समयना उपन्या १ ॥ अणंतरोगाढगा ते प्रथम समये जे क्षेत्र अवगाह्याते २ ॥ अणंतर आहारगा ते प्रथम समय आहार लीधाने थयो होय ३ ॥ अणंतरपज्जत्तगा ते एक समय प्रजा बांध्याने थयो होय ४ ॥ ए ४ प्रथम समयना होय तेने अणंतर कहीए ॥ हवे २५ दंडक १२ द्वार उपर उतारवा, तेमां समुच्चय जीवमां ४७ बोल लाभे तेमांथी १० बोल वर्जवा ते अलेशी १ ॥ समामिथ्यादृष्टि २ ॥ मनःपर्यव ज्ञानी ३ ॥ केवलज्ञानी ४ ॥ नो सन्नावउत्ता ५ ॥ अवेदी ६ ॥ अकषायी ७ ॥ मनजोगी ८ ॥ वचनजोगी ९ ॥ अजोगी १० ॥ ए १० बोल वर्जिने शेष ३७ बोल अनंतर ४ द्वारमां लाभे ॥ १ ॥ नारकी आदि देव बारमा देवलोक सुधी जे जे ठेकाणे जेटला जेटला समुच्चय बोल लाभे छे तेमांथी समामिथ्यात्वदृष्टि १ ॥ मनजोग २ ॥ वचनजोग ३ ॥ ए त्रण त्रण बोल वर्जवा केमके ए ३ बोल उपजतां प्रथम समये न होय ॥ नव ग्रैवेयक तथा पांच अनुत्तर विमानमां समुच्चय

बोल जेटला जेटला लाने ठे तेमांथी मनजोग १ ॥ वचनजोग २ ॥ ए ब बोल वर्जवा ॥ पांच स्थावरमांथी एके बोल वर्जवो नहि ॥ त्रण विगलेंद्रियमांथी १ वचनजोग वर्जवो ॥ तिर्यंच पंचेंद्रियमा ४० बोल लाने ठे तेमांथी समामिथ्यादृष्टि १ ॥ अवधिज्ञान २ ॥ विजंगज्ञान ३ ॥ मनजोग ४ ॥ वचनजोग ५ ॥ ए ५ बोल वर्जवा ॥ मनुष्यमां ४७ बोल लाने ठे तेमांथी ११ बोल वर्जवा ॥ अलेशी १ ॥ समामिथ्यादृष्टि २ ॥ मन पर्यवज्ञान ३ ॥ केवलज्ञान ४ ॥ नोसन्नावउत्ता ५ ॥ अवेदी ६ ॥ अकषायी ७ ॥ मनजोग ८ ॥ वचनजोग ए ॥ विजंगज्ञान १० ॥ अजोगी ११ ॥ ए ११ बोल वर्जवा ॥ हवे अनंतर ४ बोलमांहि जे जे ठेकाणे जेटला जेटला बोल लाने ठे तेमा समवसरण उतारवा ते समुच्चय प्रथम उद्देशामां उतार्यांनी परे जाणवा ॥ अनंतर ४ बोलमांहि जेटला जेटला बोल लाने तेटला आयुष्यना अबंधकना जाणवा ॥ अनंतर ४ बोलमांहि नव्य अनव्यपणानो वर्णव समुच्चय उद्देशानी परे करवो ॥ ए ४ उद्देशा थया ॥ इति पांच उद्देशा संपूर्ण ॥ ५ ॥ हवे परंपरोववन्नगादि ४ उद्देशा कहे ठे ॥ परंपरोववन्नगा ते घणा समय उपज्याने जेने थया

होय ते १ ॥ परपरोगाढगा ते घणा समय क्षेत्र अवगाह्याने जेने थया होय ते ॥ परपरा हारगा ते घणा समय आहार लीधा जेने थया होय ते ३ ॥ परपरपज्जत्तगा ते घणा समय प्रजा बांध्याने जेने थया होय ते ४ ॥ परपर उद्देशे समवसरण उतारवा ॥ आयुष्य बांधवानो जघन्य अजघन्यपणु उतारवानो वर्णव समुच्चय उद्देशानी परे जाणवो ॥ तेमा ए टलो फेर जे पृथ्वी १ ॥ पाणी २ ॥ वनस्पति ३ ॥ ए ३ मा तजु लेश्या कहेवी नहि ॥ ३ विगलेंद्रियमा समकित १ ॥ ज्ञान २ ॥ ए ४ बोल वर्जवा, शेष तेमज ॥ ए ४ उद्देशा थया ॥ इति नव उद्देशा समाप्त ॥ ए ॥ हवे चरम अचरमना बे उद्देशा कहे छे ॥ तेमा चरमनो उद्देशो समुच्चय उद्देशानी परे उतारवो ॥ अचरमने उद्देशे सर्वार्थसिद्ध वर्जिने तथा मनुष्यमा अलेशी १ ॥ केवलज्ञानी २॥ अजोगी ३ ॥ ए ३ बोल वर्जिने ॥ बीजो सर्व अधिकार समुच्चय उद्देशानी परे जाणवो ॥ ए २ उद्देशा थया ॥ इति ११ उद्देशा थया ॥

इति समवसरणना बोल सपूर्ण ॥

लद्धिना बाल ॥

अथ श्री लद्धिना थोकडो भगवती सूत्र शतक ८ मा ना उद्देशा बीजा मांथी लख्या छे ॥ ५ ज्ञानना भेद नदीसूत्रथी जाणवा एटले पूर्वे ज्ञान तथा अज्ञान कह्यां ॥ हवे ज्ञानी तथा अज्ञानी कहे छे ॥ 'जीवाणं भंते किंनाणी अन्नाणी' इत्यादि २१ द्वारे करी वर्णवीशुं ॥ गाथा ॥ जीव १ गइ २ इंदिय ३ काए ४ । सुहुम ५ पज्जत्ति ६ भवत्थे य ७ ॥

भवसिद्धिए य ८ सन्नि ९ । लद्धि १० उवओग ११ जोगे य १२ ॥ १ ॥

लेस्सा १३ कसाय १४ वेए १५ । आहारे १६ नाणगोयरे १७ ॥

काले १८ अंतर १९ अप्पाबहुय २० । पज्जवा २१ चेव दाराइ ॥ २ ॥

हवे प्रथम जीवद्वार कहे छे ॥ २६ ॥

१ समुच्चय जीवमां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ २ नारकीमा पहेली नारकीमां ३ ज्ञाननी नियमा, अज्ञान ३ नी भजना, शेष ६ नारकीमां त्रण ज्ञान त्रण अज्ञाननी

नियमा ॥ १२ दश भवनपतिमां ३ ज्ञाननी नियमा, अज्ञान ३ नी भजना ॥ १७ पांच स्था, वरमां १ अज्ञाननी नियमा ॥ २० त्रण विगलेंद्रिय असंज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रियमां २ ज्ञान, १ अज्ञाननी नियमा ॥ २१ संज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रियमां ३ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ २२ संज्ञि मनुष्यमां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना, असंज्ञी मनुष्यमां १ अज्ञाननी नियमा ॥ २३ वाणव्यंतरमां ३ ज्ञाननी नियमा, अज्ञान ३ नी भजना ॥ २५ ज्योतिषीथी मांडी नव ग्रैवेयकसुधीमां ३ ज्ञान, ३ अज्ञाननी नियमा ॥ पांच अनुत्तर विमानमां त्रण ज्ञाननी नियमा, अज्ञान नथी ॥ २६ सिद्धमां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे बीजुं गतिद्वार कहे छे ॥ ५३१ ॥

१ नरकगतिमां ३ ज्ञाननी नियमा, ३ अज्ञाननी भजना ॥ २ तिर्यंचगतिमां २ ज्ञान, २ अज्ञाननी नियमा ॥ ३ मनुष्यगतिमां ३ ज्ञाननी भजना, अज्ञान २ नी नियमा ॥ ४ देवगतिमां ३ ज्ञाननी नियमा, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ५ सिद्धगतिमां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे त्रिजु इंद्रियद्वार कहे छे ॥ ७-३० ॥

१ सइंदियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ २ एकेंद्रियमां २ अज्ञाननी नियमा— मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान ॥ ५ त्रण विगलेंद्रियमां २ ज्ञान, २ अज्ञाननी नियमा ॥ ६ पचेंद्रियमां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ७ अणिंदियामां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे चोथु कायद्वार कहे छे ॥ ८–४६ ॥

१ सकाइयामां पांच ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ६ पांच स्थावरमां २ अज्ञाननी नियमा ॥ ७ त्रसकाइयामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ८ अकाइयामां १ केवल ज्ञाननी नियमा ॥

हवे पांचमु सूक्ष्मद्वार कहे छे ॥ ३–४९ ॥

१ सूक्ष्ममां २ अज्ञाननी नियमा ॥ २ बादरमां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ३ नोसूक्ष्मनोबादरमां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे छठु पर्याप्तिद्वार कहे छे ॥ ५१–१०० ॥

१ समुच्चय प्रजाप्तामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ २ नारकी प्रजाप्तामां ३ ज्ञान,

३ अज्ञाननी नियमा ॥ १२ दस जवनपति प्रजाप्तामा ३ ज्ञान, ३ अज्ञाननी नियमा ॥ २०
५ स्थावर ने ३ विगलेंद्रिय, असञ्ज्ञी तिर्यंचना प्रजाप्तामा २ अज्ञाननी नियमा ॥ २१ तिर्यंच
पचेंद्रिय प्रजाप्तामा ३ ज्ञान, ३ अज्ञानना जजना ॥ २२ मनुष्य प्रजाप्तामा ५ ज्ञान, ३ अ
ज्ञाननी जजना ॥ २५ वाणव्यतर ज्योतिषीथी मान्नी नव ग्रैवेयकसुधीना प्रजाप्तामा ३ ज्ञान,
३ अज्ञाननी नियमा ॥ पाच अनुत्तर विमानना पर्याप्ताम॥ त्रण ज्ञाननी नियमा ॥ ६ समु
च्चय अप्रजाप्तामा ३ ज्ञान, ने ३ अज्ञाननी जजना ॥ २७ पेहेली नारकीना अप्रजाप्तामा ३
ज्ञाननी नियमा, ३ अज्ञाननी जजना ॥ पांच नारकीना अपर्याप्तामा त्रण ज्ञान, त्रण अ
ज्ञाननी नियमा ॥ सातमीना अपर्याप्तामा त्रण अज्ञाननी नियमा, नाण नथी ॥ ३७ दस जवन-
पति अप्रजाप्तामा ३ ज्ञाननी नियमा, ३ अज्ञाननी जजना ॥ ४२ पाच स्थावर ने असञ्ज्ञी
मनुष्यना अप्रजाप्तामा २ अज्ञाननी नियमा ॥ ४५ विगलेंद्रिने असञ्ज्ञी तिर्यंच पचेंद्रि-
यना अप्रजाप्तामा २ ज्ञान, २ अज्ञाननी नियमा ॥ ४६ तिर्यंच पचेंद्रिय प्रजाप्तामां २ ज्ञान,
२ अज्ञाननी नियमा ॥ ४७ मनुष्य अप्रजाप्तामा ३ ज्ञाननी जजना, २ अज्ञाननी नियमा ॥

४८ वाणव्यंतर अप्रजाप्तामा ३ ज्ञाननी नियमा, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ५० ज्योतिषीथी मांडी नव ग्रैवेयकसुधीना अप्रजाप्तामा ३ ज्ञान, ३ अज्ञाननी नियमा ॥ पांच अनुत्तर विमानना अपर्याप्तामा त्रण ज्ञाननी नियमा, अज्ञान नथी ॥ ५१ नोप्रजाप्तानोअप्रजाप्तामां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे ७ मु 'भवस्थद्वार कहे छे ॥ ५–१०५ ॥

१ नारकी भवस्थामा ३ ज्ञाननी नियमा, ३ अज्ञाननी भजना ॥ २ तिर्यंच भवस्थामा ३ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ३ मनुष्य भवस्थामा ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ४ देव भवस्थामां ३ ज्ञाननी नियमा, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ५ अभवस्थामां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे ८ मु भवसिद्धिकद्वार कहे छे ॥ ३–१०८ ॥

१ भवसिद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ २ अभवसिद्धियामां ३ अज्ञाननी भजना ॥ ३ नोभवसिद्धियानोअभवसिद्धियामां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे ए मु सञ्जीद्वार कहे छे ॥ ३–१११ ॥

१ सञ्जीमां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी जजना ॥ २ असञ्जीमां २ ज्ञान, २ अज्ञाननी नियमा ॥ ३ नोसञ्जीनोअसञ्जीमां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे १० मु लब्धिद्वार कहे छे ॥ ७०–१०१ ॥

गाथा ॥ नाणति चरित्ता चरित्ते । दाणाइ पच लद्धिय ॥
इदिय लद्धि दसमा । एयासिं सचरि जेदाय ॥ १ ॥

अर्थ–ज्ञानादि ३, ज्ञानलद्धि १, दसण लद्धि २, चारित्र लद्धि ?, चरित्ताचरित्त लद्धि १, दानादि ५, इदिय लद्धि ५, ए १० द्वारे करी ७० बोल वर्णवे छे ॥

प्रथम ज्ञानद्वार–बोल २० ॥

१ नाण लद्धियामा ५ ज्ञाननी जजना, अज्ञान नथी ॥ २ तस्स अलद्धियामा ३ अज्ञाननी जजना, ज्ञान नथी ॥ ३ मतिज्ञान लद्धियामा ४ ज्ञाननी जजना, ज्ञानमा अज्ञान होय नहि ॥ ४ तस्स अलद्धियामा १ केवलज्ञाननी नियमा, ३ अज्ञाननी जजना ॥

५ श्रुत ज्ञान लब्धियामा ४ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ॥ ६ तस्स अलब्धियामा १ केवलज्ञाननी नियमा, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ७ अवधिज्ञान लब्धियामा ४ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ॥ ८ तस्स अलब्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ९ मनःपर्यव लब्धियामां ४ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ॥ १० तस्स अलब्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ११ केवलज्ञान लब्धियामां १ केवलज्ञाननी नियमा, अज्ञान नथी ॥ १२ तस्स अलब्धियामा ४ ज्ञान, ने ३ अज्ञाननी भजना ॥ १३ अज्ञान लब्धियामा ३ अज्ञाननी भजना, ज्ञान नथी ॥ १४ तस्स अलब्धियामा ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी॥ १५ मति अज्ञान लब्धियामा ३ अज्ञाननी भजना, ज्ञान नथी ॥ १६ तस्स अलब्धियामा ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ॥ १७ श्रुत अज्ञान लब्धियामा ३ अज्ञाननी भजना, ज्ञान नथी ॥ १८ तस्स अलब्धियामा ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ॥ १९ विभंग ज्ञान लब्धियामां ३ अज्ञाननी नियमा, ज्ञान नथी ॥ २० तस्स अलब्धियामां ५ ज्ञाननी भजना, २ अज्ञाननी नियमा ॥

बीजुं दर्शनद्वार-बोल ८ ॥

२१ दसण लद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना १ ॥ २२ तस्स अलद्धियामां नथि
कोइ जीवो २ ॥ २३ समदसण लद्धियामा ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ३ ॥ तस्स
अलद्धियामां ३ अज्ञाननी भजना, ज्ञान नथी ४ ॥ २५ मिछादसण लद्धियामा ३ अज्ञा
ननी भजना, ज्ञान नथी ५ ॥ २६ तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञान, त्रण अज्ञाननी भजना ६॥
२७ समामिछादसण लद्धियामां ३ अज्ञाननी भजना, ज्ञान नथी ७ ॥ २८ तस्स अल
द्धियामा ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ८ ॥

त्रिजु चारित्रद्वार-बोल १२ ॥

२९ चरित्त लद्धियामां ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी १ ॥ ३० तस्स अलद्धियामा
४ ज्ञान, अज्ञान ३ नी भजना, मन पर्यव नथी २ ॥ ३१ सामायिक चारित्र लद्धियामा ४ ज्ञा-
ननो भजना, अज्ञान नथी ३ ॥ ३२ तस्स अलद्धियामा ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी
भजना ४ ॥ ३३ छेदोपस्थापनीय चारित्र लद्धियामा ४ ज्ञाननी भजना, अ

५ श्रुत ज्ञान लद्धियामा ४ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ॥ ६ तस्स अलद्धियामां १ केवलज्ञाननी नियमा, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ७ अवधिज्ञान लद्धियामां ४ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ॥ ८ तस्स अलद्धियामा ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ९ मनःपर्यव लद्धियामां ४ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ॥ १० तस्स अलद्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ११ केवलज्ञान लद्धियामा १ केवलज्ञाननी नियमा, अज्ञान नथी ॥ १२ तस्स अलद्धियामा ४ ज्ञान, ने ३ अज्ञाननी भजना ॥ १३ अज्ञान लद्धियामां ३ अज्ञाननी भजना, ज्ञान नथी ॥ १४ तस्स अलद्धियामा ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी॥ १५ मति अज्ञान लद्धियामा ३ अज्ञाननी भजना, ज्ञान नथी ॥ १६ तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ॥ १७ श्रुत अज्ञान लद्धियामा ३ अज्ञाननी भजना, ज्ञान नथी ॥ १८ तस्स अलद्धियामा ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ॥ १९ विभंग ज्ञान लद्धियामां ३ अज्ञाननी नियमा, ज्ञान नथी ॥ २० तस्स अलद्धियामा ५ ज्ञाननी भजना, २ अज्ञाननी नियमा ॥

थीजुं दर्शनद्वार-बोल ८ ॥

२१ दसण लद्धियामा ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना १ ॥ २२ तस्स अलद्धियामां नत्थि कोइ जीवो २ ॥ २३ समदसण लद्धियामा ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ३ ॥ तस्स अलद्धियामां ३ अज्ञाननी भजना, ज्ञान नथी ४ ॥ २५ मिछादसण लद्धियामा ३ अज्ञाननी भजना, ज्ञान नथी ५ ॥ २६ तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञान, त्रण अज्ञाननी भजना ६॥ २७ समामिछादसण लद्धियामा ३ अज्ञाननी भजना, ज्ञान नथी ७ ॥ २८ तस्स अलद्धियामा ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ८ ॥

त्रिजु चारित्रद्वार-बोल १२ ॥

२९ चरित्त लद्धियामा ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी १ ॥ ३० तस्स अलद्धियामा ४ ज्ञान, अज्ञान ३ नी भजना, मन पर्यव नथी २ ॥ ३१ सामायिक चारित्र लद्धियामां ४ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ३ ॥ ३२ तस्स अलद्धियामा ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ४ ॥ ३३ छेदोपस्थापनीय चारित्र लद्धियामां ४ ज्ञाननी भजना, अ

ज्ञान नथी ५ ॥ ३४ तस्स अलद्धियामा ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ६ ॥ ३५ परिहारविशुद्ध चारित्र लद्धियामां ४ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ७ ॥ ३६ तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ८ ॥ ३७ सूक्ष्म सपराय चारित्र लद्धियामा ४ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ९ ॥ ३८ तस्स अलद्धियामा ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना १० ॥ ३९ यथाख्यात चारित्र लद्धियामा ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ११ ॥ ४० तस्स अलद्धियामा ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ १२ ॥

चोथु चारित्राचारित्र द्वार-बोल २ ॥

४१ चरित्ताचरित्त लद्धियामा ३ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ॥ १ ॥ ४२ तस्स अलद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना २ ॥

पांचमु दानलब्धिद्वार-बोल २ ॥

४३ दाण लद्धियामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना १ ॥ ४४ तस्स अलद्धियामां १ केवलज्ञाननी नियमा २ ॥

छट्ठु लाभ लब्धिद्वार-बोल २ ॥

४६ एव लाभ लब्धियाना २ बोल पूर्ववत् २ ॥

सातमु जोग लब्धिद्वार-बोल २ ॥

४७ एव जोग लब्धियाना २ बोल पूर्ववत् २ ॥

आठमु उपजोग लब्धिद्वार-बोल २ ॥

५० एव उपजोग लब्धियाना २ बोल पूर्ववत् २ ॥

नवमु वीर्य लब्धिद्वार-बोल ८ ॥

५१ एव वीरियलब्धियाना पूर्ववत् १ ॥ ५२ तस्स अलब्धियामां १ केवलज्ञान २ ॥ ५३ बाल वीरियलब्धियामां ३ ज्ञान, चोथा गुणस्थाने समदृष्टि आश्रि, ३ अज्ञाननी भजना ३ ॥ ५४ तस्स अलब्धियामा ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ४ ॥ ५५ पण्डित वीरियलब्धियामा ५ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ५ ॥ ५६ तस्स अलब्धियामां ४ ज्ञान, मन पर्यव नहि, ३ अज्ञाननी भजना ६ ॥ ५७ बालपण्डित वीरिय लब्धियामां ३

ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ७ ॥ ५८ तस्स अलद्धियामा ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ८ ॥

दशमुं इंद्रिय लब्धिद्वार–बोल १२ ॥

५९ इंद्रिय लद्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना १ ॥ ६० तस्स अलद्धियामां १ केवलज्ञाननी नियमा २ ॥ ६१ श्रोत्रेंद्रिय लद्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ३ ॥ ६२ तस्स अलद्धियामां ४ ज्ञाननी भजना, २ अज्ञाननी नियमा ४ ॥ ६३ चक्षुइंद्रियना लद्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ५ ॥ ६४ तस्स अलद्धियामां ४ ज्ञाननी भजना ने १ केवलनी नियमा, एव ज्ञान ३ ने २ अज्ञाननी नियमा ६ ॥ ६५ घ्राणेंद्रियना लद्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ७ ॥ ६६ तस्स अलद्धियामा ४ ज्ञाननी भजना, ने १ केवलनी नियमा, एव ३ ज्ञान ने २ अज्ञाननी नियमा ८ ॥ ६७ जीभेंद्रियना लद्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ९ ॥ ६८ तस्स अलद्धियामां १ केवलज्ञान, ने २ अज्ञाननी नियमा १० ॥ ६९ फासिंदिय लद्धियामां ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ११ ॥ ७० तस्स अलद्धियामां १ केवलज्ञाननी नियमा १२ ॥

हवे ११ मु उपयोग द्वार कहे छे ॥ बोल १४–१९५ ॥

१ सागारोवउत्तामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ २ मति श्रुत सागारोवउत्तामा ४ ज्ञाननी भजना, अज्ञान नथी ॥ ४ अवधिज्ञान सागारोवउत्तामा ४ ज्ञाननी भजना ॥ ५ मनःपर्यवज्ञान सागारोवउत्तामा ४ ज्ञाननी भजना ॥ ६ केवलज्ञान सागारोवउत्तामा १ केवलज्ञाननी नियमा ॥ ७ मतिश्रुत अज्ञान सागारोवउत्तामा ३ अज्ञाननी भजना ॥ ९ विभंगज्ञान सागारोवउत्तामां ३ अज्ञाननी नियमा ॥ १० अणागारोवउत्तामां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ११ चक्षु अचक्षुदर्शन अणागारोवउत्तामा ४ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ १३ अवधिदर्शन अणागारोवउत्तामा ४ ज्ञाननी भजना, ३ अज्ञाननी नियमा ॥ १४ केवल दर्शन अणागारोवउत्तामां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

हवे १२ मु योग द्वार कहे छे ॥ बोल ५–२०० ॥

४ सजोगी मनजोगी वचनजोगी कायजोगीमां ५ ज्ञान, ३ अज्ञाननी भजना ॥ ५ अजोगीमां १ केवलज्ञाननी नियमा ॥

नीना २ भेद ॥ ऋजुमति १ ॥ विपुलमति २ ॥ द्रव्य थकी ऋजुमति अनंत प्रदेशीया मनना पुद्गलना स्कंध सामान्य प्रकारे जाणे देखे १ ॥ क्षेत्रथी त्रिबु अढिद्वीपमां अढिअ गुल ओछु ॥ हेठु ज्योतिषी लगे नवसें जोजन अढिअगुल ओछु ॥ नीचु हजार जोजन अढि अगुल ओछु एटलुं क्षेत्र जाणे देखे २ ॥ कालथी ज० उ० पल्योपमनो असख्यातमो भाग आगलो पाछलो काल जाणे देखे ३ ॥ भावथी अढिद्वीपना सज्ञी पचेंद्रिय प्रजाप्ता मनुष्य तिर्यंचना मनना पुद्गल तेना वर्ण गंध रस स्पर्श पना अनता भाव छे, तेथी अनतमे भागे जाणे देखे ४ ॥ एमज विपुलमति पण जाणे देखे ॥ नवर एटलो विशेष अढि अंगुल अधिक पण विस्तार सहित निर्मळपणे जाणे देखे ४ ॥ केवलज्ञानी द्रव्यथी छ द्रव्य सर्व प्रकारे जाणे देखे १ ॥ क्षेत्रथी सर्व क्षेत्र लोकालोक जाणे देखे २ ॥ कालथी सर्व काल जाणे देखे ३ ॥ भावथी सर्व भाव जाणे देखे ४ ॥ ५ ॥ मति अज्ञानी, श्रुत अज्ञानी, द्रव्यथी मति श्रुत अज्ञानमा जेटला द्रव्य आवे तेटला जाणे देखे १ ॥ एम क्षेत्रथी, कालथी, भावथी, पण जाणवु ॥ नवर श्रुत अज्ञानीमा एटलो फेर, जेटलां द्रव्य आवे, तेटलां आगवइ पन्नवइ

परूवइ, एम क्षेत्रथी, कालथी, भावथी, पण जाणवुं २ ॥ विभंग ज्ञानी द्रव्यथी विभंग ज्ञानमा जेटलां द्रव्य आवे एटला जाणे देखे १ ॥ एम क्षेत्रथी, कालथी, भावथी, पण जाणवु ३ ॥ इति १७ मु नाणगोयरद्वार समाप्त ॥ १७ ॥

हवे १८ मु कालद्वार कहे छे ॥

काल केहेतां ज्ञानीनु ज्ञान जेटला काल रहे तेना ४ भेद, साइए सपज्जवसिए १ ॥ साइए अपज्जवसिए २ ॥ तेमा जे साइए सपज्जवसिए तेनी ज० स्थिति अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० छासठ सागरोपम झाझेरानी ॥ एम ज मति श्रुत ज्ञाननी पण जाणवी २ ॥ अवधिज्ञाननी ज० १ समयनी, उत्० छासठ सागरोपम झाझेरानी ३ ॥ मनःपर्यव ज्ञाननी ज० १ समयनी, उत्० देशे उणी पूर्व क्रोडनी ४ ॥ केवलज्ञान साइए अपज्जवसिए ५ ॥ अज्ञानना ३ भेद ॥ अणादिए अपज्जवसिए ते अभव्य १ ॥ अणादिए सपज्जवसिए ते भव्य २ ॥ सादिए सपज्जवसिए ते पडिवाइ तेनी स्थिति ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० अर्द्धपुद्गल देशे उणानी ३ ॥ एव मति श्रुत अज्ञाननी स्थिति पण जाणवी २ ॥ विभंगज्ञाननी ज० १ समयनी,

उ० ३३ सागरने देशे उणी क्रोड पूव अधिकनी ३ ॥ इति १७ मु, कालद्वार समाप्तः ॥१७॥

हव १९ मु अतरद्वार कहे छे ॥

ज्ञानना २ नेद ॥ साइए अपज्जवसिए १, तेनु अतर नथी १ ॥ साइए सपज्जवसिए तेनु अतर ज० अतर्मुहूर्त्तनु, उत्० देशे उणा अर्द्ध पुद्गलनु ॥ एम ज ४ ज्ञाननु, पण जाणवु ॥ ४ ॥ हवे अज्ञानना ३ नेद ॥ अणाइए अपज्जवसिए एनु अतर नथी १ ॥ अणाइए सपज्जवसिएनु अतर नथी २ ॥ साइए सपज्जवसिएनु तथा मतिश्रुत अज्ञाननु अंतर ज० अतर्मुहूर्त्तनु, उ० उसठ सागर जाझेरानु २ ॥ विनग ज्ञाननु अतर ज० अत०, उ० अनतकालनु ते वनस्पति आश्रि ३ ॥ इति १९ मु अतर द्वार समाप्तः ॥ १९ ॥

हवे २० मु अल्प बहुत्वद्वार कहे छे ॥

सर्वथी थोडा मन· पर्यवज्ञानी १ ॥ तेथी अवधिज्ञानी असख्यातगुणा २ ॥ तेथी मति श्रुत ज्ञानी माहोमाहि तुल्य ने विसेसाहिया ४ ॥ तेथी केवलज्ञानी अनतगुणा ५ ॥ त्रण अज्ञाननो अल्प बहुत्व–सर्वथी थोडा विभंगज्ञानी १ ॥ तेथी मतिश्रुत अज्ञानी

मांहोमांहि तुल्य ने अनंतगुण ३॥ हवे ८ नो अल्प बहुत्व कहे छे ॥ सर्वथी थोडा मनः
पर्यवज्ञानी १ ॥ तेथी अवधिज्ञानी असंख्यातगुणा २ ॥ तेथी मतिश्रुत ज्ञानी माहो
मांहि तुल्य ने विशेषाधिक ४ ॥ तेथी विभंगज्ञानी असंख्यातगुणा, नारकी देवता आश्रि
५ ॥ तेथी केवलज्ञानी अनंतगुण ६ ॥ तेथी मतिश्रुत अज्ञानी माहोमाहि तुल्य ने अन
तगुणा ७ ॥ इति २० मु अल्प बहुत्वद्वार समाप्त ॥ २० ॥

हवे २१ मु पर्यवद्वार कहे छे ॥

पांच ज्ञानमां एकेकना अनंता२ पर्यव छे तेनो अल्प बहुत्व–सर्वथी थोडा मनःपर्यव
ज्ञानना पर्यव १ ॥ तेथी अवधिज्ञानना पर्यव अनंतगुणा २ ॥ तेथी श्रुत ज्ञानना पर्यव
अनंतगुणा ३ ॥ तेथी मति ज्ञानना पर्यव अनंतगुणा ४ ॥ तेथी केवलज्ञानना पर्यव अन
तगुणा ५ ॥ त्रण अज्ञानना पर्यव अनंतानंत छे, तेनो अल्प बहुत्व–सर्वथी थोडा विभं
गज्ञानना पर्यव १ ॥ तेथी श्रुत अज्ञानना पर्यव अनंतगुणा २ ॥ तेथी मतिअज्ञानना पर्यव अन
तगुणा ३ ॥ हवे पांच ज्ञान त्रण अज्ञान ए ८ ना पर्यवनो अल्प बहुत्व कहे छे ॥ सर्वथी थोडा मन

पर्यव ज्ञानना पर्यव १ ॥ तेथी विभगज्ञानना पर्यव अनतगुणा २ ॥ तेथी अवधिज्ञानना पर्यव अनतगुणा ३ ॥ तेथी श्रुत अज्ञानना पर्यव अनतगुणा ४ ॥ तेथी श्रुतज्ञानना पर्यव विसेसाहिया ५ ॥ तेथी मतिअज्ञानना पर्यव अनतगुणा ६ ॥ तेथी मतिज्ञानना पर्यव विसेसाहिया ७ ॥ तेथी केवलज्ञानना पर्यव अनतगुणा ८ ॥ इति २१ मु पर्यवद्वार समास ॥२१॥

॥ इति ऋद्धिना बोल सपूर्ण ॥

मोटी कर्मप्रकृतिना बोल ॥

अथ श्री पन्नवणा पद २३ माथी आठ कर्मनी उत्तरप्रकृति १४८ ना बधनी जघन्योत्कृष्ट स्थितिना बोल लिख्यते ॥ पाच ज्ञानावरणीयनी, चार दर्शनावरणीयनी ए ९ प्रकृतिनी जघन्य स्थिति अतर्मुहूर्त्तनी ते दशमा गुणठाणा आश्री, उत्कृष्टी त्रीस कोडाकोडी सागरोपमनी ॥ ९ ॥ पाच निद्रा, ने १ अशातावेदनीय, ए ६ प्रकृतिनी स्थिति

जघन्य १ सागरना सात भाग करीए तेवा ३ भाग पल्योपमने असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० त्रिश कोडाकोडी सागरोपमनी १५ ॥ शातावेदनीयना २ भेद ॥ इरियावहीना बंध आश्रि ज० उत्० २ समयनी ॥ संपरायना बंध आश्रि ज० १२ मुहूर्त्तनी ते दशमा गुण ठाणा आश्रि, उत्० पंदर कोडाकोडी सागरोपमनी १६॥ सम्यक्त्व मोहनीयनी ज० स्थिति अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्० ठासठ सागरोपम जाझेरानी १ ॥ मिथ्यात्व मोहनीयनी ज० १ सागरोपमनी पल्योपमना असंख्यातमा भागे उणानी, उत्० सीत्तेर कोडाकोडी सागरोपमनो १७ ॥ मिश्रमोहनीयनी ज० उत्० अंतर्मुहूर्त्तनी १ए ॥ अनंतानु बंधीनी ४ ॥ अप्रत्याख्यानावरणीयनी ४ ॥ प्रत्याख्यानावरणीयनी ४ ॥ ए १२ कषायनी स्थिति ज० १ सागरना ७ भाग करीए तेवा ४ भाग ने पल्यने असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० चालीश कोडाकोडी सागरोपमनी ३१ ॥ सज्वलनना क्रोधनी ज० स्थिति २ मासनी ॥ माननी ज० १ मासनी ॥ मायानी ज० १५ दिननी ॥ लोभनी ज० अंतर्मुहूर्त्तनी ॥ ए ४ नी उत्कृष्ट स्थिति ४० कोडाकोडी सागरोपमनी ३५ ॥ हास्य १ ॥ रति

२ ॥ ए २ प्रकृतिनी स्थिति ज० १ सागरोपमना सात जाग करीए तेवो एक जाग पल्यो
पमना असंख्यातमा जागे उणानी, उत्० दश कोमाकोमी सागरोपमनी ३७ ॥ अरति
१ ॥ जय २ ॥ शोक ३ ॥ डुगंछा ४ ॥ ए ४ प्रकृतिनी स्थिति ज० १ सागरना ७ जाग करीए
तेवा २ जाग पल्योपमने असंख्यातमे जागे उणानी, उत्० वीश कोमाकोमी सागरोपमनी
४१ ॥ स्त्रीवेदनी स्थिति ज० १ सागरना ७ जाग करीए तेवा दोढ जाग पल्योपमना
असंख्यातमे जागे उणानी, उत्० पंदर कोमाकोमी सागरोपमनी ४२ ॥ पुरुषवेदनी
स्थिति ज० ८ वर्षनी, उत्० १० कोमाकोमी सागरोपमनी ४३ ॥ नपुंसकवेदनी स्थिति
ज० १ सागरना ७ जाग करीए तेवा २ जाग पल्योपमने असंख्यातमे जागे उणानी, उत्०
२० कोमाकोमी सागरोपमनी ४४ ॥ नारकी १ ॥ देवता २ ॥ ए बेना आयुष्यना बंधनी
स्थिति ज० १० हजार वर्ष ने अंतर्मुहूर्त्त अधिकनी, उत्० तेत्रीश सागरोपमने पूर्व कोमीनो
त्रिजो जाग अधिकनी ४६ ॥ मनुष्य १ ॥ तिर्यंच २ ॥ ए २ ना आयुष्यना बंधनी स्थिति
ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्० त्रण पल्योपम ने पूर्व कोमीनो त्रिजो जाग अधिकनी ४७ ॥ हवे

राच संघयण १ ॥ समचउरंस संठाण २ ॥ शुक्लवर्ण ३ ॥ मधुर रस ४ ॥ सुरभि गंध ५ ॥ सुहालो स्पर्श ६ ॥ लघु ७ ॥ उष्ण ८ ॥ स्निग्ध ए ॥ प्रशस्त विहायोगति १० ॥ स्थिर नाम ११ ॥ शुभ नाम १२ ॥ सौभाग्य नाम १३ ॥ सुस्वर नाम १४ ॥ आदेय नाम १५॥ ए १५ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना सात भाग करीए तेमो १ भाग पल्यना असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० दश कोडाकोडी सागरोपमनी १२३ ॥ ऋषभनाराच संघयण १ ॥ निग्रोध परिमंडल संस्थान २॥ ए बे प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना ३५ भाग करीए तेवा ६ भाग पल्योपमने असंख्यातमे भागे उणानी, उत० बार कोडाकोडी सागरोपमनी १२५॥ नाराचसंघयण १॥ सादि संठाण २॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० १ सागरना ३५ भाग करीए तेवा ७ भाग ने पल्यने असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० १४ कोडाकोडी सागरोपमनी १२७॥ अर्द्धनाराच संघयण १॥ वामन संठाण २॥ ए २ नी स्थिति ज० १ सागरना ३५ भाग करीए तेवा ८ भाग पल्यना असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० १६ कोडाकोडी सागरोपमनी १२ए ॥ पीळो वर्ण १ ॥ खाटो रस २ ॥ ए २ नी स्थिति ज०

अशुभ नाम ३७ ॥ दौर्भाग्य नाम ३८ ॥ दुःस्वर नाम ३९ ॥ अनादेय नाम ४० ॥ अयशोकीर्तिनाम ४१ ॥ निर्माण नाम ४२ ॥ ए ४२ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना सात भाग करीए तेवा बे भाग पल्योपमना असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० २० कोडाकोडी सागरोपमनी ९६ ॥ मनुष्यगति १ ॥ मनुष्यानुपूर्वि २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना सात भाग करीए तेवो दोढ भाग पल्योपमना असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० १५ कोडाकोडी सागरोपमनी ९८ ॥ देवगति १ ॥ देवानुपूर्वि २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० १ हजार सागरोपमना सात भाग करीए तेवो एक भाग पल्योपमना असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० १० कोडाकोडी सागरोपमनी १०० ॥ बेइंद्रियनी जाति १ ॥ तेइंद्रियनी जाति २ ॥ चउरिंद्रियनी जाति ३ ॥ कीलकसंघयण ४ ॥ कुब्ज संठाण ५ ॥ सूक्ष्म नाम ६ ॥ अपर्याप्त नाम ७ ॥ साधारण नाम ८ ॥ ए ८ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना ३५ भाग करीए तेवा ९ भाग पल्योपमने असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० अढार कोडाकोडी सागरोपमनी १०८ ॥ वज्रऋषभना

र्मनी ५ प्रकृति दानांतरायादिनी स्थिति ज० अंतमुहूर्त्तनी ते दशमा गुणठाणा आश्रि, उत्० ३० क्रोमाक्रोमी सागरोपमनी १४० ॥ ए ० कर्मनी उत्तर प्रकृति १४० नी बंध स्थिति समुच्चय आश्रि कही १ ॥ हवे ज जे कर्मनी जे जे उत्तर प्रकृतिनी जेटला जे टला सागरोपमनी स्थिति कही छे तेटला तेटला सो वर्षनो ते ते प्रकृतिनो अबाधाकाल जाणवो ॥ ए समुच्चय प्रकृति १४० ना बंधनो अबाधाकाल कह्यो ॥ हवे एकेंद्रिय जेटली प्रकृति बांधे तेना बंधनी स्थिति कहे छे ॥ ५ ज्ञानावरणीय ॥ ए दर्शनावरणीय ॥ १ अशाता वेदनीय ॥ ए १५ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० १ सागरना ७ जाग करीए तेवा ३ जाग ते पल्योपमने असंख्यातमे जागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना ३/७ जागनी बांधे १५ ॥ शातावेदनीयना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना ७ जाग करीए तेवा दोढ जाग ते पल्योपमना असंख्यातमे जागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना १/७ जागनी १६ ॥ मिथ्यात्व मोहनीयना बंधनी स्थिति ज० एक सागरोपमनी ते पल्यन असंख्या तमे जागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरोपमनी १७ ॥ सोल कषायना बंधनो स्थिति

एक सागरना २७ जाग करीए तेवा ५ जाग ने पल्यने असख्यातम जागे उणानी, उत्० साताधार कोमाकोमी सागरोपमनी १३१ ॥ आहारक शरीर १ ॥ आहारकनां अंगोपांग २ ॥ आहारक बंधन ३ ॥ आहारक संघातन ४ ॥ तीर्थंकर नाम कर्म ५ ॥ ए ५ नी स्थिति ज० अतो कोमाकोमी सागरोपमनी, उत्० एमज जाणवी १३६ ॥ रातो वर्ण १ ॥ कषायलो रस २ ॥ ए २ नी स्थिति ज० एक सागरना २७ जाग करीए तेवा ६ जाग ने पल्योपमने असख्यातमे जागे उणानी, उत्० १५ कोमाकोमी सागरोपमनी १३८ ॥ नीलो वर्ण १ ॥ कमवो रस २ ॥ ए २ नी स्थिति ज० एक सागरना २७ जाग करीए तेवा सात जाग ने पल्यने असख्यातमे जागे उणानी, उत्० साडासत्तर कोमाकोमी सागरोपमनी १४० ॥ यशोकीर्त्ति नाम कर्मनी स्थिति ज० ७ मुहूर्त्तनी, उत्० १० कोमाकोमी सागरोपमनी १४१ ॥ उच्च गोत्रनी स्थिति ज० ७ मुहूर्त्तनी, उ० १० कोमाकोमी सागरोपमनी १४२ ॥ नीच गोत्रनी स्थिति ज० एक सागरना ७ जाग करीए तेवा २ जाग ते पल्यने असख्यातमे जागे उणानी, उत्० २० कोमाकोमी सागरनी १४३ ॥ अंतराय क-

तिनी स्थिति ज० १ सागरना १/१ नाग ते पल्यने असख्यातमे नागे उणानी, उ० प्रति
पूर्ण १ सागरना दोढ सातिया भागनी ४६ ॥ वज्रऋषननाराच सघयण १ ॥ समचउरस
सठाण २ ॥ शुक्ल वर्ण ३ ॥ मधुर रस ४ ॥ सुरनि गध ५ ॥ सुहालो स्पर्श ६ ॥ लघु ७॥
उष्ण ८ ॥ स्निग्ध ए ॥ प्रशस्त विहायोगति १० ॥ स्थिर नाम ११ ॥ शुन नाम १२ ॥
सौनाग्य नाम १३ ॥ सुस्वर नाम १४ ॥ आदेय नाम १५ ॥ यशोकीर्त्ति नाम १६ ॥ ए
१६ प्रकृतिना बधनी स्थिति ज० एक सागरना सात नाग करीए तेवो १ नाग ते पल्यने अस
ख्यातमे नागे उणानी, उत० प्रतिपूर्ण , नागनी ६१ ॥ तिर्यचनी गति १ ॥ एकेंडियनी जाति
२ ॥ पचेंडियनी जाति ३ ॥ तिर्यचानुपूर्वि ४ ॥ उदारिक शरीर ५ ॥ उदारिकना अगोपाग
६ ॥ उदारिक बधन ७ ॥ उदारिक सघातन ८ ॥ तेजस् शरीर ए ॥ कार्मण शरीर १० ॥
तेजस् बधन ११ ॥ कार्मण बधन १२ ॥ तेजस् सघातन १३ ॥ कार्मण सघातन १४ ॥
छेवटु सघयण १५ ॥ हुड सठाण १६ ॥ काला वर्ण १७ ॥ तीखो रस १८ ॥ दुर्नि गध
१ए ॥ खरखरा स्पर्श २० ॥ शीत २१ ॥ गुरु २२ ॥ लुखो २३ ॥ अगुरुलघुनाम

जo १ सागरना ¾ भागनी ते पल्यने असख्यातमे भागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना भागनी ३३ ॥ हास्य १ ॥ रति २ ॥ प २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति जo १ सागरना ⅓ भागनो ते पल्यने असख्यातमे भाग उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना ⅓ भागनो ३५ ॥ अरति १ ॥ भय २ ॥ शोक ३ ॥ दुगञ्छा ४ ॥ प ४ प्रकृतिना बंधनी स्थिति जo १ सागरना भागनी ते पल्यने असख्यातमे भागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना भागनी ३९ ॥ स्त्रीवेदना बंधनी स्थिति जo १ सागरना भागनी ते पल्यना असख्यातमे भागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना भागनी ४० ॥ पुरुषवेदना बंधनी स्थिति जo १ सागरना भागनी ते पल्यने असख्यातमे भागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना भागनी ४१ ॥ नपुसक वेदनी जo १ सागरना भागनी ते पल्यन असख्यातमे भागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण १ सागरना भागनी ४२ ॥ तिर्यंचनु आयुष्य १ ॥ मनुष्यनु आयुष्य २ ॥ प २ प्रकृतिनी स्थिति जo अतर्मुहूर्त्तनी, उत्० पूर्व क्रोडी ने २२ हजार वर्षना त्रीजा भागे अधिकनी ४४ ॥ मनुष्यनी गति १ ॥ मनुष्यानुपूर्वि २ ॥ प २ प्रक-

तिनी स्थिति ज० १ सागरना -¹ जाग ते पल्यने असंख्यातमे जागे उणानी, उ० प्रति
पूर्ण १ सागरना दोढ सातिया मागनी ४६ ॥ वज्रऋषजनाराच संघयण १ ॥ समचउरंस
सठाण २ ॥ शुक्ल वर्ण ३ ॥ मधुर रस ४ ॥ सुरजि गंध ५ ॥ सुहालो स्पर्श ६ ॥ लघु ७॥
उष्ण ८ ॥ स्निग्ध ए ॥ प्रशस्त विहायोगति १० ॥ स्थिर नाम ११ ॥ शुज नाम १२ ॥
सौजाग्य नाम १३ ॥ सुस्वर नाम १४ ॥ आदेय नाम १५ ॥ यशोकीर्त्ति नाम १६ ॥ ए
१६ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना सात जाग करीए तेवो १ जाग ते पल्यने असं
ख्यातमे जागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण जागनी ६१ ॥ तिर्यंचनी गति १ ॥ एकेंड्रियनी जाति
॥ पंचेंड्रियनी जाति ३ ॥ तिर्यंचानुपूर्वि ४ ॥ उदारिक शरीर ५ ॥ उदारिकना अंगोपांग
॥ उदारिक बंधन ७ ॥ उदारिक संघातन ८ ॥ तेजस् शरीर ए ॥ कार्मण शरीर १० ॥
तेजस् बंधन ११ ॥ कार्मण बंधन १२ ॥ तेजस् संघातन १३ ॥ कार्मण संघातन १४ ॥
छेवट्ठ संघयण १५ ॥ हुंक सठाण १६ ॥ कालो वर्ण १७ ॥ तीखो रस १८ ॥ दुर्जि गंध
१ए ॥ खरखरा स्पर्श २० ॥ शीत २१ ॥ गुरु २२ ॥ लुखो २३ ॥ अगुरुलघुनाम

२४ ॥ उपघात नाम २५ ॥ पराघात नाम २६ ॥ उच्छ्वास नाम २७ ॥ उद्योत नाम २८ ॥ आताप नाम २९ ॥ अप्रशस्त विहायोगति ३० ॥ त्रस नाम ३१ ॥ स्थावर नाम ३२ ॥ बादर नाम ३३ ॥ पर्याप्ति नाम ३४ ॥ प्रत्येक नाम ३५ ॥ अस्थिर नाम ३६ ॥ अशुभ नाम ३७ ॥ दुर्भाग्य नाम ३८ ॥ दुःस्वर नाम ३९ ॥ अनादेय नाम ४० ॥ अयशो कीर्ति नाम ४१ ॥ निर्माण नाम ४२ ॥ ए ४२ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना ७ भाग करीए तेवा २ भाग ते पल्यना असंख्यातमे भागे उणा जाणवी, उत्० प्रतिपूर्ण एक सागरना भागनी १०४ ॥ बेइंद्रिय १ ॥ तेइंद्रिय २ ॥ चउरिंद्रिय ३ ॥ कीलक संघयण ४ ॥ कुब्ज संठाण ५ ॥ सूक्ष्म नाम ६ ॥ अपर्याप्ति नाम ७ ॥ साधारण नाम ८ ॥ ए ८ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना ३५ भाग करीए तेवा ९ भाग ते पल्यने असंख्यातमे भागे उणा जाणवी, उत्० एक सागरना प्रतिपूर्ण १० भागनी ११२ ॥ ऋषभ नाराच संघयण १ ॥ निग्रोध परिमंडल संठाण २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना ३५ भाग करीए तेवा ६ भाग ते पल्यने असंख्यातमे भागे उणा जाणवी, उ०

प्रतिपूर्ण एक सागरना ॱ भागनी ११४ ॥ नाराच संघयण १ ॥ सादि संठाण २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना ३५ भाग करीए तेवा ७ भाग ते पल्यने अ संख्यातमे भागे ऊणानी, उत्० एक सागरना प्रतिपूर्ण ॱ भागनी ११६ ॥ अर्द्धनाराच संघयण १ ॥ वामन संठाण २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना ३५ भाग करीए तेवा ८ भाग ते पल्यने असंख्यातमे भागे ऊणानी, उत्० एक सागरना प्र तिपूर्ण ॱ भागनी ११८ ॥ रातो वर्ण १ ॥ कषायलो रस २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना २८ भाग करीए तेवा ६ भाग ते पल्य ने असंख्यातमे भागे ऊणानी, उत्० एक सागरना प्रतिपूर्ण ॱ भागनी १२० ॥ पीलो वर्ण १ ॥ खाटो रस २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना २८ भाग करीए तेवा ५ भाग ते पल्यने अ संख्यातमे भागे ऊणानी, उत्० एक सागरना प्रतिपूर्ण ॱ भागनी १२२॥ नीलो वर्ण १ ॥ कडुवो रस २ ॥ ए २ प्रकृतिना बंधनी स्थिति ज० एक सागरना २८ भाग करीए तेवा ७ भाग ते पल्यने असंख्यातमे भागे ऊणानी, उ० एक सागरना प्रतिपूर्ण ॱ भागनी

१२४ ॥ यशःकीर्ति १ ॥ उच्च गोत्र २ ॥ तेनी स्थिति ज० एक सागरना ७ भाग करीए तेवो
एक भाग ते पल्यने असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० एक सागरना प्रतिपूर्ण ७ भागनी
१२६ ॥ दानांतरायादि ५ प्रकृतिना बंधनी स्थिति एक सागरना ७ भाग करीए तेवा ३
भाग ते पल्यना असंख्यातमे भागे उणानी, उत्० प्रतिपूर्ण एक सागरना ३ भागनी
१३१ ॥ ए एकेंद्रियना कर्मबंधनी स्थिति कही ॥ एकेंद्रिय १३१ प्रकृति बांधे ते १४७
मांथी सम्यक्त्व मोहनीय १ ॥ समामिथ्यात्वमोहनीय २ ॥ नरकायु ३ ॥ देवायु ४ ॥ नरक
गति ५ ॥ देवगति ६ ॥ वैक्रेय शरीर ७ ॥ वैक्रेयना अंगोपांग ८ ॥ वैक्रेयबंधन ९ ॥ वै
क्रेय संघातन १० ॥ आहारक शरीर ११ ॥ आहारकनां अंगोपांग १२ ॥ आहारक बंधन
१३ ॥ आहारक संघातन १४ ॥ नरकानुपूर्वि १५ ॥ देवानुपूर्वि १६ ॥ तीर्थंकर नाम कर्म
१७ ॥ ए १७ वर्जि ॥ ए एकेंद्रियना प्रकृतिना बंधनो स्थिति कही ॥ अबाधाकाल पूर्ववत्
२ ॥ हवे बेइंद्रिय १ ॥ तेइंद्रिय २ ॥ चउरिंद्रिय ३ ॥ ए ३ विगलेंद्रियना प्रकृतिना
बंधनी स्थिति कहे छे ॥ ए विगलेंद्रिय १३१ प्रकृति बांधे, तेमां बेइंद्रियना प्रकृति

वधनी स्थिति एकेंद्रियवत् ॥ नवर एटलो फेर, जेम एकेंद्रियमा एक सागरना भाग कीधा, तेम, बेइंद्रियमा २५ सागरना भाग करवा ३ ॥ तेइंद्रियमां ५० सागरना भाग करवा, शेष पूर्ववत् ४ ॥ चउरिंद्रियमा १०० सागरना भाग करवा शेष पूर्ववत् ५ ॥ ए ३ विगलेंद्रियना प्रकृतिबंधनी स्थिति कही ॥ अबाधाकाल पूर्ववत् ५ ॥ हवे असन्नी पंचेंद्रिय १४१ प्रकृति बांधे, ते १४८ मांथी ७ प्रकृति वर्जि ॥ सम्यक्त्व मोहनीय १ ॥ समामिथ्यात्व मोहनीय २ ॥ आहारक शरीर ३ ॥ आहारकना अंगोपांग ४ ॥ आहारक बंधन ५ ॥ आहारक संघातन ६ ॥ तीर्थंकर नाम ७ ॥ ए ७ वर्जे ॥ हवे मिथ्यात्व मोहनीयनी ज० १००० सागर ते पल्यने असंख्यातमे भागे ऊणानी, उत्० १००० सागर प्रतिपूर्णनी ॥ नरकायु १ ॥ देवायु २ ॥ ए २ नी ज० १०,००० वर्षने अंतर्मुहूर्त्त अधिकनी, उ० पल्यनो असंख्यातमो भाग ने पूर्व क्रोडनो त्रीजो भाग अधिकनी ॥ नरकगति १ ॥ तिर्यंचगति २ ॥ ए २ नी ज० १००० सागरना ७ भाग करीए तेवा २ भागनी ते पल्यने असंख्यातमे भागे ऊणानी, उ० प्रतिपूर्ण २ भागनी ॥ मनुष्यनी गतिनी ज०

एक हजार सागरना ७ नाग करीए तेवो दोढ नाग ते पल्यने असंख्यातमे नागे ऊणानी, उ० प्रतिपूर्ण दोढ नागनी ॥ एव देवगतिनी पण जाणवी ॥ नवर एक नाग कहेवो, एव वैक्रेय शरीरनी पण जाणवी ॥ नवर बे नाग कहेवा ॥ शेष एकेंद्रियवत् ॥ नवर एटलो फेर जे एक सागरना नाग करवा, ते ठेकाणे १००० सागरना नाग करवा कह्या ॥ अबाधाकाल पूर्ववत् ॥ ए असंज्ञी पंचेंद्रियना प्रकृतिबंधनी स्थिति कही ॥ ६ ॥ हवे संज्ञी पंचेंद्रियना प्रकृतिबंधनी स्थिति कहे ठ ॥ ५ ज्ञानावरणीय ॥ ४ दर्शनावरणीय ॥ ए ए प्रकृतिनी स्थिति ज० अंत०, उ० ३० कोडाकोडी सागरोपमनी ए ॥ शातावेदनीयनी स्थिति इरियावहियान आश्रि तथा संपरायने आश्रिने आधिक समुच्चयवत् जाणवी ॥ अशातावेदनीयनी स्थिति ज० अंतो कोडाकोडी सागरोपमनी, उत्० ३० कोडाकोडी सागरोपमनी ॥ सम्यक्त्व मोहनीय १ ॥ समामिथ्यात्व मोहनीयनी स्थिति समुच्चयवत् ॥ मिथ्यात्व मोहनीयनी ज० अंतो कोडाकोडी सागरोपमनी, उ० सीत्तेर कोडाकोडी सागरोपमनी ॥ कषाय १६ नी स्थिति ज० अंतो कोडाकोडी सागरोपमनी, उत्० ४० कोडाकोडी साग-

रोपमनी ॥ सज्वलनना ४ कपायनी ओघिक समुच्चयवत् ॥ आयुष्य ४ नी स्थिति ओघिक समुच्चयवत् ॥ आहारक नाम १ ॥ तीर्थंकर नाम २ ॥ ए २ नी स्थिति ज० उ० अतो क्रोडाक्रोडी सागरोपमनी ॥ पुरुषवेदनी ज० ८ वर्षनी, उ० १० क्रोडाक्रोडी सागरोपमनी ॥ यशोकीर्त्ति १ ॥ उच्च गोत्र २ ॥ ए २ नी ज० ८ अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० १० क्रोडाक्रोडी सागरोपमनी ॥ दानांतरायादि ५ अंतरायनी ज० अंतर्मुहूर्त्तनी, उ० ३० क्रोडाक्रोडी सागरोपमनी ॥ शेष प्रकृतिनी स्थिति ज० अतो क्रोडाक्रोडी सागरोपमनी, उत्कृष्टी जेनी जे स्थिति ओघिक समुच्चयमां कहेल छे तेटली तेटली बांधे ॥ सज्ञी पंचेंद्रिय जीवो १४८ प्रकृति बांधे ॥ ए सज्ञी पंचेंद्रियना प्रकृतिबंधनी स्थिति कही ॥ इति कर्मप्रकृतिबंध स्थितिनो बोल संपूर्ण ॥

४४ बोलनो अल्पबहुत्व ॥

अथ श्री नगवती शतक १ए मे उद्देशा त्रीजाथी २२ पकडियना जघन्योत्कृष्ट अवगाहना आश्री ४४ बोलनो अल्पबहुत्व लिख्यते ॥

सर्वथी थोडा सूक्ष्म निगोदना अपर्यासानी जघन्य अवगाहना १ ॥ तेथी सूक्ष्म वाउकायना अपर्यासानो ज० अ० असख्यातगुणी २ ॥ तेथी सूक्ष्म तेउ अपर्यासानी ज० अ० असख्यातगुणी ३ ॥ तेथी सूक्ष्म अपकायना अपर्यासानी ज० अ० असख्यातगुणी ४ ॥ तेथी सूक्ष्म पृथ्वी अपर्यासानी ज० अ० असख्यातगुणी ५ ॥ तेथी बादर वाउकाय अपर्यासानी ज० अ० असख्यातगुणी ६ ॥ तेथी बादर तेउकाय अपर्यासानी ज० अ० असख्यातगुणी ७ ॥ तेथी बादर अपकाय अपर्यासानी ज० अ० असख्यातगुणी ८ ॥ तेथी बादर पृथ्वी अपर्यासानी ज० अ० असख्यातगुणी ए ॥ तेथी बादर निगोद अने बादर प्रत्येक वनस्पति अपर्यासानी ज० अ० माहोमाहि तुल्य ने असख्यातगुणी १०–११ ॥

तेथी सूक्ष्मनिगोद पर्यासानो ज० अ० असंख्यातगुणो १२ ॥ तेथी सूक्ष्मनिगोद अपर्यासानो उत्कृष्ट अ० विसेसाहिया १३ ॥ तेथी सूक्ष्मनिगोद पर्यासानो उ० अ० विसेसाहिया १४ ॥ तेथी सूक्ष्म वाउकाय पर्यासानो ज० अ० असंख्यातगुणो १५ ॥ तेथी सूक्ष्म वाउकाय अपर्यासानो उ० अ० विसेसाहिया १६ ॥ तेथी सूक्ष्म वाउकाय पर्याप्तानो उ० अ० विसेसाहिया १७ ॥ तेथी सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्तानो ज० अ० असंख्यातगुणो १८ ॥ तेथी सूक्ष्म तेउकाय अपर्यासानो उ० अ० विसेसाहिया १९ ॥ तेथी सूक्ष्म तेउकाय पर्यासानो उ० अ० विसेसाहिया २० ॥ तेथी सूक्ष्म अपकाय पर्यासानो ज० अ० असंख्यातगुणो २१ ॥ तेथी सूक्ष्म अपकाय अपर्यासानो उ० अ० विसेसाहिया २२ ॥ तेथी सूक्ष्म अपकाय पर्यासानो उ० अ० विसेसाहिया २३ ॥ तेथी सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्यासानो ज० अ० असंख्यातगुणो २४ ॥ तेथी सूक्ष्म पृथ्वीकाय अपर्यासानो उ० अ० विसेसाहिया २५ ॥ तेथी सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्यासानो उ० अ० विसेसाहिया २६ ॥ तेथी बादर वाउकाय पर्यासानो ज० अ० असंख्यातगुणो २७ ॥ तेथी बादर वाउकाय अपर्यासानो उ० अ० विसेसाहिया २८ ॥ तेथी बादर वाउकाय पर्यासानो उ० अ० विसेसाहिया २९ ॥ तेथी बादर

तेउकाय पर्यासानी ज० अ० असख्यातगुणी ३० ॥ तेथी वादर तेउकाय अपर्यासानी उ० अ० विसेसाहिया ३१ ॥ तेथी वादर तेउकाय पर्यासानी उ० अ० विसेसाहिया ३२ ॥ तेथी वादर अपकाय पर्यासानी ज० अ० असम्ख्यातगुणी ३३ ॥ तेथी वादर अपकाय अपर्यासानी उ० अ० विसेसाहिया ३४ ॥ तेथी वादर अपकाय पर्यासानी उ० अ० विसेसाहिया ३५ ॥ तेथी वादर पृथ्वीकाय पर्यासानी ज० अ० असख्यातगुणी ३६ ॥ तेथी वादर पृथ्वीकाय अपर्यासानी उ० अ० विसेसाहिया ३७ ॥ तेथी वादर पृथ्वीकाय पर्यासानी उ० अ० विसेसाहिया ३८ ॥ तेथी वादर निगोद पर्यासानी ज० अ० असख्यातगुणी ३९ ॥ तेथी वादर निगोद अपर्यासानी उ० अ० विसेसाहिया ४० ॥ तेथी वादर निगोद पर्यासानी उ० अ० विसेसाहिया ४१ ॥ तेथी वादर प्रत्येक वनस्पतिकाय पर्यासानी ज० अ० असख्यातगुणी ४२ ॥ तेथी वादर प्रत्येक वनस्पतिकाय अपर्यासानी उ० अ० असख्यातगुणी ४३ ॥ तेथी वादर प्रत्येक वनस्पतिकाय पर्यासानी उ० अ० असख्यातगुणी ४४ ॥ इति ४४ बोलनो अल्पबहुत्व सपूर्ण ॥

२८ बोलनो अल्पबहुत्व ॥

अथ श्री भगवती शतक २५ मा उद्देशा पहेलाथी जीवना १४ भेदना जघन्योत्कृष्ट योगना आश्री २८ बोलनो अल्पबहुत्व लिख्यते ॥

सर्वथी थोडा सूक्ष्म एकेंद्रिय अपर्याप्तानो जघन्य योग १ ॥ तेथी बादर एकेंद्रिय अपर्याप्तानो ज० यो० असंख्यातगुणो २ ॥ तेथी बेइंद्रिय अपर्याप्तानो ज० यो० अस० ३ ॥ तेथी तेइंद्रिय अपर्याप्तानो ज० यो० अस० ४ ॥ तेथी चउरिंद्रिय अपर्याप्तानो ज० यो० अस० ५ ॥ तेथी असंज्ञी पचेंद्रिय अपर्याप्तानो ज० यो० अस० ६ ॥ तेथी संज्ञी पचेंद्रिय अपर्याप्तानो ज० यो० अस० ७ ॥ तेथी सूक्ष्म एकेंद्रिय पर्याप्तानो ज० यो० अस० ८ ॥ तेथी बादर एकेंद्रिय पर्याप्तानो ज० यो० अस० ९ ॥ तेथी सूक्ष्म एकेंद्रिय अपर्याप्तानो उ० यो० अस० १० ॥ तेथी बादर एकेंद्रिय अपर्याप्तानो उ० यो० अस० ११ ॥ तेथी सूक्ष्म एकेंद्रिय पर्या

त्तानो उ० यो० अस० १२॥ तेथी बादर एकेंद्रिय पर्यात्तानो उ० यो० अस० १३ ॥ तेथी बेइंद्रिय पर्यात्तानो ज० यो० अस० १४॥ तेथी तेइंद्रिय पर्यात्तानो ज० यो० अस० १५॥ तेथी चउरिंद्रिय पर्यात्तानो ज० यो० अस० १६॥ तथी असन्नी पचेंद्रिय पर्यात्तानो ज० यो० अस० १७॥ तेथी सन्नी पचेंद्रिय पर्यात्तानो ज० यो अस० १८॥ तथी बेइंद्रिय अपर्यात्तानो उ० यो० अस० १९॥ तेथी तेइंद्रिय अपर्यात्तानो उ० यो० अस० २०॥ तेथी चउरिंद्रिय अपर्यात्तानो उ० यो० अस० २१॥ तेथी असन्नी पचेंद्रिय अपर्यात्तानो उ० यो० अस० २२॥ तेथी सन्नी पचेंद्रिय अपर्यात्तानो उ० यो० अस० २३॥ तेथी बेइंद्रिय पर्यात्तानो उ० यो० अस० २४॥ तेथी तेइंद्रिय पर्यात्तानो उ० यो० अस० २५॥ तेथी चउरिंद्रिय पर्यात्ताना उ० यो० अस० २६॥ तेथी असन्नी पचेंद्रिय पर्यात्तानो उ० यो० अस० २७॥ तेथी सन्नी पचेंद्रिय पर्यात्तानो उ० यो० अस० २८॥ इति १८ बोलनो अल्पबहुत्व संपूर्ण ॥

२४ दडकना जीवोनो अल्पबहुत्व ॥

अथ २४ दमकना जीवोनो अल्पबहुत्व लिख्यते ॥

सर्वथी थोमा मनुष्य १ ॥ तेथी तेउकाय असंख्यातगुणा २ ॥ तथी वैमानिक असं० गु० ३ ॥ तेथी १० नवनपति माहोमाहि तुल्य ने असं० गु० १३ ॥ तेथी नारकी असं० गु० १४ ॥ तेथी वाणव्यंतर असं० गुणा १५ ॥ तेथी ज्योतिषी संख्यात गु० १६ ॥ तेथी तिर्यंच पचेंड्रिय असंख्यातगुणा १७ ॥ तेथी चउरिंड्रिय विसेसाहिया १८ ॥ तेथी तेइंड्रिय विसेसाहिया १९ ॥ तेथी बेइंड्रिय विसेसाहिया २० ॥ तेथी पृथ्वीकाय असं० गु० २१ ॥ तेथी अपकाय असं० गु० २२ ॥ तेथी वाउकाय असं० गु० २३ ॥ तेथी वनस्पति कायना दमके जीवो अनंतगुणा २४ ॥ इति २४ दमकना जीवोना अल्पबहुत्व संपूर्ण ॥

१५ योगना ३० बोलनो अल्पबहुत्व ॥

अथ श्री जगवती शतक २५ माना उद्देशा पहेलाथी १५ योगना जघन्योत्कृष्ट योग आश्री ३० बोलनो अल्पबहुत्व लिख्यते ॥

सर्वथी थोमो कार्मण काययोगनो जघन्य योग १ ॥ तेथी उदारिक मिश्रनो ज० यो० असंख्यातगुणो २ ॥ तेथी वैक्रियमिश्रनो ज० यो० अस० ३ ॥ तेथी उदारिकनो ज० यो० अस० ४ ॥ तेथी वैक्रियनो ज० यो० अस० ५ ॥ तेथी कार्मणनो उ० यो० अस० ६ ॥ तेथी आहारकनो मिश्र ज० यो० अस० ७ ॥ तेथी आहारकनो मिश्र उ० यो० अस० ८ ॥ तेथी उदारिकनो मिश्र अने वैक्रियनो मिश्र उ० यो० मांहोमांहि तुल्य ने अस० ए-१० ॥ तेथी व्यवहार मननो ज० यो० अस० ११ ॥ तेथी आहारकनो ज० यो० अस० १२ ॥ तेथी सत्य मन १ असत्य मन २ मिश्र मन ३, वचनना ४, ५ ७ योगनो ज० यो० मांहोमांहि तुल्य ने अस० १ए ॥ तेथी आहारक शरीरनो उ० यो० अस० २० ॥ तेथी उदारिक

१ वैक्रय २ चार मन ६ चार वचन १० ॥ ए १० नो उ० यो० मांहोमाहि तुल्य ने असख्यातगुणो ३० ॥ इति योगना ३० बोलनो अल्पबहुत्व सपूर्ण ॥

जीवना १४ भेदनो अल्पबहुत्व ॥

अथ श्री सूक्ष्मादि जीवोना १४ भेदनो अल्पबहुत्व लिख्यते ॥

सर्वथी थोमा सज्ञी पचेंद्रिय अपर्याप्ता १ ॥ तेथी सज्ञी पचेंद्रिय पर्याप्ता असख्यात गुणा २ ॥ तेथी चउरिंद्रिय प० स० गुणा ३ ॥ तेथी असज्ञी पचेंद्रिय प० विसेसाहिया ४ ॥ तेथी बेइंद्रिय प० वि० ५ ॥ तेथी तेइंद्रिय प० वि० ६ ॥ तेथी असज्ञी पचेंद्रिय अप० अस० ७ ॥ तेथी चउरिंद्रिय अप० वि० ८ ॥ तेथी तेइंद्रिय अप० वि० ए ॥ तेथी बेइंद्रिय अप० वि० १० ॥ तेथी बादर एकेंद्रिय प० अनतगुणा ११ ॥ तेथी बादर एकेंद्रिय अप० अस० १२ ॥ तेथी सूक्ष्म एकेंद्रिय अप० अस० १३ ॥ तेथी सूक्ष्म एकेंद्रिय प० सख्या० १४ ॥

॥ इति सूक्ष्मादि जीवोना १४ भेदनो अल्पबहुत्व सपूर्ण ॥

इति श्री प्रकरण संग्रह

भाग बीजो

समाप्त